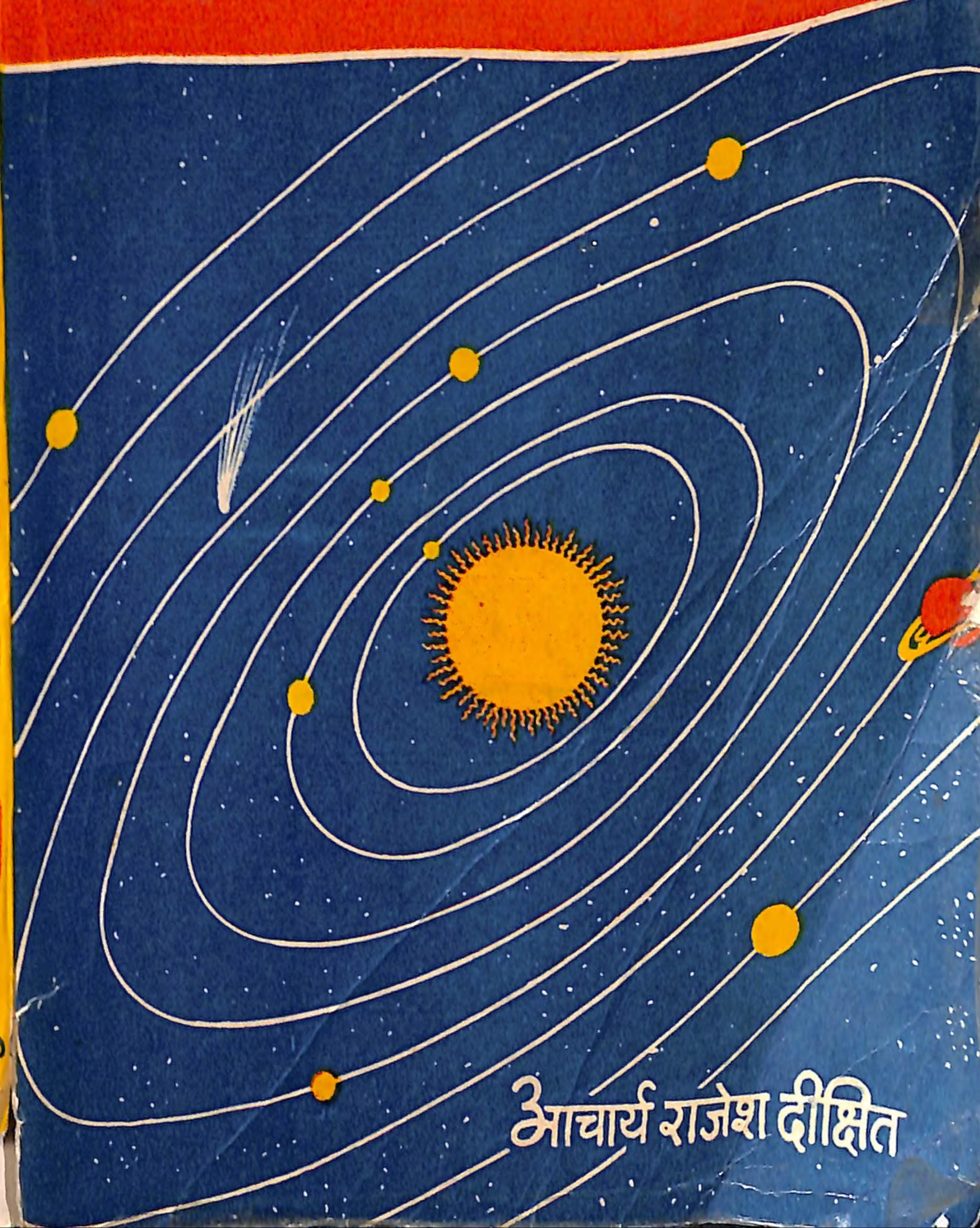
घर बैठे ज्योतिषी बनिए



आचार्य राजेश दीक्षित

घर बैठे ज्योतिषी बनिए
आचार्य राजेश दीक्षित

होमियो॰ उपचार केवल चिकित्सकों के उपयोगार्थ

घर बैठे ज्योतिषी बनिए

[सरल एवं बोधगम्य विधि से 'ज्योतिष-विद्या का ज्ञान' तथा व्यक्ति के जीवन में आयी व्याधियों का 'होम्योपैथिक चिकित्सा-विधि से निदान' प्रस्तुत करके सम्पत्ति व सम्मान का अवसर प्रदान कराने वाली हिन्दी जगत् की श्रेष्ठतम कृति]

रचयिता :

विद्या-वारिधि, दैवज्ञ-बृहस्पति

आचार्य पं॰ राजेश दीक्षित

['गिनीश बुक आफ दी वर्ल्ड रिकार्डस' में नामांकित विश्व में सबसे अधिक ग्रन्थों के प्रणेता]



प्रकाशक

रोजगार-प्रकाशन

हालनगंज, मथुरा—281001 (उ॰ प्र॰)

© प्रकाशक

रोजगार-प्रकाशन
हालनगंज, मथुरा

□

संस्करण : नवीन

□

मूल्य : 20/रुपये

□

मुद्रक :
प्रमोद प्रिन्टर्स, मथुरा

"GHAR BAITHE JYOTISHI BANIYE"

By Pt. Rajesh Dixit

चमत्कारी ज्योतिष विज्ञान और यह पुस्तक : जरूरी बातें

• पृथ्वी पर जब भी कोई प्राणी जन्म लेता है, उस समय आकाश-मंडल में भ्रमण कर रहे विभिन्न ग्रहों की राशियाँ उस पर अपना स्थायी-प्रभाव अंकित कर देती हैं। यद्यपि दैनिक ग्रह-गति भी प्रत्येक प्राणी को न्यूनाधिकरूप में प्रभावित करती रहती है, तथापि जन्मकालीन ग्रह-स्थिति का प्रभाव आजीवन अपना परिणाम प्रदर्शित करता रहता है।

• 'कौन-सा ग्रह किस स्थिति में क्या प्रभाव डालता है'—इस सम्बन्ध में विभिन्न मनीषियों द्वारा समय-समय पर जो अनुसन्धान किए गए हैं, उन पर आधारित अनुभवों को ज्योतिषशास्त्र में लिपिबद्ध किया गया है। यों, **इस शास्त्र को 'वेद' का 'नेत्र' कहकर भी सम्बोधित किया गया है**। जिस प्रकार नेत्रों द्वारा विभिन्न वस्तुओं का ज्ञान मिलता है, उसी प्रकार इस शास्त्र के द्वारा मनुष्य-जीवन में घटने वाली भूत, वर्तमान तथा भविष्यत् कालीन घटनाओं की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

• **'जन्मकुण्डली'** किसी जातक की जन्मकालीन ग्रह-स्थिति का नक्शा होती है, जिसमें बारह राशियों के घर के प्रतीक बारह 'भाव' अर्थात् खाने (कोष्ठक) होते हैं तथा उनके भीतर विभिन्न राशियों के अंक तथा उन राशियों में तात्कालिक रूप से स्थित ग्रहों के नामों का उल्लेख किया जाता है। यह जन्म-कुन्डली ही जातक के जीवन की घटनाओं को ज्ञात करने का मुख्य आधार होती है।

• अन्य शास्त्रों की भाँति ज्योतिष-शास्त्र भी अगम-अपार है। इसके दो मुख्य विभाग हैं—(1) गणित और (2) फलित, 'गणित' के आधार पर जन्मे कुन्डली का निर्माण किया जाता है तथा 'फलित' के आधार पर घटने वाली घटनाओं की जानकारी प्राप्त की जाती है। गणित विभाग कुछ कठिन है तथापि इसका भी संक्षिप्त परिचय दिया गया है तथा विस्तार से फलित-अंग का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

• ज्योतिष सम्बन्धी प्राचीन ग्रन्थ संस्कृत भाषा में हैं। उन्हें समझने में पाठकों को कठिनाई होती है। सामान्य शिक्षितों के लिए तो वे दुर्बोध ही है। अस्तु, इस पुस्तक को प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों की प्रामाणिक सामग्री के आधार पर, सरल हिन्दी भाषा में लिखा गया है, ताकि सर्व-साधारण हिन्दी के पाठक इसका भली भाँति लाभ उठा सकें।

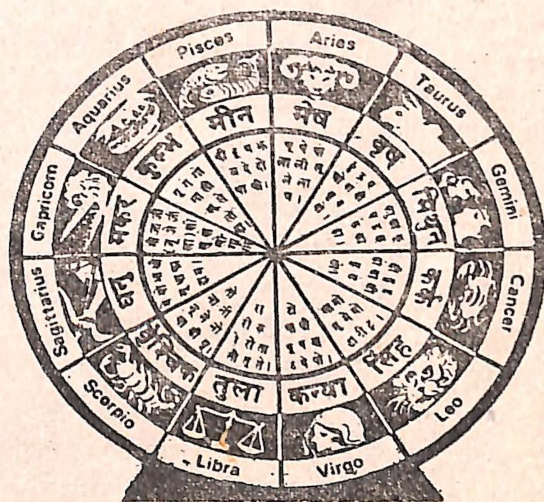
• इस पुस्तक के अध्ययन से सौर मण्डल की समस्त जानकारी तथा जन्म के समय जातक पर पड़े उसके प्रभाव, समय का वर्गीकरण और उसका आधार, बाहर राशियों का सम्पूर्ण परिचय-गुण विरोध, उनके स्वामी, विभाग। सूर्य, चन्द्र, राहु, केतु आदि सभी ग्रहों का परिचय और उनके मानव के जीवन पर पड़े प्रभाव, प्रतिकूल ग्रहों को अनुकूल बनाकर कैसे जीवन को उन्नत करें, इसकी विधियाँ। जन्मपत्री देखना तथा उसका फलादेश करके समाज में ख्याति व अर्थार्जन करना। जन्मतिथि के आधार पर जीवन की दिशा निर्धारित करना (व्यक्ति का भूत-भविष्य व वर्तमान बतलाना), शुभाशुभ ग्रहों के फल व अनुकूलन की दिशायें भावेश फल, ग्रह-युति-फल, यात्रा सम्बन्धी, बिचार, नामकरण, मुण्डन-संस्कार, यज्ञोपवीत धारण कराना, धार्मिक कार्य सम्पन्न कराने, भवन बनाने, घर में प्रवेश करने तथा व्यापार का शुभारम्भ करने के विविध मुहूर्तों की सम्पूर्ण जानकारी इस पुस्तक में दी गयी है।

• साथ ही इस प्रामाणिक ग्रन्थ को और अधिक उपादेय बनाने की दृष्टि से पुस्तक के अन्तिम पृष्ठों में मानव-जीवन को प्रभावित करने वाली नाना भाँति की आधि और व्याधियों का निराकरण भी 'होमियोपैथिक

पद्धति से किया गया है जिससे व्यक्ति किसी प्रकार से रोग-शोक मुक्त रह कर सुख-समृद्धि के मार्ग पर आगे और आगे बढ़ सके। अस्तु,

• आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि घर बैठे ही अपने लघु प्रयासों से ही ज्योतिष विद्या का ज्ञान प्राप्त करके ज्योतिषी बनने के अभिलाषी व्यक्तियों को यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध होगी। मैं पाठकों के कल्याण और इस पुस्तक के द्वारा मान-सम्मान, धनधान्य से सम्पन्न होने की कामना करता हूँ।

— राजेश दीक्षित



विषय-सूची

क्रमांक पृष्ठांक

1. **परिचय : ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञातव्य** 9
: ज्योतिष्क और ज्योतिषशास्त्र : विश्व-ब्रह्माण्ड और ग्रह-नक्षत्र
: सौर-जगत्, तारे ग्रह तथा धुमकेतु : आकाश और पृथ्वी
: फलित-ज्योतिष के ग्रह : ज्योतिषशास्त्र की शाखाएँ

2. **काल-मान : समय-विभाग, दिन, पक्ष, मास आदि** 18
: काल-गणना, खगोल-ज्ञान, प्रचलित दिनादि-मान
: दिन, दिन के अन्य भाग, तिथि, पक्ष, मास, वर्ष
: अयन, ऋतु, संवत्सर, युगादि-मान।

3. **वार, प्रहर, नक्षत्र, योग, करण, मुहूर्त आदि** 27
: वार, प्रहर, नक्षत्र, नक्षत्रों के चरणाक्षर
: योग, करण, मुहूर्त, संक्रान्ति

4. **राशि : नक्षत्र-चरण, स्वामी, स्वरूप, गुण-धर्म आदि** 35
: नक्षत्र-चरण और राशि राशियों के स्थायी-ग्रह : शून्यसंज्ञक राशियाँ
: राशियों का अंग विभाग : राशियों के अंग्रेजी तथा अरबी नाम
: राशि-स्वरूप, स्वभाव और गुण-धर्म : राशि-मैत्री, राशि-स्वरूप की आवश्यकता : राशियों की संज्ञा तथा दृष्टि।

5, **ग्रह : स्वरूप, गुण, धर्म, मैत्री, बल आदि** 42
: सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु
: ग्रहों की पारस्परिक नैसर्गिक-मैत्री : ग्रहों की तात्कालिक-मैत्री
: ग्रहों का उदयास्त : ग्रहों के बल : ग्रहों का राशि-भोग-काल
: ग्रहों की 'बाल' आदि अवस्थाएँ : ग्रहों की अस्त आदि संज्ञाएँ
: ग्रहों का : शुभाशुभत्व, ग्रह-युति, ग्रहों की दृष्टि तथा स्थान-सम्बन्ध
: ग्रहों का स्थानाधिपतित्व : ग्रहों की स्वक्षेत्रीय व उच्च, नीच तथा त्रिकोणस्थ स्थितियाँ : ग्रहों के बलाबल : ग्रहों के पद का प्रभाव

6. जन्म-कुण्डली : भाव तथा भावेश विचार 74

: जन्म-कुण्डली की अचानक जानकारी

: भाव, भावों की विशिष्ट संज्ञाएँ : भावों के विचारणीय विषय

: भावेश के सम्बन्ध में विशेष विचार।

7. जन्म का दिन, तिथि, पक्ष, मास तथा नक्षत्र फल 87

: जन्म-दिन का फल, जन्म-तिथि फल, जन्म-पक्ष फल

: जन्म-मास फल, जन्म-नक्षत्र फल।

8. जन्म-लग्न तथा जन्म-राशि फल

: जन्म-लग्न फल : जन्म-राशि फल

9. ग्रहों की उच्च-नीचादि स्थिति का प्रभाव 101

: उच्चराशिस्थ ग्रहों का फल : मूल त्रिकोणराशिस्थ ग्रहों का फल

: स्वक्षेत्री ग्रहों का फल : भिन्नक्षेत्री ग्रहों का फल

: शत्रु क्षेत्री ग्रहों का फल : नीचराशिस्थ ग्रह का फल

10. ग्रहों का भाव तथा राशि-फल 107

: ग्रहों का भाव-फल, ग्रहों का राशि-फल

11. विभिन्न भावस्थ शुभाशुभ ग्रहों का फल 135

12. भावेश-फल 138

13. ग्रह-युति-फल 150

: दो ग्रहों की युति : तीन ग्रहों की युति : चार ग्रहों की युति

: पाँच ग्रहों की युति : छः ग्रहों की युति

: सात ग्रहों की युति का फल।

14. मुहूर्त-विचार 158

: यात्रा-सम्बन्धी मुहूर्त, : विवाह सम्बन्धी मुहूर्त

: नामकरण मुहूर्त, : मुन्डन-संस्कार मुहूर्त

: उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त, : विद्यारम्भ मुहूर्त, । धार्मिक-कृत्य मुहूर्त,

: गृह-निर्माण मुहूर्त, : गृह-प्रवेश मुहूर्त, : व्यवसायारंभ मुहूर्त।

ज्योतिष : रोग और उनकी होमियोपैथिक चिकित्सा

- मृगी आना 161
- विक्षिप्तता अथवा उन्माद 162
- गंजापन 163
- नासिका सम्बन्धी व्याधियां 164
- नेत्र-रोग 165
- कर्ण (कान) के रोग 168
- वाणी-दोष 170
- दन्त-रोग 171
- कण्ठ रोग 172
- मुख की पीड़ाएँ 172
- हृदय-रोग 174
- क्षय-रोग (तपैदिक) टी० बी० 176
- उदर-रोग 177
- वात-रोग 182
- प्रमेह ऐवं वीर्य-विकार 184
- सूजाक (मूत्रकृच्छ) 185
- आतशक (उपदंश) 186
- नपुंसकता 186
- अंडवृद्धि-रोग 187
- गुदा-रोग 188
- भगंदर 190
- श्वेतकुष्ठ 190
- खाँसी, दमा, कफ रोग 191
- हैजा 192
- रक्त-विकार 193
- चेचक 194
- चोट, घाव, व्रण 195
- हड्डी टूटना (अस्थिभङ्ग) 197
- चर्मरोग 198
- 'परिवार-कल्याण' कीं बाते 199

1 परिचय : ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक ज्ञातव्य

ज्योतिष्क और ज्योतिष शास्त्र

नीलाकाश में जो असंख्य चमकते हुए ज्योतिष्पिण्ड दिखाई देते हैं, उन्हें 'ज्योतिष्क' कहा जाता है। इनमें दिन के समय केवल सूर्य दृष्टि-गोचर होता है, क्योंकि उसके प्रकाश की तीव्रता में अन्य सभी ज्योतिष्क छिप जाते हैं, परन्तु रात्रि के समय, सूर्य के छिप जाने पर चन्द्रमा सहित लाखों-करोड़ों छोटे-बड़े तारे चमकते दिखाई देते हैं। इनमें जो ज्योतिष्पिण्ड सूर्य के चारों ओर घूमते रहते हैं उन्हें 'ग्रह' कहते हैं तथा जो अपने स्थान पर ही स्थिर बने रहते हैं, उन्हें 'तारा' कहा जाता है।

हमारी पृथ्वी भी एक ग्रह है और यह भी सूर्य की परिक्रमा करती रहती है। सुर्य के चारों ओर घूमते रहने के कारण ही पृथ्वी पर दिन तथा रात होते हैं। पृथ्वी का जो भाग जिस समय सूर्य के सामने रहता है, उसमें 'दिन' होता है तथा जो भाग पीछे की ओर रहता है, उसमें 'रात' होती है। अन्तरिक्ष में जाकर देखने से अन्य ग्रह-नक्षत्रों की भाँति पृथ्वी भी चमकती हुई दिखाई देती है।

जिस शास्त्र के द्वारा इन ज्योतिष्क पिण्डों—सूर्य, चन्द्र, ग्रह, तारे, पृथ्वी आदि—के सम्बन्ध में विचार किया जाता है, उसे 'ज्योतिष शास्त्र' कहते हैं।

ज्योतिष शास्त्र को वेद का एक अङ्ग माना जाता है तथा 'वेद' को संसार के सबसे प्राचीन ग्रन्थ के रूप में मान्यता प्राप्त है, इससे सिद्ध है कि ज्योतिष-विद्या भी अत्यन्त प्राचीन है, समय-समय पर विभिन्न विद्वान इसे समृद्ध बनाते रहे हैं।

विश्व, ब्रह्माण्ड और ग्रह-नक्षत्र

हम जहाँ रहते हैं तथा हम अपने चारों ओर तथा ऊपर-नीचे जो कुछ देखते हैं तथा जिसके विषय में हमें बहुत कुछ जानकारी प्राप्त हो चुकी है, उसे 'विश्व', 'संसार' अथवा 'जगत' (world) के नाम से पुकारा जाता है। सूर्य, चन्द्र, ग्रह, तारे आदि भी इसी विश्व के अङ्ग हैं।

पौराणिक मान्यता के अनुसार 'ब्रह्माण्ड' (Universe) के भीतर असंख्य विश्व होते हैं। ब्रह्माण्ड का विस्तार, अनन्त, अपार तथा अनुभव-गम्यता से भी परे है। चूंकि ब्रह्माण्ड के अन्य भागों के विषय में हमारी कोई जानकारी नहीं है, अतः यहाँ उसके सम्बन्ध में अधिक चर्चा करना अप्रासाङ्गिक होगा। केवल इतना जान लेना ही पर्याप्त है कि हमारा यह 'विश्व' ब्रह्माण्ड का एक भाग (हिस्सा) है।

विश्व की संरचना के सम्बन्ध में आधुनिक वैज्ञानिकों के मत भिन्न-भिन्न हैं। वे इसे वर्तमान स्वरूप पाने में करोड़ों वर्ष का समय व्यतीत हुआ मानते हैं तथा ग्रहों की उत्पत्ति सूर्य के विभाजन से तथा विभिन्न प्रकार के प्राणियों की उत्पत्ति का प्रारम्भ क्रमशः एक कोशीय-जीव से मानकर चलते हैं। उनकी राय में करोड़ों वर्ष पूर्व यह पृथ्वी विशालकाय जीव-तन्तुओं से भरी हुई थी, जो कालान्तर में विलुप्त होते चले गए तथा मनुष्य का वर्तमान रूप बन्दर से विकसित हुआ है।

हमारा उद्देश्य वैज्ञानिकों की मान्यताओं के चक्कर में पड़ना भी नहीं है। चूंकि हम ज्योतिष के उन सिद्धान्तों पर लिखने जा रहे हैं, जिन्हें भारतीय मनीषियों द्वारा स्थापित किया गया है, अतः विश्व-ब्रह्माण्ड की संरचना के सम्बन्ध में भी हमें उन्हीं का मत ग्रहण करना उचित रहेगा।

'ब्रह्म-पुराण' के अनुसार—"चैत्र शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को रविवार के दिन प्रातः सूर्योदय के समय जब सभी ग्रह अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि के आदि में थे, उसी समय लोक-सर्जक पितामह ब्रह्मा ने सम्पूर्ण विश्व-ब्रह्माण्ड की रचना की थी। इसीको ब्रह्मा की 'सृष्टि' भी कहा जाता है। वश्व के कार्यारम्भ के साथ ही मन्वन्तर, युग, वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष तथा वार

तथा दिन का प्रारम्भ भी हुआ। काल-गणना का सूत्रपात भी उसी क्षण से हुआ है।''

'सिद्धान्त शिरोमणि' के अनुसार—''सर्वप्रथम सूर्योदय 'लङ्का' में हुआ (यहाँ 'लङ्का' से तात्पर्य उस स्थान से है, जहाँ बाद में लङ्का नगरी बसी तथा सर्वप्रथम सूर्योदय से तात्पर्य यह है कि वहाँ सबसे पहले सूर्य दिखाई दिया), उस वार (अर्थात् दिन) का नाम 'रविवार' पड़ा। उस दिन 'सायन' तथा 'निरयन' (इनके सम्बन्ध में आगे लिखा जाएगा) दोनों प्रकार से सभी ग्रह मेष राशि के प्रारम्भ में थे अर्थात् 'विषुवद् रेखा' पर उदित हुए थे। तभी से चैत्र आदि मास, पक्ष, वर्ष, युग आदि का प्रारम्भ हुआ है।''

सौर-जगत् : तारे, ग्रह तथा धूमकेतु

हमारे विश्व अर्थात् जगत् को सूर्य द्वारा प्रकाश मिलता है तथा हमारी पृथ्वी एवं सभी ग्रह सूर्य की ही परिक्रमा करते रहते हैं, अतः इस जगत् को 'सौर-जगत्' अर्थात् 'सूर्य का संसार' कहा जाता है। सूर्य ही इस जगत् का 'मध्य' अर्थात् 'केन्द्र' है। पृथ्वी, चन्द्रमा, ग्रह, उपग्रह, नक्षत्र तथा धूमकेतु आदि सभी सूर्य के ही विशाल-परिवार के अङ्ग हैं।

रात के समय आकाश में दिखाई देने वाले, दूरवर्ती ज्योतिष्पिण्डों को 'तारा' कहा जाता है। ये तीन प्रकार के होते हैं—(1) स्थिर, (2) संचरण-शील तथा (3) धूमकेतु आदि।

'स्थिर-तारे' पृथ्वी से बहुत दूर हैं। वे अपने स्थान पर स्थिर बने रहते हैं तथा अपनी ही कान्ति से चमकते हैं। पृथ्वी से अत्यधिक दूर होने के कारण ही वे बहुत छोटे दिखाई देते हैं। इन तारों की संख्या अरबों-खरबों में हैं। सूर्य के अतिरिक्त जो स्थिर तारा पृथ्वी के सबसे अधिक निकट माना जाता है, वह भी पृथ्वी से 'छिहत्तर खरब मील' की दूरी पर है।

'प्रकाश की गति' 1, 86, 330 मील प्रति सैकिण्ड की आँकी गई है। जो तारा हमारी पृथ्वी के सबसे समीप है, उसका प्रकाश यहाँ तक आने में 4।। वर्ष का समय लगता है। अनेक तारे तो इतनी दूरी पर हैं कि जबसे सृष्टि उत्पन्न हुई है, तब से अभी तक उनका प्रकाश पृथ्वी पर आ ही नहीं

पाया है। पृथ्वी से तारों की दूरी का अनुमान इसीसे लगाया जा सकता है।

इन तारों की 6 कक्षाएं निश्चित की गई हैं। सबसे बड़े तारे प्रथम कक्षा के तथा सबसे छोटे छठी कक्षा के माने जाते हैं।

'संचरणशील' तारों को 'ग्रह' कहा जाता है। ये सूर्य के चारों ओर परिक्रमा लगाते हुए अपना स्थान बदलते रहते हैं। इनमें अपनी कान्ति नहीं होती, अपितु ये पृथ्वी के समान ही सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं। पृथ्वी, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र तथा शनि की गणना ग्रह में की जाती है। नेपच्युन, हर्शल तथा प्लूटो नामक तीन अन्य ग्रहों को भी आधुनिक काल में ढूँढ़ निकाला गया है। इन ग्रहों की भी कुछ छोटे-छोटे ज्योतिष्पिण्ड परिक्रमा करते रहते हैं, उन्हें सम्बन्धित ग्रहों का 'उपग्रह' कहा जाता है। अब तक ऐसे 27 उपग्रहों की खोज की जा चुकी है।

आधुनिक-वैज्ञानिक '**चन्द्रमा**' को पृथ्वी का 'उपग्रह' मानते हैं, परन्तु भारतीय-ज्योतिष तथा पुराणों के मत से चन्द्रमा एक स्वतन्त्र 'ग्रह' है। यह बात अलग है कि वह सूर्य की बजाय पृथ्वी की परिक्रमा करता है तथा पृथ्वी चूँकि सूर्य की परिक्रमा करती रहती है अतः चन्द्रमा भी पृथ्वी के साथ ही सूर्य की भी परिक्रमा कर लेता है।

जो तारा-समूह यदा-कदा ही कुछ समय के लिए दिखाई देते हैं इन्हें '**धूमकेतु**' कहा जाता है। एक-एक धूमकेतु में हजारों तारे होते हैं, परन्तु आधुनिक-वैज्ञानिक धूमकेतुओं को गैस के ऐसे पिण्डमात्र ही मानते हैं, जिनका विस्तार लाखों मील का होता है! ये धूमकेतु भी अनेक हैं। कोई 75 वर्ष बाद, कोई 150 वर्ष बाद तो कोई इससे भी अधिक समय बाद दिखाई देता है। ये भी अनन्त अन्तरिक्ष में निरन्तर भ्रमण करते रहते हैं। इनकी निश्चित संख्या तथा अन्तरिक्ष में स्थिति का ज्ञान नहीं हो पाया है।

आकाश में तारों का एक बड़ा समूह हमें '**आकाशगंगा**' के रूप में भी दिखाई देता है। इसके अन्तर्गत करोड़ों तारे माने जाते हैं तथा सबसे छोटा तारा भी पृथ्वी के आकार से हजारों गुना बड़ा है।

'**सूर्य**' एक 'स्थिर-तारा' है। यह अपने स्थान पर ही बना रहता है।

पृथ्वी सहित सभी ग्रह इसकी परिक्रमा करते रहते हैं। परन्तु उन सबके कारण सूर्य भी भ्रमण करता हुआ-सा प्रतीत होता है, अतः ज्योतिष शास्त्र में इस 'प्रतीति' के कारण ही इसकी गणना भी 'ग्रहराज' के रूप में ग्रहों के अन्तर्गत की गई है। सूर्य हमारी पृथ्वी से लगभग 110 गुना बड़ा है, परन्तु यह आकाश-स्थित अन्य तारों के व्यास से आकार में सबसे छोटा है। भारतीय पुराणों में बारह सूर्यों की कल्पना की गई है। आधुनिक वैज्ञानिक भी यह मानते हैं कि अनन्त आकाश में एक से अधिक सूर्यों की उपस्थिति संभव है।

आकाश और पृथ्वी

शून्य-स्थान को 'आकाश' कहते हैं। सभी तारे, ग्रह, उपग्रह, पृथ्वी, धूमकेतु, सूर्य, चन्द्र आदि पारस्परिक आकर्षण अथवा किसी अन्य प्रक्रिया द्वारा निराधार होते हुए भी इसी आकाश में संचरणशील अथवा स्थिर स्थिति में विद्यमान हैं। आकाश का विस्तार अनन्त-अपार है। यह कितना बड़ा है, इसे कोई नहीं जानता।

'पृथ्वी' का आकार नारंगी की भाँति गोल है, इसके दोनों सिरे कुछ चपटे हैं, जिन्हें 'उत्तरी ध्रुव' तथा 'दक्षिणी ध्रुव' कहा जाता है। 'विषुवद रेखा' पर इसका व्यास 7, 926 मील तथा परिधि 24, 900 मील है। यह नित्य 23 घण्टा $56\frac{1}{2}$ मिनट में अपनी धुरी पर एक चक्कर पूरा कर लेती है। सूर्य के चारों ओर भ्रमण करने में इसे 365 दिन, 6 घण्टा, 9 मिनट तथा 9 सैकिण्ड का समय लगता है। सूर्य से पृथ्वी की दूरी 9, 30, 00, 000 मील (मतान्तर से—14, 90, 00, 000 किलोमीटर) है। भ्रमण करते समय पृथ्वी का जो भाग सूर्य की ओर रहता है, उसमें दिन तथा दूसरे आधे भाग में रात्रि होती है। दिन-रात के छोटे बड़े होने का कारण भी यही संचरण-प्रक्रिया है। ऋतुओं का परिवर्तन भी इसी भ्रमण के कारण होता है। चूंकि पृथ्वी पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है, अतः हमें सूर्य आदि ग्रह पूर्ण से पश्चिम की ओर जाते हुए प्रतीत होते हैं। सूर्य का प्रकाश पृथ्वी तक आने में लगभग 8।। मिनट का समय लगता है। पृथ्वी जिस मार्ग से घूमती है, वह पूर्णतः गोल नहीं है तथा सूर्य भी पृथ्वी के ठीक

वृत्त-केन्द्र में नहीं है। पृथ्वी का अक्ष लगभग 23 अंश एक ओर को झुका हुआ है। इसी कारण सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय में अन्तर पड़ता रहता है।

पृथ्वी के जो नक्शे बनाये जाते हैं, उनमें पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण की ओर कुछ रेखाएँ खिची रहती हैं। पूर्व से पश्चिम वाली रेखाओं को '**अक्षाँश**' कहा जाता है तथा पश्चिम **रेखाऐं** 'देशान्तर' संज्ञक होती हैं। पृथ्वी के नक्शे के ठीक मध्यभाग में एक 'मध्य-रेखा' की कल्पना की जाती हैं, जिसे '**विषुवद् रेखा**' का नाम दिया गया है। प्राचीन काल में यह 'मध्य-रेखा' अर्थात् 'विषुवद्-रेखा' '**लङ्का**' से आरम्भ होकर, उज्जैन, कुरुक्षेत्र आदि स्थानों का स्पर्श करती हुई 'मेरु-पर्वत' अर्थात् 'उत्तरी ध्रुव' तक पहुँचाती थी, परन्तु आधुनिक-युग को नक्शों में अब इस रेखा का आरम्भ इंग्लैण्ड के '**ग्रीन-विच**' नामक स्थान से माना जाता है।

मध्य रेखा से पूर्व अथवा पश्चिम का विचार करने को '**देशान्तर-संस्कार**' कहा जाता है। लङ्का (अथवा 'ग्रीन विच्') नामक स्थान चूँकि मध्य रेखा के समीप है, अतः वहाँ दिन-रात बराबर के होते हैं, परन्तु वहाँ से जितना उत्तर अथवा दक्षिण की ओर बढ़ा जाता है रात-दिन की समयावधि से उतना ही अन्तर पड़ता चला जाता है। इसी कारण विभिन्न स्थानों पर सूर्य तथा विभिन्न राशियों के 'उदय' एवं 'अस्त' होने के समय में भी असर पड़ता है।

भूगोल में विषुवद रेखा से उत्तर की ओर $23\frac{1}{2}$ अंश की दूरी पर '**कर्करेखा**' तथा दक्षिण की ओर $23\frac{1}{2}$ अंश की दूरी पर '**मकर रेखा**' कल्पित की गई है।

जिस प्रकार पृथ्वी पर एक मध्य-रेखा की कल्पना की गई है, उसी प्रकार आकाश में भी एक '**मध्य रेखा**' मान ली गई है। उसके 8 अंश उत्तर तथा 8 अंश दक्षिण तक 'मेष' आदि द्वादश राशियों की स्थिति है।

अंश, राशि और नक्षत्र

गणित में सब वस्तुओं को 360 अंशों (भागों) में बाँटने का नियम

है। इसी नियमानुसार पृथ्वी को भी 360 अंशों अर्थात् भागों में बाँटा गया है। चूँकि रात-दिन में कुल मिलाकर 24 घण्टे होते हैं, अतः पृथ्वी 1 घण्टे में 15 अंश चलती अर्थात् घूमती है इस प्रकार पृथ्वी को 1 अंश चलने में 4 मिनट का समय लगता है।

भूगोल की तरह खगोल (आकाश मण्डल) को भी 360 अंशों में बाँटा गया है। इसके अतिरिक्त उसे 108 भागों तथा 27 नक्षत्रों में भी बाँटा गया है।

खगोल का कल्पित मध्य-रेखा के 8 अंश उत्तर तथा 8 अंश दक्षिण तक मेष आदि बारह राशियों की स्थिति है, अतः खगोल के कुल 360 अंशों में 12 राशियों के बँट जाने से प्रत्येक '**राशि**' 30 अंश अथवा 9 भागों की होती है।

उक्त बारह राशियों के अन्तर्गत 27 '**नक्षत्र**' आते हैं, अतः एक नक्षत्र 13 'अंश' तथा 20 'कला' का होता है। इस नियमानुसार एक राशि में $2\frac{1}{4}$ नक्षत्र आते हैं।

आकाश-मण्डल में अनेक तारों के समूह द्वारा जो विभिन्न प्रकार जो आकृतियाँ-सी बनती हैं, उन्हें '**नक्षत्र**' कहा जाता है। जिस प्रकार पृथ्वी की दूरी मील, कलङ्कि, किलोमीटर, मीटर आदि के रूप में नापी जाती है, उसी प्रकार आकाश-मण्डल की दूरी को नक्षत्रों द्वारा नापा जाता है, अस्तु नक्षत्रों को आकाश के 'दूरी सूचक स्तम्भ' (मील के पत्थर तुल्य) भी कहा जा सकता है।

सम्पूर्ण आकाश मण्डल को 27 नक्षत्रों में विभाजित करने की प्रक्रिया में प्रत्येक नक्षत्र के अन्तर्गत दीख पड़ने वाली तारा-समूह की आकृति के आधार पर, उसका एक-एक अलग नाम भी रख दिया गया है। सत्ताईस नक्षत्रों के नाम क्रमशः निम्नलिखित हैं—

(1) अश्विनी, (2) भरणी, (3) कृतिका, (4) रोहिणी, (5) मृग-शिरा, (6) आर्द्रा, (7) पुनर्वसु, (8) पुष्प, (9) आश्लेषा, (10) मघा, (11) पूर्वा फाल्गुनी, (12) उत्तरा फाल्गुनी, (13) हस्त, (14) चित्रा,

(15) स्वाति, (16) विशाखा, (17) अनुराधा, (18) ज्येष्ठा, (19) मूल, (20) पूर्वाषाढ़ा, (21) उत्तराषाढ़ा (22) श्रवण, (23) धनिष्ठा, (24) शतभिषा, (25) पूर्वा भाद्रपदा, (26) उत्तरा भाद्रपदा, (27) रेवती ।

भारतीय आचार्यों ने 'अभिजित्' नामक एक अन्य नक्षत्र को भी माना है तथा आकाश में इस नक्षत्र के तारों की स्थिति भी मानी है । यह नक्षत्र उत्तराषाढ़ा तथा श्रवण नक्षत्रों के मध्य में स्थित है, परन्तु इसे आकार में छोटा अर्थात् 13 अंश 20 कला अर्थात् 60 घटी के स्थान पर केवल 19 घटी का ही माना जाता है । इसके लिए 'उत्तरा षाढ़ा' नक्षत्र की अन्तिम 15 घटी तथा 'श्रवण' नक्षत्र की प्रारम्भिक 4 घटी ली गई है । इसके कारण में दोनों नक्षत्र 60-60 घटी के न रह कर, उत्तराषाढ़ा 45 घटी का तथा श्रवण नक्षत्र 56 घटी के रह गए हैं ।

चन्द्रमा जब सूर्य से $13\frac{1}{3}$ अंश की दूरी पर पहुँचता है तब एक नक्षत्र की सीमा समाप्त हो जाती है और वहीं से दूसरे नक्षत्र का प्रारम्भ होता है । नक्षत्रों के विषय में अन्य बातें आगे लिखी जायेंगी ।

'राशि' का अर्थ है—'ढेर' अथवा 'समूह' । आकाश में फैले हुए तारों को 12 समूहों में बाँट कर, प्रत्येक समूह की आकृति के आधार पर, अलग-अलग नाम रख दिए गये हैं, जो क्रमशः इस प्रकार हैं—(1) मेष, (2) वृष, (3) मिथुन, (4) कर्क, (5) सिंह, (6) कन्या, (7) तुला, (8) वृश्चिक,)9) धनु, (10) मकर, (11) कुम्भ तथा (12) मीन, राशियों के विषय में अन्य बातें आगे लिखी जायेंगी ।

फलित-ज्योतिष के ग्रह

ग्रहों के सम्बन्ध में पहले बताया जा चुका है, परन्तु फलित-ज्योतिष के ग्रहों में कुछ भिन्नता पाई जाती है । सबसे पहली बात तो यह है कि ज्योतिष शास्त्र द्वारा पृथ्वी पर निवास करने वाले प्राणियों अथवा पदार्थों के विषय में जानकारी प्राप्त की जाती है, अतः इसमें पृथ्वी को 'ग्रह' के रूप में नहीं लिया जाता, परन्तु पृथ्वी के उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुव की छायाऐं भी सूर्य की किरणों से परावर्तित होकर पृथ्वीवासियों को प्रभावित करती हैं, अतः उन्हें 'छाया-ग्रह' के रूप में 'राहु' तथा केतु' का नाम देकर ग्रहों के अन्तर्गत लिया गया है ।

फलित ज्योतिष के मुख्य ग्रह 7 हैं—(1) सूर्य, (2) चन्द्र, (3) मंगल, (4) बुध, (5) वृहस्पति, (6) शुक्र और (7) शनि। प्राचीन भारतीय ज्योतिष-ग्रंथों में इन सात ग्रहों को ही मान्यता दी गई है—परन्तु बाद में इनमें 'राहु' तथा 'केतु' नामक दोनों छाया-ग्रहों को भी सम्मिलित कर लेने मे ग्रहों की कुल संख्या 9 हो गई।

आधुनिक खगोल-शास्त्रियों ने विगत 200 वर्षों के भीतर सौर-जगत् में (1) हर्शल, (2) नेपच्यून तथा (3) प्लूटो-नामक तीन अन्य ग्रहों की भी खोज की है। 'नभ-चक्र' में शनि की कक्षा सबसे ऊपर है, शनि से नीचे वृहस्पति, वृहस्पति से नीचे मंगल, मंगल से नीचे सूर्य, सूर्य से नीचे शुक्र, शुक्र से नीचे बुध तथा बुध से नीचे चन्द्रमा की कक्षाएें हैं। हर्शल की कक्षा शनि से ऊपर, नेपच्यून की हर्शल से ऊपर तथा प्लूटो की नेपच्यून से भी ऊपर है।

पाश्चात्य ज्योतिषी इन तीन नवीन अन्वेषित ग्रहों—हर्शल, नेपच्यून तथा प्लूटो का भी पृथ्वी एवं मानव-जीवन पर कुछ प्रभाव पड़ना स्वीकार करते हैं, परन्तु भारतीय-ज्योतिष में अभी इन्हें ग्रह-फलादेश के लिए मान्य नहीं किया गया है तथा पूर्वोक्त 7 ग्रह तथा 2 छायाग्रह-कुल 9 ग्रहों के आधार पर ही फलाफल का विचार किया जाता है।

ज्योतिष-शास्त्र की शाखाएँ

'भारतीय ज्योतिष-शास्त्र' के वर्तमान-काल में 5 मुख्य विभाग माने जाते हैं—(1) सिद्धान्त, (2) संहिता, (3) होरा, (4) प्रश्न और (5) मुहूर्त। 'सिद्धान्त' के अन्तर्गत भूगोल, खगोल, ग्रह-गति तथा गणित आदि की, 'संहिता' के अन्तर्गत भृगुसंहिता, वासही, संहिता आदि मुख्य ग्रन्थों की, 'होरा' के अन्तर्गत जन्मपत्री आदि के फलादेश की, 'प्रश्न' के अन्तर्गत विभिन्न प्रश्नों के उत्तर ज्ञात करने की विधियों की तथा 'मुहुर्त्त' के अन्तर्गत विभिन्न कार्यों के लिए शुभाशुभ समय ज्ञात करने की विधियों की गणना की जाती है। इनके अतिरिक्त तार्णिक, (वर्षफल), सम्वत्सर-फल, भूकम्प-विचार, स्वर, रमल आदि भी इसी शास्त्र की उप-शाखाऐं है।

2 काल-मान, समय-विभाग दिन, पक्ष, मास आदि

'काल' शब्द 'समय' का पर्यायवाची है । ज्योतिष-शास्त्र इसीपर आधारित है । काल अर्थात् समय को नापने के अनेक पैमाने निश्चित किए गए हैं । नीचे उनका उल्लेख किया जा रहा है । प्रत्येक ज्योतिषी के लिए इनका ज्ञान आवश्यक है—

काल-गणना

एक 'लघु मात्रा' के उच्चारण अथवा एक बार आँख के पलक को गिराने में जितना समय लगता है, उसे 'मात्रा' अथवा 'निमेष' कहते हैं । इस छोटी इकाई के आधार पर काल-गणना नीचे लिखे अनुसार की जाती है—

2 निमेष	=1 त्रुटि	=24 प्रति सैकिण्ड	$=\frac{1}{10}$ असु	=1 विपल
10 त्रुटि	=1 प्राण	= 4 सैकिण्ड	= 1 असु	=10 विपल
6 प्राण	=1 पल	=24 सैकिण्ड	= 6 असु	=60 विपल
$2\frac{1}{2}$ पल	=1 मिनट	=60 सैकिण्ड	= 15 असु	
60 पल	=1 घटी	=24 मिनट	= 360 असु	
$2\frac{1}{2}$ घटी	=1 घंटा	=60 मिनट	= 900 असु	= 1 होरा
60 घटी	=24 घंटा	= 1 अहोरात्र		= 24 होरा

60 प्रतिपल =1 विपल
60 विपल = 1 पल
60 पल =1 घटी या 1 दण्ड
60 घटी =1 अहोरात्र

60 प्रति सैकिण्ड	=1 सैकिण्ड	=2½ विपल
60 सैकिण्ड	=1 मिनट	
60 मिनट	=1 घण्टा	
24 घण्टे	=एक दिन-रात	

खगोल-मान

60 प्रति विकला	=1 विकला
60 विकला	=1 कला
60 कला	=1 अंश
30 अंश	=1 राशि
12 राशि	=1 भगण (नक्षत्र-समूह)

अन्य मान

100 त्रुटि	=1 तत्पर
30 तत्पर	=1 निमेंष
18 निमेष	=1 काष्टा
30 काष्टा	=1 कला

टिप्पणी—कमल-पत्र को सुई से छेदने में जो समय लगता हैं। उसे 'त्रुटि' कहते हैं।

प्रचलित दिनादि मान

24 घंटे	=	1 दिन
7 दिन	=	1 सप्ताह
15 दिन	=	1 पक्ष
30 दिन	=	1 मास
12 मास	=	1 वर्ष

दिन

ज्योतिष शास्त्र में सूर्य तथा चन्द्रमा की गति के अनुसार 'दिन' चार प्रकार के माने गए हैं। यहाँ दिन से तात्पर्य एक दिन तथा एक रात्रि से है। ज्योतिषीय भाषा में इन्हें सम्मिलित रूप में 'अहोरात्र' कहा जाता है।

(1) **चान्द्र-दिन**—इसे 'तिथि' भी कहा जाता है। चन्द्रमा की एक

कला के भोग के समय को 'चान्द्र-दिन' कहते हैं। यह 23 होरा तथा 12 विहोरा अर्थात् 23 घंटा 12 मिनट का होता है। कभी-कभी किसी तिथि का क्षय और किसी की वृद्धि भी होती रहती है।

(2) **सौर-दिन**—सूर्य द्वारा 1 अंश के भोग के समय को 'सौर-दिन' कहते हैं। 'सौर मास' (जिसका उल्लेख आगे किया जाएगा) को 30 भागों में विभाजित कर देने पर एक 'सौर-दिन' होता है। इसे केवल 'अंश' भी कहते हैं।

(3) **नाक्षत्र-दिन**—एक नक्षत्र के भोग-काल को 'नाक्षत्र-दिन' कहते हैं। यह 23 होरा, 56 विहोरों तथा 4 प्रति विहोरा अर्थात् 23 घंटा, 56 मिनट एवं 4 सैकिण्ड का होता है।

(4) **मध्य सावन दिन**—यह एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का होता है। इसमें 24 होरा, 3 विहोरा तथा 57 प्रति विहोरा अर्थात् 24 घण्टा 3 मिनट तथा 47 सैकिण्ड का होता है।

सामान्य-व्यवहार में 60 घड़ी अथवा 24 होरा अर्थात् 24 घण्टे वाले 'सावन-दिन' का ही प्रचलन है। पञ्चाङ्गों में प्रायः उसी प्रकार के दिनों का उल्लेख रहता है।

दिन के अन्य भाग

दिन तथा रात की लम्बाई के अन्य विभाजनों के नाम निम्नलिखित हैं—

(क) **दिन के दो भाग**—(1) पूर्वाह्न तथा (2) पराह्न।

(ख) **दिन के तीन भाग**— (1) पूर्वाह्न, (2) मध्याह्न तथा (3) पराह्न।

(ग) **दिन के चार भाग**—(1) पूर्वाह्न, (2) मध्याह्न, (3) अपराह्न तथा (4) सायाह्न उक्त सभी विभाग केवल दिन अर्थात् सूर्य निकले रहने की अवधि के ही हैं।

(घ) **लग्न**—दिन तथा रात्रि के 6-6 (कुल 12) भागों को 'लग्न' कहते हैं। प्रत्येक भाग की लग्न के मेष, वृष आदि अलग-अलग नाम होते हैं।

(ङ) **प्रहर**—दिन के चौथे भाग को 'प्रहर' अथवा 'याम' भी कहते

हैं। दिन तथा रात्रि में 4-4 के हिसाब से कुल मिलाकर 8 प्रहर होते हैं। एक प्रहर 3 घण्टे का होता हैं।

(च) काल—

(1) सूर्योदय से पहले की 5 घटी का नाम = उषः काल

(2) सूर्योदय के बाद 3 घटी तक का नाम = प्रातः काल

(3) सूर्यास्त के बाद 3 घटी तक का नाम = सायं काल

(4) सूर्यास्त के बाद 6 घटी तक का नाम = प्रदोष काल

(5) अर्द्धरात्रि के मध्य की 2 घटी तक का नाम = निशीथ

तिथि

पहले बताया जा चुका है कि 'चान्द्र-दिन' को ही 'तिथि' कहते हैं। चन्द्रमा द्वारा एक नक्षत्र का संचरण पूरा करने (पार करने) में जितना समय लगता है, उसे 'तिथि' कहते हैं। चन्द्रमा जब सूर्य से 12 अंश आगे निकल जाता है, तब एक 'तिथि' हो जाती है। इस प्रकार 12-12 अंश की एक-एक तिथि पूर्ण हो जाने पर जब 'पूर्णिमा' का अन्त होता है, उस समय चन्द्रमा सूर्य से 180 अंश आगे होता है तथा 'अमावस्या' के अन्त में जब चन्द्रमा सूर्य से 360 अंश आगे होता है, तब 30 तिथियाँ पूरी हो जाती हैं।

360 अंश में 12 का भाग देने से 30 तिथियाँ प्राप्त होती हैं। 30 तिथियों के पूरा हो जाने अर्थात् चन्द्रमा द्वारा 27 नक्षत्र एवं 12 राशियों का संचरण पूरा कर लेने तथा सूर्य से 360 अंश आगे निकल जाने को एक 'चान्द्रमास' कहते हैं।

तिथियों के नाम क्रमशः (1) प्रतिपदा, (2) द्वितीया, (3) तृतीया, (4) चतुर्थी, (5) पञ्चमी, (6) षष्ठी, (7) सप्तमी, (8) अष्टमी, (9) नवमी, (10) दशमी, (11) एकादशी, (12) द्वादशी, (13) त्रयोदशी, (14) चतुर्दशी तथा (15) पूर्णिमा और अमावस्या होते हैं।

शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि को 'पूर्णिमा' तथा कृष्ण पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि को 'अमावस्या' कहा जाता है। प्रतिपदा से चतुर्दशी तक की तिथियों को लिखने के लिए 1 से 14 तक के अंक, पूर्णिमा के लिए 15 तथा अमावस्या के लिए 30 अंक प्रयोग में लाये जाते हैं।

पक्ष

पन्द्रह चान्द्र-दिवसों अर्थात् तिथियों का एक पक्ष हाता है। जिस पक्ष में चन्द्रमा की कलाओं का बढ़ना आरम्भ होता है, उसे 'शुक्ल पक्ष' तथा जिनमें घटना आरम्भ होता है, उसे 'कृष्णपक्ष' कहते हैं। शुक्लपक्ष की पन्द्र-हवीं तिथि-पूर्णिमा-को चन्द्रमा का पूर्ण रूप दिखाई देता है तथा कृष्णपक्ष की पन्द्रहवीं तिथि-अमावस्या-को चन्द्रमा अदृश्य हो जाता है।

उक्त प्रकार से एक महीने में दो पक्ष होते हैं तथा एक पक्ष 15 दिनों का होता है। परन्तु कभी-कभी तिथियों की क्षय-वृद्धि के कारण एक पक्ष घट कर 13 अथवा 14 दिन का अथवा बढ़कर 16 दिन का भी हो जाता है। यह घटा-बढ़ी चन्द्रमा की गति तथा अन्य कारणों पर निर्भर करती है। कौन सा पक्ष कितने दिनों का होगा इसकी जानकारी 'पञ्चाङ्ग' (पत्रा) द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

मास

दिन की भाँति 'मास' भी चार प्रकार के होते हैं—(1) चान्द्र, (2) सौर, (3) नाक्षत्र तथा (4) सावन।

(1) **चान्द्र-मास**—यह दो प्रकार का होता है—(क) अमान्त तथा (ख) पूर्णिमान्त। एक अमावस्या के अन्त से दूसरी अमावस्या के अन्त तक अर्थात् शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से आरम्भ कर, कृष्ण पक्ष की अमावस्या तक के 'चान्द्रमास' को 'अमान्त' कहा जाता है तथा (ख) एक पूर्णिमा के अन्त से दूसरी पूर्णिमा के अन्त तक अर्थात् कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से आरम्भ कर शुक्लपक्ष की पूर्णिमा तक के चान्द्र-मास को पूर्णिमान्त कहते हैं। इन दोनों में 'अमान्त मास' मुख्य है तथा अधिकांश-क्षेत्रों में उसी का प्रचलन भी है, परन्तु विन्ध्याचल के दक्षिण भाग में 'पूर्णिमान्त मास' को माना जाता है।

एक वर्ष में 12 चान्द्र-मास होते हैं। चान्द्रमासों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं—(1) चैत्र (चैत), (2) वैशाख (वैसाख), (3) ज्येष्ठ (जेठ), (4) आषाढ़ (असाढ), (5) श्रावण (सावन), (6) भाद्रपद (भादों), (7) आश्विन (क्वार), (8) कार्तिक (कातिक), (9) मार्ग शीर्ष (अगहन), (10) पौष (पूस), (11) माघ तथा (12) फाल्गुन (फागुन)।

सभी धार्मिक-कृत्य चान्द्र-मास के अनुसार ही किये जाते हैं ।

(2) **सौर-मास**—सूर्य जब एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है, उस समय को 'संक्रान्ति' कहते हैं। अस्तु एक राशि में सूर्य के संचरण का सम्पूर्ण समय एक 'सौर मास' कहा जाता है। 'सौर-मास' का प्रारम्भ एक संक्रान्ति-काल से होता है तथा दूसरे संक्रान्ति काल पर उसकी समाप्ति होती है। यह प्रायः 30 दिनों का होता है ।

(3) **नाक्षत्र-मास**—चन्द्रमा द्वारा 27 नक्षत्रों में संचरण पूरा कर लेने की अवधि को 'नाक्षत्र-मास' कहा जाता है।

(4) **सावन मास**—यह 30 दिनों का होता है और इसका प्रारम्भ किसी भी दिन से माना जा सकता है। दैनिक-व्यवहार में इसी मास का प्रयोग होता है।

टिप्पणी—(1) वर्तमान समय में जनवरी-फरवरी आदि में जो अँग्रेजी अथवा हिजरी मासादि प्रचलित हैं, उनका भारतीय-ज्योतिष से कोई सम्बन्ध नहीं है।

(2) सौर वर्ष की अपेक्षा चान्द्र-वर्ष में 11 दिन कम होते हैं, अतः सौर-मास के साथ चान्द्र-मासों का सामंजस्य बैठाने के लिए 32 सौर मासों अर्थात् 2 वर्ष 8 मास के बाद एक 'अधिमास' पड़ता है। जिस चान्द्र-मास में सूर्य-संक्रान्ति नहीं होती, उसे 'अधिमास' कहा जाता है, अधिमास को 'मल मास' अथवा 'पुरुषोत्तम मास' भी कहते हैं। यह धार्मिक-कृत्यों के लिए बहुत शुभ माना जाता है।

जिस चान्द्र-मास में सूर्य की दो संक्रान्तियाँ होती हैं, उसे 'क्षय मास' कहते हैं। 'क्षय-मास' 141 वर्ष के बाद होता है। क्षयमास केवल कार्तिक, मार्गशीर्ष (अगहन) तथा पौष—इन तीन महीनों में से ही किसी एक को होता है। जिस वर्ष क्षय-मास होता है, उस वर्ष एक वर्ष के भीतर दो 'अधि-मास' भी होते हैं ।

(3) सौर-मासों के नाम राशियों के आधार पर, नक्षत्र-मासों के नक्षत्रों के आधार पर तथा चान्द्रमासों के नाम नक्षत्र एवं पूर्णिमा तिथि के संयोग के आधार पर अर्थात् पूर्णिमा के बाद चन्द्रमा जिस नक्षत्र में प्रवेश

करता है, उसी नक्षत्र के नाम के आधार पर रखे गये हैं ।

वर्ष

12 महीनों का 1 वर्ष होता है । 12 चान्द्र-मासों का एक 'चान्द्र-वर्ष' होता है । सामान्यतः एक चान्द्र-वर्ष 354 दिनों का होता है, परन्तु जब 'अधिमास' पड़ता है, तब यह 13 महीनों का अर्थात् लगभग 384 दिन का हो जाता है तथा 'क्षय-मास' वाले वर्ष में दिनों की संख्या में कुछ अन्य न्यूनाधिकता भी सम्भव होती है । वर्ष को 'वत्सर' भी कहते हैं । सामान्य भाषा में इसे 'साल' कहते हैं ।

'सौर-वर्ष' में लगभग 365 दिन होते हैं तथा 'नाक्षत्र-वर्ष' 12 नाक्षत्र-मास अर्थात् 324 दिनों का होता है ।

मेषादि एक-एक राशि में वृहस्पति का संचरण 361 दिनों में पूरा होता है अतः वृहस्पति के एक राशि में संचरण की अवधि को 'वार्हस्पत्य-वर्ष' कहा जाता है ।

12 सावन-मासों अर्थात् 360 दिनों का एक 'सावन-वर्ष' होता है । दैनिक-व्यवहार में 'सावन-वर्ष' का तथा धार्मिक-कृत्यों में 'चान्द्र-वर्ष' का ही उपयोग किया जाता है ।

अयन

कर्क-संक्रान्ति से धनु-संक्रान्ति तक सूर्य द्वारा 6 राशियों के भोग-काल (संचरण की अवधि) को 'दक्षिणायन' तथा मकर-संक्रान्ति से मिथुन-संक्रान्ति तक के भोग-काल को 'उत्तरायण' कहा जाता है । इस प्रकार एक वर्ष में दो 'अयन' होते हैं । 'उत्तरायण' को देवताओं का 'दिन' तथा दक्षिणायन को रात्रि माना जाता है । 'उत्तरायण' को शुभ कृत्यों के लिए प्रशस्त माना गया है । दक्षिणायन में निन्दित-कर्म किए जाते हैं ।

ऋतु

एक वर्ष में 6 ऋतुऐं होती हैं । ये भी 'सौर' तथा 'चान्द्र' के भेद से दो प्रकार की मानी गई हैं । सौर ऋतुओं का प्रारम्भ मीन अथवा मेष राशि से होता है । सूर्य के द्वारा दो राशियों का संचरण पूरा करने की अवधि को एक 'सौर-ऋतु' कहा जाता है । 'चान्द्र-ऋतु' चैत्रमास से प्रारम्भ होती

है तथा यह भी दो-दो मास की एक होती है, परन्तु जिस वर्ष 'अधिमास' होता है, उस वर्ष की एक ऋतु 60 के स्थान पर प्रायः 90 दिन की मानी जाती है। मासादि की भाँति ऋतुओं का भी प्रत्यावर्तन होता रहता है। श्रौत-स्मार्त आदि कर्मों में 'चान्द्र ऋतु' ही ग्रहण की जाती है।

ऋतुओं के नाम क्रमशः इस प्रकार होते हैं—(1) बसन्त (चैत्र-वैशाख), (2) ग्रीष्म (ज्येष्ठ-आषाढ़), (3) वर्षा (श्रावण-भाद्रपद), (4) शरद् (आश्विन-कार्तिक), (5) हेमन्त (मार्ग शीर्ष-पौष), (6) शिशिर (माघ-फाल्गुन)।

सम्वत्सर

'चान्द्र-वत्सर' के भेदों का नाम 'सम्वत्सर' है। इनकी कुल संख्या 60 है तथा इनका पुनरावर्त्तन होता रहता है। सवत्सरों के नाम क्रमशः निम्नलिखित हैं—

(1) प्रभव, (2) विभव, (3) शुक्ल, (4) प्रमोद, (5) प्रजापति, (6) अङ्गिरा, (7) श्रीमुख, (8) भाव, (9) युवा, (10) धाता, (11) ईश्वर, (12) बहुधान्य, (13) प्रमाथी, (14) विक्रम, (15) वृष, (16) चित्रभानु, (17) सुभानु, (18) तारण, (19) पार्थिव, (20) अव्यय, (21) सर्वजित, (22) सर्वधारी, (23) विरोधी, (24) विकृत्, (25) खर, (26) नन्दन, (27) विजय, (28) जय, (29) मन्मथ, (30) दुर्मुख, (31) हेमलम्ब, (32) विलम्ब, (33) विकारी, (34) शार्वरी, (35) प्लव, (36) शुभकृत्, (37) शोभन, (38) क्रोधी, (39) विश्वावसु, (40) पराभव, (41) प्लवङ्ग, (42) कीलक, (43) सौम्य, (44) साधारण, (45) विरोधकृत्, (46) परिधावी, (47) प्रमादी, (48) आनन्द, (49) राक्षस, (50) नल, (51) पिङ्गल, (52) कालयुक्त, (53) सिद्धार्थी, (54) रौद्र, (55) दुर्मति, (56) दुन्दुभि, (57) रुधिरोद्गारी, (58) रक्ताक्ष, (59) क्रोधन तथा (60) क्षय।

युगादि मान

'युग' चार होते हैं—(1) सतयुग, (2) त्रेतायुग, (3) द्वापरयुग तथा (4) कलियुग। चारों युगों को सम्मिलित रूप में 'चतुर्युग' कहा जाता है। इनका वर्ष-मान निम्नलिखित हैं—

सतयुग	—	17,28, 000 वर्ष
त्रेतायुग	—	12,96, 000 वर्ष
द्वापरयुग	—	8,64, 000 वर्ष
कलियुग	—	4,32, 000 वर्ष

एक चतुर्युग कुल 43, 20, 000 वर्षों का होता है। इस प्रकार के जब 1000 युग बीत जाते हैं. तब ब्रह्मा का 'एक दिन' होता है तथा रात्रि भी इतनी ही लम्बी होती है।

ब्रह्मा के एक वर्ष' को 'कल्प' कहा जाता है, जो 43, 20, 00, 00 000 अर्थात् तेतालीस अरब, बीस करोड़ वर्षों का होता है।

उक्त अवधि वाले दिनों के आधार पर ब्रह्मा की आयु 100 वर्ष की होती है।

70 युगों का एक 'मन्वन्तर' होता है। वर्तमान समय में 'वैवस्वत' नामक सातवाँ मन्वन्तर चल रहा है, जिसमें अट्ठाईसवाँ कलियुग अपने प्रथम चरण में विद्यमान है। यह ब्रह्मा का दूसरा प्रहर है तथा इस समय 'श्वेत-वराह' कल्प है।

वर्तमान कलियुग की उत्पत्ति ईस्वी सन् से 3102 वर्ष पहले हुई थी तथा उस दिन सूर्य-चन्द्र आदि सभी ग्रह एक ही राशि में थे।



3 वार, प्रहर, नक्षत्र, योग, करण, मुहूर्त आदि

वार

आकाश-मण्डल में शनि, गुरु, मंगल, रवि, शुक्र, बुध तथा चन्द्रमा—इन सातों ग्रहों की कक्षाएँ क्रमशः एक दूसरी से नीचे हैं।

एक दिन-रात्रि में 24 होराएँ होती हैं (प्रत्येक 'होरा' एक घण्टे के बराबर की होती है)। प्रत्येक होरा का स्वामी नीचे की कक्षा से एक-एक ग्रह माना गया है।

सृष्टि के आरम्भ में पहले सूर्य दिखाई देता है, अतः पहली होरा का स्वामी 'सूर्य' माना गया है। इसके बाद अन्य होराओं के स्वामी क्रमशः शुक्र, बुध, चन्द्रमा, शनि, गुरु तथा मंगल होते चले जाते हैं तथा चौबीसवीं होरा बुध पर समाप्त होती है अतः दूसरे दिन की पहली होरा का स्वामी चन्द्रमा होता है, इसी क्रम से तीसरे दिन की पहली होरा का स्वामी 'मङ्गल', चौथे दिन 'बुध', पाँचवें दिन वृहस्पति, छठे दिन शुक्र तथा सातवें दिन की पहली होरा का स्वामी शनि होता है। यही क्रम निरन्तर बना रहता है, अतः सभी ग्रहों की पुनरावृति होते रहने के कारण सात वारों का क्रम भी इस प्रकार निर्धारित हुआ है—(1) रविवार, (2) सोमवार, (3) मङ्गलवार, (4) बुधवार, (5) वृहस्पतिवार, (6) शुक्रवार तथा (7) शनिवार। रविवार के स्वामी शिव, सोमवार के दुर्गा, मङ्गलवार के कार्तिकेय, बुधवार के विष्णु वृहस्पतिवार के ब्रह्मा, शुक्रवार के इन्द्र तथा शनिवार के 'काल' माने गए हैं।

उक्त सातों 'वारों' के दिनों को सम्मिलित रूप में 'सप्ताह' कहा जाता है।

एक वार में 15 'मुहूर्त' होते हैं तथा प्रत्येक मुहूर्त 4 घटी का होता है।

एक वार सूर्योदय के बाद से आरम्भ होकर दूसरे सूर्योदय के प्रारम्भ तक रहता है।

गुरु, सोम, बुध तथा शुक्रवार 'सौम्य' संज्ञक तथा रवि, मङ्गल एवं शनिवार 'क्रूर संज्ञक' हैं। सौम्य-संज्ञक वारों में शुभ-कार्य तथा क्रूर संज्ञक वारों में क्रूर-कर्म करने चाहिए।

होरा

'होरा' शब्द 'अहोरात्र' का संक्षिप्त रूप है। 'अहोरात्र' के पहले तथा अन्तिम अक्षर का लोप करके तथा बीच के दो अक्षरों को लेकर होरा शब्द बना है, अतः 'होरा' का वास्तविक अर्थ है—'दिन-रात' परन्तु इस शब्द का प्रयोग घण्टे के पर्याय में किया जाता है, अर्थात् जिस प्रकार एक दिन-रात में 24 घण्टे होते हैं, उसी प्रकार एक दिन-रात में 24 होराएँ होती हैं।

प्रहर

एक दिन-रात में 8 प्रहर होते हैं। एक प्रहर लगभग 8 घटी अथवा 3 घंटे का होता है। चार प्रहर दिन के तथा चार प्रहर रात्रि के माने जाते हैं। प्रहर को 'याम' भी कहते हैं। एक प्रहर के आधे भाग को, जो प्रायः 4 घटी का होता है 'यामार्द्ध' कहते हैं। दिन-मान के घटने-बढ़ने से इसमें कुछ अन्तर भी पड़ सकता है।

नक्षत्र

नक्षत्र 27 (अभिजित् सहित 28) होते हैं, यह बात पहले बताई जा चुकी है। चन्द्रमा जब सूर्य से $13\frac{1}{2}$ अंश की दूरी पर पहुँचता है तब एक नक्षत्र होता है। प्रत्येक नक्षत्र लगभग 60 घटी का होता है। परन्तु अभिजित् 19 घटी का माना गया है और इसके कारण उत्तराषाढ़ा नक्षत्र 15 घटी कम तथा श्रवण नक्षत्र 4 घटी कम के माने जाते हैं।

नक्षत्रों के गुण-स्वभाव अपने स्वामियों के गुण-स्वभाव के अनुसार ही होते हैं। नक्षत्रों के स्वामियों के नाम निम्नानुसार हैं—

नक्षत्र	स्वामी	नक्षत्र	स्वामी
1. अश्विनी	— अश्विनी कुमार	15- स्वाति	— वायु (पवन)
2. भरणी	— काल	16. विशाखा	— शक्राग्नि
3. कृत्तिका	— अग्नि	17. अनुराधा	— मित्र
4. रोहिणी	— ब्रह्मा	18. ज्येष्ठा	— इन्द्र
5. मृगशिरा	— चन्द्रमा	19. मूल	— निर्ऋति(राक्षस)
6. आर्द्रा	— रुद्र	20. पूर्वाषाढ़ा	— जल
7. पुनर्वसु	—अदिति	21. उत्तराषाढ़ा	— विश्वेदेवा
8. पुष्य	— बृहस्पति	22. अभिजित्	— ब्रह्मा
9. आश्लेषा	— सर्प	23. श्रवण	— विष्णु
10. मघा	— पितर	24. घनिष्ठा	— वसु
11. पूर्वा फाल्गुनी	— भग	25. शतभिषा	— वरुण
12. उत्तरा फाल्गुनी	— अर्य्यमा	26. पूर्वाभाद्रपदा	— अजैकपाद
13. हस्त	— सूर्य	27. उत्तराभाद्रपदा	-- अहिर्बुध्न्य
14. चित्र	—त्वष्टा (विश्वकर्मा)	28 रेवती	— पूषा

प्रत्येक नक्षत्र को चार-चार भागों में बाँटा गया है। नक्षत्र के प्रत्येक भाग को 'चरण' कहा जाता है—प्रथम चरण, द्वितीय चरण, तृतीय चरण तथा चतुर्थ चरण। इस प्रकार 27 नक्षत्रों के 108 भाग होते हैं। क्रमशः 9 नक्षत्र चरणों की एक-एक 'राशि' होती है। इस प्रकार 27 नक्षत्रों से मिलकर 12 राशियाँ बनती हैं।

नक्षत्रों के चरणाक्षर

प्रत्येक नक्षत्र के प्रत्येक 'चरण' के लिए एक-एक 'अक्षर' निश्चित कर दिया गया है, जो निम्नानुसार हैं—

नक्षत्र का नाम		चरणाक्षर (प्रथम)	(द्वितीय)	(तृतीय)	(चतुर्थ)
1. अश्विनी	—	चू	चे	चो	ला

2. भरणी	—	ली	लू	ले	लो
3. कृत्तिका	—	आ	ई	ऊ	ए
4. रोहिणी	—	ओ	वा	वी	वू
5. मृगशिरा	—	वे	वो	का	की
6. आर्द्रा	—	कू	घ	ङ	छ
7. पुनर्वसु	—	के	को	हा	ही
8. पुष्प	—	हू	हे	हो	डा
9. आश्लेषा	—	डी	डू	डे	डो
10. मघा	—	मा	मी	मू	मे
11. पूर्वा फाल्गुनी	—	मो	टा	टी	टू
12. उत्तरा फाल्गुनी	—	टे	टो	पा	पी
13. हस्त	—	पू	ष	ण	ठ
14. चित्रा	—	पे	पो	रा	री
15. स्वाति	—	रू	रे	रो	ता
16. विशाखा	—	ती	तू	ते	तो
17. अनुराधा	—	ना	नी	नू	ने
18. ज्येष्ठा	—	नो	या	यी	यू
19. मूल	—	ये	यो	भा	भी
20. पूर्वाषाढ़ा	—	भू	ध	फ	ढ
21. उत्तराषाढ़ा	—	भे	भो	जा	जी
22. अभिजित्	—	जू	जे	जो	ख
23 श्रवण	—	खी	खू	खे	खो
24. धनिष्ठा	—	गा	गी	गू	गे
25. शतभिषा	—	गो	सा	सी	सू
26. पूर्वा भाद्रपदा	—	से	सो	दा	दी
27 उत्तरा भाद्रपदा	—	दू	थ	झ	ञ
28. रेवती	—	दे	दो	चा	ची

टिप्पणी—(1) जिस व्यक्ति का जन्म जिस नक्षत्र के जिस चरण में

होता है। उनके नाम के आदि में उसी नक्षत्र का वही 'चरणाक्षर' रखा जाता है। जैसे किसी व्यक्ति का जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के दूसरे चरण में हुआ हो तो उसका नाम 'गिरधारी लाल' रखा जाएगा।

(2) प्रत्येक नक्षत्र-चरण 3 अंश तथा 20 कल्प का होता है।

योग

योग दो प्रकार के होते हैं—(1) विष्कम्भादि तथा (2) आनन्दादि। विष्कंभादि योगों की संख्या 27 है। इन योगों का नियम निम्नानुसार है—

जब अश्विनी नक्षत्र के आरम्भ से सूर्य तथा चन्द्रमा—दोनों मिलकर 800 कलायें चल चुकते हैं तब एक 'योग' व्यतीत होता है। इस प्रकार ये दोनों जब 12 राशियाँ अर्थात् अश्विनी नक्षत्र से आगे 21600 कलाऐं चल चुकते हैं, तब 27 योग व्यतीत हो जाते हैं।

विष्कंभादि योगों के नाम इस प्रकार हैं—(1) विष्कम्भ, (2) प्रीति, (3) आयुष्मान्, (4) सौभाग्य, (5) शोभन, (6) अतिगण्ड, (7) सुकर्म्मा, (8) धृति, (9) शूल, (10) गण्ड, (11) वृद्धि, (12) ध्रुव, (13) व्याघात, (14) हर्षण, (15) वज्र, (16) सिद्धि, (17) व्यतीपात, (18) वरीयान्, (19) परिघ, (20) शिव, (21) सिद्ध, (22) साध्य, (23) शुभ, (24) शुक्ल, (25) ब्रह्म, (26) ऐन्द्र तथा (27) वैधृति।

योगों के त्याज्य-काल—विभिन्न मतानुसार इन योगों के निम्नलिखित समय शुभ कार्यों के लिए वर्जित माने गए हैं—

(1) 'परिघ' का पूर्वार्द्ध, (2) 'विष्कम्भ' की पहली 5 घटी, (3) 'शूल' की पहली 7 घटी, (4) 'गण्ड' तथा 'व्याघात' की पहली 6 घटी, (5) 'हर्षण' तथा 'वज्र' की पहली 9 घटी तथा (6) 'वैधृति' एवं 'व्यतीपात' योग पूर्णतः त्याज्य है।

मतान्तर से—(1) 'विष्कम्भ' के पहले 3 दण्ड, (2) 'शूल' के 5 दण्ड, (3) 'गण्ड' तथा 'अतिगण्ड' के पहले 7 दण्ड तथा, (4) 'व्याघात' एवं 'वज्र' योग के पहले 9 दण्ड शुभ कार्यों के लिए पूर्णतः वर्जित हैं।

'कृत्य चिन्तामणि' के अनुसार—(1) 'साध्य' का पहला 1 दण्ड, (2) 'व्याघात' के 2 दण्ड, (3) 'शूल' के 7 दण्ड, (4) 'वज्र' के 6 दण्ड

तथा (5) 'गण्ड' और 'अतिगण्ड' के 9 दण्ड त्याज्य हैं।

अन्य मतानुसार—1. 'विष्कम्भ' तथा 'वज्र' की पहली 3 घटी 2. 'व्याघात' की 9 घटी, 3. 'शूल' की 5 घटी तथा 4. 'गण्ड' और 'अतिगण्ड' की 6 घटियाँ शुभ कार्यों के लिए त्याज्य हैं।

सामान्यतः—1. खराब नाम वाले योगों का प्रथम चरण अनिष्टकर होता है, 2. 'वैधृति' तथा 'व्याघात' के चारों चरण एवं 3. 'परिघ' योग के पहले दो चरण अनिष्ट कर एवं त्याज्य माने जाते हैं।

आनन्दादि योगों की संख्या 28 मानी गई है तथा उनके नाम इस प्रकार हैं—1. आनन्द, 2. कालदण्ड, 3. धूम्र, 4. धाता, 5. सौम्य, 6. ध्वांक्ष, 7. केतु, 8. श्रीवत्स, 9. वज्र, 10. मुद्गर, 11. छत्र, 12. मित्र, 13 मानस, 14. पद्म, 15. लुम्ब, 16. उत्पात, 17. मृत्यु, 18. काण, 19. सिद्धि, 20. शुभ, 21. अमृत, 22. मुसल, 23. गद, 24. मातङ्ग, 25. रक्ष, 26. चर, 27. सुस्थिर तथा 28. प्रबर्धमान।

रविवार को अश्विनी नक्षत्र से, सोमवार को मृगशिरा से, मंगल को आश्लेषा से, वुध को हस्त से, शुक्र को उत्तराषाढ़ा से तथा शनिवार को शतभिषा नक्षत्र से गिनें। यदि रविवार को अश्विनी नक्षत्र हो तो 'आनन्द' नामक योग होगा तथा भरणी हो तो 'कालदण्ड' योग होगा आदि। इसी प्रकार सोमवार को मृगशिरा नक्षत्र हो तो 'आनन्द' योग होगा तथा आर्द्रा नक्षत्र हो तो 'कालदण्ड' नामक योग होगा इत्यादि। ये सभी योग अपने नाम के अनुरूप फल देते हैं।

वर्जित-काल—शुभ कार्यों के लिए इन योगों के वर्जित-काल निम्नानुसार बताये गये हैं—

(1) ध्वांक्ष, मुद्गर तथा वज्र योगों के प्रारम्भ की 5 घटी, (2) काण तथा मुशल योगों की 2 घटी, (3) पद्म तथा लुम्ब योगों की 4 घटी, (4) धूम्र योग की 1 घटी, (5) गद योग की 7 घटी, (6) चर योग की 3 घटी तथा (7) मृत्यु, काल, उत्पात एवं राक्षस योगों की समस्त घटियाँ त्याज्य हैं।

टिप्पणी—पञ्चाङ्ग में 'किस दिन कौन सा योग रहेगा'—इस विषय

की जानकारी भी दी जाती है।

करण

तिथि के अर्द्ध भाग को 'करण' कहते हैं अर्थात् एक तिथि में 2 करण होते हैं। करण कुल 11 होते हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं—

(1) बव, (2) बालव, (3) कौलेय, (4) तैतिल, (5) गर, (6) वणिज, (7) विष्टि, (8) शकुनि, (9) चतुष्पाद, (10) नाम और (11) किंस्तुघ्न।

इसमें पहले 7 करण 'चर' संज्ञक तथा अन्तिम 4 'स्थिर' संज्ञक होते हैं। कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के दूसरे भाग में 'शकुनि' नामक करण होता है। अमावस्या के पहले भाग में 'चतुष्पाद' तथा दूसरे भाग में 'नाम' करण होता है। शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के पहले भाग में 'किंस्तुघ्न' करण होता है। 'विष्टि' करण को 'भद्रा' भी कहा जाता है। यह शुभ-कार्यों के लिए वर्जित है। परन्तु क्रूर-कर्म तथा तान्त्रिक कार्यों के लिए ग्राह्य है।

टिप्पणी—पञ्चाङ्ग में किस तिथि को कौन-सा करण रहेगा, इसका भी उल्लेख रहता है।

मुहूर्त्त

एक दिन-रात में 30 मुहूर्त होते हैं—15 दिन में तथा 15 रात्रि में। एक मुहूर्त प्रातः 2 घड़ी का होता है, परन्तु दिन-रात के घटने-बढ़ने से मुहूर्त की अवधि में भी कुछ पलों का अन्तर आ जाता है।

दिन तथा रात्रि के मुहूर्तों के नाम निम्नानुसार होते हैं—

दिन के मुहूर्त्त—(1) गिरिश, (2) भुजग, (3) मित्र, (4) पित्र्य, (5) वसु, (6) अम्बु, (7) विश्वे, (8) अभिजित्, (9) विधाता, (10) इन्द्र, (11) इन्द्राग्नि, (12) निर्ऋति, (13) वरुण, (14) अर्य्यमा तथा (15) भग।

रात्रि के मुहूर्त्त—(1) शिव, (2) अजैकपाद्, (3) अहिर्बुध्न्य, (4) पूषा, (5) दासु, (6) यम, (7) अग्नि, (8) ब्रह्मा, (9) चन्द्र, (10) अदिति, (11) जीव, (12) विष्णु, (13) अर्क, (14) त्वाष्ट्र तथा (15) मरुत्।

रविवार को 'अर्य्यमा', सोमवार को 'ब्रह्म' और 'रक्ष', मंगलवार

को 'वहिन' और 'मित्र्य', बुधवार को 'अभिजित्', बृहस्पतिवार को 'जल' और 'रक्ष', शुक्रवार को 'ब्रह्म' और 'पित्र्य' तथा शनिवार को 'ईश' और और 'सार्थ'—ये मुहूर्त शुभ-कार्यों के लिए निषिद्ध कहे गए हैं।

संक्रान्ति

सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश के समय को 'संक्रान्ति' कहा जाता है। संक्रान्ति का समय निश्चित नहीं होता, वह दिन अथवा रात्रि में किसी भी समय हो सकती है। संक्रान्ति लगभग 30 दिन की होती है। इस प्रकार वर्ष में 12 संक्रान्ति होती हैं। संक्रान्तियों के नाम राशियों के नामों के क्रमानुसार होते हैं।

सामान्यतः सूर्य-संक्रान्ति के समय से आगे तथा पीछे की सोलह-सोलह घटी तक पुण्य-काल होता है। यदि संक्रान्ति अर्द्धरात्रि से पहले हो तो पहले दिन के पिछले दो प्रहर पुण्य-काल होते हैं। यदि संक्रान्ति अर्द्धरात्रि के उपरान्त हो तो दूसरे दिन का पूर्व भाग पुण्य-काल होता है। यदि ठीक अर्द्धरात्रि में संक्रान्ति हो तो दोनों दिन पुण्य-काल होता है। यदि कर्क संक्रान्ति सूर्योदय से पूर्व हो तो पहला दिन पुण्य-काल होता है। यदि मकर संक्रान्ति सूर्यास्त के बाद हो तो दूसरा दिन पुण्य-काल होता है।

टिप्पणी—सूर्य-संक्रान्ति किस दिन तथा किस समय होगी इसका उल्लेख भी पञ्चाङ्गों में रहता है।

4 राशि : नक्षत्र-चरण, स्वामी, स्वरूप, गुण-धर्म आदि

$2\frac{1}{4}$ नक्षत्र अर्थात् 9 नक्षत्र-चरण अथवा 30 अंश अथवा 9 भागों की एक 'राशि' होती है। सम्पूर्ण भ-चक्र (आकाश-मण्डल) 360 अंशों तथा 108 भागों में विभाजित किया गया है, अतः 12 राशियाँ कुल इतने ही अंशों तथा भागों की है।

नक्षत्र-चरण और राशि

किन राशियों में किन-किन नक्षत्रों के कौन-कौन से चरण सम्मिलित हैं, इसे निम्नानुसार समझना चाहिए—

1. **मेष**—अश्विनी तथा भरणी नक्षत्रों के चारों चरण एवं कृत्तिका नक्षत्र का पहला चरण (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ)।

2. **वृष**—कृत्तिका नक्षत्र के अन्तिम तीन चरण, रोहिणी नक्षत्र के चारों चरण तथा मृगशिरा नक्षत्र के पहले दो चरण (ई, ऊ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)।

3. **मिथुन**—मृगशिरा नक्षत्र के अन्तिम दो चरण, आर्द्रा नक्षत्र के चारों चरण तथा पुनर्वसु नक्षत्र के पहले तीन चरण (का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा)।

4. **कर्क**—पुनर्वसु का अन्तिम एक चरण तथा पुष्य और आश्लेषा नक्षत्रों के चारों चरण (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

5. **सिंह**—मघा तथा पूर्वा फाल्गुनी के चारों चरण तथा उत्तरा-फाल्गुनी का पहला एक चरण (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

6. **कन्या**—उत्तरा फाल्गुनी के अन्तिम तीन चरण, हस्त के चारों चरण तथा चित्रा के पहले दो चरण (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)।

7. **तुला**—चित्रा के अन्तिम दो चरण, स्वाति के चारों चरण तथा विशाखा के पहले तीन चरण (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)।

8. **वृश्चिक**—विशाखा का अन्तिम एक चरण तथा अनुराधा एवं उत्तराषाढ़ा के चारों चरण (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)।

9. **धनु**—मूल तथा पूर्वाषाढ़ा के चारों चरण तथा उत्तराषाढ़ा का पहला एक चरण (ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे)।

10. **मकर**—उत्तराषाढ़ा के अन्तिम तीन चरण, अभिजित् तथा श्रवण के चारों चरण एवं धनिष्ठा के पहले दो चरण (भो, जा, जी, जू, जे, जो, खा, खी, खू, खे, खो, गा, गी)।

11. **कुम्भ**—धनिष्ठा के अन्तिम दो चरण, शतभिषा के चारों चरण तथा पूर्वा भाद्रपदा के पहले तीन चरण (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)।

12. **मीन**—पूर्वा भाद्रपदा का अन्तिम एक चरण तथा उत्तराभाद्रपदा एवं रेवती नक्षत्रों के चारों चरण (दी, दू, थ, झ, ज, दे, दो, चा, ची)।

राशियों के स्वामी-ग्रह

सूर्य तथा चन्द्रमा को एक-एक राशि का तथा मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि को दो-दो राशियों का स्वामी माना गया है। विभिन्न ग्रहों का राशि-स्वामित्व निम्नानुसार होता है—

1—मेष (1) तथा वृश्चिक (8) राशियों का स्वामी 'मंगल' ग्रह है।

2—वृष (2) तथा तुला (7) राशियों के स्वामी 'शुक्र' है।

3—मिथुन (3) तथा कन्या (6) राशियों का स्वामी 'बुध' है।

4—कर्क (4) राशि का स्वामी 'चन्द्रमा' है।

5—सिंह (5) राशि का स्वामी 'सूर्य' है।

6—धनु (9) तथा मीन (12) राशियों का स्वामी 'गुरु' अर्थात् 'वृहस्पति' है।

7—मकर (10) तथा कुम्भ (11) राशियों का स्वामी 'शनि' है।

टिप्पणी—राहु तथा केतु छाया-ग्रह हैं, अतः इन्हें किसी राशि का

स्वामी नहीं माना जाता, तथापि कुछ ज्योतिर्विद बुध की 'कन्या' राशि पर 'राहु' का तथा 'मिथुन' राशि पर 'केतु' का भी आधिपत्य मानते हैं।

शून्य-संज्ञक राशियाँ

चैत्रमास में कुंभ, वैशाख में मीन, ज्येष्ठ में वृष, आषाढ़ में मिथुन, श्रावण में मेष, भाद्रपद में कन्या, आश्विन में वृश्चिक, कार्तिक में तुला, मार्गशीर्ष में धनु, पौष में कर्क, माघ में मकर तथा फाल्गुन में सिंह राशि को 'शून्य-संज्ञक' माना जाता है।

राशियों का अङ्ग विभाग

द्वादश राशियों को काल-पुरुष का अङ्ग माना जाता है, तदनुसार मेष का सिर पर, वृष का मुख पर, मिथुन का वक्षःस्थल पर, कर्क का हृदय पर सिंह का उदर पर, कन्या का कमर पर, तुला का पेढू पर, वृश्चिक का गुप्ताङ्ग पर, धनु का जंघा पर, मकर का घुटनों पर, कुम्भ का पिण्डलियों पर तथा मीन का पाँवों पर अधिकार माना गया है।

राशियों के अँग्रेजी तथा अरबी नाम

'मेष' राशि को अंग्रेजी में Aries तथा अरबी में हमल कहते हैं। 'वृष' को अँग्रेजी में Taurus तथा अरबी में सोर, 'मिथुन' को अँग्रेजी में Gemini तया अरबी में जौजा, 'कर्क' को अँग्रेजी में Caner तथा अरबी में सरतान, 'सिंह' को अँग्रेजी में Leo तथा अरबी में असद, 'कन्या' को अँग्रेजी में Virgo तथा फारसी में सम्बला, 'तुला' को अँग्रेजी में Libia तथा फारसी में मीजां, 'वृश्चिक' को अँग्रेजी में Scorpio तथा अरबी में 'अकरब' 'धनु' को अँग्रेजी में Sagittarius तथा अरबी में कोज, 'मकर' को अँग्रेजी में Capricotnis तथा अरबी में जद्दी, 'कुम्भ' को अँग्रेजीं में Aquarius तथा अरबी में दलू एवं 'मीन' को अँग्रेजी में Pisces तथा अरबी में हूत कहा जाता है।

राशि-स्वरूप, स्वभाव एवं गुण-धर्म

विभिन्न राशियों के स्वरूप, स्वभाव तथा गुण-धर्म निम्नानुसार बताये गये हैं—

1. **मेष**—इसका स्वरूप 'मेढ़ा' जैसा है। यह उग्र-स्वभाव, दिवा बली

(मतान्तर से रात्रि-बली), पूर्व दिशा की निवासिनी, क्षत्रिय-वर्ण, रजोगुणी, पुल्लिङ्ग, ह्रस्व-आकार, दृढ़-शरीर, अग्नि तत्व, रक्त वर्ण, उष्ण प्रकृति, पित्त धातु, अति शब्दकारी तथा अल्प सन्तति वाली है। इसका प्रभुत्व 'मस्तक' (शिर) पर है।

2. **वृष**—इसका स्वरूप 'बैल' जैसा है। यह सौम्य-स्वभाव, रात्रि-बली; दक्षिण दिशा की निवासिनी, वैश्य वर्ण, रजोगुणी, स्त्री-लिङ्ग, दृढ़ शरीर, ह्रस्व आकार, भूमि तत्त्व, श्वेत वर्ण, शीत प्रकृति, वात धातु, अति-शब्दकारी तथा मध्यम सन्तति वाली है। इसका प्रभुत्व 'मुख' पर है।

3. **मिथुन**—इसका स्वरूप 'हाथ में गदा लिए पुरुष तथा साथ में वीणा बजाती हुई स्त्री' जैसा है। यह उग्र-स्वभाव, दिवा बली (मतान्तर से-रात्रि-बली), शूद्र-वर्ण, तमोगुणी, पश्चिम दिशा की निवासिनी, पुल्लिग, मृदु शरीर, सम आकार, वायु तत्त्व, उष्ण प्रकृति, त्रि-धातु, दीर्घ शब्दकारी तथा मध्यम सन्तति वाली है। इसका प्रभुत्व 'कण्ठ' तथा 'बाहु' पर है।

4. **कर्क**—इसका स्वरूप 'केकड़ा' जैसा है। यह सौम्य-स्वभाव, रात्रि-बली (मतान्तर से—दिवा-बली), उत्तर दिशा की निवासिनी, विप्र वर्ण, सतोगुणी, स्त्री लिङ्ग, मृदु (मतान्तर से—मोटा) शरीर, सत्र आकार, जल तत्व, शीत प्रकृति, कफ धातु, निःशब्द तथा बहु सन्तति वाली है। इसका प्रभुत्व वक्षः स्थल पर है।

5. **सिंह**—इसका स्वरूप 'सिंह' जैसा है। यह उग्र स्वभाव, दिवा-बली, पूर्व दिशा की निवासिनी, क्षत्रिय वर्ण, सतोगुणी, पुल्लिग, दृढ़ शरीर, दीर्घ आकार, पशु योनि, अग्नि तत्व, चतुष्पद, धूम्र वर्ण, उष्ण प्रकृति, पित्त धातु, दीर्घ शब्दकारी तथा अल्प सन्तति वाली है। इसका प्रभुत्व 'हृदय' पर है।

6. **कन्या**—इसका स्वरूप 'हाथ में धान तथा अग्नि लेकर नाव में बैठी हुई कुमारी कन्या' जैसा है। यह दक्षिण दिशा की निवासिनी, सौम्य स्वभाव, रात्रि-बली (मतान्तर से—दिवा-बली), वैश्य वर्ण, सतोगुणी, स्त्री-लिङ्ग, द्विस्वभाव, कृश शरीर, दीर्घ (मतान्तर से—मध्यम) आकार, मनुष्य योनि, भूमितत्व, द्विपद, पीत वर्ण (मतान्तर से—चित्र-विचित्र वर्ण), शीत-

प्रकृति, वात धातु, अर्द्ध शब्दकारी तथा अल्प-सन्तति वाली है। इसका प्रभाव 'उदर' पर है।

7. **तुला**—इसका स्वरूप 'तराजू' जैसा है। यह उग्र स्वभाव, दिवा-बली, पश्चिम दिशा की निवासिनी, शूद्र वर्ण, रजोगुणी, पुल्लिङ्ग, दृढ़ शरीर, दीर्घ (मतान्तर से—मध्यम) आकार, मनुष्य योनि, वायु तत्व, द्विपद, विचित्र वर्ण (मतान्तर से—कृष्ण वर्ण), उष्ण प्रकृति, त्रिधातु, निःशब्द तथा अल्प सन्तति वाली है। इसका प्रभुत्व 'कटि' (कमर) पर है।

8. **वृश्चिक**—इसका स्वरूप 'बिच्छू' जैसा है। यह उग्र स्वभाव (मतान्तर से—सौम्य), तमोगुणी, उत्तर दिशा की निवासिनी, विप्र वर्ण, स्त्री-लिङ्ग, कृश-शरीर, दीर्घ-आकार (मतान्तर से—छोटे अङ्गों वाली), कीट (सरीसृप) योनि, जल-तत्व, श्वेत वर्ण, शीत-प्रकृति, कफ धातु, निःशब्द तथा बहु-सन्तति वाली है। इसका प्रभुत्व 'गुप्ताङ्ग' पर है।

9. **धनु**—इसका स्वरूप 'आगे दो पाँव तथा पीछे चार पाँवों वाले ऐसे धनुर्धारी का है, जिनका शरीर का ऊपरी आधा भाग मनुष्य जैसा तथा पिछला अर्द्धभाग पशु' जैसा है। यह उग्र-स्वभाव, सतोगुणी, दिवा-बली (मतान्तर से—रात्रि-बली), पूर्व दिशा की निवासिनी, रुक्ष कान्ति, क्षत्रिय-वर्ण, पुल्लिग, द्वि स्वभाव, दृढ़ शरीर, सम आकार, नर-पशु योनि, अग्नि-तत्व, अति शब्दकारी, पित्त धातु तथा अल्प-सन्तति वाली है। इसका प्रभुत्व 'जंघा' पर है।

10. **मकर**—इसका स्वरूप 'मगर' जैसा है। यह वन-विहारिणी (मतान्तर से—भूमि), सौम्य स्वभाव, तमोगुणी, रात्रि-बली, दक्षिण दिशा की निवासिनी, रुक्ष कान्ति, वैश्य-वर्ण, स्त्रीलिङ्ग, दृढ़-शरीर, समआकार, जल-जन्तु (जलचर) योनि, भूमि तत्व, चतुष्पद, पीत वर्ण, शीत प्रकृति, वात धातु, अति शब्दकारी (मतान्तर से—अर्द्ध शब्दकारी) तथा अल्प सन्तति वाली है। इसका प्रभुत्व घुटनों पर है।

11. **कुम्भ**—इसका स्वरूप 'घड़ा लिए मनुष्य' जैसा है। यह उग्र स्वभाव, दिवा-बली, तमोगुणी, पश्चिम दिशा की निवासिनी, स्निग्ध कान्ति, शूद्रवर्ण, पुल्लिङ्ग, दृढ़ शरीर, लघु आकार (मतान्तर से—मध्यम आकार),

जलचर योनि, वायु-तत्व, चितकवरे वर्ण वाली, उष्ण प्रकृति, त्रिधातु, खण्ड शब्दकारी तथा मध्यम सन्तति वाली है। इसका प्रभुत्व 'पिण्डलियों' पर है।

12. **मीन**—इसका स्वरूप 'दो ऐसी मछलियों जैसा है, जिनकी पूंछ तथा मुख एक दूसरी से मिले हुए' हों। यह सौम्य-स्वभाव, रात्रि-बली, उत्तर दिशा की निवासिनी, बहुकामी, सतोगुणी; स्निग्ध कान्ति, विप्रवर्ण, स्त्रीलिङ्ग, द्वि-स्वभाव, दृढ़ शरीर, लघु आकार (मतान्तर से—मध्यम), जलचर योनि, धूम्र वर्ण, शीत-प्रकृति, कफ धातु, निःशब्द तथा बहु-सन्तति वाली है। इसका प्रभुत्व पाँवों पर है।

राशि-मैत्री

(1) पृथ्वी तत्व और जल तत्व एवं (2) अग्नि तत्व और वायु तत्व वाली राशियाँ परस्पर 'मित्र' होती हैं। अतः इन राशियों वाले परस्पर मैत्री-सम्बन्धों का निर्वाह करते हैं।

(1) पृथ्वी तत्व और अग्नि तत्व, (2) जल तत्व और अग्नि तत्व एवं (3) जल तत्व और वायु तत्व वाली राशियाँ परस्पर 'शत्रु' होती हैं अतः इन राशियों वालों में परस्पर शत्रुता रहती है।

राशि-स्वरूप की आवश्यकता

जिन राशियों के जो स्वरूप, गुण-धर्म, स्वभाव आदि बताये गए हैं, उन राशियों में उत्पन्न स्त्री-पुरुषों के स्वरूप, गुण-धर्म, स्वभाव आदि प्रायः उसी प्रकार के होते हैं। अस्तु, विवाह, मैत्री, शत्रुता, साझेदारी आदि सम्बन्धों पर विचार करते समय राशि-स्वरूप का ज्ञान उपयोगी सिद्ध होता है।

(1) मेष, कर्क, तुला तथा मकर—ये राशियाँ 'चर' संज्ञक हैं।

(2) वृष, सिंह, वृश्चिक तथा कुम्भ—ये राशियाँ 'स्थिर' संज्ञक हैं।

(3) मिथुन, कन्या, धनु तथा मीन—ये राशियाँ 'द्विस्वभाव' संज्ञक हैं।

महर्षि जैमिनि के मतानुसार—

(1) चर राशि अपने से द्वितीय भावस्थ स्थिर राशि के अतिरिक्त अन्य सभी स्थिर-राशियों को देखती है।

(2) स्थिर राशि अपने से द्वादश भावस्थ चर राशि के अतिरिक्त अन्य सभी चर-राशियों को देखती है।

(3) द्वि-स्वभाव राशि अपने अतिरिक्त अन्य सभी द्वि-स्वभाव राशियों को देखती है।

(4) स्थिर, चर तथा द्वि-स्वभाव राशि की क्रमशः छठी, आठवीं तथा सातवीं राशि सम्मुख होती है।



5 ग्रह : स्वरूप, गुण-धर्म, मैत्री, बल आदि

भारतीय-ज्योतिष में ग्रहों की संख्या 9 मानी गई है। यथा—(1) सूर्य, (2) चन्द्रमा, (3) मंगल, (4) बुध, (5) गुरु या वृहस्पति, (6) शुक्र, (7) शनि, (8) राहु और (9) केतु। इनमें से पहले सात ग्रहों के पिण्ड आकाश में दिखाई देते हैं। राहु ओर केतु—ये दोनों 'छाया-ग्रह' हैं इनके आकाशीय-पिण्ड नहीं है। पाश्चात्य खगोल-शास्त्रियों द्वारा नवीन अनुसन्धानित तीन ग्रहों—(1) हर्शल, (2) नेपच्यून तथा (3) प्लूटो—को अभी भारतीय-ज्योतिष में स्थान नहीं दिया गया है। इसका मुख्य कारण संभवतः यही है कि मनुष्य-जीवन की अल्पावधि पर इनका कोई विशेष क्रियात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं हो पाता।

पृथ्वी स्थित सभी प्राणियों तथा चर-अचर पदार्थों पर ग्रहों का प्रभाव पड़ता है। मनुष्य-जीवन को ये विशेष रूप से प्रभावित करते हैं, परन्तु सभी ग्रह सभी मनुष्यों अथवा पदार्थों पर एक-जैसा प्रभाव नहीं डालते। एक ग्रह किसी के लिए लाभप्रद तथा दूसरे के लिए हानिकर हो सकता है। कौन सा ग्रह किस व्यक्ति के लिए शुभ अथवा अशुभ फलदायक होगा—इसका ज्ञान उस व्यक्ति की जन्म-कुण्डली देख कर प्राप्त किया जा सकता है। जन्म-कुण्डली का निर्माण प्राणी के जन्म-समय के आधार पर किया जाता है। जन्म लेने वाले को ज्योतिषीय-भाषा में 'जातक' कहते हैं। जन्म के समय आकाश-मण्डल में कौनसी राशि पूर्वी-क्षितिज पर थी तथा विभिन्न ग्रह किन-किन राशियों में कितनी-कितनी दूरी पर भ्रमण कर रहे थे, जन्म-कुण्डली इसी विषय का एक नक्शा है। जन्म के समय किस राशि में संचरण करने

वाला ग्रह जातक पर अपना क्या प्रभाव डालता है, इस विषय का उल्लेख आगे किया जाएगा। सर्वप्रथम विभिन्न ग्रहों के स्वरूप, स्वभाव तथा गुण-धर्म आदि की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है, अतः पहले उसी का उल्लेख किया जा रहा है।

सूर्य



सूर्य यथार्थ में 'ग्रह' न होकर एक स्थिर 'तारा' है, जो अपने अक्ष (धुरी) पर घूमता रहता है। अन्य सभी ग्रह इसकी परिक्रमा करते रहते हैं (पाश्चात्य खगोल-शास्त्रियों के अनुसार—अन्य सभी ग्रह सूर्य के ही अंश थे, जो कालान्तर में किसी बड़ी घटना के कारण इससे छिटक कर दूर चले गए और तभी से इसके चारों ओर घूमते रहते हैं। परन्तु भारतीय ज्योतिषियों के अनुसार—सभी ग्रह प्रारम्भ से ही स्वतन्त्ररूप में उत्पन्न हुए हैं) परन्तु पृथ्वी के घूमने के कारण सूर्य भी सचरण करता (चलता) हुआ प्रतीत होता है, अतः 'प्रतीति' के कारण ही इसे भी 'ग्रह' मान लिया गया है। सूर्य स्वयं राशि-संचरण करे अथवा पृथ्वी राशि-संचरण करते हुए उसके चारों ओर भ्रमण करे तो इससे ज्योतिष के गणित तथा फलित में कोई अन्तर नहीं आता, क्योंकि दोनों ही संचरण 24 घण्टे में पूर्ण हो जाते हैं, अतः इस सम्बन्ध में किसी भ्रम में पड़ना अनावश्यक है।

सूर्य सदैव मार्गी तथा उदित रहने वाला ग्रह है। यह कभी अस्त नहीं होता। पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमते रहने के कारण ही यह कहीं उदित तथा कहीं अस्त-हुआ लगता है। सौरमण्डल में सबसे अधिक तेजस्वी होने के कारण इसे 'ग्रहराज' भी कहा जाता है। अन्य सभी ग्रह इसी के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं। चन्द्रमा भी इसी से प्रकाश ग्रहण करता है।

सूर्य को काल पुरुष की 'आत्मा' कहा गया है। ज्योतिषीय-मान्यतानुसार यह गुलाबी वर्ण वाला, वृद्ध (50 वर्ष की आयु वाला), पुल्लिग, क्षत्रिय जाति, पिङ्गल वर्ण, सुन्दर स्वरूप, चतुरस्र आकृति (मतान्तर से—गोल)

सत्वगुण, अग्नि तत्व, पित्त प्रकृति, स्थिर स्वभाव वाला, अश्व-वाहन तथा पूर्व दिशा का स्वामी है। इसके आधार पर जातक की आत्मा, नेत्र, कलेजा हड्डी, शारीरिक-गठन, शक्ति, आरोग्य, व्यक्तित्व, प्रभाव, ऐश्वर्य, प्रभुत्व आचरण, महत्वाकांक्षा, अधिकार तथा पिता के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। यह मेरुदण्ड, स्नायु, उदर, मस्तिष्क, हृदय; रक्त, फुस्फुस तथा जठराग्नि को भी प्रभावित करता है। मंदाग्नि, भगन्दर, अर्श, हैजा, क्षय सिर-दर्द, नेत्र-विकार, अपस्मार आदि रोगों के सम्बन्ध में इससे विचार करते हैं।

यह राजा, रईस, अधिकारी, सैनिक, ब्राह्मण, प्रसिद्ध व्यक्ति, औषध-विक्रेता, जौहरी, स्वर्णकार आदि का प्रतिनिधि है। इसकी मुख्य धातु ताँबा है, परन्तु यह स्वर्ण पर भी आधिपत्य रखता है। धान्य, लाल चन्दन, ऊन, पश्मीन, तृण, नारियल, बादाम तथा लाल रंग की वस्तुओं का भी यह प्रतिनिधित्व करता है।

'ग्रह-परिषद्' में इसे 'राजा' माना गया है। इसे अति उग्र क्रूर कहा गया है, परन्तु क्रूर होने के साथ ही यह सात्विक भी है। यह ऊर्ध्व दृष्टि वाला, दिग्बली तथा 'सिंह' राशि का स्वामी है। इसकी उच्चराशि 'मेष' तथा नीच राशि 'तुला' है अर्थात् यह 'मेष' राशि में हो तो 'उच्चरूप' एवं 'तुला' राशि में हो तो नीचस्थ माना जाता है। सिंह राशि के 20 अंश तक यह 'मूल त्रिकोणस्थ' होता है।

चन्द्रमा, मंगल तथा वृहस्पति सूर्य के नैसर्गिक (स्वाभाविक) 'मित्र' हैं। शुक्र तथा शनि 'शत्रु' हैं। बुध से यह 'सम-भाव' रखता है। राहु तथा केतु भी इसके 'शत्रु' माने जाते हैं।

सूर्य जन्मकुण्डली के जिस भाव (घर) में बैठा होता है, वहाँ से तीसरे तथा दसवें भाव (घर) को एक चरण दृष्टि से, (एक भाग अर्थात् चौथाई), पाँचवें तथा नवें भाव को दो चरण दृष्टि (आधी) से, चौथे तथा आठवें भाव को तीन चरण (तीन चौथाई) दृष्टि से एवं सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी तथा उत्तराषाढ़ा इसके अपने नक्षत्र हैं।

ग्रह जातक के जीवन पर प्रायः 22 से 24 वर्ष की अवस्था में अपना शुभ अथवा अशुभ फल विशेष रूप से प्रदर्शित करता है। गोचर (दैनिक स्थिति) में यह अपनी राशि बदलने के 5 दिन पूर्व से ही अपना प्रभाव प्रकट करने लगता है तथा प्रत्येक राशि के प्रारम्भिक भाग में अपना फल देना आरम्भ कर देता है।

सूर्यकृत्-पीड़ा अथवा दोष निवारण हेतु 'माणिक्य' धारण किया जाता है।

जन्म कुण्डली में सूर्य जिस भाव में बैठा हो, वहाँ से छठे स्थान में यदि कोई अन्य ग्रह बैठा हो तो इसे 'वेध' लगता है। वेध-प्राप्त सूर्य अशुभ-फल देता है। सूर्य तथा शनिश्चर में कभी वेध नहीं होता है।

चन्द्रमा



यह पृथ्वी का सबसे निकट पड़ौसी ग्रह है। पृथ्वी से इस की दूरी 2, 38, 000 मील है। यह सर्वाधिक तीव्र गति से चलता है तथा 27 दिन, 7 घंटा 43 मिनट एवं 11 सैकिण्ड अर्थात् $27\frac{1}{2}$ दिन में सौर मण्डल की परिक्रमा कर लेता है। एक राशि पर यह लगभग $2\frac{1}{4}$ दिन संचरण करता है। यह पृथ्वी की परिक्रमा करते रहने के अतिरिक्त, उसी के साथ सूर्य की परिक्रमा भी करता रहता है।

ग्रह-परिषद् में सूर्य की भाँति 'चन्द्रमा' को भी 'राजा' का पद दिया गया है। यों, ज्योतिष शास्त्र में चन्द्रमा को स्त्री-ग्रह तथा सूर्य की अर्द्धाङ्गिनी मानते हुए इसे 'रानी' के रूप में स्वीकार किया गया है। यह भी सदामार्गी तथा उदित रहने वाला ग्रह है। कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तथा चतुर्दशी को इसे 'वृद्ध', अमावस्या को 'मृत' तथा शुक्ल-प्रतिपदा को 'बाल' अवस्था वाला माना जाता है। अतः ये चार तिथियाँ शुभ कार्यों के लिए त्याज्य कही गई हैं।

पूर्णचन्द्र को 'सौम्य' तथा क्षीण चन्द्र को 'पापग्रह' माना गया है। बली-चन्द्रमा 'शुभ' तथा निर्बल 'अशुभ-ग्रह' के रूप में स्वीकार किया जाता

है। इसकी स्वराशि 'कर्क' है। यह वृष राशि में उच्चस्थ एवं मूल-त्रिकोण तथा वृश्चिक राशि में नीचस्थ होता है।

यह कर्क तथा वृष राशि में, सोमवार, द्रेष्काण, होरा, नवांश त राश्यन्त में शुभ ग्रहों से दृष्ट, रात्रि, चतुर्थ भाव तथा दक्षिणायन में ब होता है। कक्ष-सन्धि के अतिरिक्त सर्वत्र पूर्ण तथा बलवान चन्द्रमा को राज योग कारक माना गया है। शुक्ल पक्ष की एकादशी से कृष्ण पक्ष की पंचम तक यह 'पूर्ण', कृष्ण पक्ष की एकादशी से शुक्ल पक्ष की पंचमी तक 'क्षीण कृष्ण पक्ष की षष्ठी से कृष्ण पक्ष की दशमी तक यह 'मध्यम' माना जाता है 'पूर्ण-चन्द्र' शुभ तथा 'क्षीण-चन्द्र' अशुभ होता है। मध्यम-चन्द्र मध्यम फ कारक होता है।

चन्द्रमा को काल-पुरुष का 'मन' माना गया है। ज्योतिषीय-मतानुसा यह—श्वेत वर्ण, युवावस्था वाला, स्त्री लिङ्ग, वैश्य जाति, सुन्दर, स्थूला कृति, सत्वगुणी, जल तत्व, मृग-वाहन एवं कफ प्रकृति वाला तथा वायव्य दिशा का स्वामी है। इसका मन, अन्तःकरण, मनोभाव, संवेदन, शारीरिक स्वास्थ्य, मस्तिष्क, रक्त, दयालुता, कोमलता, कल्पना शक्ति, गार्हस्थ्य-प्रेम देश-प्रेम, सहानुभूति, सौन्दर्य तथा ज्योतिष-विद्या पर आधिपत्य माना जाता है। इसके द्वारा जल, मोती, कृषि, श्वेतवस्त्र, चाँदी, पुष्प, चावल, मिश्री, श्वेत वस्तुएें, भ्रमणशीलता, माता, राजभक्ति तथा स्त्री आदि से लाभ का विचार किया जाता है।

मनुष्य-शरीर में गले से हृदय तक, अण्डकोष, गर्भ तथा पिङ्गला-नाड़ी पर इसका अधिकार रहता है। स्त्री, वेश्या, दाई, परिचारिका, मछुए, यात्री, नाविक, औषध तथा शराब-विक्रेता, नेत्र-रोग, पीलिया, पीनस, मानसिक विकार, मूत्र कृच्छ, स्त्री-संसर्गजन्य रोग तथा गाँठ आदि का भी यह प्रतिनिधित्व करता है।

सूर्य, गुरु तथा बुध—ये तीनों चन्द्रमा के नैसर्गिक मित्र हैं, राहु तथा केतु 'शत्रु' हैं एवं मंगल, शुक्र तथा शनि से यह 'सम' भाव रखता है। जन्म कुण्डली में चन्द्रमा जिस स्थान पर बैठा हो, वहाँ से तृतीय तथा दशम भाव को एक पाद दृष्टि से, पंचम तथा नवम भाव को द्विपाद दृष्टि से, चतुर्थ तथा

अष्टम भाव को त्रिपाद दृष्टि से तथा सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

मेष, तुला, वृश्चिक तथा मीन लग्न में चन्द्रमा योग कारक होता है। रोहिणी, पुनर्वसु, विशाखा तथा पूर्वा भाद्रपदा नक्षत्र का चन्द्रमा श्रेष्ठ फल देता है। कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी, आश्लेषा, ज्येष्ठा, उत्तराषाढ़ा तथा रेवती नक्षत्रों पर अशुभ-फल देता है। नीचस्थ तथा असंगत चन्द्रमा अशुभ-फल कारक होता है। यदि चन्द्रमा के साथ बैठा राहु ग्रहण-योग बना रहा हो तो भी चन्द्रमा अशुभ फल देता है।

पुनर्वसु, पुष्य तथा आश्लेषा—चन्द्रमा के नक्षत्र हैं। यह जातक के जीवन में प्रायः 24 से 26 वर्ष की आयु में अपना शुभ अथवा अशुभ फल प्रदर्शित करता है। गोचर में यह प्रत्येक राशि-संक्रमण की अन्तिम घटी अर्थात् 1 घण्टा 12 मिनट पहले से अपना विशिष्ट फल देने लगता है।

चन्द्रकृत-पीड़ा अथवा दोष-निवारणार्थ 'मोती' धारण किया जाता है।

जन्म कुण्डली में 5, 9, 12, 1, 4 तथा 8 भाव चन्द्रमा के 'विद्ध' तथा 1, 3, 6, 7, 10 एवं 11 भाव शुभ स्थान माने गए हैं। विद्ध-स्थानों पर बुध-रहित कोई ग्रह नहीं होना चाहिए, अन्यथा विद्ध-चन्द्र शुभ-स्थान पर रहते हुए भी अशुभ फल देता है।

सूर्य और चन्द्रमा जब परस्पर 6 राशि के अन्तर पर आते हैं, उस समय पूर्णिमा होती है तथा उसी के प्रभाव से समुद्रों में ज्वार-भाटे आने लगते हैं। कभी-कभी अमावस्या के दिन जब यह पृथ्वी तथा सूर्य के बीच आ जाता है, उस दिन 'सूर्य ग्रहण' होता है तथा जब कभी पूर्णिमा के दिन पृथ्वी चन्द्रमा और सूर्य के बीच आ जाती है, उस रात 'चन्द्र-ग्रहण' होता है।

मङ्गल

पृथ्वी से मङ्गल की दूरी 6, 25, 00, 000 मील है, परन्तु यह सौर-जगत् में भ्रमण करता हुआ हर पन्द्रहवें वर्ष पृथ्वी के अत्यन्त समीप और जाता है। उस समय पृथ्वी से इसकी दूरी केवल 3, 46, 00, 000 मील रह जाती है। सामान्यतः सूर्य से इसकी दूरी 14, 51, 86, 000 मील

मानी गई है। इसका व्यास 4115 मील है। यह अपनी धुरी पर 24 घण्टे 37 मिनट तथा 22 सैकिण्ड में घूमता है। सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने में इसे सामान्यत: 687 दिन लगते हैं। इसकी गति में परिवर्तन होता रहता है। जब यह सूर्य के निकट पहुँचने को होता है, उस समय इसकी गति अधिक तीव्र हो जाती है। यदि यह वक्र गति से न चले तो 45-45 दिन में एक-एक राशि पर सञ्चरण करता हुआ, कुल 1½ वर्ष में सम्पूर्ण राशि-चक्र को पार कर लेता है।



मंगल को काल-पुरुष का 'पराक्रम' माना गया है। ग्रह-परिषद् में इसे 'सेनापति' का पद प्राप्त है। ज्योतिषीय-मतानुसार यह—लाल वर्ण, युवावस्था, पुल्लिङ्ग, क्षत्रिय जाति, कृश स्वरूप एवं चतुष्कोण आकृति वाला, तमोगुणी, अग्नि तत्व, पित्त-प्रकृति, उग्र-स्वभाव, रात्रि-बली, महिष-वाहन तथा दक्षिण दिशा का स्वामी है। इसे पराक्रम, स्फूर्ति, साहस, धैर्य, आत्म-विश्वास, बल, रक्त, दृढ़ता, देश-प्रेम, क्रोध, घृणा, उत्तेजना, झूठ तथा शास्त्र-विद्या का अधिपति माना गया है।

मनुष्य-शरीर में पेट से पीठ तक का भाग, नाक, कान, फेफड़े तथा शारीरिक-शक्ति मंगल के अधिकार-क्षेत्र में आते हैं। यह भाई-बहिन, लाल रंग की वस्तुऐं तथा धातुऐं—ताँबा, स्वर्ण, मिट्टी, कृषि, मूँगा, मदिरा, केशर, कस्तूरी, शस्त्र, स्टील, पारा, हरताल, भूमि, रक्तस्राव, शस्त्र-संचालन, दुराचरण, अनुशासन-प्रियता, प्रशासनिक-योग्यता, राजनीतिक-नेतृत्व, वैज्ञानिक अध्ययन, अनुसन्धान, चौर-कर्म, दुर्घटना, शस्त्र-निर्माण, शल्य-क्रिया, विद्युत-शक्ति एवं सेना विषयों तथा पदार्थों का प्रतिनिधि है। शस्त्राघात, अग्निभय, रक्त-विकार, कफ, गर्मी, क्षय, ज्वर, अण्डवृद्धि, चेचक, खसरा, प्लेग, महामारी, व्रण, ग्रंथि तथा संक्रामक रोग आदि के सम्बन्ध में इसी से विचार करना चाहिए। मंगल के अशुभ होने पर इन रोगों तथा विकारों के होने की सम्भावना रहती है। यह ऋण का भी प्रतिनिधित्व करता है।

यह ग्रह समय-समय पर वक्री, मार्गी तथा अस्त होता रहता है। इसकी स्वराशियाँ 'मेष' तथा 'वृश्चिक' हैं। यह मकर राशि में 'उच्चस्थ'

कर्क राशि में 'नीचस्थ' तथा मेष राशि 12 अंश तक 'मूल-त्रिकोणस्थ' माना जाता है। यह अपने बार (मङ्गलवार), रात्रि-काल, दक्षिण दिशा, राशि के प्रारम्भिक भाग तथा दशम भाव में बली होता है। सूर्य, चन्द्र तथा बृहस्पति—ये तीनों मंगल के नैसर्गिक-'मित्र' हैं। शुक्र तथा शनि से यह 'सम-भाव' रखता है एवं बुध, राहु तथा केतु इसके 'शत्रु' हैं।

मंगल जिस भाव में बैठा होता है, वहाँ से तृतीय तथा दशम भाव को एकपाद दृष्टि से, पञ्चम तथा नवम भाव को द्विपाद दृष्टि से, चतुर्थ तथा अष्टम भाव को त्रिपाद दृष्टि से तथा चतुर्थ, सप्तम एवं अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। कुछ विद्वान् मंगल की 'त्रिपाद-दृष्टि' नहीं मानते।

मङ्गल की गणना अशुभ पाप-ग्रहों में की जाती है। यह पूर्व दिशा में उदित होकर पश्चिम दिशा में अस्त होता है। इसे सत्व, बल तथा पराक्रम का प्रतीक माना गया है। लंका से कृष्ण नदी तक इसका प्रभाव-क्षेत्र है। यह भाई-बहिन का कारक है। योग्यता, धैर्य तथा विविध प्रकार के खतरों का सामना करने में इसी के बलाबल के आधार पर विचार किया जाता है। मुकदमे, झगड़े आदि में भी इसी का बल प्रधान माना जाता है।

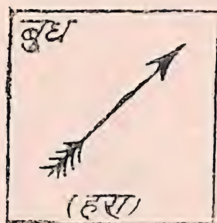
यह जातक के जीवन पर 28 से 32 वर्ष की आयु में अपना शुभ अथवा अशुभ प्रभाव प्रकट करता है। गोचर में यह अपने राशि-संक्रमण के 8 दिन पहले से ही अपना फल देना आरम्भ कर देता है। मङ्गल कृत्-पीड़ा एवं दोष के निवारणार्थ 'प्रवाल' (मूँगा) धारण करना चाहिए।

मंगल के बिद्ध-स्थान हैं—11, 9, 5 तथा शुभ स्थान हैं—3, 6, 11। बिद्ध स्थानों पर किसी ग्रह की स्थिति होने पर शुभ मङ्गल की अशुभ-फल दे सकता है। सूर्य की भाँति इसके भी वाम-वेध का विचार करना चाहिए।

यह भाई-बहिन का कारक है। मृगशिरा, धनिष्ठा तथा चित्र इसके अपने नक्षत्र हैं। यह गुरु के साथ सात्विक, सूर्य के साथ राजस तथा बुध के साथ शत्रु भाव रखता है। यह तीसरे तथा छठे स्थान में बली तथा द्वितीय स्थान में निर्बल होता है। दशम स्थान में दिग्बली तथा चन्द्रमा के साथ रहने पर चेष्टा बली माना जाता है।

बुध

यह सौर-मण्डल का सबसे छोटा ग्रह है। पृथ्वी से इसकी दूरी 3, 68, 41, 467 (मतान्तर से---3, 68, 85,000) मील पायी जाती है।



इसका व्यास 3, 140 मील (मतान्तर से—2, 984 मील) है। यह सूर्य से 3, 68, 8500 मील की दूरी पर है। छोटा होने पर भी यह बहुत चमकीला है तथा सूर्य के अधिक समीप होने के कारण बहुधा स्पष्ट दिखाई नहीं देता, यह दिन के अस्त होने के बाद अथवा प्रातःकाल सूर्योदय होने से पूर्व कुछ समय के लिए ही दिखाई देता है। इसकी औसत चाल 30 मील प्रति सैकिण्ड है। स्थूल रूप से यह 25 दिन तक एक राशि में संचरण करता है तथा सूर्य की प्रदक्षिणा करने में इसे 88 दिन लगते हैं। यह ज्यों-ज्यों सूर्य से दूर तथा पृथ्वी के निकट होता जाता है, त्यों-त्यों इसका तापक्रम घटता चला जाता है। यह अपनी धुरी पर प्रायः 24 घण्टा, 6 मिनट में घूमता है।

बुध को काल-पुरुष की 'वाणी' माना जाता है। ग्रह-परिषद् में इसे 'राजकुमार' का पद दिया गया है। यह वाणी, विद्या तथा बुद्धि का प्रतीक है। ज्योतिषीय-मतानुसार यह—दूर्वा के समान हरे वर्ण वाला, बाल-अवस्था वाला, नपुंसक लिङ्ग, शूद्र जाति, प्रसन्न स्वरूप वाला, गोल आकृति, रजोगुणी, पृथ्वी तत्व, समधातु वाली प्रकृति, मिश्र स्वभाव का तथा उत्तर दिशा का स्वामी है। निसर्ग-बल में यह मंगल से अधिक-बली तथा शुक्र से पराजित है। यदि यह अकेला हो तो 'शुभ' तथा पापग्रह से युक्त हो तो 'अशुभ' माना जाता है। सूर्य के साथ हो तो 'अस्त' माना जाता है।

इसे हाथ, पाँव, त्वचा, विद्या, बुद्धि, चातुर्य्य, वाणी, शिल्प, व्यव--साय तथा गणित का अधिपति माना गया है। मनुष्य-शरीर में कन्धे से लेकर ग्रीवा तक इसका अधिकार क्षेत्र है। यह मुख, नासिका, वाणी, जिह्वा, नाड़ी-कम्पन, रक्त-हीनता आदि का प्रतिनिधित्व करता है। यह कूटनीतिज्ञ, तार्किक, ज्योतिषी, लेखक, सम्पादक, प्रकाशक, अभिनेता, वैज्ञानिक, गणितज्ञ, अध्यापक, व्यवसायी, चिकित्सक, खिलाड़ी, शिल्पी तथा युक्ति-कुशल आदि बुद्धि-

जीवी वर्ग का अधिपति है। डाक-तार विभाग, प्रतिभा, तर्क, मूर्तिकला तथा बीमा आदि के कार्य इसी के अधीन माने गये हैं।

बुध अशुभ स्थिति में हो तो पूर्व कथित अंगों में रोग, श्वेत, कुष्ठ, मूकत्व, आलस्य, मतिभ्रम, रक्ताल्पता, उदर-रोग, सिर-दर्द, वात-रोग, गुप्त-रोग, संग्रहणी, मंदाग्नि, शूल, दमा, फुस्फुस-विकार, नेत्र-रोग आदि दोष उत्पन्न होते हैं।

यह मुख्यरूप से व्यवसाय का प्रतिनिधि है। सुगंधित तैल, इत्र, कपूर, खाँड़, चाँदी, मूँगा, हाथी दाँत, पन्ना एवं मिश्रित-रस आदि पदार्थ, कानून, साक्षी, चिकित्सा एवं क्रीड़ा-स्थल आदि के सम्बन्ध में भी इसी के द्वारा विचार किया जाता है।

इसके विद्ध स्थान—2, 4, 6, 8, 10 और 11 तथा शुभ-स्थान—5, 3 9, 1, 8 और 12 होते हैं। बुध यदि किसी शुभ-स्थान पर हो तथा विद्ध-स्थानों पर कोई ग्रह चन्द्र-रहित हो तो बुध का शुभ-फल भी अशुभ में बदल जाता है।

बुध भी समय-समय पर मार्गी, वक्री तथा अस्त होता रहता है। इसकी अपनी राशियाँ मिथुन तथा कन्या हैं। यह कन्या राशि के 15 अंश तक 'परम उच्चस्थ' तथा मीन राशि के 15 अंश तक 'परम नीचस्थ' माना जाता है। कन्या राशि के 26 अंश (मतान्तर से—21,30 अंश) तक इसे 'मूल-त्रिकोणस्थ' मानते हैं। यह मिथुन, कन्या और धनुराशि, बुधवार, अपने वर्ग तथा उत्तरायण में बली होता है। सूर्य, शुक्र, राहु तथा केतु—ये चारों ग्रह बुध के नैसर्गिक-मित्र हैं। मंगल, गुरु तथा शनि से यह 'समभाव' तथा चन्द्रमा से 'शत्रुता' रखता है। (स्मरणीय है कि बुध चन्द्रमा का पुत्र है तथा चन्द्रमा इसके प्रति मित्रभाव रखता है, तथापि बुध अपने पिता चन्द्रमा के साथ शत्रु-भाव ही रखता है)। शुक्र के साथ इसका राजस व्यवहार रहता है। यह जातक के जीवन पर प्राय: 32 से 35 वर्ष की अवस्था में शुभाशुभ प्रभाव प्रकट करता है।

बुध जिस भाव में बैठा हो वहाँ से तीसरे तथा दसवें भाव को एकपाद दृष्टि से, पाँचवें तथा नवें भाव को द्विपाद दृष्टि से, चौथे तथा आठवें भाव

को त्रिपाद दृष्टि से एवं सातवें भाव की पूर्ण दृष्टि से देखता है। इसे चौथे तथा दसवें भाव का कारक माना जाता है तथा इसके द्वारा भाई, मामा, मित्र, चाचा, भतीजा, बुद्धि, चातुर्य एवं विद्या आदि के सम्बन्ध में विशेष विचार किया जाता है। बुधकृत् दोष के निवारणार्थ 'पन्ना' धारण करना चाहिए।

यह अश्लेषा, ज्येष्ठा, रोहिणी, हस्त तथा श्रवण नक्षत्रों पर शुभ तथा आर्द्रा, स्वाति, पुस्य, अनुराधा, चित्रा, मघा एवं मूल नक्षत्रों पर अशुभ फल देता है। यह गुरू तथा चन्द्रमा के साथ बैठकर शुभ तथा शुक्र के साथ बैठकर मिश्रित फल देता है। बुध यदि शुभ ग्रह से युक्त हो तो शुभ और पाप ग्रह से युक्त हो तो अशुभ माना जाता है। अकेले बुध की गणना शुभ ग्रहों में की जाती है। गोचर में यह राशि संचरण से 7 दिन पूर्व ही अपना फल देना आरम्भ कर देता है।

बृहस्पति (गुरू)



यह ग्रह सभी ग्रहों के सम्मिलित आकार से भी बड़ा है, इसी कारण इसे 'गुरू' भी कहा जाता है। इसका व्यास 9, 86, 20 मील (मतान्तर से— 2, 75, 000 मील तथा 87, 380 मील) माना जाता है। कुछ विद्वान् इसका व्यास पृथ्वी से 11 गुना अधिक भी मानते हैं। सूर्य से इसकी दूरी 48, 32, 00, 000 मील (मतान्तर से—49, 57, 51, 000 मील) है। यह पृथ्वी से लगभग 36, 70, 00000 मील की दूरी तक आ जाता है। इसकी गति 8 मील प्रति सेकिण्ड है। यह अपनी धुरी पर प्रायः 10 घण्टों में घूमता है एवं लगभग 4, 332½ दिन अथवा लगभग 12 वर्ष की एक प्रदक्षिणा पूरी करता है। स्थूल रूप से यह एक राशि में एक वर्ष तक भ्रमण करता है।

गुरु को काल-पुरुष का 'ज्ञान' माना गया है, अतः ज्ञान का प्रतीक है। ग्रह-परिषद में इसे 'मन्त्री' का पद प्राप्त है। ज्योतिषीय-मतानुसार यह— पीत-गौर वर्ण, वृद्धावस्था वाला, पुल्लिङ्ग, ब्राह्मण जाति, स्थूल स्वरूप (भूरे केश युक्त) एवं गोल आकृति वाला, द्विपाद, सत्व गुणी, समधातु, आकाश

तत्व, हाथी वाहन वाला, मृदु-स्वभाव तथा ईशान दिशा का स्वामी है। निसर्ग-बल में यह बुध से अधिक बली तथा मंगल से पराजित है।

यह जीव, हृदय कोष, चर्बी तथा कफ का अधिपति है। मनुष्य-शरीर में कमर से जंघा तक इसका अधिकार-क्षेत्र है। यह बुद्धि, विवेक, ज्ञान, पारलौकिक-सुख, आध्यात्मिकता, उदारता, धर्म, न्याय, सिद्धान्तवादिता, राजनीतिज्ञता, पुरोहितत्व, मन्त्रित्व, यश, सम्मान, पवित्र-व्यवहार आदि के अतिरिक्त धन, सन्तान तथा बड़े भाई का प्रतिनिधि है।

यह कफ तथा चर्बी की वृद्धि करता है। हृदय-कोष सम्बन्धी रोग, क्षय, मूर्च्छा, गुल्म, शोथ आदि से इसी का सम्बन्ध रहता है। इसे स्वर्ण, कांसा, गेहूँ, चना, जौ, पीले रंग के पुष्प, फल तथा वस्त्र, धनियाँ, हल्दी, प्याज, ऊन तथा मोम आदि का प्रतिनिधि भी माना जाता है।

गुरु के विद्ध-स्थान 2, 5, 7, 9 तथा शुभ-स्थान 12, 4, 3, 10 तथा 8 हैं। शुभ-स्थान स्थित गुरु तभी पूर्ण शुभ-फल देता है, जब उसके विद्ध स्थान पर कोई अन्य ग्रह न हो, अन्यथा उसके शुभ-फल में या तो कमी आ जाती है अथवा वह अशुभ या निष्फल हो जाता है।

गुरु समय-समय पर मार्गी, वक्री तथा अस्त होता रहता है। धनु तथा मीन इसकी स्व-राशियाँ हैं। यह कर्क राशि के 5 अंश तक 'परम उच्चस्थ,' मकर राशि के 5 अंश तक 'परम नीचस्थ' तथा धनुराशि के 10 अंश तक 'मूल त्रिकोणस्थ' माना जाता है। यह कर्क, वृश्चिक, कुम्भ एवं मीन राशियों में, स्व-वर्ग, गुरुवार, उत्तरायण तथा लग्न में एवं रात्रि तथा दिन के मध्यभाग में अधिक बली होता है। बृहस्पति को 'शुभग्रह' माना जाता है।

सूर्य, चन्द्र तथा मंगल—ये तीनों बृहस्पति के नैसर्गिक 'मित्र' हैं, बुध तथा शुक्र 'शत्रु' हैं तथा शनि, राहु एवं केतु के साथ इसका 'समभाव' रहता है। यह जन्मकुण्डली के जिस भाव में बैठा होता है, वहाँ से तृतीय तथा दशमभाव को एक पाद दृष्टि से, पंचम तथा नवम भाव को द्विपाद दृष्टि से, चतुर्थ तथा अष्टमभाव को त्रिपाद दृष्टि से एवं पंचम, नवम तथा सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। मतान्तर से—गुरु की द्विपाद दृष्टि

नहीं होती।

यह पंचम भाव का कारक है। इसके द्वारा सन्तान, विद्या धर्म, लाभ, यश-कीर्ति, राज्य, सम्मान, पवित्रता, इन्द्रिय-संयम, गृह, पौत्र तथा गुल्म, शोथ आदि रोगों का विचार किया जाता है।

यह लग्न में बली तथा चन्द्रमा के साथ रहने पर चेष्टाबली होता है। इसके सूर्य के साथ सात्विक, चन्द्रमा के साथ राजस, मंगल के साथ तामस एवं बुध तथा शुक्र के साथ शत्रुतापूर्ण सम्बन्ध रहते हैं। वक्री, अस्त तथा अतिचारी गुरु अभीष्ट फल नहीं देता। यह उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, पुनर्वसु, पूर्वा भाद्रपदा तथा विशाखा नक्षत्रों में शुभ-फल देता है एवं आर्द्रा स्वाति तथा शतभिषा नक्षत्रों में अशुभ फलदायक होता है।

लग्नस्थ वृहस्पति तथा केन्द्रस्थ वृहस्पति को एक लाख दोषों को दूर करने वाला माना जाता है, परन्तु कुछ विद्वान् इसे केन्द्राधिपत्य-दोष से दोषी भी मानते हैं। यह जातक के जीवन पर प्रायः 16, 22 तथा 40 वर्ष की आयु में अपना प्रभाव प्रकट करता है। गोचर में किसी भी राशि में पहुँचने के बाद मध्यकाल में अपना पूर्ण शुभाशुभ फल देता है। इसका गोचर फल राशि-संक्रमण से दो मास पहले से ही मिलना आरम्भ हो जाता है।

गुरुकृत् दोष के निवारणार्थ 'पुखराज' धारण किया जाता है। इस ग्रह को प्रसन्नता एवं सुख-समृद्धि का प्रतीक माना जाता है।

शुक्र



यह ग्रह सूर्य से 6, 70, 00, 000 मील (मतान्तर से—6, 89, 23, 000 मील) की दूरी पर स्थित है। इसका व्यास लगभग 7700 मील (मतान्तर से –7, 713 मील) है। यह अपनी धुरी पर $23\frac{1}{2}$ घण्टों में घूम लेता है तथा सूर्य की परिक्रमा करने में इसे प्रायः 225 दिन लगते हैं। पृथ्वी से इसकी दूरी 3, 43, 00, 000 मील आँकी गई है। वर्ष में एक बार यह पृथ्वी के अत्यन्त निकट आ जाता है, तब पृथ्वी से इसकी दूरी केवल 20, 00, 000 मील ही रह जाती है। सूर्य की परिक्रमा करते समय इसकी

गति 22 मील प्रति सैकिण्ड होती है। सामान्यतः यह राशि में 1 मास तक भ्रमण करता है। यह आकाश में सबसे अधिक सुन्दर दिखाई देने वाला ग्रह है। इसकी चमक बहुत तेज होती है। यह सायं-काल तथा प्रातःकाल में दिखाई देता है, परन्तु यदि कभी बादल घिरे रहने के कारण अंधेरा-सा हो तो यह दिन के दोपहर में भी दिखाई दे जाता है।

यह मार्गी, वक्री तथा अस्त होता रहता है। इसे भी ग्रह परिषद् में 'मन्त्री' का पद प्राप्त है। ग्रह-परिषद् में 'गुरु' भी मन्त्री-पद पर हैं, और वे पुल्लिङ्ग हैं, परन्तु शुक्र ग्रह स्त्री लिङ्ग है, अतः इसे 'मन्त्राणी' भी कहा जा सकता है।

इसे काल-पुरुष का 'कम्प' माना गया है, अतः यह कामेच्छा का प्रतीक है। ज्योतिषीय-मतानुसार यह शुभ्र श्वेत वर्ण, युवावस्था वाला, स्त्री लिङ्ग, ब्राह्मण जाति, तेजस्वी, घुँघराले केशों वाला, सुन्दर स्वरूपवान, द्विपाद, रजोगुणी, जल तत्व एवं कफ प्रकृति वाला, मृदु स्वभाव का, अश्व-वाहन तथा आग्नेय कोण का स्वामी है। निसर्ग-बल में यह गुरु से अधिक बली तथा चन्द्रमा से पराजित है।

अण्डाशय, गुर्दा, कफ, वीर्य, नेत्र, विषय-वासना, निःस्वार्थ-प्रेम, कामेच्छा, स्त्री, मनोरंजन, सांसारिक-सुख, कला, सौन्दर्य, रूप, आकर्षण, हाथी, राजरानी, आभूषण, रेशमी-वस्त्र, सुगन्धित द्रव्य, हीरा, स्वर्ण, मणि, चाँदी, स्फटिक, फल, मिश्री, गेहूँ, चावल, अंजीर, श्वेत रंग की वस्तुऐं, शय्या, वाहन, व्यवसाय, नौकरी, छल-कपट, धन, ऐश्वर्य, विवाह, प्रेम, कामशक्ति तथा शारीरिक स्निग्धता आदि के सम्बन्ध में इसीसे विचार किया जाता है।

स्त्री-संसर्ग जन्य बीमारियाँ, मूत्राशय के रोग, प्रमेह एवं मांस सम्बन्धी रोग-दोषों के विषय में भी इसीके द्वारा विचार किया जाता है। कवि, संगीतज्ञ, चित्रकार, अभिनेता, नर्त्तक, ललित कलाओं के ज्ञाता, होटल, हयवाई, शृंगार-प्रसाधनों के निर्माता, मनोरंजक-व्यवसाय से सम्बन्धित लोग, फिल्म, नाटक, भोग-विलास तथा सांसारिक-सुखों का यही ग्रह प्रतिनिधित्व करता है। पृथ्वी में गढ़े हुए धन के विषय में भी इसीसे विचार किया जाता

है। यह जातक के जीवन में 25 से 28 वर्ष की आयु में अपना शुभाशुभ प्रभाव प्रकट करता है।

इसके विद्ध-स्थान 8, 7, 1, 10, 9, 5, 11, 3 और 6 तथा शुभ-स्थान 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11 तथा 12 हैं। शुभ-स्थान पर शुक्र हो अथवा विद्ध-स्थान पर कोई अन्य ग्रह हो अथवा स्वयं शुक्र ही विद्ध-स्थान पर हो तो अशुभफल देता है। यह मीन राशि के 27 अंश तक 'परम उच्चस्थ' मेषराशि के 27 अंश तक 'परम नीचस्थ' तथा तुला राशि के 20 अंश तक (मतारन्त से—15 अंश तक) 'मूल-त्रिकोणस्थ' माना जाता है। धनु तथा मकर इसकी मित्र राशियाँ हैं। कर्क तथा सिंह राशियों से इसकी शत्रुता है। मिथुन, कन्या, मकर तथा कुम्भलग्न में यह योग कारक होता है। यह अपने वर्ग, उच्चराशि, शुक्रवार तथा तृतीय, चतुर्थ, षष्ठ एवं द्वादश भाव तथा अपराह्न काल में बली (शुभ) माना जाता है। छठे भाव में निष्फल तथा सातवें में अनिष्टकर होता है। यदि दिन में जन्म हुआ हो तो जातक की माता के सम्बन्ध में भी इसीके द्वारा विचार किया जाता है। कृष्णानदी से गोमती नदी तक का प्रदेश इसका प्रभाव-क्षेत्र माना जाता है।

बुध, शनि, राहु तथा केतु—ये सब शुक्र के नैसर्गिक 'मित्र' हैं। सूर्य तथा चन्द्रमा 'शत्रु' हैं तथा मंगल एवं गुरु से इसका 'समभाव' रहता है। जन्मकुण्डली में यह जिस भाव में बैठा हो वहाँ से तृतीय तथा दशम भाव को एक पाद दृष्टि से, पञ्चम् तथा नवम भाव को द्विपाद दृष्टि से, चतुर्थ तथा अष्टम भाव को त्रिपाद दृष्टि से एवं सप्तमभाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। यह सप्तम भाव का कारक तथा 'शुभग्रह' है। यह बुध के साथ सात्विक, शनि तथा राहु के साथ तामसिक एवं सूर्य, चन्द्र तथा मंगल के साथ शत्रुवत् भाव रखता है। केन्द्रस्थ होने पर इसे 10 हजार दोष दूर करने वाला माना जाता है, परन्तु साथ ही केन्द्राधिपत्य-दोष का दोषी भी मानते है। शुक्रवत् दोष के निवारणार्थ 'हीरा' धारण किया जाता है।

आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, कृत्तिका, स्वाति तथा आर्द्रा नक्षत्रों पर यह शुभ तथा भरणी, पूर्वा, फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, मृगशिरा, चित्रा तथा धनिष्ठा नक्षत्रों पर अशुभ फल देता है। तुला राशि में विशेष बली होता है। गोचर

में राशि-संक्रमण के एक सप्ताह पूर्व ही फल देना आरम्भ कर देता है।

शनि

सौर-मण्डल का यह सबसे सुन्दर ग्रह माना जाता है। इसके चारों ओर तीन कङ्कण जैसे वलय-चक्र हैं जो एक दूसरे से अलग रहते हुए घूमते रहते हैं। शनि अपने इन वलयों के साथ ही आकाश में भ्रमण करता है।



किसी अन्य ग्रह के ऐसे वलय नहीं हैं। यद्यपि यह ग्रह अधिक चमकीला नहीं है, तथापि अपनी नीली काया तथा झिलमिलाहट से यह मन को सहज ही आकर्षित कर लेता है। दूरबीन से देखने पर यह अत्यन्त सुन्दर प्रतीत होता है। आकाश में यह सूर्यास्त के बाद थोड़ी देर तक ही दिखाई देता है।

शनि पृथ्वी से 79, 10, 00, 000 मील (मतान्तर से—99, 00, 00, 000 मील) दूर है। इसका व्यास 71, 500 मील (मतान्तर से—74, 932 मील) है। सूर्य से इसकी दूरी 88, 60, 00, 000 मील है। यह अपनी धुरी पर $10\frac{1}{2}$ घण्टे में घूमता है। सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करने में इसे $10759\frac{1}{4}$ दिन अर्थात् लगभग $29\frac{1}{2}$ वर्ष का समय लगता है। यह अत्यन्त मन्दगामी ग्रह है। सूर्य के समीप पहुँचने पर इसकी गति लगभग 60 मील प्रति घण्टा ही रह जाती है, इसी कारण इसे 'मन्द' तथा 'शनैश्चर' (अर्थात् धीरे चलने वाला) नाम दिए गए हैं। यह एक राशि पर 30 मास तक रहता है।

शनि को काल-पुरुष का 'दुःख' माना गया है, अतः इसके द्वारा विशेषकर दुःख के विषय में विचार किया जाता है। ग्रह-परिषद् में इसे 'सेवक' (दास) का पद दिया गया है। ज्योतिषीय-मतानुसार यह—कृष्ण वर्ण, वृद्धावस्था वाला, नपुंसक लिङ्ग, शूद्र जाति का, सुन्दर तथा कातर नेत्रों वाला, कृशाङ्ग, रूक्षकेश तथा मोटे दाँत और नखों वाला, दीर्घ आकृति, तमोगुणी, वायुतत्व, वात प्रकृति (मतान्तर से—कफ एवं वात प्रकृति), तीक्ष्ण स्वभाव, महिष-वाहन तथा पश्चिम दिशा का स्वामी है। निसर्ग बल में यह सूर्य से पराजित है। इसे 'पाप-ग्रह' माना गया है। मनुष्य-शरीर में हड्डी, पसली,

मांसपेशी, पिंडली, घुटने, स्नायु, नख तथा केशों पर इसका अधिकार माना गया है। यह लोहा, सीसा, नीलम, तैल, भैंस, नाग, तिल, नमक, उड़द तथा काले रंग की वस्तुओं पर आधिपत्य रखता है। कारागार, पुलिस, ठेकेदारी, यातायात, अचल-सम्पत्ति, जमीन, मजदूर, छोटे दुकानदार, मशीनरी, कल-कारखाने तथा स्थीय संस्थाऐं इसके स्वामित्व में आते हैं। इसके द्वारा शारीरिक-बल, उदारता, विपत्ति, दुःख, संकट, साहस, दुर्भाग्य, विलासिता, अन्याय, चिन्ता, योगाभ्यास, धैर्य, परिश्रम, पराक्रम, प्रभुता, ऐश्वर्य, विलास, ख्याति, मोक्ष, विदेशीभाषा, लोहे से सम्बन्धित काम, मूर्च्छा तथा इंजीनियरी आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

यह अत्यधिक दुःख तथा आधि-व्याधि का कारक है। इसकी 'साढ़े-साती' तथा 'ढैया दशायें' जिन्हें क्रमशः 'वृहत्कल्याणी' तथा 'लघु कल्याणी' कहा जाता है, अपना चरम प्रभाव प्रकट करती हैं। यह पाप-ग्रह होते हुए भी मनुष्य को दुःख रूपी अग्नि में तपा कर उसे कुन्दन की भाँति निखारता तथा उसके कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। बलवान् शनि विशिष्टता, लोक-प्रियता, सार्वजनिक प्रसिद्धि एवं सम्मान को देता है। यह मोक्षदायक भी हो सकता है। गंगा से हिमालय तक प्रदेश इसका प्रभाव-क्षेत्र माना जाता है।

इसके विद्ध-स्थान 12, 9 तथा 5 एवं शुभ-स्थाद 3, 6 तथा 11 हैं। शनि का वेध मंगल के समान ही समझना चाहिए, सूर्य के साथ शनि का वेध नहीं होता।

यह ग्रह समय-समय पर मार्गी तथा वक्री होता है। इसकी स्व-राशियाँ मकर तथा कुम्भ हैं। यह तुला राशि के 20 अंश तक 'परम उच्चस्थ', मेष राशि के 20 अंश तक 'परम नीचस्थ' तथा कुम्भ राशि के 20 अंश तक मूल-त्रिकोणस्थ माना जाता है। लग्न से सप्तमभाव में तथा तुला, मकर एवं कुम्भ राशिस्थ, अपने द्रोष्काण, राश्यन्त, शनिवार, कृष्णपक्ष का दक्षिणायन तथा वक्री शनि बलवान् माना जाता है। बुध, शुक्र, राहु तथा केतु इसके नैसर्गिक 'मित्र' हैं। सूर्य, चन्द्र तथा मंगल 'शत्रु' हैं। गुरु के साथ इसका 'समभाव' रहता है। जन्मकुण्डली में यह जिस भाव में बैठा हो, वहाँ से तृतीय

तथा दशम भाव को एकपाद दृष्टि से, पंचम तथा नवमभाव को द्विपाद दृष्टि से, चतुर्थ तथा अष्टम भाव को त्रिपाद दृष्टि से एवं सप्तम, तृतीय तथा दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है (मतान्तरसे—इसकी एकपाद दृष्टि नहीं होती)। यह बुध के साथ सात्विक, शुक्र के साथ राजस तथा सूर्य एवं चन्द्र के साथ शत्रुभाव रखता है। इसे 'पाप-ग्रह' तथा सब ग्रहों से अधिक बलवान् माना गया है।

सप्तम स्थान में शनि 'बली' होता है। किसी वक्री ग्रह अथवा चन्द्रमा के साथ रहने पर 'चेष्टा-बली' होता है। इसे कर्म तथा व्यय भाव का कारक माना गया है। रात्रि से जन्म होने पर यह माता-पिता का कारक भी होता है।

यह जातक के जीवन पर प्राय: 36 से 42 वर्ष की अवस्था में अपना विशेष प्रभाव प्रकट करना आरम्भ कर देता है तथा राशि के अन्तिम भाग में पूर्ण फल देता है। शनिकृत् दोष के निवारणार्थ 'नीलम' धारण करना चाहिए।

राहु



इस ग्रह का आकाश में कोई पिण्ड नहीं है। खगोल शास्त्री इसे उत्तरी ध्रुव की छाया मानते हैं। भारतीय ज्योतिष में भी इसे पहले कोई स्थान नहीं दिया गया था, बाद में 'राहु' तथा 'केतु' को छाया-ग्रह के रूप में ही सम्मिलित किया गया है। ये दोनों ग्रह परस्पर 6 राशि अर्थात् 180 अंश के अन्तर से, विपरीत गति से, राशि-संचरण करते हैं। इन्हें एक राशि परभ्रमण करने में 18 मास का समय लगता है। इस प्रकार 12 राशियों पर इनका संचरण प्राय: 18 वर्ष में पूरा हो पाता है। इसकी अपनी कोई राशि नहीं है। परन्तु कुछ विद्वान् बुध की 'कन्या' राशि पर इसका अधिकार मानते हैं।

कुछ विद्वान् इसे मिथुन राशि के 15 अंश तक (मतान्तर से—20 अंश तक) 'परम उच्चस्थ' तथा धनुराशि के 15 अंश तक (मतान्तर से—20 अंश तक) 'परम नीचस्थ' मानते हैं। परन्तु कुछ विद्वान् इसे वृष राशि में

'उच्चस्थ' तथा वृश्चिक राशि में 'नीचस्थ' मानते हैं। यद्यपि प्राचीन शास्त्रों में इसके मूल-त्रिकोण का उल्लेख नहीं मिलता, तथापि कुछ विद्वान् इसे 'कुम्भ' राशि के 3 अंश तक 'मूल त्रिकोणस्थ' मानते हैं तो कुछ 'कर्क' राशि पर 'मूल-त्रिकोणस्थ' मानते हैं। तीसरे, छठे तथा नवें भाव में स्थित राहु सब प्रकार के दोषों को नष्ट करता है तथा तीसरे, छठे एवं ग्यारहवें भाव में स्थित होने पर धनदायक होता है। अन्य भावों में यह शुभ-फल नहीं देता।

शनि की भाँति राहु को भी काल-पुरुष का 'दुःख' माना गया है। 'ग्रह-परिषद्' में इसे कोई स्थान प्राप्त नहीं है। ज्योतिषीय मतानुसार यह—नील वर्ण, वृद्ध अवस्था वाला, मलिन स्वरूप, म्लेच्छ जाति, दीर्घ आकृति, पादहीन सर्प, तमोगुणी, वायु तत्व, वात प्रकृति, तीक्ष्ण स्वभाव वाला, व्याघ्र-वाहन तथा नैर्ऋत्य दिशा का स्वामी माना गया है।

इसका अधिकार पाँवों पर माना जाता है। इसके द्वारा जातक की शारीरिक-शक्ति, परश्रिम, साहस, मोटापा, दुर्भाग्य, चिन्ता, शत्रुता, संकट, पाप-कर्म, दुर्घटना, दुःख, शोक, विलासिता, राजनीति, सर्प-विद्या, अनुसंधान, द्यूत-क्रीड़ा, मद्यपान, शिकार, गुप्तचरी, नौका-चालन, दुर्गुण, आक्रमणात्मक एवं विध्वंसात्मक प्रकृति तथा पितामह के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

नीले रंग की वस्तुओं, लोहा, सीसा, सीमेण्ट, गोमेद, सरसों, तिल, कम्बल, तलवार, ऊँट, घोड़ा, सर्प, चर्बी, चमड़ा, हड्डी, निन्द्य-कर्म, फोटोग्राफी, चित्रकारी, मुद्रण-कार्य तथा वैद्यक आदि के सम्बन्ध में भी इससे विचार किया जाता है।

बुध, शुक्र तथा शनि इसके नैसर्गिक 'मित्र' हैं। सूर्य, चन्द्र तथा मंगल 'शत्रु' हैं तथा गुरु से यह 'समभाव' रखता है (मतान्तर से—बुध भी मित्र न होकर 'सम' है)।

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, वृश्चिक तथा कुम्भ राशि तथा दशम भाव में राहु को बलवान् माना गया है। यह जन्म-कुण्डली के जिस भाव में बैठा होता है, वहाँ से तृतीय तथा षष्ठभाव को एक पाद दृष्टि से, द्वितीय दशा दशम भाव को द्विपाद दृष्टि से तथा पञ्चम, सप्तम, नवम एवं द्वादश

—इन चारों भावों को पूर्ण दृष्टि से देखता है, इसकी द्विपाद-दृष्टि 'अन्ध' मानी गई है। सामान्यतः यह जिस भाव में बैठता है, वहाँ की उन्नति को रोकता है।

वृष तथा तुला लग्न में राहु को योग कारक माना गया है, आर्द्रा, स्वाति तथा शतभिषा नक्षत्रों पर यह शुभ फल देता है, इसको अशुभ तथा क्रूर ग्रह माना गया है, साथ ही अत्यन्त बलवान् भी बताया गया है। यह मलिन स्वरूप, दारुण-स्वभाव, विनाश-वृत्ति, अन्त्यज जाति का, दीर्घ-सूत्री, आलसी परन्तु तीव्र बुद्धि वाला है। कलियुग में इसे प्रत्यक्ष प्रभाव देने वाला कहा जाता है।

यह जातक के जीवन पर प्रायः 42 से 48 वर्ष की आयु में अपना विशेष प्रभाव प्रकट करता है। यह एक राशि पर $1\frac{1}{2}$ वर्ष तक भ्रमण करता है तथा राशि बदलने के 3 महीने पहले से ही अपना शुभाशुभ प्रभाव प्रकट करना आरम्भ कर देता है।

राहुकृत दोष-निवारण हेतु 'गोमेद' धारण किया जाता है।

पौराणिक मतानुसार समुद्र-मंथन के समय जब अमृत निकला तब राहु ने भी देवता का छद्म-वेष धारण कर उसे पी लिया था। उस समय विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से उसके शरीर के दो टुकड़े कर दिये। अमृत-पान के कारण वे दोनों जीवित बने रहे। सिर वाला टुकड़ा 'राहु' तथा धड़ वाला 'केतु' कहा जाता है।

केतु



ग्रह-परिषद् में इसे कोई पद प्राप्त नहीं है। इसे भी काल-पुरुष का 'दुःख' माना गया है। इसका परिचय 'राहु' के साथ ही प्रस्तुत किया जा चुका है। ज्योतिषीय मतानुसार यह काजल (मतान्तर से—धूम्र) के समान कृष्ण वर्ण, वृद्धावस्था वाला, स्त्रीलिङ्ग, म्लेच्छ (वर्ण शङ्कर) जाति, मलिन स्वरूप, ह्रस्व आकृति, तमोगुणी, वायु तत्व (मतान्तर से—तेज, आकाश), वात प्रकृति, जल-जीव-वाहन वाला नैऋत्य दिशा का स्वामी है।

मनुष्य-शरीर पर इसका प्रभाव पांव के तलवों पर माना गया है। धूम्र वर्ण के वस्त्र तथा वस्तुओं, बकरा, वैदूर्य एवं शस्त्र आदि का अधिपति है। इसके द्वारा दुःख, शोक, अशुभ-विषय, कुष्ठ-रोग, सन्धि-रोग, चर्म-रोग, क्षुधा-जनित कष्ट, हाथ पाँव की बीमारियाँ, कण्डु रोग, स्नायु-विकार, यन्त्र तथा नाना के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इसकी अपनी कोई राशि नहीं है, तथापि कुछ विद्वान् गुरु की 'मीन' राशि (मतान्तर से—बुध की 'कन्या' राशि) पर इसका भी अधिकार मानते हैं। कुछ आचार्य इसे धनुराशि के 6 अंश तक 'परम उच्चस्थ' तथा मीन राशि के 6 अंश तक 'परम नीचस्थ' मानते हैं तो कुछ मनीषी इसे 'वृश्चिक' राशि पर 'उच्चस्थ' एवं 'वृष' राशि पर 'नीचस्थ' मानते हैं तथा 'कर्क' राशि पर इसे मूल 'त्रिकोणस्थ' भी मानते हैं। एक अन्य मत में इसे मीन राशि में उच्चस्थ, मिथुन राशि में नीचस्थ तथा सिंह राशि में 'मूल-त्रिकोणस्थ' माना गया है।

यह वृष, धनु तथा मीन राशि में बलवान् होता है। सप्तम भावस्थ वृश्चिक राशि में भी इसे सुखदायक माना जाता है। इसकी मित्र-राशियाँ मिथुन, कन्या, धनु, मकर तथा मीन है एवं कर्क तथा सिंह शत्रु-राशियाँ हैं। अश्विनी, मघा तथा मूल इसके अपने नक्षत्र माने गए हैं। यह गुरु के साथ सात्विक तथा सूर्य-चन्द्र के साथ शत्रुवत् सम्बन्ध रखता है। बुध, शुक्र तथा शनि इसके नैसर्गिक-मित्र हैं। सूर्य, चन्द्र तथा मंगल इसके शत्रु हैं तथा गुरु से 'समभाव' है। मतान्तर से—बुध के साथ भी इसका 'समभाव' ही है। राहु तथा केतु एक ही शरीर के दो भाग हैं, अतः ये दोनों भी परस्पर मित्र हैं। राहु के समान ही यह भी भागों को फल देता है।

जन्म-कुण्डली के जिस भाव में केतु बैठा हो वहाँ से तृतीय तथा षष्ठ भाव को एकपाद दृष्टि से, द्वितीय तथा दशम भाव को द्विपाद दृष्टि से तथा पंचम, सप्तम, नवम तथा द्वादश—चारों भावों को पूर्ण दृष्टि से देखता है। त्रिपाद दृष्टि 'अन्ध' मानी गई है। जन्म-कुण्डली में यह सदैव राहु से सप्तम भाव में, उसके ठीक सामने ही रहता है।

केतु को अशुभ तथा 'पाप-ग्रह' माना गया है, तथापि अत्यन्त बलवान्

एवं मोक्षदायक होने के कारण इसे 'शुभ' भी माना जाता है। राहु का अर्द्धाङ्ग होने के कारण कुछ विद्वान् इसे सब प्रकार से राहु जैसा ही मानते हैं। यह तमोगुणी, दारुण-स्वभाव, मलिन रूप वाला, मिश्रित-वर्ण तथा वर्णसंकर जाति का है, तथापि यदि शुभ-स्थिति में हो तो शुभ-ग्रहों से भी अधिक शुभ-फल देता है। शुभ-फलदायक स्थिति से होने पर इसे गुरु से भी अधिक श्रेष्ठ फल देने वाला माना गया है।

यह जातक के जीवन पर प्रायः 48 से 54 वर्ष की अवधि में अपना विशेष प्रभाव प्रकट करता है। यह एक राशि में डेढ़ वर्ष तक रहता है तथा राशि बदलने के तीन महीने पहले से ही अपना शुभाशुभ-फल प्रकट करना आरम्भ कर देता है।

केतु कृत दोष—निवारणार्थ 'वैदूर्य' (लहसुनियाँ) धारण किया जाता है।

विशेष—(1) गुरु तथा शुक्र—दोनों 'शुभ-ग्रह' हैं, परन्तु शुक्र द्वारा सांसारिक-सुखों का एवं गुरु द्वारा पारलौकिक तथा आध्यात्मिक सुखों का विचार किया जाता है। गुरु मोक्षदायक भी हो सकता है, परन्तु शुक्र भोग एवं एश्वर्य ही देता है।

(2) शनि तथा मंगल—दोनों 'पाप-ग्रह' हैं, परन्तु शनि क्रूर होते हुए भी अन्तिम परिणाम के रूप में सुख देता है। यह जातक को दुर्भाग्य तथा संकटों के चक्कर में डालकर शुद्ध तथा सात्विक बना देता है। शुभ-स्थिति में होने पर यह भी मोक्षदायक होता है। जबकि मंगल जातक को उत्तेजक तथा उमंगों से परिपूर्ण बनाकर उसकी तृष्णाओं को बढ़ाता है, जिसके फल-स्वरूप उसे सदैव दुःख ही प्राप्त होता है।

(3) जन्म-कुण्डली में जो ग्रह सबसे अधिक बलवान् होता है, वह जातक को अपने अनुरूप बना लेता है।

(4) एक मत के अनुसार—कलियुग में शनि, राहु और केतु—इन तीनों बलवान ग्रहों के त्रिकोण-स्थान 'मिथुन' तथा 'कन्या' हैं। सूर्य तथा मंगल के त्रिकोण स्थान मकर तथा कुम्भ हैं एवं अन्य ग्रहों के त्रिकोण-स्थान सिंह तथा धनु राशियाँ हैं।

ग्रहों की नैसर्गिक-मैत्री

ग्रहों की पारस्परिक-मैत्री कई प्रकार की मानी जाती है। नैसर्गिक (स्वाभाविक) मैत्री का उल्लेख प्रत्येक ग्रह के परिचय के साथ किया जा चुका है। ग्रहों की नैसर्गिक मैत्री के बहुमान्य नियमों को यहाँ एक साथ प्रस्तुत किया जा रहा है, जो निम्नानुसार है–

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
1. सूर्य	— चन्द्र, मङ्गल	बुध	— शनि, शुक्र
2. चन्द्र	— सूर्य, बुध	मङ्गल, गुरु, शुक्र, शनि	— ×
3. मङ्गल	— सूर्य, चन्द्र, गुरु	शुक्र, शनि	— बुध
4. बुध	— सूर्य, शुक्र	मङ्गल, गुरु, शनि	— चन्द्र
5. गुरु	— सूर्य, चन्द्र, मङ्गल	शनि	— बुध, शुक्र
6. शुक्र	— बुध, शनि	मङ्गल, गुरु	— सूर्य, चन्द्र
7. शनि	— बुध, शुक्र	गुरु	— सूर्य, चन्द्र, मङ्गल
8. राहु	— शुक्र, शनि	गुरु	— सूर्य, चन्द्र, मङ्गल
9. केतु	— सूर्य, चन्द्र, मङ्गल	बुध, गुरु	— शुक्र, शनि

विशेष—उक्त 'मैत्री-सिद्धान्त' के सम्बन्ध में कतिपय विद्वानों में मत-भेद भी हैं। उनके मतों का सार निम्नानुसार है–

(1) राहु के मित्रादि शनि की भाँति हैं।

(2) शुक्र, गुरु और शनि राहु के मित्र हैं।

(3) शुक्र, गुरु और शनि केतु के मित्र हैं।

(4) केतु के सूर्य, चन्द्र तथा मंगल 'मित्र' हैं। गुरु 'सम' हैं तथा शुक्र और शनि शत्रु है।

(5) चन्द्रमा, सूर्य, मङ्गल तथा गुरु परस्पर मित्र हैं।

(6) बुध, शुक्र, शनि, राहु तथा केतु परस्पर मित्र हैं।

(7) चन्द्रमा, सूर्य, मंगल तथा गुरु की बुध, शुक्र, शनि, राहु तथा केतु से शत्रुता है।

(8) राहु तथा शनि की, चन्द्रमा तथा गुरु की एवं मङ्गल तथा सूर्य की परस्पर विशेष 'मित्रता' है।

(9) सूर्य तथा राहु की, बृहस्पति तथा शुक्र की, चन्दमा तथा बुध की तथा सूर्य और शनि की परस्पर विशेष 'शत्रुता' है।

ग्रहों की तात्कालिक-मैत्री

ग्रहों की तात्कालिक-मैत्री के नियम निम्नलिखित हैं—

(1) जन्म-कुण्डली के दूसरे, तीसरे, चौथे, दसवें, ग्याहरवें तथा बारहवें भावों में स्थित ग्रह 'तात्कालिक-मित्र' होते हैं।

(2) जन्मकुण्डली के पहले, पाँचवें, छठे, सातवें, आठवें तथा नवें भावों में स्थित ग्रह 'तात्कालिक-शत्रु' होते हैं।

अर्थात् सभी ग्रह अपने-अपने स्थान से 2, 3, 4, 10, 11 तथा 12 वे स्थानों में स्थित ग्रहों के 'तात्कालिक-मित्र' तथा 1, 5, 6, 7, 8 तथा 9 वे स्थानों में स्थित ग्रहों के 'तात्कालिक-शत्रु' होते हैं।

'तात्कालिक-मित्र' तथा 'नैसर्गिक-मित्र' ग्रह मिलकर 'अधि मित्र' हो जाते हैं। इसी प्रकार 'तात्कालिक-शत्रु' तथा 'नैसर्गिक-शत्रु' ग्रह मिलकर 'अधि शत्रु' हो जाते हैं। तात्कालिक तथा नैसर्गिक में से एक सम्बन्ध से शत्रु तथा दूसरे सम्बन्ध से मित्र ग्रह 'सम' होते हैं।

ग्रहों का उदयास्त

लग्न से दूसरे भाव में स्थित ग्रह उदय होने को तत्पर रहता है तथा लग्न से अष्टम भाव में स्थित ग्रह अस्त होने को तत्पर रहता है।

लग्न से सप्तम भाव में स्थित ग्रह अस्त होने को अभिमुख होता है तथा छठे भाव में स्थित ग्रह अस्त के सम्मुख होता है।

'उदयी ग्रह' सुखदायक होता है। 'वक्री ग्रह' परदेश भेजता है। 'मार्गी ग्रह' आरोग्य देता है तथा 'अस्त' हुआ ग्रह धन एवं सम्मान का नाश करता है।

ग्रहों के बल

ग्रहों के 'बल' कई प्रकार के होते हैं। उन्हें निम्नानुसार समझना चाहिए—

(1) **नैसर्गिक बल**—शनि से मंगल, मंगल से बुध, बुध से गुरु, गुरु से शुक्र, शुक्र से चन्दमा तथा चन्दमा से सूर्य अधिक बली होता है। अर्थात्

शनि से मंगल दो गुना, बुध तीन गुना, गुरु चार गुना, शुक्र पांच गुना चन्द्रमा छः गुना, सूर्य सात गुना बली होता है।

(2) **दृष्टि बल**—शुभ ग्रह से दृष्ट ग्रह 'दृष्टि-बली' होता है, अर्थात् यदि दुष्ट-ग्रह के ऊपर शुभ-ग्रह की दृष्टि पड़ रही हो तो वह उस शुभ-दृष्टि को पाकर 'दृग्बली' हो जाता है।

(3) **भाव बल**—उच्चराशिस्थ ग्रह पूर्ण बली, मूल त्रिकोणस्थ ग्रह ¾ बली, स्व-राशिस्थ ग्रह ½ बली, मित्र राशिस्थ ग्रह ¼ बली तथा समग्रह की राशि में हो तो ⅛ बली होता है। यदि नीच राशि में हो तो बल-हीन एवं शत्रु राशि में हो तो ½ बलहीन होता है।

(4) **चेष्टा बल**—सूर्य अथवा चन्द्रमा मकर से मिथुन तक किसी भी राशि में हो तो 'चेष्टा-बली' होते हैं। ऐसे चन्दमा के साथ यदि मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि रहें तो ये पाँचों ग्रह भी बली होते हैं। क्रूर-ग्रह सूर्य कर्क से धनु राशि में रहने तक बली होते हैं। कुछ विद्वान् इसे 'चेष्टा-बल' न मानकर, 'अयन-बल' मानते हैं तथा बलवान् वक्री-ग्रहों को ही 'चेष्टा-बली' कहते हैं।

(5) **स्थान बल**—उच्चराशिस्थ, स्वगृही, मित्र गृही, मूल-त्रिकोणस्थ एवं अपने नवांश अथवा द्रेष्काणस्थ ग्रह 'स्थान-बली' होते हैं।

यह भी मान्यता है कि चन्दमा तथा शुक्र सम-राशियों में एवं अन्य ग्रह विषम-राशियों में स्थित हों तो वे 'स्थान-बली' होते हैं।

(6) **दिग्बल**—जन्मकुण्डली के प्रथम भाव को पूर्वदिशा, सप्तम को पश्चिम, चतुर्थ को उत्तर तथा दशम भाव को दक्षिण दिशा माना जाता है। (कुछ विद्वान् चतुर्थ को दक्षिण दिशा तथा दशमभाव को उत्तर दिशा भी मानते हैं, परन्तु यह मत अधिक ग्राह्य नहीं है)।

पूर्व दिशा अर्थात् लग्न (प्रथमभाव) में बुध या गुरु, उत्तर (चतुर्थ) में चन्द्रमा या शुक्र, पश्चिम (सप्तम) में शनि तथा दक्षिण (दशम भाव) में सूर्य अथवा मंगल स्थित हों तो वे 'दिग्बली' होते हैं।

(7) **काल-बल**—रात्रि में चन्द्रमा, मंगल और शनि तथा दिन में सूर्य, बुध और शुक्र 'काल-बली' होते हैं। गुरु हर समय में 'बली' रहता है।

(8) **पक्ष-बल**—क्रूर-ग्रह कृष्ण-पक्ष में तथा सौम्य ग्रह शुक्ल पक्ष में 'बली' होते हैं।

(9) **अन्य मत**—जैमिनि के मतानुसार—जो ग्रह आत्मकारक-ग्रह से पहले, चौथे, सातवें अथवा दसवें भाव में हो, वह पूर्ण बली होता है। जो ग्रह आत्मकारक से द्वितीय, पंचम, अष्ट तथा एकादश भाव में हो वह अर्द्धबली होता है।

ग्रहों का राशि-भोग काल

सूर्य, बुध तथा शुक्र एक राशि में लगभग एक मास रहते हैं। मंगल लगभग डेढ़ मास, गुरु तेरह मास तथा शनि, राहु और केतु तीन मास तक रहते हैं। चन्दमा केवल सवा दो दिन तक ही राशि में रहता है।

टिप्पणी—वक्री अथवा मार्गी होने की स्थिति में कभी-कभी ग्रहों के 'राशि-भोग-काल' की इस अवधि में थोड़ा-बहुत अन्तर भी पड़ जाता है।

ग्रहों की 'बाल' आदि अवस्थाएँ

प्रत्येक ग्रह 30 अंशों का होता है। जातक के जन्म के समय कौन-सा ग्रह कितने अंश का था इसका ज्ञान उस समय के पंचांग द्वारा हो सकता है। विषम-राशि (मेष, मिथुन, सिंह आदि) में ग्रह 6 अंश तक 'बाल', फिर 6 अंश तक 'कुमार', फिर 6 अंश तक 'युवा', फिर 6 अंश तक 'वृद्ध' तथा अन्तिम 6 अंशों में 'मृत' स्थिति में रहता है।

सम-राशि (वृष, कर्क, कन्या आदि) में इसके विपरीत होता है—अर्थात् पहले 6 अंश तक 'मृत', फिर 6 अंश तक 'वृद्ध', फिर 6 अंश तक 'युवा', फिर 6 अंश तक 'कुमार' तथा अन्तिम 6 अंशों तक 'बाल' अवस्था वाला माना जाता है।

'बाल' अवस्था वाला ग्रह चौथाई, 'कुमार' अवस्था वाला आधा तथा 'युवा' अवस्था वाला पूर्ण फल देता है। 'वृद्ध' अवस्था वाला दुष्ट-फल देता है तथा 'मृत' अवस्था वाला मृत्यु-तुल्य कष्ट देता है अथवा निष्फल होता है।

ग्रहों की 'अस्त' आदि संज्ञाएँ

जो ग्रह सूर्य के साथ हो वह 'अस्त' होता है तथा जो सूर्य से अलग

हो, वह 'उदय' होता है। सूर्य के समीप रहने वाले ग्रह भी प्रायः अस्त तुल्य ही होते हैं।

'राहु' तथा 'केतु' सदैव उल्टी चाल चलते हैं। सूर्य तथा चन्दमा सदैव सीधी चाल चलते हैं। सीधी चाल चलने वाले ग्रह को 'मार्गी' तथा उल्टी चाल चलने वाले ग्रह को 'वक्री' कहा जाता है।

सूर्य के साथ वाले ग्रह अस्त, दूसरे, ग्याहरवें तथा बारहवें भाव में रहने वाले शीघ्री' (अर्थात् शीघ्र चलने वाले मार्गी), तीसरे भाव में रहने वाले 'सम' गति वाले, चौथे स्थान वाले 'मन्द' गति के, पाँचवें तथा छठे स्थान वाले 'मार्गी', सातवें तथा आठवें स्थान वाले 'वक्री', नवें स्थान वाले 'अति वक्री', दसवें स्थान वाले 'मार्गी' तथा ग्याहरवें एवं बारहवें स्थान वाले 'शीघ्री' होते हैं।

क्रूर ग्रह 'वक्री' हों तो उनका फल 'महा-क्रूर' होता है, परन्तु सौम्य-ग्रह 'वक्री' हों तो उनका फल 'अत्यन्त शुभ' होता है।

जातक के जन्म के समय जो ग्रह 'मार्गी' होता है, वह जीवनभर मार्गी-ग्रह के रूप में तथा जो 'वक्री' होता है वह जीवनभर 'वक्री-ग्रह' के रूप में ही अपना फल देता है। दैनिक-गोचर में जो ग्रह मार्गी अथवा वक्री होते रहते हैं वे अपनी उसी गति के अनुसार तात्कालिक प्रभाव प्रकट करते हैं।

ग्रहों का शुभाशुभत्व

पूर्ण चद्र, शुभ-ग्रह युक्त बुध, गुरु तथा शुक्र—ये चारों ग्रह 'शुभ' माने जाते हैं।

सूर्य, क्षीण-चन्द्रमा, मङ्गल, पाप-ग्रह युक्त बुध, शनि, राहु तथा केतु—ये सातों 'ग्रह' अशुभ माने जाते हैं।

सूर्य तथा राहु को 'क्रूर-ग्रह' तथा मंगल, शनि और केतु को 'पाप-ग्रह' माना गया है।

शुक्ल पक्ष की एकादशी से कृष्णपक्ष की पंचमी तक चन्द्रमा 'पूर्ण चन्द्र'

माना जाता है। कृष्ण पक्ष की षष्ठी से कृष्ण पक्ष की दशमी तथा शुक्ल पक्ष की षष्ठी से शुक्ल पक्ष की दशमी तक चन्द्रमा 'मध्य चन्द्र' माना जाता है। कृष्ण पक्ष की एकादशी से शुक्ल पक्ष की पंचमी तक चन्द्रमा 'क्षीण चन्द्र' माना जाता है। यह 'क्षीण-चन्द्र' ही 'अशुभ' संज्ञक होता है।

पूर्ण-चन्द्र तथा शुभ-ग्रह से दृष्ट चन्द्रमा को 'शुभ' मध्यम चन्द्रमा को 'मध्यम' तथा क्षीण-चन्द्र एवं अशुभ-ग्रह से दृष्ट चन्द्रमा को 'अशुभ' माना जाता है।

ग्रह-युति

जब दो या अधिक ग्रह किसी समय एक राशि में संचरण कर रहे होते हैं, तब उन्हें जन्म-कुण्डली से सम्बन्धित राशि वाले भाव में एक ही स्थान पर बैठा हुआ प्रदर्शित किया जाता है। इसी को 'ग्रहों की युति' कहते हैं।

ग्रहों के दृष्टि तथा स्थान सम्बन्ध

दृष्टि सम्बन्ध—ग्रहों के दृष्टि-सम्बन्ध निम्नानुसार दो प्रकार के होते हैं—

(1) जब कोई ग्रह अपने स्थान (भाव) से किसी अन्य स्थान को अथवा उस भाव में बैठे हुए ग्रह को देखता है. तो उसे ग्रह का 'दृष्टि सम्बन्ध' कहा जाता है। (कौन-सा ग्रह अपने स्थान पर बैठकर किन-किन भावों पर दृष्टि डालता है, इसका उल्लेख पहले किया जा चुका है)

(2) जब कोई दो ग्रह अलग-अलग भावों में बैठे हुए एक-दूसरे के ऊपर अपनी दृष्टि डालते हैं तो उसे उन ग्रहों का पारस्परिक-दृष्टि-सम्बन्ध' कहा जाता है।

स्थान सम्बन्ध—जब दो ग्रह अलग-अलग एक दूसरे की राशि में बैठे हों, तब उसे उन ग्रहों का 'स्थान-सम्बन्ध' कहा जाता है।

ग्रहों का स्थानाधिपतित्व

जो ग्रह जिन-जिन राशियों का स्वामी होता है, वह उन-उन राशियों वाले भावों का 'स्थानाधिपति' 'राशीश्वर' अथवा 'भावेश' कहा जाता है।

कौन ग्रह किन-किन राशियों का स्वामी है, इसका उल्लेख पिछले राशि सम्बन्धी चतुर्थ प्रकरण में किया जा चुका है। यहाँ सुविधा हेतु उसका पुनः उल्लेख किया जाता है—

सूर्य	—	सिंह
चन्द्र	—	कर्क
मंगल	—	मेष तथा वृश्चिक
बुध	—	मिथुन तथा कन्या
गुरु	—	धनु और मीन
शुक्र	—	वृष और तुला
शनि	—	मकर और कुम्भ

राहु तथा केतु स्वतन्त्ररूप से किन्ही राशियों के स्वामी नही हैं तथापि बुध की राशि कन्या पर 'राहु' का एवं मिथुन पर 'केतु' का भी आधिपत्य माना जाता है।

ग्रहों की स्वक्षेत्रीय उच्च, नीच एवं त्रिकोणस्थ स्थितियाँ

इस विषय का उल्लेख भी ग्रह-परिचय के साथ ही किया जा चुका है, तथापि सुविधा हेतु यहाँ उसको पुनः अलग-अलग लिखा जा रहा है।

(1) ग्रहों के स्व-क्षेत्र

कौन-सा ग्रह किस राशि के कितने अंशों में रहने पर 'स्वक्षेत्री' माना जाता है, इसे निम्नानुसार समझना चाहिए—

1. **सूर्य**—'सिंह' राशि के 21 से 30 अंश तक।
2. **चन्द्र**—'कर्क' राशि के 1 से 30 अंश तक।
3. **मङ्गल**—'मेष' राशि के 19 से 30 तथा 'वृश्चिक' के 1 से 30 अंश तक।
4. **बुध**—'कन्या' राशि के 21 से 30 तथा 'मिथुन' के 1 से 30 अंश तक।
5. **गुरु**—'धनु' राशि के 14 से 30 तथा 'मीन' के 1 से 30 अंश तक।

6. शुक्र—'तुला' राशि के 11 से 30 तथा 'वृष' के 1 से 30 अंश तक।

7. शनि—'कुम्भ' राशि के 21 से 30 तथा मकर के 1 से 30 अंश तक।

8. राहु—'कन्या' के 1 से 30 अंश तक।

9. केतु—'मिथुन के 1 से 30 अंश तक।

(2) ग्रहों के उच्च क्षेत्र

कौनसा ग्रह किस राशि के कितने अंशों में रहने पर 'उच्चस्थ' माना जाता है इसे निम्नानुसार समझना चाहिए—

1. सूर्य—'मेष' राशि के 1 से 30 अंश तक।
2. चन्द्र—'वृष' राशि के 1 से 3 अंश तक।
3. मङ्गल—'मकर' राशि के 1 से 28 अंश तक।
4. बुध—'कन्या' राशि के 1 से 15 अंश तक।
5. गुरु—'कर्क' राशि के 1 से 5 अंश तक।
6. शुक्र—'मीन' राशि के 1 से 27 अंश तक।
7. शनि—'तुला' राशि के 1 से 20 अंश तक।
8. राहु—'मिथुन' राशि के 1 से 15 अंश तक (मतान्तर से—'वृष' राशि में)।
9. केतु—'धनु' राशि के 1 से 15 अंश तक (मतान्तर से—'वृश्चिक' राशि में)।

(3) ग्रहों के नीच क्षेत्र

कौन-सा ग्रह किस राशि के कितने अंशों में रहने पर 'नीचस्थ' माना जाता है, इसे निम्म्नानुसार समझना चाहिए—

1. सूर्य—'तुला' राशि के 1 से 10 अंश तक।
2. चन्द्र—'वृश्चिक' राशि के 1 से 3 अंश तक।
3. मङ्गल—'कर्क' राशि के 1 से 28 अंश तक।
4. बुध—'मीन' राशि के 1 से 15 अंश तक।
5. गुरु—'मकर' राशि के 1 से 5 अंश तक।

6. **शुक्र**—'कन्या' राशि के 1 से 27 अंश तक।
7. **शनि**—'मेष' राशि के 1 से 20 अंश तक।
8. **राहु**—'धनु' राशि के 1 से 15 अंश तक (मतान्तर से—'वृश्चि
राशि में)
9. **केतु**—'मिथुन' राशि के 1 से 15 अंश तक (मतान्तर से—'
राशि में)

(4) ग्रहों के मूल-त्रिकोण

कौन-सा ग्रह किस राशि के कितने अंशों में रहने पर मूल-'त्रिकोणस्
माना जाता है, इसे निम्नानुसार समझना चाहिए—

1. **सूर्य**—'सिंह' राशि में 1 से 20 अंश तक।
2. **चन्द्र**—'वृष' राशि में 4 से 30 अंश तक।
3. **मङ्गल**—'मेष' राशि में 1 से 18 अंश तक।
4. **बुध**—'कन्या' राशि में 1 से 15 अंश तक।
5. **गुरु**—'धनु' राशि में 1 से 13 अंश तक।
6. **शुक्र**—'तुला' राशि में 1 से 10 तक।
7. **शनि**—'कुम्भ' राशि में 1 से 20 अंश तक।
8. **राहु**—'कर्क' राशि में।
9. **केतु**—'मकर' राशि में।

टिप्पणी—सामान्यतः 'राहु' तथा 'केतु' की 'मूलत्रिकोणस्थ स्थिति
नहीं मानी जाती।

ग्रहों के बलाबल

ग्रहों के बलाबल की निम्नलिखित चार स्थितियाँ होती हैं—

(1) **सर्वोच्च वक्री**—उच्चराशिस्थ होने पर।

(2) **उच्च वक्री**—मूल त्रिकोणस्थ होने पर।

(3) **वक्री**—स्वग्रही होने पर।

(4) **निर्बल**—नीच राशिस्थ होने पर।

टिप्पणी—शत्रु-ग्रही अर्थात् शत्रु-ग्रह की राशि में स्थित अथवा 'शत्रु-ग्रह से युक्त अथवा शत्रु-ग्रह से दृष्ट बलवान् ग्रह भी पूर्ण बली नहीं रहता

अर्थात् उसके बल में कुछ कमी आ जाती है।

ग्रहों के पद का प्रभाव

'ग्रह-परिषद्' में किस ग्रह को कौन-सा पद प्राप्त है, इसका उल्लेख भी ग्रहों के परिचय के साथ ही किया जा चुका है। यहाँ प्रसङ्ग वशात् उसको पुनः लिखा जा रहा है—

सूर्य—राजा	गुरु—मन्त्री
चन्द्रमा—राजा (रानी)	शुक्र—मन्त्री (मन्त्राणी)
मंगल—सेनापति	शनि—सेवक
बुध—युवराज	राहु-केतु—कोई स्थान नहीं।

जिस जातक के ऊपर जिस ग्रह का जितना अधिक प्रभाव होता है, वह उसे उतना ही अपने अनुरूप बनाने का प्रयत्न करता है।



6 जन्म-कुण्डली : भाव तथा भावेश विचार

जन्म-कुण्डली

जन्म लेने वाले प्राणी को ज्योतिषीय-भाषा में 'जातक' कहते हैं। किसी जातक का जन्म के समय भ-चक्र (आकाश-मण्डल) में पूर्वी-क्षितिज पर कौनसी राशि उदित थी (दिखाई दे रही थी) तथा उस समय विभिन्न ग्रह किन-किन राशियों में भ्रमण कर रहे थे, इसके नक्शे को ही 'जन्म कुण्डली' अथवा 'जन्माङ्क-चक्र' कहा जाता है।

'जन्माङ्क-चक्र' एक प्रकार से भ-चक्र का पर्याय होता है तथा उसमें निर्मित 12 खाने (कोष्ठक) भ-चक्र की द्वादश राशियों के स्थान के प्रतीक होते हैं। पहले खाने को 'लग्न' कहते हैं। इसे पृथ्वी का पर्याय कहा जा सकता है, दूसरे शब्दों में यह कहना चाहिए कि जातक के जन्म के समय पृथ्वी के पूर्वी-क्षितिज पर जो राशि उदित थी, उसके प्रतीक अंक को जन्म-कुण्डली के पहले खाने में लिखकर, शेष खानों में क्रमशः अन्य राशियों के अङ्कों को लिखा जाता है। जातक के जन्म-समय की पूर्वी-क्षितिज पर उदित राशि को ही **'जन्म-लग्न'** कहते हैं।

जातक के जन्म-समय में अन्य ग्रह जिन राशियों में भ्रमण कर रहे होते हैं, उनके संक्षिप्त-नाम उन राशियों के प्रतीक-अङ्कों वाले खानों में लिखे जाते हैं।

जातक के जन्म-समय में चन्द्रमा जिस राशि में भ्रमण कर रहा होता है, वही राशि जातक की **'जन्म-तिथि'** होती है। 'जन्म-लग्न' तथा 'जन्म-राशि' के इस अन्तर को भली-भाँति समझ लेना चाहिए।

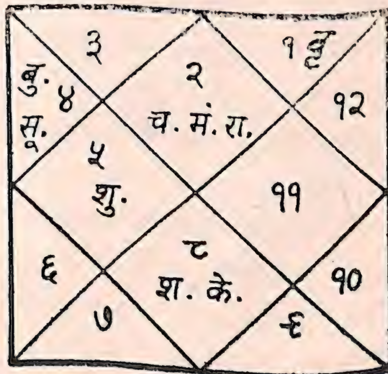
कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जातक के जन्म के समय जो राशि पूर्वी क्षितिज पर उदित होती है, चन्द्रमा भी उस समय उसी राशि में भ्रमण कर रहा होता है। ऐसी स्थिति में 'चन्द्रमा' को लग्न वाले खाने में ही लिखा जाता है तथा जातक की 'जन्म-लग्न' तथा 'जन्म-राशि'—दोनों एक ही हो जाती हैं।

जन्म-कुण्डली के खानों को 'भाव' अथवा 'घर', 'गृह', 'स्थान' आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है। इन खानों में राशियों के नाम क्रमशः उनके प्रतीक अङ्कों के रूप में लिखे जाते हैं, जैसे—'मेष' के लिए—1, वृष के लिए—2, मिथुन के लिए—3, कर्क के लिए—4, सिंह के लिए—5, कन्या के लिए—6, तुला के लिए—7, वृश्चिक के लिए—8, धनु के लिए—9, मकर के लिए—10, कुम्भ के लिए—11 तथा मीन के लिए—12।

इसी प्रकार ग्रहों के नाम भी उनके आधा-अक्षर को लेकर संक्षेप में ही लिखे जाते हैं, जैसे—सूर्य के लिए—सू०, चन्द्रमा के लिए—'चं०', मंगल के लिए—'मं०', बुध के लिए—'बु०', गुरु अर्थात् वृहस्पति के लिए—'गु०' अथवा 'वृ०', शुक्र के लिए—'शु०', शनि के लिए—'श०', राहु के लिए—'रा०' तथा केतु के लिए—'के०'।

वृष लग्न वाली जन्म-कुण्डली के दो स्वरूप नीचे प्रदर्शित हैं। इनमें से पहले स्वरूप में 'जन्म-लग्न' तथा 'जन्म-राशि' अलग-अलग हैं तथा दूसरे में 'जन्म-लग्न तथा जन्म-राशि' एक ही हैं—





जन्म-कुण्डली-निर्माण—जन्म-कुण्डली तय्यार करना ज्योतिष गणित से सम्बन्ध रखता है। यह जातक के जन्म-समय के आधार पर तय्यार की जाती है। जातक के जन्म के समय आकाश-मण्डल में कौन-सा ग्रह किस राशि में संचरण कर रहा था, इसे जानने का सबसे सरल तथा अच्छा साधन 'पञ्चाङ्ग' (पत्रा) है। पञ्चाङ्गों में प्रत्येक क्षण की ग्रह-स्थिति का उल्लेख रहता है। परन्तु पञ्चाङ्ग भी विभिन्न स्थानों के सूर्योदय के समय के आधार पर बनाये जाते हैं, जैसे—काशी, जोधपुर, दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता आदि। इनमें से प्रत्येक स्थान के सूर्योदय का वास्तविक-समय 'राष्ट्रीय स्टैण्डर्ड टाइम' से अलग-अलग होता है, अतः जिस स्थान पर जातक का जन्म हुआ हो, वहाँ के वास्तविक सूर्योदय-काल के आधार पर ही जातक के जन्म समय को सही जानकारी प्राप्त करके, जिस स्थान के पञ्चाङ्ग द्वारा ग्रह-स्थिति का ज्ञान प्राप्त करना हो, उसके निर्माण-स्थल के सूर्योदय के समय से जातक के जन्म-स्थान वाले सूर्योदय के समय में घटा-बढ़ी करने के बाद जो अन्तर आये उसके आधार पर ही जन्म-कुण्डली में राशियों तथा ग्रहों को स्थापित करना चाहिए। चूँकि प्रत्येक स्थान के सूर्योदय का समय अलग-अलग होता है, अतः कभी-कभी जातक के जन्म-स्थान तथा पञ्चाङ्ग निर्माण-स्थल के समय में इतना अधिक अन्तर भी पड़ जाता है कि उसके कारण न केवल लग्न की राशि ही बदल जाती है, अपितु अन्य ग्रहों की राशियों में भी अन्तर आ जाता है। फलस्वरूप जन्म-कुण्डली अशुद्ध बन जाती है। अशुद्ध जन्म-पत्री निरर्थक होती है—क्योंकि उसके ग्रहों का फलादेश जातक के जीवन पर घटता ही नहीं है। वस्तुतः शुद्ध जन्मकुण्डली के निर्माण की प्रक्रिया किसी सुयोग्य गणितज्ञ ज्योतिषी से सीख लेनी चाहिए अथवा इस विषय के ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए। सीमित पृष्ठसंख्या वाली इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक विषयों का ज्ञान कराना मात्र ही है, इस कारण इसमें आवश्यक रूप से प्रारम्भिक ज्ञातव्य-विषयों तथा फलित सम्बन्धी सिद्धान्तों की जानकारी ही दी जा रही है। गणित विभाग को सर्वथा छोड़ दिया गया है।

भाव

जन्म-कुण्डली के भावों (घरों) की गणना 'लग्न' से आरम्भ होती है, जिन्हें क्रमशः लग्न या प्रथम भाव तथा द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, एकादश तथा द्वादश भाव कहा जाता है।

भावों की विशिष्ट संज्ञाएँ

कुछ भावों की विशिष्ट संज्ञाएँ भी होती हैं, जिन्हें निम्नानुसार समझना चाहिए—

(1) **केन्द्र**—लग्न (प्रथम), चतुर्थ, सप्तम तथा दशम—इन चारों भावों को 'केन्द्र' कहा जाता है, परन्तु कुछ विद्वान् लग्न (प्रथम भाव) को 'केन्द्र' न मान कर 'त्रिकोण' मानते हैं, शेष तीनों को 'केन्द्र' मानते हैं। 'केन्द्र' के स्वामी ग्रहों को 'केन्द्रेश' भी कहते हैं।

(2) **त्रिकोण**—'पञ्चम' तथा 'नवम' भाव को 'त्रिकोण' कहा जाता है, परन्तु कुछ विद्वान् लग्न को भी त्रिकोण मानते हैं। त्रिकोण के स्वामी ग्रहों को 'त्रिकोणेश' भी कहा जाता है।

(3) **पणफर**—'द्वितीय, पंचम, अष्टम तथा एकादश भाव की 'पणफर' संज्ञा है। कुछ विद्वान् केवल द्वितीय तथा दशम भाव को 'पणफर' मानते हैं तो कुछ अन्य विद्वान् षष्ठ तथा अष्टम भाव को 'पणफर' मानते हैं।

(4) **आपोक्लिम**—तृतीय, षष्ठ, नवम तथा द्वादश भाव को 'आपोक्लिम' कहते हैं। कुछ विद्वान् तृतीय तथा दशम भाव को 'आपोक्लिम' मानते हैं तो कुछ द्वितीय एवं दशम भाव को 'आपोक्लिम' की संज्ञा देते हैं।

(5) **उपचय**—तृतीय, षष्ठ, दशम तथा एकादश भाव को 'उपचय' कहा जाता है।

(6) **अपचय**—प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पञ्चम, सप्तम, अष्ठम, नवम तथा द्वादश भाव को 'अपचय' कहते हैं।

(7) **चतुरस्त्र**—चतुर्थ तथा अष्टम भाव को 'चतुरस्त्र' कहा जाता है।

(8) **चतुष्टय**—प्रथम, चतुर्थ, सप्तम तथा दशम भाव को 'चतुष्टय' कहा जाता है।

(9) **त्रिक**—षष्ठ, अष्टम तथा द्वादश भाव को 'त्रिक' मानते हैं।

जन्म-कुण्डली-निर्माण—जन्म-कुण्डली तय्यार करना ज्योतिष के गणित से सम्बन्ध रखता है। यह जातक के जन्म-समय के आधार पर तय्यार की जाती है। जातक के जन्म के समय आकाश-मण्डल में कौन-सा ग्रह किस राशि में संचरण कर रहा था, इसे जानने का सबसे सरल तथा अच्छा साधन 'पञ्चाङ्ग' (पत्रा) है। पञ्चाङ्गों में प्रत्येक क्षण की ग्रह-स्थिति का उल्लेख रहता है। परन्तु पञ्चाङ्ग भी बिभिन्न स्थानों के सूर्योदय के समय के आधार पर बनाये जाते हैं, जैसे—काशी, जोधपुर, दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता आदि। इनमें से प्रत्येक स्थान के सूर्योदय का वास्तविक-समय 'राष्ट्रीय स्टैण्डर्ड टाइम' से अलग-अलग होता है, अतः जिस स्थान पर जातक का जन्म हुआ हो, वहाँ के वास्तविक सूर्योदय-काल के आधार पर ही जातक के जन्म समय की सही जानकारी प्राप्त करके, जिस स्थान के पञ्चाङ्ग द्वारा ग्रह-स्थिति का ज्ञान प्राप्त करना हो, उसके निर्माण-स्थल के सूर्योदय के समय से जातक के जन्म-स्थान वाले सूर्योदय के समय में घटा-बढ़ी करने के बाद जो अन्तर आये, उसके आधार पर ही जन्म-कुण्डली में राशियों तथा ग्रहों को स्थापित करना चाहिए। चूंकि प्रत्येक स्थान के सूर्योदय का समय अलग-अलग होता है, अतः कभी-कभी जातक के जन्म-स्थान तथा पञ्चाङ्ग निर्माण-स्थल के समय में इतना अधिक अन्तर भी पड़ जाता है कि उसके कारण न केवल लग्न की राशि ही बदल जाती है, अपितु अन्य ग्रहों की राशियों में भी अन्तर आ जाता है। फलस्वरूप जन्म-कुण्डली अशुद्ध बन जाती है। अशुद्ध जन्म-पत्री निरर्थक होती है—क्योंकि उसके ग्रहों का फलादेश जातक के जीवन पर घटता ही नहीं है। वस्तुतः शुद्ध जन्मकुण्डली के निर्माण की प्रक्रिया किसी सुयोग्य गणितज्ञ ज्योतिषी से सीख लेनी चाहिए अथवा इस विषय के ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए। सीमित पृष्ठसंख्या वाली इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य ज्योतिष सम्बन्धी प्रारम्भिक विषयों का ज्ञान कराना मात्र ही है, इस कारण इसमें आवश्यक रूप से प्रारम्भिक ज्ञातव्य-विषयों तथा फलित सम्बन्धी सिद्धान्तों की जानकारी ही दी जा रही है। गणित विभाग को सर्वथा छोड़ दिया गया है।

भाव

जन्म-कुण्डली के भावों (घरों) की गणना 'लग्न' से आरम्भ होती है, जिन्हें क्रमशः लग्न या प्रथम भाव तथा द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, एकादश तथा द्वादश भाव कहा जाता है।

भावों की विशिष्ट संज्ञाएँ

कुछ भावों की विशिष्ट संज्ञाएँ भी होती हैं, जिन्हें निम्नानुसार समझना चाहिए—

(1) **केन्द्र**—लग्न (प्रथम), चतुर्थ, सप्तम तथा दशम—इन चारों भावों को 'केन्द्र' कहा जाता है, परन्तु कुछ विद्वान् लग्न (प्रथम भाव) को 'केन्द्र' न मान कर 'त्रिकोण' मानते हैं, शेष तीनों को 'केन्द्र' मानते हैं। 'केन्द्र' के स्वामी ग्रहों को 'केन्द्रेश' भी कहते हैं।

(2) **त्रिकोण**—'पञ्चम' तथा 'नवम' भाव को 'त्रिकोण' कहा जाता है, परन्तु कुछ विद्वान् लग्न को भी त्रिकोण मानते हैं। त्रिकोण के स्वामी ग्रहों को 'त्रिकोणेश' भी कहा जाता है।

(3) **पणफर**—'द्वितीय, पंचम, अष्टम तथा एकादश भाव की 'पणफर' संज्ञा है। कुछ विद्वान् केवल द्वितीय तथा दशम भाव को 'पणफर' मानते हैं तो कुछ अन्य विद्वान् षष्ठ तथा अष्टम भाव को 'पणफर' मानते हैं।

(4) **आपोक्लिम**—तृतीय, षष्ठ, नवम तथा द्वादश भाव को 'आपोक्लिम' कहते हैं। कुछ विद्वान् तृतीय तथा दशम भाव को 'आपोक्लिम' मानते हैं तो कुछ द्वितीय एवं दशम भाव को 'आपोक्लिम' की संज्ञा देते हैं।

(5) **उपचय**—तृतीय, षष्ठ, दशम तथा एकादश भाव को 'उपचय' कहा जाता है।

(6) **अपचय**—प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पञ्चम, सप्तम, अष्ठम, नवम तथा द्वादश भाव को 'अपचय' कहते हैं।

(7) **चतुरस्र**—चतुर्थ तथा अष्टम भाव को 'चतुरस्र' कहा जाता है।

(8) **चतुष्टय**—प्रथम, चतुर्थ, सप्तम तथा दशम भाव को 'चतुष्टय' कहा जाता है।

(9) **त्रिक**—षष्ठ, अष्टम तथा द्वादश भाव को 'त्रिक' मानते है।

त्रिक भावों के स्वामी ग्रहों को 'त्रिकेश' भी कहा जाता है। कुछ विद्वान् द्वादश भाव को 'त्रिक' संज्ञक नहीं मानते।

(10) **त्रि-त्रिकोण**—नवम भाव को 'त्रि-त्रिकोण' कहते हैं। कुछ विद्वान् लग्न से नवम तक—सभी भावों को 'त्रि-त्रिकोण' मानते हैं।

(11) **गुप्त-त्रिकोण**—लग्न अथवा प्रथम भाव को 'गुप्त-त्रिकोण' भी कहते हैं।

(12) **मध्य**—दशम भाव की 'मध्य' संज्ञा है।

(13) **आद्य**—लग्न अर्थात् प्रथम भाव को 'आद्य' कहते हैं।

(14) **कण्टक**—लग्न (प्रथम), चतुर्थ, सप्तम तथा दशम भाव को 'कण्टक' कहते हैं।

(15) **मारक**—द्वितीय तथा सप्तम भाव की 'मारक' संज्ञा है। इन भावों के स्वामी को 'मारकेश' भी कहा जाता है।

भावों से विचारणीय विषय

जन्मकुण्डली में 12 भाव (घर) होते हैं। किस भाव से किन विषयों का विचार किया जाता है, इसे निम्नानुसार समझना चाहिए—

प्रथम भाव—इसे 'लग्न' तथा 'तनु' भाव भी कहते हैं। इस भाव के स्वामी-ग्रह को लग्नेश तथा प्रथमेश भी कहा जाता है।

इस भाव के द्वारा जातक के स्वरूप, जाति, आयु, विवेक, मस्तिष्क, शील, चिह्न, शारीरिक-चिन्ता, दादी, नाना तथा सुख-दुःख आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस भाव में यदि मिथुन, कन्या, तुला, अथवा कुम्भ में से कोई राशि हो तो उसे बलवान माना जाता है।

द्वितीय भाव—इसे 'धन' भाव भी कहते हैं तथा इसके स्वामी ग्रह को द्वितीयेश अथवा धनेश कहा जाता है।

इस भाव से जातक के धन, कोष, कुटुम्ब, मणि-रत्न, मित्र, संचित पूंजी, आँख-कान, नाक (दांये), स्वर, सौन्दर्य, सङ्गीत, सत्य-वादिता, क्रय-विक्रय, प्रेम, सुखोपभोग, संचित-पूंजी, अश्व-कार्य तथा समधिन आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

तृतीय भाव—इसे 'सहज' तथा 'पराक्रम' भाव भी कहते हैं तथा इसके स्वामी-ग्रह् को तृतीयेश, सहजेश एवं पराक्रमेश कहा जाता है।

इस भाव से जातक के सहोदर (भाई-बहिन), पराक्रम, दास-कर्म, हाथ. आभूषण, आयु, साहस, शौर्य, धैर्य, गायन, दया, श्रम, योगाभ्यास, काम, दास-दासी, चाचा, मामा, भतीजा, दमा, श्वास, खाँसी, क्षय तथा मार्ग-चलना आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

चतुर्थ भाव—इसे 'सुख' अथवा 'सुहृद' भाव भी कहते हैं, तथा इसके स्वामी-ग्रह को सुखेश तथा चतुर्थेश कहा जाता है।

इस भाव से जातक के गृह-ग्राम, चतुष्पद, वाहन, भूमि, मकान, निधि, सम्पत्ति, जलाशय, बाग-बगीचा, अन्तःकरण, दया, उदारता, परोप-कार, छल-कपट, परिवारीजन, इष्ट-मित्र, श्वसुर, नानी, पिता का धन, खेती, उद्यम, विधि, सुख-भोज्य-पदार्थ आदि तथा विशेषतः माता के सम्बन्ध में विचार किया जाता है।

इस स्थान में कर्क तथा मीन राशियाँ एवं मकर राशि का उत्तरार्द्ध बलवान् होता है। इस भाव के कारक-ग्रह 'चन्द्रमा' तथा 'बुध' हैं।

पञ्चम भाव—इसे 'सुत' अथवा 'विद्या' भाव भी कहते हैं तथा इसके स्वामी-ग्रह को पंचमेश, सुतेश तथा विद्येश कहा जाता है।

इस भाव से जातक की सन्तान, पुत्र, विद्या, बुद्धि, नीति, हाथ का यश, विनय, देव-भक्ति, प्रबन्ध-व्यवस्था, मामा का सुख, धन मिलने के उपाय, अनायास ही बहुत से धन का लाभ, नौकरी छूटना, मूत्र-पिण्ड, बस्ति, गर्भा-शय आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। इस भाव का कारक-ग्रह 'बृहस्पति' है।

षष्ठ भाव—इसे 'रिपु' तथा 'रोग' भाव भी कहते हैं प्रथा इसके स्वामी-ग्रह को षष्ठेश एवं रोगेश कहा जाता है।

इस भाव से जातक के रोग. शत्रु, झगड़े, मुकदमे, बन्ध-भय, संग्राम, क्रूर-कर्म, पीड़ा, व्रण आदि, जमीदारी, यश, गदहा, ऊँटी, भैंसा, गाय-बैल आदि पशु, गुदा-स्थान, भृत्य, बुआ, मोसी, सौतेली माता, मामा एवं मामा की स्थिति आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। इस भाव के कारक

ग्रह 'शनि' तथा 'मंगल' हैं।

सप्तम भाव—इसे 'जाया' भाव भी कहते हैं तथा इसके स्वामी-ग्रह को सप्तमेश तथा जायेश कहा जाता है।

इस भाव से जातक की पत्नी, प्रेमिका, विवाह, प्रेम-सम्बन्ध, सहवास, जननेन्द्रिय, कामेच्छा, दैनिक आमदनी, व्यवसाय, झगड़े, अर्श-रोग, गुदा, स्वास्थ्य, भाई-बहिन की सन्तान, नानी, छोटी-यात्रायें आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। इस भाव में 'वृश्चिक' राशि को बलवान् माना जाता है।

अष्टम भाव—इसे 'आयु' भाव भी कहते हैं तथा इसके स्वामी-ग्रह को अष्टमेश कहा जाता है।

इस भाव से जातक की आयु, मृत्यु, जीवन, मानसिक-चिन्ता, व्याधि, गुप्त-धन, आकस्मिक-लाभ, झूठ, पुरातत्व, समुद्र, यात्रा, संकट, लिङ्ग, योनि तथा अण्डकोष के रोग, ऋण का होना अथवा उतरना, किला, शत्रु-भय, नाव चलाना, युद्ध का समय, गुदा-रोग, युद्ध, मूर्ति, नाश, मनोदशा, ताऊ तथा समधी आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। इस भाव का कारक-ग्रह 'शनि' है।

नवम भाव—इसे 'धर्म' तथा 'भाग्य' भाव भी कहते हैं तथा इसके स्वामी-ग्रह को नवमेश, भाग्येश तथा धर्मेश कहा जाता है।

इस भाव से जातक के धर्म, दान, पुण्य, तप, तीर्थ-यात्रा, शील: मानसिक-वृत्ति, भाग्योदय, पिता का सुख, दीक्षा, मठ, देव-मन्दिर, वापी, कूप, माली, देवर, भौजाई तथा बहनोई आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। इस भाव के कारक-ग्रह सूर्य तथा गुरु हैं।

दशम भाव—इसे 'कर्म', 'राज्य' तथा 'पितृ' भाव भी कहते हैं। इसके स्वामी-ग्रह को दशमेश: कर्मेश तथा राज्येश कहा जाता है।

इस भाव से जातक के कर्म, ऐश्वर्य, भोग, राज्य तथा राज्य से सम्बन्ध, यश, मान-प्रतिष्ठा, 'उच्चपद प्राप्ति' 'प्रभुत्व, नौकरी, व्यवसाय, नेतृत्व, अधिकार, ऋण, वर्ण, आकाशीय-वृत्तान्त, पैतृक-वृद्धि, सास तथा पिता आदि के सम्बंध में किया जाता है।

इस भाव में मेष, सिंह तथा वृष राशियाँ एवं मकर राशि का पूर्वार्द्ध तथा धनु राशि का उत्तरार्द्ध बलवान् होता है। इस भाव के कारक-ग्रह सूर्य, बुध, गुरु तथा शनि हैं।

एकादश भाव—इसे 'लाभ' तथा 'आय' भाव भी कहते हैं। इसके स्वामी-ग्रह को एकादशेश, लाभेश तथा आयेश कहा जाता है।

इस भाव से जातक की आमदनी, स्वर्ण, रत्न, आभूषण, हाथी, घोड़ा, वाहन, सम्पत्ति, लाभ, ऐश्वर्य, माङ्गलिक-कार्य, धन-धान्य, सर्वार्थ, चतुष्पद, राजा से धन लाभ, विद्या-लाभ, परिवार, जामाता (दामाद), पुत्र-वधू तथा बड़े भाई आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। इस भाव का कारक-ग्रह 'बृहस्पति' माना जाता है।

द्वादश भाव—इसे 'व्यय' तथा 'हानि' भाव भी कहते हैं। इसके स्वामी-ग्रह को द्वादशेश तथा व्ययेश कहा जाता है।

इस भाव से जातक की हानि, व्यय (खर्च), दण्ड, व्यसन, रोग, दान, पाखण्ड, बन्धन, कारावास, यात्रा, शत्रु-विरोध, त्याग, भोग, विवाद, इष्ट, कृषि-कर्म, नेत्र (बाँया), चोर, मोक्ष, बाहरी सम्बन्ध तथा चाचा आदि के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। इस भाव का कारक-ग्रह 'शनि' माना गया है।

भाव एवं भावेश के सम्बन्ध में विशेष विचार

जन्म-कुण्डली के जिस भाव में जो राशि हो, उस राशि के स्वामी-ग्रह को ही उस भाव का स्वामी अर्थात् 'भावेश' माना जाता है। जैसे द्वितीय भाव में 'मिथुन' राशि हो तो उसका स्वामी-ग्रह 'बुध' ही द्वितीयेश अर्थात् द्वितीय भाव का स्वामी होगा, फिर भले ही वह द्वितीय भाव में ही बैठा हो अथवा किसी अन्य भाव में हो। जैसे—'यदि वह द्वितीय भाव में ही हुआ तो उसके लिए 'भावेश' अपने भाव (घर) में ही बैठा है' अथवा 'द्वितीयेश द्वितीयभाव में ही बैठा है' अथवा 'बुध स्वक्षेत्री है' यह कहा जाएगा। इसके विपरीत यदि वह किसी अन्य भाव में उदाहरणार्थ सप्तम भाव में बैठा हो तो यह कहा जाएगा कि 'द्वितीयेश बुध सप्तम भाव में बैठा है, इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिए। भावेश की स्थिति के फलादेश का उल्लेख अगले

प्रकरण में किया जाएगा। यहाँ भाव तथा भावेश आदि के सम्बन्ध में कुछ अन्य विशेष बातों को लिखा जा रहा है, जो इस प्रकार हैं—

(1) जो ग्रह जिस भाव का कारक माना गया है, वह यदि उस भाव में अकेला बैठा हो तो उस भाव को बिगाड़ता है अर्थात् उस भाव से सम्बन्धित विषयों के प्रति अशुभफलदायक सिद्ध होता है।

(2) जिस भाव में शुभ-ग्रह बैठा हो, उसका फल उत्तम होता है, जिसमें पाप-ग्रह बैठा हो उसके फल का ह्रास होता है।

(3) जिस भाव का स्वामी अपने भाव में ही बैठा हो, उसका फल अच्छा होता है।

(4) जिस भाव का स्वामी मूल-त्रिकोण में, स्व-राशि में- मित्र-ग्रह की राशि में अथवा उच्चराशि में हो, उस भाव का फल शुभ होता है।

(5) जो भाव अपने स्वामी, गुरु, शुक्र अथवा बुध से युक्त हो अथवा इनसे दृष्ट हो तथा किसी अन्य ग्रह से दृष्ट अथवा युक्त न हो तो वह शुभ फल देता है।

(6) जिस भाव का स्वामी किसी शुभ-ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो अथवा जिस भाव में शुभ ग्रह बैठा हो अथवा जिस भाव को शुभ-ग्रह देखता हो, उस भाव का फल शुभ होता है।

(7) तृतीय, षष्ठ तथा एकादशभाव में पाप-ग्रहों का रहना शुभ-फलदायक होता है।

(8) लग्न, चतुर्थ, पञ्चम, सप्तम, नवम तथा दशमभाव में शुभ-ग्रहों का रहना शुभ होता है।

(9) जिस भाव का स्वामी पाप-ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो अथवा जिस भाव में पाप-ग्रह बैठा हो, उस भाव के फल का ह्रास होता है।

(10) छठे, आठवें तथा बारहवें भाव के स्वामी जिन भावों में बैठे होते हैं, वे अनिष्टकारक होते हैं।

(11) आठवें तथा बारहवें भाव में सभी ग्रह अनिष्ट कारक होते हैं।

(12) जिस भाव का स्वामी पाप-ग्रह हो और वह लग्न से तृतीय स्थान में पड़े तो शुभ होता है, परन्तु जिस भावेश का स्वामी शुभ ग्रह हो, वह

यदि लग्न से तृतीय स्थान में पड़े तो मध्यम फल देता है।

(13) राहु, केतु तथा अष्टमेश (अष्टम भाव का स्वामी ग्रह) जिस भाव में बैठते हैं, उस भाव को बिगाड़ते हैं।

(14) यदि द्वितीय, पञ्चम अथवा सप्तम भाव में अकेला गुरु बैठा हो (उसके साथ कोई अन्य ग्रह न हो) तो वह धन; पुत्र तथा स्त्री के लिए सदैव अनिष्ट कारक होता है।

(15) गुरु छठे भाव में हो तो शत्रु-नाशक होता है। शनि आठवें भाव में हो तो दीर्घायुकारक होता है तथा मंगल दसवें भाव में बैठा हो तो वह भाग्य-निर्माता होता है।

(16) पूर्ण चन्द्रमा, उदित बुध, शुक्र, केतु तथा गुरु—ये क्रमशः एक दूसरे से अधिक शुभ-ग्रह माने जाते हैं। ये ग्रह यदि शुभ ग्रहों की राशियों में बैठे हों तो विशेष शुभ होते हैं तथा पाप-ग्रहों की राशियों में हों तो अल्प-शुभ होते हैं।

(17) पहले, चौथे, सातवें तथा दसवें भाव में बैठे हुए ग्रह अधिक शक्तिशाली होते हैं। वे यदि स्व-क्षेत्री हों तो अपना पूर्ण फल देते हैं, मित्र-क्षेत्री हों तो ४/१ फल देते हैं तथा शत्रु-क्षेत्री हों तो आधा फल देते हैं।

(18) पाँचवें तथा नवें भाव के स्वामी चाहे पाप-ग्रह हों अथवा शुभ-ग्रह हों, सदैव शुभ-फल ही देते हैं।

(19) पाँचवें तथा नवें भाव में बैठे हुए ग्रह भी अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य का विशेष प्रभाव डालते हैं।

(20) दूसरे तथा ग्याहरवें भाव में स्थित ग्रह जातक के धन की वृद्धि करते हैं।

(21) नवम भाव पंचम भाव से अधिक बलवान होता है।

(22) लग्न अवथा लग्नेश शुभ हों तो अनेक दोष दूर हो जाते हैं।

(23) केन्द्र (1, 4, 7, 10) के स्वामी पाप-ग्रह हों तो शुभ-फल देते हैं और शुभ-ग्रह हों तो अशुभ-फल देते हैं। पाराशरी के मत से—केन्द्र का स्वामी पाप-ग्रह तभी शुभ फल देता है; जब वह 'त्रिकोणेश' भी हो।

(24) स्व-क्षेत्री, उच्चराशिस्थ, मित्र-क्षेत्री अथवा स्वक्षेत्र तथा उच्च

क्षेत्र पर दृष्टि डालते वाले ग्रह, उस भाव के शुभ-फल की वृद्धि करते हैं इसी प्रकार शत्रु-क्षेत्री, नीच राशिस्थ तथा शत्रुक्षेत्र एवं नीच-क्षेत्र पर दृष्टि डालने वाले ग्रह उस भाव के शुभ-फल को कम कर देते हैं ।

(25) दूसरे तथा बारहवें भाव के स्वामी ग्रह अस्थिर-अधिकार वाले होते हैं, क्योंकि ये दोनों भाव नपुँसक संज्ञक हैं ।

(26) लग्नेश से अधिक चतुर्थेश, चतुर्थेश से अधिक सप्तमेश तथा सप्तमेश से अधिक दशमेश शुभाशुभ फलदायक होते हैं ।

(27) तीसरे से छठे तथा छठे से ग्यारहवें भाव का स्वामी अधिक अशुभ-फल देता है ।

(28) तीसरे, छठे तथा ग्यारहवें भाव के स्वामी अशुभ फलदायक होते हैं । इनकी दशायें तो निश्चित रूप से अशुभ फलकारक होती हैं, तृतीयेश अधिक परिश्रम करता है, षष्ठेश बाधायें उत्पन्न करता है तथा एकादशेश शारीरिक-कष्ट देता है ।

(29) त्रिकेश (छठे, आठवें तथा बारहवें भाव का स्वामी) यदि 'त्रिक' (6, 8, 12वां भाव) में ही हो तो शुभ-फल देता है, अन्यथा त्रिकेश जिस भाव में बैठता है, उसकी हानि करता है ।

(30) जिन भावों के स्वामी 'त्रिक' में बैठते है, उनके भावों की भी हानि होती है अर्थात् उनके फल में कमी आती है ।

(31) सामान्य नियमानुसार यदि अष्टमेश शुभ ग्रह हो तो शुभ और अशुभ ग्रह हो तो अशुभ-फल देता है, परन्तु यदि सूर्य-चन्द्र अष्टमेश में हों अथवा लग्नेश और अष्टमेश एक ही ग्रह हो (जैसे—मंगल और शुक्र) अथवा अष्टमेश स्व-ग्रही हो तो वह शुभ फल देता है अन्यथा अष्टमेश चाहे शुभ-ग्रह हो अथवा पाप-ग्रह हो, वह सदैव अशुभ फल ही देता है, क्योंकि अष्टम भाव क्रूर संज्ञक है । अष्टमेश को पालक तथा संघारक—दोनों ही माना जाता है ।

(32) यदि केन्द्र अथवा त्रिकोण में शुभ-ग्रह तथा पाप-ग्रह—दोनों ही बैठे हों तो वे शुभाशुभ मिश्रित-फल देते हैं ।

(33) जिस भाव से दूसरे तथा बारहवें भाव में पाप-ग्रह हों, उस भाव का 'फल-नाश' होता हैं और यदि शुभ-ग्रह हों तो 'फल-वृद्धि' होती है ।

(34) जिस भाव से दूसरे तथा बारहवें भाव में से एक में शुभ-ग्रह तथा दूसरे में पाप-ग्रह हो, उस भाव का शुभाशुभ मिश्रित फल होता है अथवा उसकी ह्रास-वृद्धि नहीं होती।

(35) यदि भावेश अस्त अथवा नीचस्थ होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठा हो तो उसका शुभ-फल अधिक नहीं होता।

(36) जिस भाव में शुभ-ग्रह अथवा पाप-ग्रह नीचराशि का अथवा शत्रु-क्षेत्री होकर बैठा हो, उस भाव की हानि होती हैं।

(37) तीसरे, छठे, दसवें तथा ग्यारहवें भाव में स्थित राहु तथा केतु शुभ फलदायक होते हैं।

(38) तीसरे, छठे तथा ग्यारहवें भाव में स्थित शनि भी शुभफल-दायक होता है।

(39) ग्यारहवें भाव में बैठा हुआ ग्रह विशेष लाभ देता है। इस भाव में यदि कोई क्रूर-ग्रह बैठा हो तो वह और भी अधिक अच्छा माना जाता है।

(40) तृतीय भाव में बैठे हुए ग्रह जातक के पराक्रम की वृद्धि करते हैं।

(41) यदि गुरु लग्न, चतुर्थ, पंचम, नवम अथवा दशम भाव में बैठा हो तो उसे सब दोषों को नष्ट करने वाला माना जाता है। (लग्न, चतुर्थ, सप्तम तथा दशम भाव स्थित गुरु एक लाख दोषों को दूर करता है।

(42) लग्न, चतुर्थ, पंचम, नवम तथा दशम भाव में स्थित शुक्र दो सौ दोषों को तथा इन्हीं भावों में स्थित बुध सौ दोषों को दूर करने वाले माने गये हैं।

(43) लग्न, चतुर्थ, सप्तम तथा दशम भाव में स्थित शुक्र को दस हजार तथा बुध को एक हजार दोषों को दूर करने वाला माना गया है।

(44) वृहस्पति और शुक्र यदि केन्द्र (1, 4, 7, 10) के स्वामी होकर केन्द्र में अथवा त्रिकोण में बैठे हों तो अशुभ-फल देते हैं। उस स्थिति में इन्हें 'केन्द्राधिपति-दोष' लग जाता है।

(45) सूर्य, मंगल, शनि तथा राहु—ये क्रमशः एक-दूसरे से अधिक पाप-ग्रह हैं। यदि ये अपनी राशि में बैठे हों तो जातक को प्रायः अशुभ-फल ही देते हैं, परन्तु ये ग्रह यदि मित्र क्षेत्री, उच्चराशिस्थ अथवा शुभ ग्रह की राशि में बैठे हों तो इनका अशुभ-फल कम रह जाता है।

टिप्पणी—(1) सभी अच्छे भावों में बैठे हुए ग्रह शुभ-फल ही देते हों अथवा छठे, आठवें या बारहवें भाव में बैठे हुए ग्रह अशुभ-फल ही देते हों—ऐसी बात भी नहीं है। राशि, स्थिति, अंश, ऊँच, नीच, स्वक्षेत्र, मित्र-क्षेत्र, शत्रु-क्षेत्र, दृष्टि, युति आदि के आधार पर शुभ अथवा अशुभ भावों में बैठे हुए ग्रहों के शुभाशुभ फल में भी अन्तर आ जाता है, अतः इन सभी पर विचार करने के बाद ही फलादेश का निर्णय करना चाहिए।

(2) जन्म-लग्न, राशि, नक्षत्र तथा जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में बैठे हुए ग्रहों के शुभाशुभ फल के विषय में अगले प्रकरणों में लिखा जायेगा। उन सब को ध्यान में रखकर ही फल का विचार करना उचित रहेगा।



7 जन्म का दिन, तिथि, पक्ष, मास तथा नक्षत्र-फल

विभिन्न वार, तिथि, पक्ष, मास तथा नक्षत्रों में जन्म लेने का जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है। इसका संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकरण में किया जा रहा है। यद्यपि यह फलादेश स्थूल हैं, तथापि जिन लोगों की जन्म-कुण्डली न हो और जिन्हें अपने जन्म का दिन, तिथि, मास आदि ही याद हों, उनके लिए यह बहुत कुछ उपयोगी हो सकता है।

जन्म-दिन का फल

1. **'रविवार'** को जन्म लेने वाला मनुष्य स्थिर-स्वभाव का, प्रचण्ड शूर-वीर, रक्त-श्याम-वर्ण, पवित्र, पित्त की अधिकता वाला तथा अत्यन्त चतुर होता है।

2. **'सोमवार'** को जन्म लेने वाला मनुष्य सात्विक-स्वभाव, क्षय-वृद्धि-सम्पन्न, गौर वर्ण, छोटे कद का बड़ी छाती वाला तथा श्रेष्ठ बुद्धिमान होता है।

3. **'मंगलवार'** को जन्म लेने वाला मनुष्य लाल-नेत्रों वाला, मित-भाषी, क्षात्रवृत्ति, मधुर स्वभाव का तथा क्षमाशील होता है।

4. **'बुधवार'** को जन्म लेने वाला मनुष्य गोल सिर तथा गोल पाँवों वाला, सुन्दर, अत्यन्त चतुर, चपलबुद्धि तथा काव्य-प्रेमी होता है।

5. **'गुरुवार'** को जन्म लेने वाला मनुष्य श्रेष्ठ बुद्धि वाला, शास्त्रविद्, पवित्र, प्रगल्भ, कुशल, धीर स्वभाव का तथा यशस्वी एवं सुप्रसिद्ध होता है।

6. **'शुक्रवार'** को जन्म लेने वाला मनुष्य विद्वान्, श्रेष्ठ बुद्धि, सुन्दर मुख वाला, काम-शास्त्रज्ञ, पवित्र, गुप्त कर्म करने वाला तथा प्रसिद्ध होता है।

7. **'शनिवार'** को जन्म लेने वाला मनुष्य रूक्ष तथा दुर्बल शरीर वाला, मलिन, अत्यन्त चंचल-चित्त वाला, दुष्ट, क्रोधी तथा भयानक होता है।

जन्म-तिथि फल

1. **'प्रतिपदा'** को जन्म लेने वाला मनुष्य यदि तीन दिन अथवा तीन मास तक जीवित रह जाय तो वह 80 वर्ष की आयु पाने वाला तथा अत्यन्त तेजस्वी होता है।

2. **'द्वितीया'** को जन्म लेने वाला सत्यवादी, स्तुति योग्य, स्व-कर्म-निरत तथा लोगों को आनन्द देने वाला होता है।

3. **'तृतीया'** को जन्म लेने वाला स्त्री-लम्पट, चंचल-चित्त वाला, मूर्ख, विवादी, कृपण, बलवान् तथा व्रत-उपवास आदि करने वाला होता है।

4. **'चतुर्थी'** को जन्म लेने वाला चंचल-चित्त, चुगलखोर, लोभी, शूरवीर, प्रचण्ड साहसी तथा सुखी होता है।

5. **'पंचमी'** को जन्म ले ने वाला दीर्घायु, महामति, स्थिर-स्वभाव, शूरवीर, सत्यवादी तथा जितेन्द्रिय होता है।

6. **'षष्ठी'** को जन्म लेने वाला शरीर में व्रण-चिह्नयुक्त, स्थिर-स्वभाव, स्त्री-लोलुप, सुन्दर, विद्वान् तथा यशस्वी होता है।

7. **'सप्तमी'** को जन्म लेने वाला धनी, गुणी, सदाचारी, देवता एवं गुरुओं का भक्त तथा दृढ़ व्रती होता है।

8. **'अष्टमी'** को जन्म लेने वाला स्वपत्नी में आसक्त, बहुभाषी, अत्यन्त चपल, चंचल-चित्त वाला तथा निष्ठुर स्वभाव का होता है।

9. **'नवमी'** को जन्म लेने वाला काम-लोलुप, महाबली, संगीत-नृत्य-प्रेमी, शत्रु-हन्ता तथा अत्यन्त क्रोधी होता है।

10. **'दशमी'** को जन्म लेने वाला स्त्री-जित्, शरीर पर शस्त्र अथवा व्रण-चिह्न वाला, अत्यन्त सुन्दर, चंचल-चित्त, महाबुद्धिमान तथा पवित्र स्वभाव का होता है।

11. **'एकादशी'** को जन्म लेने वाला लोक-व्यवहार में कुशल, कला शास्त्रज्ञ, सत्यवादी तथा दृढ़व्रती होता है।

12. **'द्वादशी'** को जन्म लेने वाला अत्यन्त क्रोधी, सदाचारी, रति-

लोलुप, सुन्दर तथा भोजन-वस्त्र अर्जित करने में तत्पर रहता है।

13. 'त्रयोदशी' को जन्म लेने वाला स्त्री-जित्, व्रतोपवास-निरत, बुद्धिमान, गुणी तथा ज्ञानी होता है।

14. 'चतुर्दशी' को जन्म लेने वाला सब कर्मों में शुद्ध, बुद्धिमान, व्याधि-रहित तथा सदैव बन्धु-बान्धवों से युक्त रहने वाला होता है।

15. 'पूर्णिमा' को जन्म लेने वाला सदैव प्रसन्न रहने वाला, कामी, पूर्णाङ्ग, सुस्थिर-चित्त तथा सुन्दर स्वरूपवान् होता है।

16. अमावस्या' को जन्म लेने वाला इन्द्रियों के दुःख से दुःखी, बलहीन, सुख-हीन तथा चित्त में अत्यधिक व्याकुलता वाला होता हैं।

जन्म-पक्ष फल

1. 'शुक्लपक्ष' में जन्म लेने वाला दीर्घायु, पुत्रवान्, अनेक लोगों का पालन करने वाला, दानी, मित्रवान् तथा स्त्री के वश में रहने वाला होता है।

2. 'कृष्णपक्ष' में जन्म लेने वाला आलसी, मलिन, द्वेषी, निन्दक, गँववार भाषा बोलने वाला तथा सभी धर्मों से बहिष्कृत होता है।

जन्म-मास फल

1. 'चैत्र मास' में जन्म लेने वाला ब्रह्मचर्य-पालक, वेदाध्ययन-तत्पर एवं गुरु, ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त होता है।

2. 'बैशाख मास' में जन्म लेने वाला सर्व लक्षण युक्त, दीर्घदर्शी, कलाओं का ज्ञाता, सात्विक स्वभाव का तथा दीर्घायु होता है।

3. 'ज्येष्ठ मास' में जन्म लेने वाला सब कामों में चतुर, बुद्धिमान, परीक्षक एवं नित्य क्रय-विक्रय करने वाला होता है।

4. 'आषाढ़ मास' में जन्म लेने वाला निर्धन, बहुभोजी, कुष्ठ-रोगी, कृषि-कर्म करने वाला, व्याधि युक्त तया मूर्ख-बुद्धि होता है।

5. 'श्रावण मास' में जन्म लेने वाला वेद-कर्म में चतुर, पुत्र, स्त्री एवं धन से युक्त तथा समस्त लोकों में पूज्य होता है।

6. 'भाद्रपद मास' में जन्म लेने वाला भोगी, दानी, कृश एवं दीर्घ शरीर वाला, गौरवर्ण, कामी, पुत्रवान्, धनी, बन्धु-बान्धव युक्त तथा अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला होता है।

7. **'आश्विन मास'** में जन्म लेने वाला ऐश्वर्यशाली, राजा को प्रिय, सेनक तथा स्त्रियों वाला, अनेक पुत्रों वाला तथा अल्पजीवी होता है।

8. **'कार्तिक मास'** में जन्म लेने वाला वाचाल, वक्र-बुद्धि, ब्रह्मचर्य-पालक, आलसी तथा कुञ्चित केशों वाला होता है।

9. **'मार्गशीर्ष मास'** में जन्म लेने वाला मंत्र-दीक्षित, तीर्थ-यात्री एवं शास्त्रार्थ का संचय करने वाला होता है।

10. **'पौष मास'** में जन्म लेने वाला सब प्रकार के रोगों से युक्त, दुःखदायी तथा पाप-मार्ग पर चलने वाला होता है।

11. **'माघ मास'** में जन्म लेने वाला तपोनिष्ठ, वेद-वेदाङ्ग का ज्ञाता, योगी, शान्त, चतुर तथा दयालु-स्वभाव का होता है।

12. **'फाल्गुन मास'** में जन्म लेने वाला, सुकुमार शरीर वाला, भोगी, कामी, स्त्रियों को प्रिय, सुखी तथा वाहन एवं आभूषणादि से सम्पन्न होता है।

जन्म-नक्षत्र फल

1. **'अश्विनी नक्षत्र'** में जन्म लेने वाला सुन्दर, बुद्धिमान, विनम्र, कार्यदक्ष, सुखी, धनी, यशस्वी, अधीर, करुणामय, चापलूसी द्वारा राजा का कृपा-पात्र, पशु अथवा वाहन विशेषज्ञ एवं किसी स्त्री की कृपा से कृतार्थ होता है।

2. **'भरणी नक्षत्र'** में जन्म लेने वाला क्रूर, कृतघ्न, स्वार्थी, चतुर, अस्थिर, धनी, भाग्यवादी, खाद्य-पदार्थों का विशेषज्ञ, स्वस्थ शरीर, परदेश-वासी तथा पर-स्त्री-आसक्त होता है।

3. **'कृत्तिका नक्षत्र'** में जन्म लेने वाला तेजस्वी, बुद्धिमान, कुछ कृपण, शत्रु-पीड़ित, क्रोधी, सुन्दर, किसी विद्या का विशेषज्ञ, आशाजीवी, बहुभोजी, आकर्षक-व्यक्तित्व वाला, स्त्रियों के साथ रहने वाला तथा पर-स्त्रीगामी होता है।

4. **'रोहिणी नक्षत्र'** में जन्म लेने वाला दृढ़-प्रतिज्ञ, कृश-शरीर, कार्य-कुशल, सुन्दर, बुद्धिमान, श्रेष्ठ स्मरणशक्ति वाला, पवित्र, सभ्य, पर-स्त्री-भोगी, मिष्ठभाषी, चतुर एवं बड़ी आँखों तथा चौड़े ललाट वाला होता है।

5- **'मृगशिरा'** नक्षत्र में जन्म लेने वाला सुन्दर (कोई विकल-नेत्र भी), सौम्य, चतुर, शान्त, विवेकी, सुवक्ता, साहसी (कोई भीरु भी), चंचल, भोगी, स्वार्थी, धनी, विद्वान् होते हुए भी अहंकारी, पुत्रवान्, मित्रवान् तथा भ्रमणशील होता है।

6. **'आर्द्रा'** नक्षत्र में जन्म लेने वाला पापी, चंचल-चित्त, हँसमुख, मूर्ख, अहंकारी, बड़ा बलवान्, दूसरों को दुःख देने वाला, परन्तु सार्वजनिक-कार्यों में मन लगाने वाला है।

7. **'पुनर्वसु'** नक्षत्र में जन्म लेने वाला सुखी, सुशील, सन्तोषी, प्रसिद्ध, रोगी, जितेन्द्रिय, बुद्धिहीन, परदेसवासी, धर्मात्मा, कामुक तथा माता-पिता का भक्त होता है।

8. **'पुष्य'** नक्षत्र में जन्म लेने वाला धर्मात्मा, ईश्वर-भक्त, सत्यप्रेमी, कार्य-कुशल, सम्माननीय, शान्त-स्वभाव, कार्य-कुशल, वाक्पटु, बहु-कुटुम्बी, दयालु, दृढ़ शरीर वाला, धनी तथा रूपवान् होता है।

9. **'आश्लेषा'** नक्षत्र में जन्म लेने वाला धूर्त, असत्यवादी, क्रोधी, दुराचारी, शत्रुजयी, भक्ष्याभक्ष्य सेवी, निःशंक, अपरिणामदर्शी, पापी तथा कृतघ्न होता है।

10. **'मघा'** नक्षत्र में जन्म लेने वाला पितृ-भक्त, धनी, उद्योगी, साहसी, कलही, चपल, बात को तुरन्त पकड़ने वाला, कामी, स्त्री-आसक्त, बड़े-बड़े कामों को करने वाला तथा धार्मिक प्रवृत्ति का होता है।

11. **'पूर्वा फाल्गुनी'** नक्षत्र में जन्म लेने वाला दृढ़ शरीर वाला, सुन्दर, कुकर्मी, नृत्य-गीतादि का प्रेमी, स्त्री के वशीभूत, कामी, राजानुग्रह प्राप्त करने वाला, अच्छी वृत्ति वाला, धनी, प्रियभाषी, त्यागी तथा दानी होता है।

12. **'उत्तरा फाल्गुनी'** नक्षत्र में जन्म लेने वाला कला-कौशल की उन्नति में रुचिवान्, धन तथा सन्तान से सुखी, भोगी तथा कामी, काव्य-प्रेमी, सुन्दर, बुद्धिमान तथा लोकप्रिय होता है।

13. **'हस्त'** नक्षत्र में जन्म लेने वाला किसी सूक्ष्म-कलाकारी अथवा नौकरी द्वारा धनोपार्जन करने वाला, सुन्दर नेत्रों वाला, विद्वानों का प्रेमी,

मद्यपी, ढीठ, उत्साही, निर्दय, प्रभावशाली तथा कामातुर होता है।

14. 'चित्रा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला सुन्दर नेत्रों वाला, सुगन्ध-प्रिय, बहुमूल्य वस्तुओं का व्यवसायी, गणितज्ञ, अद्भुत कलाओं का ज्ञाता, धनी, प्रतिष्ठित, सुन्दर, शीलवान्, चतुर तथा पर-स्त्रीगामी होता है।

15. 'स्वाति' नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यवसाय-प्रिय, गुरु तथा ईश्वर का भक्त, मन्द-बुद्धि; घर में ही रहना पसन्द करने वाला, धनी, भोगी, धार्मिक, दयालु, प्रियभावी, लज्जाशील तथा जितेन्द्रिय होता है।

16. 'विशाखा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला सुन्दर दाँतों वाला, स्वरूप-वान्, क्रय-विक्रय में कुशल, परदेस में निवास का इच्छुक, दूसरों को सन्ताप देने वाला, सुप्रसिद्ध होते हुए भी कलह-प्रिय, स्त्री के वशीभूत रहने वाला, वाक्पटु, शत्रुजयी, क्रोधी तथा गर्वोन्मत्त होता है।

17. 'अनुराधा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला दृढ़ शरीर वाला, हास्य-प्रिय, बाल्यावस्था से ही परदेशवासी, राजा द्वारा अनुग्रहीत, भूख न सहन कर सकने वाला, सर्वत्र सम्मान पाने वाला, भ्रमणशील, धनी, यशस्वी, प्रिय-भाषी तथा शक्तिशाली होता है।

18. ज्येष्ठा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला सुन्दर मुख तथा नेत्रों वाला, अधिक सन्ततिवान, कभी-कभी पर-स्त्री में भी आशक्त, अत्यन्त क्रोधी होने के साथ ही सन्तोषी भी, कलह प्रिय, परछिन्द्रान्वेषी, षड्यन्त्र रचने में निपुण, चतुर, धर्मात्मा, न्याय-प्रिय तथा काव्य-प्रेमी होता है।

19. 'मूल' नक्षत्र में जन्म लेने वाला दृढ़-प्रतिज्ञ, विश्वासघाती, धूर्त, वाक्पटु, कृतघ्न, अहंकारी, भोगी, ईर्ष्यालु, अनेक प्रकार के शिल्प जानने वाला, वृक्षादि का प्रेमी तथा सुखी जीवन बिताने वाला होता है।

20. 'पूर्वाषाढ़ा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला शत्रुओं के लिए भयकारक, सुखी, सुन्दर, चतुर, सर्वप्रिय, परोपकारी, सत्यनिष्ठ, सुप्रसिद्ध, कार्यकुशल, बुद्धिमान्, भाग्यवान्, तथा अनेक मित्रों वाला होता है। इसकी पत्नी भी आनन्द की वृद्धि करने वाली होती है।

21. 'उत्तराषाढ़ा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला दुर्बल शरीर का, शिक्षित होते हुए भी कुसंगति-प्रिय, स्त्री-अनुगामी, धार्मिक, कृतज्ञ, विनम्र,

शान्त, श्रेष्ठ कार्यों द्वारा जीविकोपार्जन करने वाला, सुखी, धनी, बुद्धिमान तथा विद्वान होता है।

22. 'श्रवण' नक्षत्र में जन्म लेने वाला तीर्थ-सेवी, परोपकारी, प्रसिद्ध, शोभायुक्त, सद्‌विवेकी, वाक्पटु, विद्वान्, यशस्वी, बहुसन्ततिवान् एवं ईश्वर तथा गुरु-भक्त होता है। इसकी पत्नी भी उदार-चित्त वाली होती है।

23. 'धनिष्ठा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला बड़े परिवार का, स्त्रियों के साथ रहते हुए भी उनके प्रति रुचि न रखने वाला, लम्बे शरीर का, कफ-प्रकृति, शूर-वीर, साहसी, धनी, लोभी, प्रसिद्ध तथा कभी-कभी कलह करने वाला होता है।

24. 'शतभिषा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला बिना विचारे काम करने वाला, बहुत बोलने वाला, किसी के प्रभाव में न आने वाला, जुआरी परन्तु सत्यवादी, शान्त स्वभाव का, ज्योतिष-प्रेमी अथवा ज्योतिषी, व्यसनी तथा शत्रुजयी होता है।

25. 'पूर्वा भाद्रपदा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला अच्छी मनोवृत्ति वाला, परन्तु कभी-कभी कुप्रवृत्ति के कार्यों को भी कर बैठने वाला, मानसिक रूप से दुःखी, धनी, परन्तु कृपण, ढीठ, धूर्त, निर्बल, भीरु, चतुर तथा स्त्री के वशीभूत रहने वाला होता है।

26. 'उत्तरा भाद्रपदा' नक्षत्र में जन्म लेने वाला श्रेष्ठ कामों में सहयोग करने वाला, तथापि कभी-कभी अत्यधिक क्रोध करने वाला, शत्रुजयी, स्वजनों में मान्य, कार्यनिष्ट- सुवक्ता, सुखी, सुशील, धार्मिक, उदार, विद्वान्, सन्तानयुक्त, सुडौल शरीर वाला तथा धनवान् होता है।

27. 'रेवती' नक्षत्र में जन्म लेने वाला सर्वांग सुन्दर, पुष्ट, सद्‌विचारक, अच्छी सलाह देने वाला, साहसी, कुशाग्र-बुद्धि, सर्वप्रिय, पवित्र, सन्ततिवानु, कामातुर, प्रेमी स्वभाव का, विद्वान्, चतुर, धनी तथा चिर-स्थायी ऐश्वर्य का उपभोग करने वाला होता है।

4 जन्म-लग्न तथा जन्म-राशि फल

जातक की जन्म-लग्न तथा जन्म-राशि के फल में बहुत कुछ समानता पाई जाती है, तथापि उनमें अन्तर भी रहता है । यहाँ जन्म-लग्न तथा जन्म-राशि फल का उल्लेख किया जा रहा है ।

जन्म-लग्न फल

(1) **'मेष'**—लग्न में उत्पन्न मनुष्य प्रतापी, स्वेच्छाचारी, निर्दय, अधिक शत्रुओं वाला, बन्धु-विनाशक, दुष्टों के बहकावे में आ जाने वाला, साथ ही उदार, प्रसिद्ध, देव-द्विज-भक्त, विनम्र, सन्तोषी, गुणवान्, विद्याविनयी, भाग्यशाली, सुखी तथा बड़े कुटुम्ब वाला होता है । इसके अपने ही घर में कलह होती रहती है । इसकी पत्नी धर्मपरायणा, कामातुरा, भाग्यशालिनी, सुशीला तथा सुन्दरी होती है, परन्तु पुत्र आचारहीन एवं क्रूर-स्वभाव के होते हैं ।

(2) **'वृष'**—लग्न में उत्पन्न मनुष्य विचित्र-वाणी अथवा राज्य द्वारा धन प्राप्त करने वाला, अपने धर्म के कारण प्रतापी, पाखण्ड पूर्वक स्वार्थ-सिद्ध करने वाला, सद्गुणग्राहक, दयालु, स्नेही, धनी, सुखी, सम्मानित, स्त्री-सेवक, दुश्चरित्रा-स्त्री अथवा वेश्या का प्रेमी, गृह तथा कुटुम्ब का पक्षपाती होता है । इसकी पत्नी कृपण तथा कला-कुशल एवं पुत्री पुण्यशीला होती है ।

(3) **'मिथुन'**—लग्न में उत्पन्न मनुष्य स्वार्थी, धर्मानुरागी, देव-गुरु के प्रति श्रद्धालु, मृदुभाषी, विनम्र, प्रसन्न-चित्त, चतुर, धनी, कूटनीतिज्ञ,

स्वार्थी, शास्त्रर्थ ज्ञाता, धन-संचयी तथा सफल मनोरथ होता है। इसकी पत्नी निष्ठु-स्वभाव की तथा मन्द-बुद्धि तथा पुत्र सुशील होते हैं। इसे पशु, राज्य तथा परदेस से धन-लाभ होता है।

(4) 'कर्क'—लग्न में उत्पन्न मनुष्य धर्मात्मा, क्षमाशील, परोपकारी, सुखी, धनी, बुद्धिमान्, देव-अतिथि-गुरु-पूजक, राजाज्ञा-पालक, विद्वान्, शास्त्रज्ञ, तीर्थयात्री, प्रसन्नचित्त तथा अल्पक्रोधी होता है। पत्नी गुणवती, धार्मिक तथा पतिव्रता एवं सन्तान शस्त्रधारी होती है। इसे पशु, स्वजन तथा बड़े भाई से धन का लाभ होता है। इसका धन अधार्मिक-कृत्यों में व्यय होता है।

(5) 'सिंह'—लग्न में उत्पन्न मनुष्य शूर-वीर, तीक्ष्ण-स्वभाव, त्यागी, धर्मबुद्धि, देव-अतिथि-पूजक, प्रसिद्ध, ज्ञानी, अल्प विद्यावान्, स्त्री-प्रेमी, धनी, सुखी तथा स्नेहशील होता है। पत्नी गुणवती, स्थिर स्वभाव की तथा आज्ञा-कारिणी होती है। सन्तानें कुरूप, दुष्ट, मन्दबुद्धि, परन्तु सत्यवादी एवं सुप्रसिद्ध होती हैं। इसे बुद्धि-चातुर्य, राजद्वार, विवाह तथा धूर्तता से धन-लाभ होता है।

(6) 'कन्या'—लग्न में उत्पन्न मनुष्य ईश्वर-परायण, परन्तु पापा-त्मा, भीरु-हृदय, स्त्री-वियोगी, कान्ति-युक्त, धनी, यशस्वी, प्रभावशाली, काम-सन्तप्त, बड़े बोल बोलने वाले तथा सुखी-जीवन बिताने वाले होते हैं। इनकी पत्नी अधार्मिक तथा कलहकारिणी होती है। सन्तानें शत्रु-नाशक, शस्त्रधारी, राजपूज्य तथा सेवावृत्ति वाली होती है। इसे कृषि, जल, स्त्री, विद्या तथा साधुजनों के उपकार से धन का लाभ होता है और वह कुकर्मों में व्यय होता है।

(7) 'तुला'—लग्न में उत्पन्न मनुष्य राज-पूजित, शूर-वीरों के मित्र, देव-गुरु-भक्त, अतिथि-सेवक, पुण्यात्मा, राज-पूजित, सुखी, भोगी, कामी, धनी, प्रसन्न, दीनों पर दया करने वाले तथा मित्रों से सहायता पाने वाले होते हैं। इनकी पत्नी क्रूर अथवा चपल स्वभाव की, दुराचारिणी तथा स्वार्थिन होती है। सन्तानें गुणी तथा धनी होती हैं। इन्हें निन्दित-कर्म तथा परदेसियों से धन लाभ होता है।

(8) **'वृश्चिक'**—लग्न में उत्पन्न क्रोधी, असत्यवादी, वाक्पटु, कष्ट सहिष्णु, पापयुक्त विचित्र-कर्म करने वाला, गुणी, सुखी, धनी, देव-गुरु-भक्त तीर्थ-सेवी तथा स्त्री से सुख पाने वाला होता है । इसकी पत्नी नम्र, रूपवती पतिव्रता तथा शान्त स्वभाव की एवं पुत्र श्रेष्ठ, सुन्दर तथा स्वस्थ होते हैं इन्हें छल, पापकर्म तथा प्रबन्ध-व्यवस्था से धन-लाभ होता है ।

(9)**'धनु'**—लग्न में उत्पन्न मनुष्य देव-द्विज-भक्त, यशस्वी, सत्यवादी, संगीत-काव्य-प्रेमी, विनम्र, सुखी, धनी, क्षमाशील, परन्तु विनम्र एवं दीनता-रहित होते हैं । इनकी पत्नी रूपवती, सच्चरित्रा, गुणवती, विनम्र तथा धनो होती है । संतानें पैतृक-धन का उपभोग करने वाली एवं पाप-कर्म में रुचि रखने वाली होती हैं । इन्हें साधु-सेवा, व्यवसाय, धार्मिक-कृत्य तथा स्त्री द्वारा धन प्राप्त होता है और प्रमाद आदि में व्यय होता है ।

(10) **'मकर'**—लग्न में उत्पन्न मनुष्य तीव्र-स्वभाव, धूर्त, धनी अतिथि-प्रेमी, स्त्री-सुखी, भोगी, धनी, परोपकारी, पुत्रवान तथा ऐश्वर्यवान एवं अनेक प्रकार के व्यवसाय करने वाला होता है । इसकी पत्नी गुणवती, सुन्दरी, सौम्य तथा सौभाग्यशालिनी होती है । कन्याएँ रूपवती, परन्तु निःसन्तान होती हैं । इसे वेद, शास्त्र एवं विनय आदि से धन का लाभ होता है तथा उसका व्यय पाप-कर्मों में होता है ।

(11)**'कुम्भ'**—लग्न में उत्पन्न मनुष्य कुटुम्ब-प्रिय, स्त्री-प्रिय, द्विज-मित्र-प्रिय, राजपूज्य, चतुर, स्नेही, स्थिर-वृत्ति, संगीत-प्रिय, यशस्वी, प्रतिष्ठित, धनी, सुखी, गुणी, प्रतापी तथा संगीत-प्रिय होता है । इसकी पहली सन्तान अल्पायु होती है, तत्पश्चात् सन्तान-सुख मिलता है । इसकी पत्नी तीव्र-स्वभाव वाली, निर्बल, चपला, दुर्वेषधारिणी तथा अल्प-सन्तति वाली होती है । इसे राजद्वार, शस्त्रास्त्र तथा पुरुषार्थ से धन का लाभ होता है और वह खान-पान, सत्कार आदि में व्यय होता है ।

(12) **'मीन'**—लग्न में उत्पन्न मनुष्य भाग्यशाली, धनी, यशस्वी, सुखी, प्रतापी, गुणी, शूर-वीर, कवि, स्त्रियों तथा अनेक सन्तानों से सुखी, अधिक कामचेष्टा वाला, राजा का मित्र, पाखण्डी, शान्त-स्वभाव, सुगन्धित पदार्थों का प्रेमी, कवि, तथा बड़े कुटुम्ब वाला होता है । इसकी

पत्नी सुन्दरी, प्रियभाषिणी, सौभाग्यवती, सत्यवादिनी, भोगवती तथापि ढीठ स्वभाव की होती है। इसे विदेश-वास, जलीय-पदार्थ तथा राजकीय-सेवा आदि से धन-लाभ होता है तथा शुभ-कर्मों एवं देवता-साधु-अतिथियों की सेवा में व्यय होता है।

जन्म-राशि फल

जन्म-राशि का फल निम्नानुसार होता है। स्मरणीय है कि जन्म-कुण्डली के जिस भाव में चन्द्रमा बैठा हो, उस भाव में स्थित राशि ही जातक की जन्म-रशि होती है।

(1) **'मेष'**—राशि में उत्पन्न मनुष्य पतले परन्तु दृढ़ शरीर का, स्थूल जाँघों एवं चंचल नेत्रों वाला, निरन्तर-रोगी, दृढ़-निश्चयी, तेजस्वी, परोपकारी, कामी, यात्रा-प्रिय, कोमल स्वभाव का होते हुए भी भयानक कर्म करने वाला, सुशील, स्त्रियों को प्रसन्नता-दायक, यात्रा-प्रिय, चंचल तथा उतावले स्वभाव का, शीघ्रगामी तथा कठोर चित्त वाला होता है। सैन्य-विभाग अथवा स्वतन्त्र-व्यवसाय द्वारा इसकी उन्नति होती है। इसे माता का सुख अधिक नहीं मिलता। द्वि-भार्या योग सम्भव है। इसे अजीर्ण तथा उदर-रोगों की शिकायत बनी रहती है।

(2) **'वृष'** राशि में उत्पन्न मनुष्य सुदृढ़ शरीर वाला, सुन्दर, महा-बली, पराक्रमी, वीर, कष्ट-सहिष्णु, अत्यन्त घमण्डी, कफ-प्रकृति, तेजस्वी, विलासी, धनी, परोपकारी, पवित्र, दानी, शान्त, सन्तोषी, शुभकर्म करने वाला, श्रेष्ठ मित्रों वाला, स्वजनों से दूर रहने वाला, माता-पिता तथा गुरु का भक्त, अलंकार प्रिय, आलसी, शत्रुजयी, दीर्घायु, न्यायालय द्वारा दण्डित, ललित कलाओं का प्रेमी, राजमान्य तथा स्त्रियों का आज्ञाकारी होता है। इसका प्रेम अथवा विवाह दो-तीन या अधिक स्त्रियों से हो सकता है। इसे आकस्मिक धन-लाभ के अवसर प्राप्त होते रहते हैं। यह बाल्यावस्था में दुःखी तथा मध्य एवं वृद्धावस्था में सुखी रहता है।

(3) **'मिथुन'** राशि में उत्पन्न मनुष्य गौरवर्ण, लम्बे कद का, चंचल, तथा गुलाबी नेत्रों, बड़ी नाक तथा सुन्दर केशों वाला, मधुरभाषी, दृढ़ प्रतिज्ञ, वाग्मी, चतुर, दयालु, धनी, विद्वान्, मैथुन-प्रेमी, कुटुम्ब-पालक,

अत्यन्त विवादी, माता-पिता का भक्त, भोगी, विलासी, यात्रा-प्रेमी, यशस्वी, हास्य-प्रिय, सर्वप्रिय, तथा दूत-कार्य करने में निपुण होता है । इसके दो विवाह सम्भव हैं । यह अपने व्यवसाय में एक से अधिक बार परिवर्तन करता है । यह बाल्यावस्था में विशेष सुखी, मध्यावस्था में अल्पसुखी तथा वृद्धावस्था में अत्यन्त दुःखी रहता है ।

(4) **'कर्क'** राशि में उत्पन्न मनुष्य पतले परन्तु शक्तिशाली शरीर के शूर-वीर, कर्मठ, धर्मात्मा, गुरुजनों को प्रिय, अत्यन्त बुद्धिमान्, वाग्मी, परदेसवासी, अत्यन्त क्रोधी, घर-गृहस्थी के कामों में न फँसने वाला, माता, गृह, भूमि, सवारी आदि का सुख पाने वाला, स्त्री-प्रेमी तथा राजकोप द्वारा पीड़ित होता है । इसकी स्त्री पतिव्रता होती है । परन्तु यह स्वयं पर-स्त्रियों में अनुरक्त रहता है । इसकी कई सन्तानों में सुयोग्य केवल एक ही होती है। इसे ज्योतिष, काव्य तथा ललित-कलाओं से प्रेम होता है ।

(5) **'सिंह'** राशि में उत्पन्न मनुष्य कृश, परन्तु पुष्ट शरीर वाला, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने वाला, सुन्दर, मद्य-मांस-सेवी, प्रसिद्ध, शूर-वीर, शत्रु-जयी, अहंकारी, स्थिर-बुद्धि, वन-पर्वतादि में भ्रमण करने वाला, कुटुम्ब-प्रिय, मातृ-भक्त, हँसमुख, निष्कपट तथा अनेक कलाओं का जानकार होता है । इसे बाल्यावस्था में दो माताओं के दुग्धपान का अवसर मिलता है । यह स्त्रियों से शत्रुता रखता है । सन्तानें कम होती हैं । दो बार चोर द्वारा हानि तथा भय की सम्भावना रहती है ।

(6) **'कन्या'** राशि में उत्पन्न मनुष्य गौर वर्ण, सुन्दर, उन्नत शरीर तथा कण्ठ, बाहु, पीठ, गुप्तांग आदि में तिल-चिह्न वाला, परदेश एवं नृत्य-प्रिय, स्त्री की ओर से दुःखी, कुटुम्बियों तथा मित्रों को प्रसन्नतादायक, लज्जालु प्रकृति, धनी, प्रियभाषी, सत्यवादी, बुद्धिमान, शास्त्रज्ञ, अधिक कामी, कवि, चतुर, दानी तथा विलासी होता है । यह पराई सम्पत्ति का उपयोग करने वाला, अपने अधीनस्थ व्यक्तियों द्वारा भाग्यशाली बनने वाला भी होता है । इसकी पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं होती । सन्तानों में कन्याएँ अधिक होती हैं । नौकरी, अध्यापन, औषध अथवा भोज्य पदार्थों का व्यवसाय इसके लिए लाभप्रद रहता है ।

(7) 'तुला' राशि में उत्पन्न मनुष्य बलिष्ठ शरीर का, कोई अंग-हीन, पराक्रमी, अकारण क्रोधी, चतुर, मित्र-प्रेमी, चंचल, दुःखी, बहु-स्त्री भोगी, अल्प-सन्ततिवान्, साझेदारी में सफल, धनी, दो विवाह के योग वाला, धर्मात्मा, पितृ-पूजक, युद्ध-प्रिय, प्रबन्ध-पटु, परोपकारी तथा वस्तु-संग्रही होता है। इसे जल से भय रहता है। व्यवसाय तथा यातायात सम्बन्धी कार्यों से धन-लाभ होता है। सिर, उदर तथा चर्म-रोग होना सम्भव रहता है।

(8) 'वृश्चिक' राशि में उत्पन्न मनुष्य पीले तथा बड़े नेत्रों वाला, बड़े वक्षःस्थल वाला, सुन्दर परन्तु छोटे आकार का स्थूल शरीर, सन्तोषी, विचारशील, स्वार्थ-साधक, दयाहीन, पाखण्डी, कपटी, मन की बात भाँप लेने वाला, कुशल, अपनी प्रतिभा पर गर्व करने वाला, निन्दक, भ्रातृ-द्रोही, कामासक्त, धूर्त, पर-स्त्री अथवा पर-पुरुष में आसक्त, निष्ठुर, कलही तथा लोभी होता है। इस राशि वाली स्त्रियाँ दुःशीला होती हैं। परन्तु इस राशि वाले पुरुष की पत्नी सच्चरित्रा होती है।

(9) 'धनु' राशि में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, मोटे शरीर वाले, मधुर भाषी, शक्ति-सम्पन्न, तेजस्वी, धनी, यात्री, बुद्धिमान्, बलवान्, श्रेष्ठ, पवित्र, साहसी, निष्कपट, भविष्य-वक्ता, मितव्ययी तथा उद्यमी होते हैं। ये स्त्री-लोलुप, अल्प-सन्ततिवान् तथा शत्रुहंता होते हैं। इनके तीन विवाह सम्भव हैं। ये बाल्यावस्था में धनी होते हैं तथा बाद में अनेक प्रकार के व्यवसाय करते हैं। इन्हें 1,8,18, 28, 38 48वें वर्ष में कष्ट होना सम्भव है।

(10) 'मकर' राशि में उत्पन्न मनुष्य मोटे शरीर परन्तु पतली कमर वाला, सुन्दर आँखों तथा काले केश वाला, तीव्र स्मरणशक्ति-सम्पन्न, बड़े कुटुम्ब वाला, मातृ-भक्त, स्त्रियों के वश में रहने वाला, दंभी, विद्वान्, आलसी, दृढ़प्रतिज्ञ, काव्य-कुशल, संगीत-प्रेमी, सत्यवादी, क्रोधी तथा यशस्वी, होता है। यह अपने से हीन वर्ण अथवा बड़ी आयु वाली स्त्री से विवाह कर सकता है। इनमें कुछ सुख्यात तथा कुछ कुख्यात होते हैं। इन्हें 25वें वर्ष में हाथ-पाँव की पीड़ा हो सकती है।

(11) 'कुम्भ' राशि में उत्पन्न मनुष्य पतले तथा लम्बे शरीर वाला, रूखे केश वाला, अल्प सन्ततिवान्, पर-स्त्री में आसक्त, कला तथा राजनीतिक

कार्यों में रुचि रखने वाला, पराये धन का अपहरण करने वाला, कुमार्ग-गामी, पापी, अत्यन्त कामी, मद्यपी, भोगी, निर्भय, धनी, मानी, दानी, आलसी, दयालु, उन्मत्त तथा दुःखी होता है । इसके जीवन में हानि-लाभ के अवसर प्रायः ही आते रहते हैं ।

(12) **'मीन'** राशि में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर रूप तथा सुन्दर दृष्टि वाला सहज ही उदास तथा निरुत्साहित हो जाने वाला, प्रिय तथा गंभीर चेष्ठाओं वाला, सुन्दर स्वभाव, कभी-कभी मादक-द्रव्यों के सेवन तथा दुरा-चरण में भी प्रवृत्ति, क्रूर, चतुर, वाग्मी, क्रोधी, कृपण, विनम्र, संगीतज्ञ, धनी, भोगी, निष्कपट, उदार, गुणी, विद्वान्, कवि, लेखक शास्त्रज्ञ, शत्रुजयी, यशस्वी, परिश्रमी, गंभीर, सरल स्वभाव, आत्मविश्वासी, धार्मिक, प्रसन्न-मुख, अत्यन्त कामी तथा मधुरभाषी होता है ।

यह स्त्री से प्रीति रखने वाला, माता-पिता तथा देव-गुरु-भक्त, पराये धन, गढ़े हुए धन तथा जलोत्पन्न पदार्थों का उपभोग करने वाला तथा नौकरी अथवा जलीय-पदार्थों से आजीविका प्राप्त करने वाला होता है ।



9 ग्रहों की उच्च-नीचादि स्थिति का प्रभाव

कौन सा ग्रह किस राशि में उच्चस्थ, मूलत्रिकोणस्थ, नीचस्थ, स्व-क्षेत्री, मित्र-क्षेत्री अथवा शत्रु-क्षेत्री होता है, उल्लेख पहले किया जा चुका है। ग्रहों की इन स्थितियों का जातक पर क्या सामान्य प्रभाव पड़ता है, यहाँ उसी पर संक्षिप्त प्रकाश डाला जा रहा है।

उच्च राशिस्थ ग्रहों का फल

1. **सूर्य**—उच्चस्थ (मेष राशि में) हो तो जातक भाग्यशाली, धनी, यशस्वी, सुखी, नेतृत्वशक्ति-सम्पन्न, शूर-वीर तथा विद्वान् होता है।

2. **चन्द्रमा**—उच्चस्थ (वृष राशि में) हो तो जातक यशस्वी, विलासी, अलंकार-प्रिय, सुन्दर, सुखी, चपल स्वभाव का तथा मिष्ठान-प्रिय होता है।

3. **मंगल**—उच्चस्थ (मकर राशि में) हो तो जातक शूर-वीर, साहसी, कर्त्तव्य-परायण तथा राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त होता है।

4. **बुध**—उच्चस्थ (मीन राशि में) हो तो जातक राजमान्य, शत्रु-नाशक, वंशवृद्धि कर्त्ता, सुखी, बुद्धिमान्, लेखक, सम्पादक आदि होता है।

5. **गुरु**—उच्चस्थ (कर्क राशि में) हो तो जातक शासक, ऐश्वर्य-शाली, विद्वान्, सद्‌गुणी, राजा का प्रिय, चतुर तथा सुखी होता है।

6. **शुक्र**—उच्चस्थ (मीन राशि में) हो तो जातक संगीत-काव्य-प्रेमी, कामी, विलासी, भाग्यशाली तथा सुखी होता है।

7. **शनि**—उच्चस्थ (तुला राशि में) हो तो जातक पृथ्वीपति, यशस्वी, ऐश्वर्यशाली, सुखी, कृषक तथा परोपकारी होता है।

8. राहु—(मिथुन, मतान्तर से—वृष राशि में) हो तो जातक शूर वीर, साहसी, सरदार. लम्पट तथा धनी होता है ।

9. केतु—(धनु, मतान्तर से—वृश्चिक और मीन राशि में) हो तो जातक भ्रमण-प्रिय, सरदार, राजा का प्रिय तथा नीच-प्रकृति का होता है ।

मूल-त्रिकोणराशिस्थ ग्रहों का फल

(1) **सूर्य**—मूल त्रिकोणगत (सिंह राशि के 20 अंश तक) हो तो जातक धनी, सुखी, यशस्वी तथा सम्माननीय होता है ।

(2) **चन्द्रमा**—मूल त्रिकोणगत (वृष राशि के 4 से 20 अंश तक) हो तो जातक सुन्दर, धनी, सुखी तथा भाग्यशाली होता है ।

(3) **मंगल**—मूल त्रिकोणगत (वृष राशि के 18 अंश तक) हो तो जातक सामान्य धनी, अपयशी, स्वार्थी, लम्पट, क्रोधी, दुष्ट, स्वार्थी, चरित्र-हीन तथा नीच प्रकृति का होता है ।

(4) **बुध**—मूल त्रिकोणगत (कन्या राशि के 16 से 20 अंश तक) हो तो जातक सैनिक, राजमान्य, व्यवसायी, चिकित्सक, महत्वाकांक्षी, विद्वान तथा धनी होता है ।

(5) **गुरु**—मूल त्रिकोणगत (धनु राशि के 13 अंश तक) हो तो जातक भोगी, सुखी, यशस्वी, राजप्रिय, सम्माननीय तथा यशस्वी होता है ।

(6) **शुक्र**—मूल त्रिकोणगत (तुला राशि के 10 अंश तक) हो तो जातक जागीरदार, कामी, विलासी, सुन्दर, स्त्रियों को प्रिय तथा अनेक पुरस्कारों का विजेता होता है ।

(7) **शनि**—मूल त्रिकोणगत (कुम्भ राशि के 20 अंश तक) हो तो जातक शूर-वीर, अस्त्र-शस्त्र-निर्माता, अनुशासन प्रिय, कर्तव्यनिष्ठ, यान-चालक, वैज्ञानिक तथा साहसी होता है ।

(8) **राहु**—मूल त्रिकोणगत (कर्क राशि में) हो तो जातक वाचाल, धनी तथा लोभी होता है ।

(9) **केतु**—मूल त्रिकोणगत (मकर राशि में) हो तो जातक को राहु के मूल त्रिकोणगत जैसा ही फल देता है ।

टिप्पणी—अधिकांश विद्वान् केतु का मूल त्रिकोण नहीं मानते । इसी

प्रकार कुछ विद्वान् राहु को भी मूल त्रिकोण नहीं मानते।

स्वक्षेत्री ग्रहों का फल

(1) सूर्य—स्वक्षेत्री (सिंह राशि का) हो तो जातक सुन्दर, सुखी, ऐश्वर्यशाली, व्यभिचारी तथा काम-लोलुप होता है।

(2) **चन्द्रमा**—स्वक्षेत्री (कर्क राशि का) हो तो जातक सुन्दर, धनी, भाग्यशाली तथा तेजस्वी होता है।

(3) **मंगल**—स्वक्षेत्री (मेष राशि अथवा वृश्चिक राशि का) हो तो भू-स्वामी, साहसी, बलवान्, तेजस्वी तथा यशस्वी होता है।

(4) **बुध**—स्वक्षेत्री (कन्या अथवा मिथुन राशि का) हो तो जातक लेखक, बुद्धिमान्, विद्वान् तथा शास्त्रज्ञ होता है।

(5) **गुरु**—स्वक्षेत्री (धनु अथवा मीन राशि का) हो तो जातक काव्य-प्रेमी, चिकित्सक, शास्त्रज्ञ, सुखी तथा यशस्वी होता है।

(6) **शुक्र**—स्वक्षेत्री (वृष अथवा तुला राशि का) हो तो जातक विद्वान्, गुणवान्, विचारवान्, धनी तथा स्वतन्त्रचेत्ता होता है।

(7) **शनि**—स्वक्षेत्री (मकर अथवा कुम्भ राशि का) हो तो जातक पराक्रमी, कष्ट-सहिष्णु तथा उग्र-स्वभाव का होता है।

(8) **राहु**—स्वक्षेत्री (कन्या राशि का) हो तो जातक सुन्दर, यशस्वी तथा भाग्यशाली होता है।

(9) **केतु**—(मिथुन राशि का) हो तो जातक कर्मठ, धैर्यवान्, कष्ट-सहिष्णु, चिन्ताशील तथा गुप्त युक्तियों वाला होता है।

मित्रक्षेत्री ग्रहों का फल

(1) **सूर्य**—मित्रक्षेत्री (कर्क, मेष, वृश्चिक, धनु अथवा मीन राशि-गत) हो तो जातक दानी, सुखी, सौभाग्यशाली, यशस्वी तथा व्यवहार-कुशल होता है।

(2) **चन्द्रमा**—मित्रक्षेत्री (सिंह, कन्या अथवा मिथुन राशि गत, मतान्तर से—केवल सिंह राशि गत) हो तो जातक सुखी, धनी तथा गुणवान् होता है।

(3) **मंगल**—मित्रक्षेत्री (सिंह, कर्क, धनु अथवा मीन राशिगत) हो

तो जातक मित्रक्षेत्री तथा धनवान् होता है।

(4) **बुध**—मित्रक्षेत्री (सिंह, कर्क, धनु अथवा मीन राशिगत, मतान्तर से—कर्क राशिगत नहीं हो तो जातक कार्यदक्ष, विनोदी स्वभाव का एवं शास्त्रज्ञ होता है।

(5) **गुरु**—मित्रक्षेत्री (सिंह, कर्क, मेष अथवा वृश्चिक राशिगत) हो तो जातक उन्नतिशील, बुद्धिमान् तथा सुखी होता है।

(6) **शुक्र**—मित्रक्षेत्री (कन्या, मिथुन, मकर अथवा कुम्भ राशिगत) हो तो जातक गुणवान्, सन्तितिवान् तथा सुखी होता है।

(7) **शनि**—मित्रक्षेत्री (कन्या, मिथुन, वृष अथवा तुला राशिगत) हो तो जातक परान्न-भोजी, धनी, सुखी तथा प्रेमी-स्वभाव का होता है।

(8-9) **राहु-केतु**—मित्रक्षेत्री (शुक्र, शनि तथा बुध की राशियों में) हों तो इनका प्रभाव मित्र-क्षेत्री शनि के समान ही होता है।

शत्रु-क्षेत्री ग्रहों का फल

(1) **सूर्य**—शत्रुक्षेत्री (वृष, तुला, मकर अथवा कुम्भ राशिगत) हो तो जातक नौकरी करने वाला, सदैव दुःखी रहने वाला होता है।

(2) **चन्द्रमा**—शत्रुक्षेत्री (कन्या अथवा मिथुन, मतान्तर से—मकर तथा कुम्भ राशिगत भी) हो तो जातक हृदय-रोगी तथा अपनी माता के कारण दुःखी रहने वाला होता है।

(3) **मंगल**—शत्रु क्षेत्री (कन्या अथवा मिथुन, मतान्तर ये—मकर तथा कुम्भराशिगत भी) हो तो जातक विकलाङ्ग, सदैव व्याकुल, दीन तथा मलिन होता है।

(4) **बुध**—शत्रु क्षेत्री (कर्क राशिगत) हो तो जातक कर्त्तव्य-हीन, सामान्य सुखी तथा वासनालिप्त होता है।

(5) **गुरु**—शत्रुक्षेत्री (वृष, तुला, कन्या अथवा मिथुन राशिगत) हो तो जातक चतुर तथा भाग्यशाली होता है।

(6) **शुक्र**—शत्रुक्षेत्री (सिंह अथवा कर्क राशिगत) हो तो जातक नौकरी अथवा दासवृत्ति द्वारा जीविकोपार्जन करने वाला होता है।

(7) **शनि**—शत्रुक्षेत्री (सिंह, कर्क, मेष अथवा वृश्चिक राशिगत) हो तो जातक जीवनभर किसी न किसी दुःख से दुःखी बना रहता है।

(8-9) राहु-केतु—शत्रुक्षेत्री हों तो इनका प्रभाव भी शत्रुक्षेत्री शनि के समान ही होता है।

नीचराशिस्थ ग्रहों का फल

(1) सूर्य—नीच-राशिस्थ (तुला में) हो तोजातक बन्धु-सेवी एवं पाप-कर्म करने वाला होता है।

(2) **चन्द्रमा**—नीच-राशिस्थ (वृश्चिक में) हो तो जातक नीच-प्रकृति का, रोगी एवं अल्पधनी होता है।

(3) **मंगल**—नीच-राशिस्थ (कर्क में) हो तो जातक नीच-स्वभावका, कृतघ्न, परन्तु धनी होता है।

(4) **बुध**—नीच-राशिस्थ (मीन में) हो तो जातक चंचल-स्वभाव का, बन्धु-विरोधी एवं उग्र-प्रकृति का होता है।

(5) **गुरु**—नीच-राशिस्थ (मकर में) हो तो जातक अपवादी, अपयश पाने वाला तथा दुष्ट स्वभाव का होता है।

(6) **शुक्र**—नीच-राशिस्थ (कन्या में) हो तो जातक किसी-न-किसी कारण-वश दुःखी बना रहता है।

(7) **शनि**—नीच-राशिस्थ (मेष में) हो तो जातक दरिद्र तथा दुःखी होता है।

(8-9) **राहु-केतु**—नीच-राशिस्थ हों तो इनका प्रभाव भी शनि जैसा ही होता है। स्मरणीय है, राहु को धनुराशि में (मतान्तर से—वृश्चिक में भी) तथा केतु को मिथुन राशि में (मतान्तर से वृष में भी) नीच-राशिस्थ माना जाता है।

टिप्पणी—(1) जिस जन्म-कुण्डली में जितने अधिक ग्रह उच्च-राशिस्थ, मूलत्रिकोणस्थ, स्वक्षेत्री अथवा मित्रक्षेत्री होते हैं, वह जातक उतना ही अधिक धनी, सुखी, यशस्वी तथा सद्‌गुणी होता है।

(2) एक ग्रह स्वक्षेत्री हो तो जातक अपनी जाति में श्रेष्ठ, दो ग्रह स्वक्षेत्री हों तो कर्त्तव्य-परायण, तीन ग्रह स्वक्षेत्री हों तो धनी तथा सम्मानित,

चार ग्रह स्वक्षेत्री हों तो धनी, विद्वान् एवं राजमन्त्री, पाँच ग्रह स्वक्षेत्री हों तो राजा अथवा राजतुल्य अधिकार सम्पन्न, परम ऐश्वर्यशाली, धनी, सुखी, सद्गुणी, परमयशस्वी तथा विद्वान् होता है।

(3) यदि एक ग्रह मित्र-क्षेत्री हो तो जातक पराये धन का उपभोग करने वाला, दो हों तो मित्र के धन का उपभोग करने वाला, तीन हों तो स्वोपार्जित धन का उपभोग करने वाला, चार हों तो दानी, पाँच हों तो नेता, सरदार अथवा सेनापति; छः हों तो महान सेनानायक, प्रथमश्रेणी का नेता अथवा उच्च पदाधिकारी तथा सात हों तो राजा अथवा राज तुल्य अधिकार पाने वाला होता है।

(4) जितने ग्रह शत्रु-क्षेत्री होते हैं जातक उतना ही अधिक दुःखी, निराश, चिन्तित, दरिद्र तथा भाग्यहीन होता है। यदि तीन ग्रह शत्रु-क्षेत्री हों तो जीवनभर दुःखी रहने के वाद जीवन के अन्तिम दिनों में सुख प्राप्त करता है।

(5) जितने ग्रह नीच राशिस्थ होते हैं, जातक को उतना ही अधिक अशुभ-फल मिलता है। यदि तीन ग्रह नीचस्थ हों तो जातक मूर्ख होता है।



10 ग्रहों का भाव तथा राशि-फल

विभिन्न भावों तथा राशियों में स्थित विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर क्या प्रभाव डाते हैं, इसे निम्नानुसार समझना चाहिए । परन्तु इनके साथ ही अन्य ग्रहों की युति दृष्टि तथा उच्च-नीच आदि सभी बातों पर विचार करने के बाद ही फलादेश निश्चित करना चाहिए ।

ग्रहों का भाव-फल

विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का फल इस प्रकार होता है—

सूर्य

'प्रथम भाव' में हो तो जातक स्वस्थ, साहसी, वीर, दृढ़ इच्छा-शक्ति सम्पन्न, भ्रमणशील, नेत्र-रोगी, विकल, स्त्री-पुत्रादि की ओर से दुःखी, दुःखी हृदय वाला, ईर्ष्यालु, क्रोधी तथा पित्त-रोग से पीड़ित होता है । परन्तु यदि मेष अथवा सिंह राशि का होकर प्रथम भाव में बैठा हो तो यशस्वी, प्रभावशाली, महत्वाकांक्षी, उदार तथा स्पष्टवादी होता है ।

'द्वितीय भाव' में हो तो जातक धनी, त्यागी, भाग्यशाली, दुर्बल, कुमित्रों वाला, मुख-रोगी, स्त्री के कारण कुटुम्ब से कलह करने वाला, कृतघ्न, ओजस्वी वक्ता तथा दुःखी होता है । तुला राशि का हो तो अपव्ययी एवं ऋणी होता है ।

'तृतीय भाव' में हो तो जातक प्रतापी, साहसी, बुद्धिमान, पराक्रमी, भाइयों की ओर से दुःखी, परोपकारी, विख्यात, सहिष्णु, मित्रों का शुभैषी एवं अध्यापन अथवा लेखन में सफल होता है । जन्म-राशिगत सूर्य अनेक यात्राएं भी कराता है ।

'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक क्रूर स्वभाव, कृतघ्न, अपकारी, अहंकारी, ईर्ष्यालु, हृदय-रोगी होता है तथा स्त्री-वशी, माता को कष्ट, मानसिक रूप से चिन्तित, बन्धु-बाँधवों से घृणा तथा शत्रुता आदि कुफल होते हैं, परन्तु शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो स्थावर सम्पत्ति से लाभ एवं वृद्धावस्था में सम्मान मिलता है।

पंचम भाव' में हो तो जातक तीक्ष्ण-बुद्धि, चंचल, प्रमादी, ठग, दुष्कर्मरत, विलासी, एकान्त-प्रेमी, उदारतापूर्वक खर्च करने वाला, पिता के लिए अशुभ तथा प्रेम-सम्बन्ध में असफलता पाने वाला होता है।

'षष्ट भाव' में हो तो जातक शत्रुजित्, कामी, यात्रा में कष्ट पाने वाला, रोग एवं शत्रु-रहित, उद्योगी, चतुर, बन्धु-बाँधवों का हितैषी तथा राज्य द्वारा सम्मान पाने वाला होता है।

'सप्तम भाव' में हो तो जातक चिन्तित, पीड़ित, कामातुर, दुष्ट स्वभाव का, अनेक शत्रुओं वाला, पत्नी का आज्ञाकारी, विवाहोपरान्त उन्नतिशील तथा सार्वजनिक जीवन में सफल होता है। स्त्री की कुण्डली में हो तो पति से तलाक या उपेक्षा देता है।

'अष्टम भाव में हो तो जातक चंचल, चिन्तित, दुःखी, नेत्र-रोगी, गुप्त-रोगी, धूर्त, पर-स्त्रीगामी, संकीर्ण मनोवृत्ति का, पैतृक-सम्पत्ति पाने वाला तथा मृत्यु के साथ प्रसिद्धि पाता है। पुरुष की कुण्डली में पत्नी तथा स्त्री की कुण्डली में पति की असामयिक मृत्यु का सूचक है।

'नवम भाव' में हो तो जातक राज्य, पिता तथा गुरु से वैचारिक-विरोध रखने वाला, अल्प पितृ-सुख, दुःखी, काव्य-प्रेमी, देवाराधक, दंभी, धूर्त, उदार, भ्रातृ-सुख रहित, परन्तु सम्मान पाने वाला होता है। विदेशों में प्रतिष्ठा पाता है।

'दशम भाव' में हो तो जातक धनी, साहसी, बली, विद्वान्, पराक्रमी, भाग्यशाली, बहुमित्रवान्, यशस्वी, दानी, उच्चस्तरीय जीवन जीने वाला, ऐश्वर्यशाली, विदेशी-संस्थाओं में सम्बन्ध रखने वाला सुप्रसिद्ध व्यक्ति होता है।

'एकादश भाव' में हो तो जातक प्रसन्न-हृदय, धनी, निर्बल स्वास्थ्य

वाला, सदाचारी, राज्याश्रित, विचारशील, महत्वाकांक्षी तथा मित्रों की सहायता से उन्नति पाता है।

'द्वादश भाव' में हो तो जातक नेत्र-रोगी, पर-स्त्रीगामी, बुद्धिहीन, भ्रमणशील, पितृविरोधी, शत्रुओं पर विजय पाने वाला, चाचा, ताऊ से दुःखी तथा व्यवसाय में हानि पाने वाला होता है।

चन्द्रमा

'प्रथम भाव' में हो तो जातक प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, सुन्दर, अन्वेषक, स्त्रियों द्वारा सम्मानित, भ्रमणशील, चंचल, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने वाला तथा साहसी होता है। यदि क्षीण चन्द्रमा हो अथवा वह नीचस्थ या पापयुक्त हो तो दुर्बुद्धि, धनहीन तथा अधर्मी होता है।

'द्वितीय भाव' में हो तो जातक धनी, सुन्दर, मधुरभाषी, स्त्रियों को वश में करने वाला, व्यवहार-कुशल, सम्माननीय, शान्त, काव्य-प्रेमी तथा अनायास धन पाने वाला होता है।

'तृतीय भाव' में हो तो जातक पराक्रमी, अल्पधनी, मितभाषी, जितेन्द्रिय, भाई-बहिनों से प्रेम रखने वाला, साहित्य तथा कला का प्रेमी, कल्पनाशील, तीव्र स्मरण-शक्ति सम्पन्न तथा यात्रा-प्रिय होता है।

'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक परोपकारी, विद्याशील, विनम्र, विद्वान्, भक्त, अचल सम्पत्ति के सम्बन्ध में दूर के सम्बन्धियों से झगड़े, माता को अनिष्टदायक एवं प्रारम्भिक जीवन में दुःखी होता है।

'पञ्चम भाव' में हो तो जातक धनी, बुद्धिमान्, दयालु, श्रद्धालु, बहुसन्ततिवान्, जुए-लाटरी से धन कमाने वाला तथा किसी अविश्वस्त व्यक्ति पर विश्वास करने के कारण परेशान होने वाला होता है। इसकी एक सन्तान सार्वजनिक प्रसिद्धि प्राप्त करती है।

'षष्ठ भाव' में हो तो जातक अधिक शत्रुओं वाला, मन्दाग्नि, उदर तथा कफ रोगों से पीड़ित, पर-स्त्रियों में आसक्त, आलसी तथा चपल स्वभाव का होता है। यदि स्त्री की कुण्डली में ऐसा हो तो प्रसव के समय अधिक कष्ट होता है।

'सप्तम भाव' में हो तो जातक व्यवसाय द्वारा धन कमाने वाला,

दयालु, कामी, स्त्री-वशी, जल यात्रा-प्रिय, लोक-प्रिय, सुशील तथा रूपवती पत्नी वाला, शान्त, पत्नी द्वारा धन-लाभ तथा सुखी गृहस्थ होता है।

'अष्टम भाव' में हो तो जातक आलस्य, सदैव चिन्तित, मलिन-हृदय, नेत्र रोग, श्वास, पांडु, ज्वर अथवा क्षय-रोगी, परस्त्री-गमन के इच्छुक तथा माता, पत्नी अथवा किसी अन्य स्त्री से वसीयत द्वारा धन प्राप्त करता हैं।

'नवम भाव' में हो तो जातक धनी, पुत्रवान्, भाग्यशाली, साहसी, सुन्दर, धार्मिक, लम्बी यात्रायें करने वाला होता है। ऐसी स्त्री दार्शनिक होती है। यदि चन्द्रमा क्षीण अथवा निर्बल हो तो कुत्सित विचारों वाला, निर्धन होता है।

'दशम भाव' में हो तो जातक धनी, मानी, सुखी, माता से धन पाने वाला, नवयुवतियों के साथ विलास करने वाला, किसी एक स्त्री द्वारा जीवन में सहायता एवं सफलता पाने वाला, साहसी तथा महत्वाकांक्षी होता है। जमीन-जायदाद के क्रय-बिक्रय मे लाभ होता है।

'एकादश भाव' में हो तो जातक स्त्रियों को शीघ्र प्रभावित करने वाला, धनी, अनेक व्यवसायों द्वारा नित्य लाभ पाने वाला, उदार, सभ्य, साहित्य-प्रेमी, विश्वस्त मित्रों वाला, किसी प्रभावशाली स्त्री से संरक्षण पाने वाला, बड़े परिवार वाला तथा सफल व्यक्ति होता है। निर्बल चन्द्र असफलता देता है।

'द्वादश भाव' में हो तो जातक नेत्र-रोगी, शत्रु से भयभीत, चाचा-ताऊ मामा की ओर से चिन्तित, तीव्र-स्वभाव, सर्दी-जुकाम से पीड़ित रहने वाला, भ्रमणशील, मिथ्यावादी, प्रवासी, सेवाभावी तथा अल्पकालीन प्रणय सम्बन्ध और उनमें भी असफलता पाने वाला होता है।

मङ्गल

'प्रथम भाव' में हो तो जातक झगड़ालू, आत्मश्लाघी, चंचल चित्त, नेत्र-रोग, रक्त चापादि से पीड़ित, स्त्री-पुत्र की ओर से दुःखी, साहसी, कृतघ्न, अत्यन्त क्रोधी, आक्रामक, शरीर, मुख अथवा सिर पर चिह्न, विवाहित-जीवन अथवा पत्नी-वियोग के कारण दुःखी, स्वभाग्य-निर्माता, चतुर तथा चालाक

होता है। स्त्री-कुण्डली में दुर्भाग्य एवं पति द्वारा उपेक्षा का सूचक होता है।

'द्वितीय भाव' में हो तो जातक कृपण, वाचाल, धनी, असभ्य, कठोर वाणी बोलने वाला, यदा-कदा ऋणी, कृषि-कर्म में चतुर, अपयशी, प्रवासी तथा लोहा, रसायन आदि पदार्थों के व्यवसाय से लाभ उठाने वाला होता है।

'तृतीय भाव' में हो तो जातक विलासी, पराक्रमी, बुद्धिमान्, उदार, धार्मिक, भाइयों अथवा विधवा-बहिन की ओर से दुःखी, साहसी, दुश्चरित्र, नीरोगी तथा दुःखी पत्नी वाला होता है। कोई दुर्घटना होना भी सम्भव है।

'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक प्रवासी, भ्रमणशील, अचल सम्पत्ति तथा भूमि का स्वामी, अभिमानी, राज्याश्रित तथा स्वजनों से परित्यक्त होता है। यदि मङ्गल क्षीण या निर्बल हो तो सम्पत्ति की हानि कठिनाइयों तथा पत्नी की मृत्यु की सम्भावना रहती है।

'पञ्चम भाव' हो तो जातक साहसी, क्रूर, सन्तान-पक्ष से चिन्तित, पापी, चपल-बुद्धि, जुए-सट्टे में आर्थिक हानि पाने वाला तथा व्याकुल चित्त का होता है। स्त्री की कुण्डली में हो तो वह शील रहित, निर्लज्ज होती है तथा गर्भपात सम्भव है।

'षष्ठ भाव' में हो तो जातक यशस्वी, बलवान्, अत्यन्त चतुर, शत्रु-जयी, स्वस्थ, सैनिक अथवा पुलिस विभाग में कार्यरत, कुल में प्रधान होता है। परन्तु मङ्गल निर्बल हो तो कपटी, विश्वासघाती तथा उदर-रोगी होता है।

'सप्तम भाव' में हो तो जातक चपल-बुद्धि, स्त्री की ओर से सन्तप्त, गुप्तांग में पीड़ा, व्यवसाय में कठिन परिश्रम करने वाला तथा साझेदारी अथवा वाद-विवाद में हानि पाने वाला होता है।

'अष्टम भाव' में हो तो जातक कान्तिहीन, अविनयी, विधुर, दुश्चरित्र, पत्नी से शत्रुता रखने वाला, अल्प सन्ततिवान तथा शस्त्र-प्रहार एवं जल-भय का शिकार होता है। स्त्री की कुण्डली में यह दुर्भाग्य तथा अधार्मिकता का सूचक होता है।

'नवम भाव' में हो तो जातक विख्यात, भाग्यशाली, हठी, चालाक, उत्साही, तेजस्वी, भ्रातृहीन अथवा भाइयों एवं सालों के लिए अनिष्टकारक

अथवा उनकी ओर से दुःखी एवं कभी यात्रा अथवा परदेश में संकट या दुर्घटना का शिकार होता है।

'दशम भाव' में हो तो जातक सुखी, धनी, बलवान्, राज्य में अधिकार एवं सम्मान पाने वाला, जितेन्द्रिय, शत्रुओं से भी धन का लाभ लेने वाला, पिता से प्रतिकूल, साहसी, उत्साही, विख्यात तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है।

'एकादश भाव' में हो तो जातक सन्तान-पक्ष से चिन्तित, लोभी, ठग, छली, धनी, विश्वासघाती मित्रों वाला, विलासी, प्रभावशाली, शत्रुओं को पीड़ा पहुँचाने वाला तथा वृद्धावस्था में भी युवा दिखाई देने वाला होता है।

'द्वादश भाव' में हो तो जातक शत्रु-नाशक, पतित, अपव्ययी, दुष्कर्मी, परस्त्री तथा पराये धन का अपहरण करने की इच्छा वाला, मद्यपी तथा गुप्त शत्रु, शल्य-क्रिया एवं दुर्घटना आदि से हानि पाने वाला होता है।

बुध

'प्रथम भाव' में हो तो जातक विद्वान्, हृष्ट-पुष्ट, तेजस्वी, काव्य-शिल्प-गणित, साहित्य एवं कलाओं का ज्ञाता, लेखक, विनोदी, अनुशासन-प्रिय, तीव्र-बुद्धि, तार्किक तथा फुटकर व्यवसाय से लाभ उठाने वाला होता है।

'द्वितीय भाव' में हो तो जातक सुशील, उदार, धनी, व्यवहार-कुशल, सुवक्ता, काव्य-प्रेमी, भोगी, लेखक, बुद्धि-बल अथवा पुरुषार्थ से धनोपार्जन करने वाला, वकील, दलाल, यशस्वी तथा साधु-स्वभावी होता है।

'तृतीय भाव' में हो तो जातक क्रय-विक्रय से लाभ पाने वाला, भ्रातृ-प्रेमी, नीतिज्ञ, चतुर, विद्याभ्यासी, सम्पादन-कला में दक्ष तथा परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तनशील होता है।

'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक धनी, पंडित, सरल, स्थावर सम्पत्ति का स्वामी, परोपकारी, राज्याधिकारी, ज्योतिष-प्रेमी, साहित्यिक, भू-सम्पत्ति के व्यवसाय अथवा अपने पुरुषार्थ से लाभ पाने वाला, व्यावसायिक-यात्राएँ करने वाला तथा गृहस्थ सम्बन्धी चिन्ताओं से कुछ चिन्तित रहने वाला होता है।

'पञ्चम भाव' में हो तो जातक विद्वानों द्वारा सम्मानित, मधुर भाषी, धनी, पवित्र, प्रशासन-दक्ष, यशस्वी, सुन्दर वस्त्रादि का प्रेमी, तीस वर्ष की आयु के वाद पुत्र-सुख पाने वाला अन्यथा अविवाहित ही रहने वाला होता है।

षष्ठ भाव' में हो तो जातक कामातुर, कलह-प्रिय, अधिक शत्रुओं वाला, आलसी, उग्र-स्वभाव, धैर्यहीन, अधीनस्थ कार्यकर्ताओं द्वारा पीड़ित तथा मानसिक अथवा शारीरिक स्वास्थ्य-लाभ हेतु यात्रा करने वाला होता है।

'सप्तम भाव' में हो तो जातक धर्मात्मा, बुद्धिमान्, सुन्दर, स्पष्ट-वादी, वाचाल, अनुत्तरदायी पत्नी वाला, अस्थिर विचारों वाला, गणित, ज्योतिष एवं व्यवसाय में चतुर, नीतिज्ञ, देशाटन-प्रेमी तथा पर-स्त्री-रत भी होता है।

'अष्टम भाव' में हो तो जातक मनस्वी, दीन, प्रवासी, विख्यात, कुरूप, अतिथि-सेवी, कामी, उदासीन, भू-सम्पत्ति पाने वाला तथा पत्नी अथवा किसी साझेदारी के विवाद के कारण दुःखी होता है।

'नवम भाव' में हो तो जातक धन-पुत्रादि से युक्त, धर्मात्मा, सदा-चारी, तार्किक, संगीत-प्रेमी, उपकारी, यशस्वी, तीव्र-बुद्धि, व्यवहार-कुशल, लम्बी यात्रायें करने वाला तथा विदेशों से सम्बन्ध रखने वाला होता है।

'दशम भाव' में हो तो जातक पैतृक-धन से धनी, सुवक्ता, सुन्दर, विनोदी, विनम्र, मित्रों से लाभ पाने वाला, अधिकारी, तीव्र-बुद्धि, सम्माननीय तथा मातृ-पितृ-भक्त होता है।

'एकादश भाव' में हो तो जातक धनी, उदार, परोपकारी शास्त्रज्ञ, अभिमानी, व्यवसाय-कुशल, ज्योतिषी, कवि, चतुर, स्वार्थ-साधन में कुशल तथा चतुर एवं सुयोग्य सन्तानों वाला होता है। शनि से दृष्ट हो तो आर्थिक-हानि होती है।

'द्वादश भाव' में हो तो जातक मायावी, कठोरभाषी, दीन, विकलांग, पतित, चिन्तित, दुर्व्यसनी, गुप्त-शत्रुओं वाला तथा मिथ्यापवादों के कारण दुःखी चित्त वाला होता है। यदि पाप-ग्रह से दृष्ट हो तो जातक की सन्तान भी दुःख का कारण बन सकती है।

वृहस्पति (गुरु)

'**प्रथम भाव**' में हो तो जातक सुन्दर, आकर्षक, व्यक्तित्व वाला, चतुर, भोगी, ज्योतिर्विद्, दीर्घायु, दयालु, उदार, ज्ञानी, सात्विक-प्रवृत्ति का, बड़े परिवार वाला, विद्वान् तथा प्रबल तर्क-शक्ति सम्पन्न होता है । केश शीघ्र ही सफेद हो जाते हैं अथवा झड़ने लगते हैं तथा दाँत गिरने आरम्भ हो जाते हैं ।

'**द्वितीय भाव**' में हो तो जातक धनी, सुखी, मधुर भाषी, व्यवहार-कुशल, सुवक्ता, सुन्दर, काव्य-प्रेमी, लेखक, ज्योतिषी, परोपकारी, सुन्दर पत्नी वाला राज-काज में चतुर तथा पराये दोषों को मिटाने वाला होता हैं।

'**तृतीय भाव**' में हो तो जातक बुद्धिमान्, साहित्य-प्रेमी, कृपण, अल्प-धनी, भ्रातृ-पक्ष से चिन्तित, स्त्री-प्रिय, कृतघ्न, बौद्धिक-कार्यों में सफल तथा विद्या सम्बन्धी अनेक उपाधियों को ग्रहण करने वाला होता है ।

'**चतुर्थ भाव** में हो तो जातक बन्धु-बान्धवों का प्रेमी, दानी, सर्वत्र सम्मान पाने वाला, अनेक प्रकार की सम्पत्तियों से युक्त, भू-सम्पत्ति द्वारा लाभ पाने वाला तथा पैतृक-सम्पत्ति को बढ़ाने वाला होता है ।

'**पञ्चम भाव**' में हो तो जातक नीतिज्ञ, न्याय बुद्धि, बुद्धिमान्, उच्च-कोटि का साहित्य-प्रेमी, अनेक प्रणय-सम्बन्धों वाला, सट्टा-लाटरी में सफल तथा अनेक प्रेम-सम्बन्धों वाला होता है । स्त्री-कुण्डली में हो तो किसी उच्च श्रेणीके विधुर अथवा बड़ी आयु वाले सज्जन के साथ सम्बन्ध होना सम्भव है।

'**षष्ठ भाव**' में हो तो जातक शत्रु-रहित, आलसी, शान्त-गृहस्थ, हास-परिहास-प्रिय, निर्बल, स्थायी आमदनी वाला तथा एक प्रधान अथवा अधीनस्थ कर्मचारी होता है ।

'**सप्तम भाव**' में हो तो जातक धर्मात्मा, सात्विक, भावुक, उच्चस्तर के लोगों से सम्बन्ध रखने वाला एवं उदार, स्वरूपवान् तथा कर्तव्य-परायणा पत्नी एवं उसके द्वारा लाभ प्राप्त करने वाला होता है ।

'**अष्टम भाव**' में हो तो जातक नीच-कर्म करने वाला, दुःखी, उदर-पीड़ा एवं अन्य गुप्तरोगों से व्यथित, सन्तान-पक्ष से चिन्तित तथा गूढ़-विद्याओं का जानकार होता है ।

'नवम भाव' में हो तो जातक यशस्वी, धर्मात्मा, तपस्वी, रूढ़िवादी दयालु, परोपकारी, लम्बी तीर्थ-यात्राऐं करने वाला, भक्त, धनी, भाग्यशाली, विदेशों से भी व्यावसायिक सम्बन्ध रखने वाला, दार्शनिक, ज्योतिषी, प्रकाशक, वकील आदि हो सकता है।

'दशम भाव' में हो तो जातक सदाचारी, साधारण धनी, महत्वाकांक्षी, मातृ-भक्त, प्रसिद्ध, राज्य-सम्मान प्राप्त, भाइयों से धन-लाभ करने वाला, माता-पिता से सहायता प्राप्त एवं स्वतन्त्ररूप से काम करने वाला होता है।

'एकादश भाव' में हो तो जातक धनी, समृद्धिशाली, नीति-निपुण, दानी, प्रभावशाली, अल्प-सन्ततिवान्, संगीत-प्रेमी, सामाजिक-कार्यों में सफल तथा अपने ध्येय को पूरा करने वाला होता है।

'द्वादश भाव' में हो तो जातक परोपकारी, अतिव्ययी, शुभ-कार्यों में व्यय करने वाला, शत्रुओं को भी मित्र बना लेने वाला, खोये यश को पुनः प्राप्त करने में प्रयत्नशील, निम्न श्रेणी के कार्य करने वाला, जीवन के उत्तरार्द्ध में सफल तथा मृत्यु के पश्चात् मोक्ष प्राप्त करने वाला है।

शुक्र

'प्रथम भाव' में हो तो जातक सुखी, विलासी, काम-कला-निपुण, बुद्धिमान्, सुन्दर, प्रणयी, आकर्षक, महत्वाकांक्षी, मनोहर वस्त्रादि को धारण करने का प्रेमी, काव्य-नाटक, संगीत-साहित्य का प्रेमी, कोमल-स्वभाव, स्त्रियों द्वारा प्रशंसित एवं अधिक आयु होने पर भी युवा जैसा दिखाई देने वाला होता है।

'द्वितीय भाव' में हो तो जातक कलात्मक प्रवृत्ति का, श्रृंगार-प्रिय, सुन्दर नेत्रों वाला, मधुर-भाषी, कर्तव्यपरायण, सुन्दर पत्नी वाला, कलाकार, विलासी, कवि, लेखक, सुवक्ता तथा विद्वान् होता है। स्त्री-कुण्डली में हो तो पति जुआरी हो सकता है।

'तृतीय भाव' में हो तो जातक कृपण, कहानी अथवा नाटक-लेखक, पत्नी से असंतुष्ट, अनेक भाई-बहिनों वाला, चित्रकला-प्रेमी तथा यात्रा-काल में किसी सहयात्री के साथ प्रणय-सम्बन्धों की स्थापना की सम्भावना वाला होता है।

'**चतुर्थ भाव**' में हो तो जातक सुखी, शान्त, गृह, वाहन आदि के सुख से सम्पन्न, साहित्यकार, माता एवं कृषि द्वारा धन-लाभ, मकान की सजावट में विशेष रुचि रखने वाला, भोगी, विलासी, बड़ा खर्चीला एवं उप-पत्नी रखने वाला होता है।

'**पञ्चम भाव**' में हो तो जातक सट्टा-लाटरी एवं प्रणय-व्यापार में सफल, संगीत-काव्य-प्रेमी, स्नेही, उदार, नीतिज्ञ, विद्वान्, दयालु तथा अधिक कन्यासन्तति वाला होता है। शनि-पीड़ित हो तो प्रेम में असफलता एवं शनि-पीड़ित हों तो स्त्री-वर्ग से कष्ट होता है।

'**षष्ठ-भाव**' में हो तो जातक शत्रु-रहित, दुराचारिणी-स्त्रियों द्वारा तिरस्कृत, सेवाभावी, संकीर्ण मनोवृत्ति वाला, निर्बल, गुप्त-रोगी, दुराचारी तथा विवाहोपरान्त स्वास्थ्य में सुधार वाला होता है।

'**सप्तम भाव**' में हो तो जातक अपने पिता से अधिक प्रभावशाली, उच्चस्तर के रहन-सहन वाला, सौन्दर्य-प्रेमी, कामी, स्नेही, विवाहोपरान्त भाग्योन्नति वाला, सुन्दर किन्तु तीव्र स्वभाव की पत्नी, सुखी विवाहित-जीवन वाला, संगीतज्ञ तथा अनेक स्त्री-पुरुषों से मित्रता रखने वाला होता है।

'**अष्टम भाव**' में हो तो जातक कामी, असफल-प्रेमी, गुप्त-कार्यरत, गुप्त-रोग से पीड़ित, विवाह द्वारा धन-लाभ, शान्तिपूर्ण, स्वाभाविक-मृत्यु तथा किसी विधवा स्त्री के साथ प्रणय-सम्बन्ध रखने वाला होता है।

'**नवम भाव**' में हो तो जातक उदार, तपस्वी, राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त, लम्बी-यात्राएँ करने वाला, कलात्मक एवं साहित्यिक-प्रवृत्ति का, पत्नी में सम्बन्धियों द्वारा लाभ पाने वाला तथा विवाह से लाभ पाने वाला होता है।

'**दशम भाव**' में हो तो जातक अनेक मित्रों वाला, स्त्रियों के द्वारा समृद्धि प्राप्त, विद्वान्, माता-पिता एवं देवताओं का भक्त, राज्य द्वारा सम्मान तथा पुरस्कार पाने वाला, स्त्री-वर्ग के लोकप्रिय तथा उच्चाधिकारियों का कृपापात्र होता है।

'**एकादश भाव**' में हो तो जातक मित्र, स्त्री-वर्ग अथवा श्वेतवस्तु अथवा रत्नादि के व्यवसाय द्वारा धन प्राप्त करने वाला, उदार, बुद्धिमान,

सुप्रसिद्ध, सुन्दर सन्तानों वाला, प्रभावशाली तथा कलात्मक-रुचि वाला होता है।

'द्वादश भाव' में हो तो जातक कृपण, दुर्जन, दयालु स्त्रियों से लाभ उठाने वाला एवं मनोरंजन तथा स्त्रियों पर धन खर्च करने वाला, पर-स्त्री-गामी, अनैतिक कार्यों में रत, गुप्त-प्रेम में असफल तथा स्व-पत्नी से मनो-मालिन्य रखने वाला होता है।

शनि

'प्रथम भाव' में हो तो जातक अभिमानी, आलसी, कुरूप, मलिन, एकान्त प्रेमी, कामी, बाल्यावस्था में पीड़ित, किशोरावस्था में व्यथित, निर्बल स्मरणशक्ति वाला होता है। यदि धनु, मकर, कुम्भ, तुला अथवा मीन राशि गत हो तो परिश्रमी, स्वतन्त्रता-प्रिय, धनी, सम्मान प्राप्त नेता, विद्वान् तथा गम्भीर स्वभाव का होता है।

'द्वितीय भाव' में हो तो जातक धनी, मुख-रोगी, विचारहीन, असा-माजिक, कटुभाषी रोगी, मितव्ययी होने के बावजूद भी धन-संचय न कर पाने वाला, गृहस्थ-जीवन में दुःखी, अलोकप्रिय, व्यवसाय में असफल तथा अवसर से लाभ न उठा पाने वाला होता है।

'तृतीय भाव' में हो तो जातक धनी, बुद्धिमान्, पराक्रमी, साहसी, उपकारी, सावधान, बाल्यावस्था में लज्जाशील, युवावस्था में चिन्तित तथा जीवन के उत्तरार्द्ध में मानसिक उलझन वाला एवं भाई-बहिनों से मनो-मालिन्य वाला होता है।

'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक माता-पिता से मतभेद रखने वाला, संकीर्ण मनोवृत्ति का, कठोर-हृदयी, प्रवासी, पुराने मकान में रहने वाला, गृहस्थ-जीवन से दुःखी तथा एकान्तवास का इच्छुक होता है।

'पञ्चम भाव' में हो तो जातक अस्थिर:विचारों वाला, सन्तान-पक्ष में बाधक, अविवेकी, लाटरी-सट्टे से हानि उठाने वाला, विघ्न-बाधायुक्त तथा अव्यवस्थित होता है।

'षष्ठ भाव' में हो तो जातक साहसी, शत्रुहन्ता, हठी, दुर्व्यसनी, उद्योगी तथा दुराचारी होता है।

'सप्तम भाव' में हो तो जातक वैरागी, निर्धन, एकान्तवासी, पत्नी से मतभेद, उग्रस्वभाव, स्त्रियों से पीड़ित, साझेदारी यथा वाद-विवाद में हानि उठाने वाला तथा अधिक आयु की स्त्री से अनुचित सम्बन्ध रखने वाला होता है। यदि स्त्री की कुण्डली में हो तो अधिक आयु के पुरुष से सम्बन्ध होता है।

'अष्टम भाव' में हो तो जातक अल्प सन्ततिवान्, निर्धन, रोगी, अधिक परिश्रमी, दीर्घायु, श्वास अथवा वातादि-रोग से पीड़ित एवं विवाहोपरान्त कठिनाइयाँ पाने वाला होता है। कठिन रोग के बाद मृत्यु, मंगल-दृष्ट हो तो किसी दुर्घटना का भय भी रहता है।

'नवम भाव' में हो तो जातक विज्ञान अथवा किसी गुप्त विद्या में अभिरुचि रखने वाला, अभिमानी, हठी, धूर्त, कृपण, बन्धु-हीन, निरुद्योगी, कठोर, धार्मिक, अध्यापक तथा यात्रा में कष्ट पाने वाला होता है।

'दशम भाव' में हो तो जातक सुखी प्रवासी, धनी, बलवान्, भावुक, लेखक, ज्योतिष-प्रेमी, राज्य द्वारा सम्मानित, व्यवसाय में सफल, महत्वाकांक्षी, उत्तरार्द्ध में उन्नतिशील तथा उच्चाधिकारी होता है। पीड़ित या निर्बल हो तो धन-हानि होती है।

'एकादश भाव' में हो तो जातक धनी, विश्वस्त, अल्पमित्रों वाला, उद्योगी, सम्पत्तिशाली, तीव्र स्वभाव वाला, ख्यातिलब्ध, सन्तान-पक्ष से दुःखी, व्यवसाय में लाभ तथा राज्य से सम्मान पाने वाला होता है।

'द्वादश भाव' में हो तो जातक पतित, अतिव्ययी, रोगी, दुर्बल-शरीर वाला, राजदण्ड भोगी, क्रोधी, शत्रु-पीड़ित, नेत्र-रोगी तथा किसी गुप्त-विद्या का जानकार होता है।

राहु

'प्रथम भाव' में हो तो जातक धनी, साहसी, बलवान्, दयालु, क्रूर स्वभाव, द्वि-भार्या योग, सिर अथवा मुख पर चिह्न, निम्न से उच्च श्रेणी पर पहुँचने वाला, अल्पभाषी तथा लम्बा किन्तु रोगी होता है।

'द्वितीय भाव' में हो तो जातक निर्धन, हकलाकर बोलने वाला, कुविचारी, पत्नी की सम्भावित मृत्यु से दुःखी, प्रवासी, क्रोधी तथा चोरी अथवा किसी अन्य कारण से धन-हानि पाने वाला होता है।

'तृतीय भाव' में हो तो जातक पराक्रमी, साहसी, प्रतिष्ठित, चित्रकला आदि में रुचिवान्, उद्योगी, भाई-बन्धुओं से मनोमालिन्य, बहिन के दु:ख से दु:खी तथा भ्रमणशील होता है। विदेश-यात्रा भी सम्भव है।

'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक दुराचारी, दु:खी, माता के लिए अतिष्ट-कर, पिता को आर्थिक रूप से हानिकर तथा अशुभ, लंपट, कठिन परिश्रमी, विदेशी भाषाओं का ज्ञाता तथा चिन्तित रहने वाला होता है। विद्याध्ययन में बाधाऍं आती हैं। स्थान-परिवर्तन, पिता के दो विवाह सम्भव होते हैं।

'पंचम भाव' में हो तो जातक संतान-पक्ष में बाधा एवं कष्ट कर, प्रथम सन्तान को अरिष्ट, पत्नी को ऋतु पीड़ा, क्रूर-स्वभाव, क्रोधी, हृदय एवं उदर-रोगी, विद्याध्ययन में विघ्न, परन्तु तीव्र-बुद्धि, नाटक, उपन्यास अथवा चित्रकला में रुचि, नीतिज्ञ, व्यवसाय, सट्टा-लाटरी से लाभ सम्भव।

'षष्ठ भाव' में हो तो जातक शत्रु-नाशक, रोगी, मामा-पक्ष को अनिष्टकर, साहसी, बलवान्, कमर, नेत्र एवं दन्त-रोग से पीड़ित तथा अनुकूल अवसर पर न बोल पाने वाला होता है।

'सप्तम भाव' में हो तो जातक चतुर, कामी, दुर्बल तथा रोगी पत्नी वाला, वैवाहिक जीवन दु:खमय, परस्त्रीगामी, समृद्धिशाली, प्रमेहादि गुप्त रोगों का रोगी, विधर्मियों से लाभ पाने वाला तथा प्रवासी होता है। पत्नी को अरिष्टकर तथा द्विभार्या योग भी सम्भव है।

'अष्टम भाव' में हो तो जातक रोगी, दुर्जन, प्रवासी, मलिन-चित्त, दु:खी, गुप्त-रोग पीड़ित, कपटी, कठिन परिश्रमी तथा अनैतिक कार्य करने वाला होता है। दुर्घटना अथवा विष-प्रयोग से मूर्च्छावस्था में मृत्यु होना सम्भव है।

'नवम भाव' में हो तो जातक तीर्थाटन-प्रेमी, भ्रातृ-हीन, क्रूर-स्वभाव, राज्य द्वारा सम्मानित, प्रवास में दुराचार-रत, धार्मिक प्रवृत्ति एवं वृद्धावस्था में पुत्र-सुख प्राप्त करने वाला होता है।

'दशम भाव' में हो तो जातक कठोर प्रशासक, राज्याधिकारी, विद्वान्, पर-स्त्रीगामी, प्रतिभाशाली, साहित्यिक, यशस्वी, महत्वाकांक्षी तथा जीवन के उत्तरार्द्ध में आशातीत सफलताऍं पाने वाला होता है।

'एकादश भाव' में हो तो जातक धनी, समृद्धिशाली, अनैतिक माध्यमों से अनायास धन-लाभ प्राप्त करने वाला, पिता एवं सन्तान-पक्ष से चिन्तित तथा सट्टा-लाटरी, यान्त्रिक-वाहन सम्बन्धी कार्यों से लाभ पाने वाला होता है।

'द्वादश भाव' में हो तो जातक अपव्ययी, चिन्तित, नेत्र-रोगी, पापी, विषादमय, यौगिक-क्रियाओं में अभिरुचि रखने वाला तथा विषादपूर्ण विवाहित-जीवन वाला होता है।

केतु

'प्रथम भाव' में हो तो जातक कृश एवं ठिगना शरीर, व्यवहार-कुशल, मुख पर कोई चिह्न अथवा गुह्य-रोग से पीड़ित, निर्धन तथा निरुत्साही होता है।

'द्वितीय भाव' में हो तो जातक अपव्ययी, कटुवादी, दुःस्वभाव, कपटी, तथा धोखे से हानि उठाने वाला होता है।

'तृतीय भाव' में हो तो जातक साहसी, भ्रमणशील, कर्णरोगी, बुद्धिमान्, कला प्रेमी तथा भ्रातृ-पक्ष से व्यथित होता है।

'चतुर्थ भाव' में हो तो जातक माता के लिए अरिष्टकारक, प्रवासी, एक स्थान पर न रुकने वाला, अशान्त-चित्त तथा पैतृक-सम्पति-विहीन होता है।

'पञ्चम भाव' में हो तो जातक सन्तान-पक्ष से दुःखी, अस्थिर-बुद्धि, कपटी, गुप्त-विद्याओं का ज्ञाता अथवा मनोविज्ञान में अभिरुचि रखने वाला एवं अनैतिक कार्यों में निरत होता है।

'षष्ठ भाव' में हो तो जातक विद्वान्, भोगी तथा शत्रुहीन होता है।

'सप्तम भाव' में हो तो जातक कामी, दुराचारी, लम्पट, वैवाहिक-जीवन से दुःखी एवं चिड़चिड़े स्वभाव वाली कर्कशा-स्त्री वाला होता है। इस भाव में यदि वृश्चिक राशि हो तो शुभ फल होता है।

'अष्टम भाव' में हो तो जातक रक्त-विकार, दन्त-पीड़ा अथवा किसी गुप्त-रोग से पीड़ित, चिन्तित, निरुद्योगी तथा आत्मघाती प्रवृत्ति का होता है। किसी दुर्घटना का होना भी सम्भव है।

'नवम भाव' में हो तो जातक अविश्वासी, निष्क्रिय, सज्जनों द्वारा तिरस्कृत, पिता को अरिष्टकारक, द्यूत क्रीड़ा-प्रेमी, दुर्जनों की संगति में रहने वाला तथा अविश्वासी होता है। तीर्थ-यात्राएँ करना भी सम्भव है।

'दशम भाव' में हो तो जातक छोटा व्यवसायी, पिता को अरिष्ट-कारक अथवा पिता के साथ विचार-वैषम्य अथवा द्वेषभाव, बार-बार व्यवसाय बदलने वाला, व्यापार में हानि तथा उत्थान-पतन वाला होता है।

'एकादश भाव' में हो तो जातक परोपकारी, बुद्धिमान, विनोदी, समृद्धिशाली तथा सन्तान पक्ष से चिन्तित होता है।

'द्वादश भाव' में हो तो जातक चंचल स्वभाव का, प्रवासी, अपव्ययी तथा आध्यात्मवादी होता है।

ग्रहों का राशि-फल

विभिन्न राशियों में स्थित ग्रहों का फल इस प्रकार होता है—

सूर्य

1. 'मेष'—राशि में हो तो जातक अत्यन्त साहसी, पराक्रमी, तेजस्वी, शूर-वीर, उदार, भ्रमण-प्रिय, कौटुम्बिक-धन पाने वाला, सद्गृहस्थ, सत्यवादी, पिंगल वर्ण, चौड़े कन्धे तथा पतले शरीर वाला होता है।

2. 'वृष'—राशि में हो तो जातक मित्र-प्रेमी, स्त्री तथा सन्तान को पीड़ाकारक, स्थावर-सम्पत्ति के विषय में चिन्तित, धन-धान्यादि से सुखी, हठी, एक उपपत्नी रखने वाला, संगीतज्ञ, साहसी तथा विचित्र मानसिक-स्थिति वाला होता है।

3. 'मिथुन'—राशि में हो तो जातक पतले शरीर वाला, कृष्ण-पीत-वर्ण, नवीन खोज में तत्पर, धन तथा विद्योपार्जन में संलग्न, मिष्टभाषी, साहित्य-प्रेमी, प्रियवादी, बुद्धिमान्, स्वाभिमानी तथा तीव्र स्मरण-शक्ति वाला होता है।

4. 'कर्क'—राशि में हो तो जातक भाइयों से शत्रुता रखने वाला, मित्रों से हानि तथा विरोध पाने वाला, उच्चकुलीनों तथा राज्याधिकारियों से मैत्री रखने वाला, विपत्ति के समय भी धैर्यपूर्वक कार्यरत बना रहने वाला, अधिक यात्राएँ करने वाला, पुस्तक-लेखक, स्त्री-लोलुप, परोपकारी,

यशस्वी तथा अन्तर्यामी होता है।

5. **'सिंह'**—राशि में हो तो जातक सुन्दर, पराक्रमी, शासन-प्रिय, उच्च अधिकारी, खर्चीला, आकस्मिक धन-लाभ पाने वाला, यशस्वी, धनी, परोपकारी, राजा का प्रिय, शत्रुजयी, गम्भीर, चतुर, तेजस्वी तथा वचन-पालक होता है।

6. **'कन्या'** –राशि में हो तो जातक स्त्रियों जैसा कमनीय, विश्वास-घात का शिकार, तर्क-प्रिय, साहित्य-शिल्प-काव्य प्रेमी, स्त्री-प्रिय, अधिक यात्राएँ करने वाला तथा भूमि, वाहनादि के सुख से सम्पन्न होता है।

7. 'तुला' राशि में हो तो जातक स्वाभिमानी, धन-धान्य-रहित, राज्य से भयभीत, अधिक खर्चीला, चोर तथा अग्नि से हानि उठाने वाला, आलसी, पापाचारी तथा स्त्री एवं स्थावर-सम्पत्ति के विषय में बुरी स्थिति वाला होता है।

8. **'वृश्चिक'**—राशि में हो तो जातक उग्र स्वभाव, क्रूर, साहसी, लोभी, क्रोधी, कलही, विष, अग्नि तथा शस्त्र से भय पाने वाला, उदर-रोगी, सामाजिक-कार्यों के क्षेत्र में सफल एवं अधिक मित्र तथा शत्रुओं वाला होता है।

9. **'धनु'**—राशि में हो तो जातक शास्त्रज्ञ, धार्मिक तथा अन्य क्षेत्रों में सफल, विवेकी, शान्त, सज्जनों द्वारा सम्मानित, दूरदर्शी, पुत्रादि से सुखी, क्रोधी- संगीत-प्रिय तथा सर्वगुण-सम्पन्न होता है।

10. **'मकर'**—राशि में हो तो जातक नौकरी अथवा व्यवसाय से आजीविकोपार्जन करने वाला, उत्साह-हीन परन्तु स्वच्छन्द, दुराचारी, झगड़ालू, मधुर भाषी, परावलम्बी, दुःखी, चिन्तित तथा अधिक बोलने वाला होता है।

11. **'कुम्भ'**—राशि में हो तो जातक अन्न-वस्त्र से सुखी, परन्तु धन-पुत्र एवं स्त्री के सम्बन्ध में चिन्तित, हृदय-रोगी, साहित्य-सृजन में कुशल, नीचकर्मरत, कार्य-कुशल, स्वार्थी तथा धन, स्त्री एवं सन्तान से कष्ट पाने वाला होता है।

12, **'मीन'**—राशि में हो तो जातक साहित्य सम्बन्धी कार्यों से लाभान्वित, अल्पधनी, ससुराल से धन पाने वाला, बुद्धिमान्, विवेकी, यशस्वी, सुखी,

धर्मात्मा, असहिष्णु, तथा समान शत्रु-मित्रों वाला होता है।

चन्द्रमा

1. 'मेष'—राशि में हो तो जातक पुत्रवान्, स्त्री से पराजित, स्वजनों से रहित, शूर-वीर, द्विभार्या योग वाला, ऊँचे स्थान से गिरकर भय पाने वाला, स्वतन्त्र व्यवसाय द्वारा उन्नति करने वाला, सुशील, गुणी तथा राजा को प्रिय होता है।

2. 'वृष'—राशि में हो तो जातक सुन्दर, काव्य-चित्र आदि ललित कलाओं का प्रेमी, दीर्घायु, वृद्धावस्था में सुखी, बुद्धिमान्, धैर्यवान्, स्त्री-पुत्र-धन आदि से सम्बन्ध, अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला, कवि तथा यशस्वी होता है।

3. 'मिथुन'—राशि में हो तो जातक सुन्दर, द्विभार्या योग वाला, अल्पभाषी, कुटुम्ब-पालक, कामक्रीड़ा द्वारा स्त्रियों को प्रसन्नता देने वाला, बाल्यावस्था में सुखी, मध्यमावस्था में अल्पसुखी तथा वृद्धावस्था में दुःखी होता है।

4. 'कर्क'—राशि में हो तो जातक सुन्दर, अधिक सन्तानों वाला, पर-स्त्रीगामी, पतिव्रता-स्त्री का पति, काव्य-संगीत-प्रेमी, उतार-चढ़ाव वाली आर्थिक-स्थिति का, यशस्वी, शास्त्रज्ञ, शत्रुजयी, दानी, सुशील तथा सत्यवादी होता है।

5. 'सिंह'—राशि में हो तो जातक सुन्दर परन्तु कान्तिहीन, अल्प-सन्ततिवान्, स्त्रियों से मतभेद रखने वाला, निष्ठुर, दानी, पराक्रमी, शूर-वीर, शत्रुजयी, यात्रा-प्रिय, बुद्धिमान, उदार तथा राजकीय क्षेत्र में उन्नति पाने वाला होता है।

6. 'कन्या'—राशि में हो तो जातक गौर वर्ण, सुन्दर, पराई-सम्पत्ति का उपभोग करने वाला, खराब-स्वभाव की पत्नी वाला, अनेक शत्रुओं से युक्त, स्त्रियों को प्रसन्नतादायक, कामी, चतुर, भाग्यशाली तथा विद्वान् होता है।

7. 'तुला'—राशि में हो तो जातक प्रत्येक कार्य के लिए दूसरों पर आश्रित रहने वाला, स्त्री-लोलुप, परोपकारी, आस्तिक, मित्रवान्, वस्तु-संग्रही, बुद्धिमान्, विद्वान्, काव्य-प्रेमी, अल्पधनी तथा स्त्री-वशी होता है।

8. 'वृश्चिक'—राशि में हो तो जातक पतिव्रता पत्नी वाला, व्यवसाय से लाभ पाने वाला, अत्यन्त क्रोधी, कलह-प्रिय, असन्तोषी, मित्र-द्रोही, नास्तिक, विश्वासघाती, पराक्रमी, शत्रुजयी, चतुर, कामासक्त तथा स्वावलम्बी होता है।

9. 'धनु'—राशि में हो तो जातक सुन्दर, बलवान्, शत्रुजयी, धनी, अनेक विद्याओं का ज्ञाता, कार्य-कुशल, बुद्धिमान, तपस्वी, भविष्यवक्ता, मितव्ययी, निष्कपट तथा स्वपराक्रम से भाग्योदय करने वाला होता है।

10. 'मकर'—राशि में हो तो जातक सुन्दर, अपने से बड़ी आयु वाली स्त्री का संग करने वाला, रूपवती स्त्री का पति, प्रवासी, धनी, सत्यवादी, दयालु, राजा का प्रिय, यशस्वी, भाग्यशाली तथा काव्य-मर्मज्ञ या कवि होता है।

11. 'कुम्भ'—राशि में हो तो जातक दुर्बल अथवा कृश शरीर वाला, पर-स्त्री में आसक्त, अपनी स्त्री के साथ दुर्व्यवहार करने वाला, शत्रुजयी, निर्धन, ऋणी, आलसी, प्रियभाषी, दानी, व्यसनी, विलक्षण बुद्धि सम्पन्न तथा प्रसन्न चित्त वाला होता है।

12. 'मीन'—राशि में हो तो जातक पतले शरीर वाला, सामान्य, सुन्दर, श्रेष्ठ पुत्रों वाला, स्त्री-वशी, स्त्री से प्रेम करने वाला, कामी, पराये धन का उपभोग करने वाला, विद्वान्, उदार, धार्मिक, शास्त्रज्ञ, निष्कपट, ईमानदार, प्रसन्न-मुख तथा देव-द्विज-भक्त होता है।

मङ्गल

1. 'मेष'—राशि हो तो जातक तेजस्वी, साहसी, प्रियवादी, राजा द्वारा भूमि, धन तथा सम्मान पाने वाला, अधिकार-सम्पन्न, सत्यवादी, भ्रमण-प्रिय, व्यवसायी, कृषक, वस्त्राभूषणों से सुखी तथा लोकमान्य होता है।

2. 'वृष'—राशि में हो तो जातक कर्कश-स्वभाव का, प्रवासी, पर-स्त्री-गामी, पुत्र-द्वेषी अथवा पुत्र की ओर से कष्ट पाने वाला, सत्कर्म में धन खर्च करने वाला, कपटी, सुखहीन, सुन्दर वेष धारी, शत्रुओं से पीड़ित, स्त्री तथा सन्तान से दुःखी होता है।

3. 'मिथुन'—राशि में हो तो जातक स्वजनों से कलह करने वाला,

अनेक कलाओं का ज्ञाता, अधिकारी-वर्ग का कृपा-पात्र, अपव्ययी, यात्रा-प्रिय, युद्ध-निपुण, तेजस्वी; कार्य-दक्ष तथा जन-हितैषी होता है।

4. 'कर्क'—राशि में हो तो जातक अल्प-सन्ततिवान्, स्त्री से सुखी, अधिक शत्रुओं वाला, भूमि-भवन-सेवक आदि के सुख से युक्त, स्त्री-वियोगी, जल-यात्रा आदि से धन कमाने वाला, दीन, दुर्बुद्धि तथा दुष्ट स्वभाव का होता है।

5. 'सिंह'—राशि में हो तो जातक कार्य-साधक, पुत्र तथा स्त्री से सुखी, शत्रुजयी, सदाचारी, परोपकारी, भाग्यशाली, भ्रमण-प्रिय, स्नेहशील, दृढ़-निश्चयी तथा राज-सम्मान पाने वाला होता है।

6. 'कन्या'—राशि में हो तो जातक व्यवहार-कुशल, मित्र-प्रेमी, अनेक मित्रों वाला, तेजस्वी, विलम्ब से धन-लाभ पाने वाला, स्त्री-अभिलाषी, साधु-भक्त, लोकमान्य तथा प्रपंची होता है।

7. 'तुला'—राशि में हो तो जातक पराये धन का अपहरण करने वाला, मित्रों के साथ कुटिल-व्यवहार करने वाला, भूमि तथा स्त्री के सुख से रहित, गुरुजनों का भक्त, प्रवासी, वक्ता तथा विकलाङ्ग होता है।

8. 'वृश्चिक'—राशि में हो तो जातक राज-सेवक, दुराचारी, पापी, हठी, कन्या-पुत्र तथा स्त्री से सुखी, राजा का प्रिय, यशस्वी, शत्रुजयी, भ्रमण एवं कृषि द्वारा धन-लाभ पाने वाला अथवा व्यवसायी होता है।

9. 'धनु'—राशि में हो तो जातक वाहन-सुख सम्पन्न, सुशीला-स्त्री का पति, पर-स्त्रियों के साथ भ्रमण करने वाला, परिश्रमी, पराधीन, क्रूर, धर्मात्मा, चतुर, गौरवशाली तथा संग्राम में शत्रु से कष्ट पाने वाला होता है।

10. 'मकर'—राशि में हो तो जातक राजा अथवा राजा के समान शूर-वीर, सामाजिक-कार्यकर्त्ता, महत्वाकांक्षी, ऐश्वर्यशाली, सब सम्पत्तियों से सम्पन्न, स्त्री-सुखी, पराक्रमी, सुखी तथा अधिकार-सम्पन्न होता है।

11. 'कुम्भ'—राशि में हो तो जातक अपव्ययी, मिथ्याभाषी, व्यसनी, बहु सन्ततिवान्, सन्तान से दुःखी, दुष्ट, रोगी, कुटुम्ब-विरोधी, धर्मभ्रष्ट, अत्याचारी, व्यसनी तथा अचानक धन-हानि पाने वाला होता है।

12. **'मीन'**—राशि में हो तो जातक दूर देशों की यात्राएँ करने वाला, परदेस वासी, पुत्र-चिन्ता से युक्त, दयाहीन, नष्ट-बुद्धि, दुष्टों के साथ रहने वाला, वाचाल, हठी, धूर्त, नास्तिक, ऋण-ग्रस्त, व्यसनी तथा मस्तक-रोगी होता है।

बुध

1. **'मेष'**—राशि में हो तो जातक कृश-शरीर, दुष्ट, व्यसनी, ऋणी, जुआरी, कलही, दुष्ट-बुद्धि, दयाहीन, मिथ्यावादी, नास्तिक, सङ्कटग्रस्त, दम्भी, निर्धन, लेखक तथा बहुभोजी होता है।

2. **'वृष'**—राशि में हो तो जातक अनेक कलाओं का ज्ञाता, गुरु-भक्त, कला-कुशल, शास्त्रज्ञ, गम्भीर, गुणवान, पुत्र तथा भाइयों से सुखी, धनी, विद्वान, चतुर, विलासी तथा रति-पण्डित होता है।

3. **'मिथुन'**—राशि में हो तो जातक सुन्दर, भाई तथा पुत्रों से सुखी, गुरुभक्त, मातृ-विरोधी अथवा माता के लिए कष्ट कारक, मिथ्यावादी परन्तु प्रियवादी, कला-कुशल, गुणवान, विवेकी तथा सदाचारी होता है।

4. **'कर्क'**—राशि में हो तो जातक लेखन अथवा काव्य-कला द्वारा द्रव्योपार्जन करने वाला, अनेक मित्रों वाला, नृत्य-संगीत-प्रेमी, राजा का प्रिय, बन्धु-द्वेषी, विद्वान, विवेकी, यशस्वी, परदेशवासी, भोगी, स्त्री-प्रिय, रति-कामी, जीवन के प्रारम्भ में कष्ट तथा अन्त में सुखी होता है।

5. **'सिंह'**—राशि में हो तो जातक-स्त्री को सुख देने वाला, उसका आज्ञा-पालक, पुत्र से कष्ट पाने वाला, विपरीत-बुद्धि, भाइयों से शत्रुता रखने वाला, भ्रमण-प्रिय, वैभवशाली, शत्रु-पीड़ित, कुकर्मी, कामी तथा ठग होता है।

6. **'कन्या'**—राशि में हो तो जातक सुन्दरी-स्त्री का सुख पाने वाला, कवि, लेखक, साहित्यकार, सदाचारी, गुणी, राजमान्य, उन्नतिशील, सुवक्ता, चतुर, धनी, शत्रुजयी तथा नीतिवान होता है।

7. **'तुला'**—राशि में हो तो जातक व्यवसाय में धन नष्ट करने वाला, अस्वस्थ शरीर, शिल्पज्ञ, मिथ्यावादी, दुराचारी, अपव्ययी, सुवक्ता,

विद्वान्, चतुर, उदार, स्त्री तथा सन्तान-सुख से सम्पन्न तथा कोई व्यवसाय-कुशल होता है ।

8- 'वृश्चिक'—राशि में हो तो जातक परदेश वासी, स्वजन-विरोधी, कलही, कृपण, आलस्य के कारण हानि उठाने वाला, नास्तिक, जुआरी, विपत्ति ग्रस्त, ऋणी, दुराचारी, मूर्ख तथा व्यसनी होता है ।

9. 'धनु'—राशि में हो तो जातक सुन्दरी तथा हितकारिणी पत्नी वाला, स्वजनों से कलह करने वाला, वक्ता, विद्वान्, लेखक, उदार, दानी, यशस्वी, राजमान्य तथा धन की कमी एवं त्रास तथा विरोध पाने वाला होता है ।

10. 'मकर'—राशि में हो तो जातक शत्रुओं से दुःखी, गृह-क्लेश से पीड़ित, मित्रों द्वारा अपमानित, बुरे कामों में धन खर्च करने वाला, डर-पोक, प्रपंची व्यसनी, दुर्बुद्धि, मिथ्यावादी तथा विजयी होता है ।

11. 'कुम्भ'—राशि में हो तो जातक घर में कलह करने वाला, अस्थिर, शिल्पी, कुटुम्बहीन, दीन, पराधीन, सङ्कट-ग्रस्त, अल्पधनी तथा बुद्धिहीन होता है ।

12. 'मीन'—राशि में हो तो जातक शारीरिक-रोग एवं त्रास से युक्त, स्त्री-वशी, देव-द्विज-भक्त, सामान्यधनी, नौकरी करने वाला अथवा चित्रकार, सदाचारी, धन-संचयी, स्वाभिमानी तथा प्रवास-सुखी होता है ।

बृहस्पति (गुरु)

1. 'मेष'—राशि में हो तो जातक अनेक शत्रुओं से युक्त, परन्तु उनका भी उपकार करने वाला, अत्यन्त उदार, परम बुद्धिमान, स्त्री-पुत्रादि से युक्त, समाज का नेता, धनी, सुखी, प्रतिष्ठित, तेजस्वी, यशस्वी तथा लोकप्रिय होता है ।

2. 'वृष'—राशि में हो तो जातक ईश्वर-देव-द्विज भक्त, चिकित्सा-शास्त्र का ज्ञाता, साहसी, मित्र तथा सन्तानों से सुखी, धन-वाहनादि से सम्पन्न, विद्वान्, सदाचारी, संग्राम-जयी, शत्रु-नाशक, परन्तु कौटुम्बिक-त्रास-युक्त होता है ।

3. 'मिथुन'—राशि में हो तो जातक बुद्धिमान्, व्यवहार-कुशल,

कृषि अथवा रत्नों के व्यवसाय से लाभ पाने वाला, श्रेष्ठ मित्रवान्, स्त्री अथवा स्त्री सम्बन्धी कार्यों से त्रास पाने वाला, कवि, लेखक तथा यशस्वी होता है।

4. 'कर्क'--राशि में हो तो जातक पुत्र-स्त्री-वाहनादि से सुखी, पराक्रमी, राजा द्वारा सम्मानित, यशस्वी, ऐश्वर्यशाली, सत्यवादी, सदाचारी, कला-निपुण, अत्यन्त धनी, प्रियवादी तथा कामातुर होता है।

5. 'सिंह'—राशि में हो जातक शत्रुओं की सम्पत्ति हरण करने वाला, उच्चाधिकारी, राज्य द्वारा सम्मानित, लोक-प्रसिद्ध, विद्वान्, यशस्वी, पराक्रमी, दानी, नेता, परन्तु सन्तान से दुःखी होता है।

6. 'कन्या'—राशि में हो तो जातक सुन्दर कान्ति वाला, धनिकों की मैत्री से लाभ उठाने वाला, वस्त्राभूपणादि से युक्त, स्त्री-पुत्र-धन आदि से सम्पन्न, सुखी, विलासी तथा हीनजातियों से विरोध रखने वाला होता है।

7. 'तुला'—राशि में हो तो जातक देव-द्विज-भक्त, सजातीयों से बैर रखने वाला, स्त्री-पुत्रादि से युक्त, शत्रुजयी, व्यवसाय-कुशल, शास्त्राभ्यासी, बुद्धिमान, साहसी और कोई कवि, लेखक तथा सुखी होता है।

8. 'वृश्चिक'—राशि में हो तो जातक खिन्न, दम्भी, धन-पुत्रादि से युक्त, कार्य-कुशल, शास्त्रज्ञ, तेजस्वी, मिथ्यावादी, उदार, महाधनी तथा पुण्य कर्म करने वाला होता है।

9. 'धनु'—राशि में हो तो जातक धन-वाहनादि से सम्पन्न, दानी, परोपकारी, धर्मात्मा, गुणवान्, सुखी, काव्य-प्रेमी, राजमान्य, स्वोपार्जित धन से पुण्यकर्म करने वाला तथा स्त्री-पुत्रादि से सुखी होता है।

10. 'मकर'—राशि में हो तो जातक स्त्री-वशी, वृद्धा-स्त्री अथवा पर-स्त्रीगामी, स्वजन-विरोधी, उदर-रोगी, कृपण, बलहीन, अपव्ययी, दुःखी, अत्यन्त क्रोधी, दरिद्र, परदेसवासी, चिन्तित तथा एकान्तवासी होता है।

11. 'कुम्भ'—राशि में हो तो जातक क्वारी-कन्या अथवा निन्दित-स्त्री से प्रेम करने वाला, स्त्री-वशी, धनहीन, धन-नाशक, धर्महीन, दुर्बुद्धि, कृपण, पापी, चिन्तायुक्त तथा कुकर्मी होता है।

12. **'मीन'**—राशि में हो तो जातक शत्रु से भी धन पाने वाला, भाग्यशाली, नवीन-गृह निर्माता, राजा की कृपा से धन प्राप्त करने वाला, साधु-प्रिय, शिल्पज्ञ, सुशील, दानी, कामी, सर्वप्रिय, शान्त-स्वभाव, अधिकार-सम्पन्न, ऐश्वर्यशाली तथा संगीत-प्रिय होता है।

शुक्र

1. **'मेष'**—राशि में हो तो जातक अनेक प्रकार की चल-अचल सम्पत्ति का सुखोपभोगी, स्त्री-पुत्र-मित्रादि से सुखी, पर-स्त्री के लिए धन खर्च करने वाला, दुराचारी, कलह-प्रिय, भ्रमणशील, वेश्यागामी, दुराचारी तथा काव्य-प्रेमी होता है।

2. **'वृष'**—राशि में हो तो जातक कृषि-कर्म कर्त्ता अथवा साहित्य-कार, स्त्री-पुत्रादि से सम्पन्न, अपने भाइयों में प्रधान, सदाचारी, परोपकारी, निर्भय, ऐश्वर्यवान्, सुप्रसिद्ध, दयालु, शत्रुहीन तथा धर्मात्मा होता है।

3. **'मिथुन'**—राशि में हो तो जातक सुन्दर, सुवक्ता, कला-कुशल, साहित्य-संगीत प्रेमी, विद्वान्, शास्त्रज्ञ, धनी, राज-सेवक, विद्वानों से मैत्री रखने वाला तथा लोक-हितैषी होता है।

4. **'कर्क'**—राशि में हो तो जातक अनेक प्रकार के उद्योग करने वाला, व्यवसाय-पटु, कार्य-कुशल, श्रेष्ठ कार्यों में मन लगाने वाला, धर्मात्मा, नीतिज्ञ, ज्ञानी, धनी, भोगी, सर्वप्रिय, ज्ञानी तथा प्रायः दो स्त्रियों का भोगी होता है।

5. **'सिंह'**—राशि में हो तो जातक चिन्तातुर, वाहन से कष्ट पाने वाला, स्वजनों से दुःखी, शत्रुओं से सुख पाने वाला, स्त्री के धन से धनी, सन्तोषी, साहसी, परोपकारी, यशस्वी, सम्मानित, सुखी, चतुर तथा नीतिज्ञ होता है।

6. **'कन्या'**—राशि में हो तो जातक अनेक प्रकार के कष्ट पाने वाला, सट्टे आदि में धन नष्ट करने वाला, उद्योग में अपयश पाने वाला, कोई अल्प तो कोई अधिक धनी, स्त्री के बारे में चिन्तित, भोगी, सुखी तथा अनाचारी होता है।

7. **'तुला'**—राशि में हो तो जातक धन-पुत्रादि से सुखी, व्यवसाय

से लाभ पाने वाला, कार्य दक्ष, कला-कुशल, प्रसिद्ध, विलासी, शत्रु-नाशक, निर्भय, स्त्री-सुखी, नेता, श्रेष्ठ कवि तथा राजप्रिय होता है।

8. 'वृश्चिक'—राशि में हो तो जातक दुष्टा-स्त्री अथवा पर-स्त्री में आसक्त तथा उसके लिए धन खर्च करने वाला, लोक-निन्दित, कुल-कलंक, कलही, अल्पधनी, कुकर्मी, अविचारी, गुप्तरोगी तथा साहसी होता है।

9. 'धनु'—राशि में हो तो जातक स्त्री-पुत्रादि से सुखी, दीर्घायु, लोकमान्य, राजमान्य, उत्तमशील-स्वभाव वाला, धनी, गुणी, सुखी, काव्य-प्रेमी, तथा स्वोपार्जित-धन से पुण्य-दान करने वाला होता है।

10. 'मकर'—राशि में हो तो जातक अधिकार-सम्पन्न, एकान्त-सेवी, कुटुम्ब तथा सन्तान के लिए चिन्तित, अपव्ययी, बलहीन, दुःखी, मानी, चिन्तित, स्त्री-वशी, वृद्धा अथवा पर-स्त्री के साथ रमण करने वाला, शत्रुजयी तथा लोकप्रिय होता है।

11. 'कुम्भ'—राशि में हो तो जातक निन्दित-स्त्री अथवा कुमारी कन्या से प्रेम करने वाला, व्यवसाय में उन्नति तथा धन-लाभ पाने वाला, स्त्री-वशी, सन्ततिवान्, श्रेष्ठकर्मों से विमुख, धर्महीन, कलाकुशल तथा विद्वान् होता है।

12. 'मीन'—राशि में हो तो जातक रत्न-परीक्षक, कृषि-विशेषज्ञ, सन्तोषी, उच्चाधिकार सम्पन्न, शत्रु से भी धन पाने वाला, संगीत-प्रिय, भू-स्वामी, प्रपंची, धनी, सुखी, वाहन-सुख-सम्पन्न, दानी, भाग्यशाली, विद्वान्, कामी, विलासी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

शनि

1. 'मेष'—राशि में हो तो जातक स्वजनों का शत्रु, मित्र-हीन, दुर्बल शरीर वाला, निर्धन, मूर्ख, व्यसनी, कपटी, दुराचारी, कृतघ्न, लम्पट, अशान्त, दुःखी तथा रोगी होता है।

2. 'वृष'—राशि में हो तो जातक धनहीन, असत्यवादी, अगम्या-स्त्रियों को प्रिय, युद्ध एवं विवाद-विजयी, चुगलखोर, साहसी, पराक्रमी, विलक्षण-बुद्धि वाला तथा स्त्री-सुख हीन एवं सन्तान-कष्ट युक्त होता है।

3. 'मिथुन'—राशि में हो तो जातक धन-पुत्रादि से सुखी, स्त्रियों

से लाभ पाने वाला, अपनी बुद्धि से लोगों को प्रभावित करने वाला, परन्तु श्रेष्ठ पुरुषों से सम्मान न पाने वाला, अनीतिवान्, दुराचारी, कपटी' तथा कामी होता है।

4. 'कर्क'—राशि में हो तो जातक माता तथा पुत्र के लिए कष्ट-प्रद बाल्यावस्था में दुःखी, तत्पश्चात् उन्नतिशील, स्त्री-पुत्रादि से सुखी, शत्रुजयी, मूर्ख, अस्थिर, दुर्बल-शरीर तथा विलास हेतु धन खर्च करने वाला होता है।

5. 'सिंह'—राशि में हो तो जातक स्त्री-पुत्रादि से सुखी, परन्तु मानसिक रूप से पीड़ित शील तथा सुख से रहित, अनेक प्रकार के दुःख पाने वाला, अन्यायी, अपयशी, शील तथा सुख से रहित, अनेक प्रकार के दुःख पाने वाला, लेखक, कलह-प्रिय, नीति-रहित तथा लेखन-कुशल होता है।

6. 'कन्या'—राशि में हो तो जातक धन पुत्रादि का अल्प-सुख पाने वाला, मित्र-विरोधी, निर्लज्ज, अविनयी, परोपकारी, लेखक, सम्पादक, चंचल मैत्री वाला तथा किसी भी काम में सफलता न पाने वाला होता है।

7. 'तुला'—राशि में तो स्वर्ण-रत्न-वाहनादि से युक्त, भू-स्वामी, धनी, यशस्वी, सुभाषी, स्वाभिमानी, दानी, कामी, राजा द्वारा उपकृत, नेता, सुखी तथा अपमानित भी होता है।

8. 'वृश्चिक'—राशि में हो तो जातक महत्वाकांक्षानुसार कार्य कर यश पाने वाला, देशान्तर प्रवासी, रोग एवं शत्रु-पीड़ित, पुत्र-सुख से रहित, स्त्री-हीन, क्रोधी, हिंसक, लोभी, चंचल, धन-नाशक, बन्धन अथवा ताड़न का दुःख पाने वाला एवं विष, शस्त्र अथवा अग्नि से भय पाने वाला होता है।

9. 'धनु'—राशि में हो तो जातक प्रधान पुरुष, युद्ध तथा विवाद में विजयी, सांसारिक-वैभव-सम्पन्न, पुत्र के यश से प्रसिद्धि पाने वाला, राजा का विश्वास पात्र, यशस्वी, धैर्यवान्, सन्तोषी तथा वृद्धावस्था में अधिक सुखी होता है।

10. 'मकर'—राशि में हो तो जातक धन-ऐश्वर्यादि का चिरकाल तक उपभोग करने वाला, राजा का प्रिय, सम्मानित, परिश्रमी, प्रवासी,

मिथ्यावादी, स्त्रियों का प्रेमी, विनयी, क्षीण दृष्टि, सुखी तथा शिल्पज्ञ होता है।

11. **'कुम्भ'**—राशि में हो तो जातक पराये-धन का स्वामी, पर्याप्त धनी, अधिकार सम्पन्न, प्रधान, उत्तम स्त्रियों वाला, धनी, भोगी, व्यसनी, यशस्वी, विद्वान्, शत्रु-पीड़ित तथा क्षुद्र लोगों से उपकृत होता है।

12. **'मीन'**—राशि में हो तो जातक सब प्रकार की सम्पत्तियों तथा स्त्री-पुत्रादि से सम्पन्न, अपने स्थान का प्रधान, विनयी, शिल्पज्ञ, अविचारी, उपकारी, शीलवान् तथा बुद्धि-बल से जीवन के अन्तिम भाग में सब प्रकार से सुखी रहने वाला होता है।

राहु

1. **'मेष'**—राशि में हो तो जातक दीर्घकालीन रोगी, पराक्रमहीन, अविवेकी, विवाद-विजयी, कामातुर तथा आलसी होता है।

2. **'वृष'**—राशि में हो तो जातक मित्रों की सलाह न मानने वाला, शत्रुजयी, कभी धनी तो कभी दरिद्र, धन-नाशक, लम्पट, शूर-वीर, चंचल, वाचाल तथा सुखी होता है।

3. **'मिथुन'**—राशि में हो तो जातक मित्र, पुत्र, स्त्री, धन-धान्य आदि से सम्पन्न तथा सुखी, राज्याधिकार पाने वाला, चतुर, बुद्धिमान, प्रतापी, बलवान्, यशस्वी, विवेकी, दीर्घायु तथा उन्नतिशील होता है।

4. **'कर्क'**—राशि में हो तो जातक स्त्री-पुत्र एवं मित्रादि के सुख से युक्त, शत्रु से पराजित, कपटी, धन-हीन, माता-पिता को कष्टदायक तथा उदर-रोगी होता है।

5. **'सिंह'**—राशि में हो तो जातक राजदण्ड का भय पाने वाला, सन्तान के लिए चिन्तित, विचारक, सत्पुरुष, क्षुधा से मृत्यु पाने वाला तथा कुक्षि-पीड़ा से युक्त होता है।

6. **'कन्या'**—राशि में हो तो जातक कवि, लेखक, संगीतज्ञ, मधुर भाषी, लोक-प्रिय, स्वस्थ तथा शत्रु-नाशक होता है। कोई-कोई बल-बुद्धिहीन भी होता है।

7. **'तुला'**—राशि में हो तो जातक स्त्री-हानि का योग पाने वाला,

कार्य-कुशल, मृत धन का अधिकारी, सन्तप्त, अग्नि तथा वायु से कष्ट पाने वाला एवं अल्पायु होता है।

8. **'वृश्चिक'**—राशि में हो तो जातक ग्रन्थि-रोग अथवा किसी अन्य रोग से ग्रस्त, लोक-विरोधी, परन्तु राजा तथा विद्वानों द्वारा सम्मानित, धूर्त, कोई धनी तो कोई निर्धन होता है।

9. **'धनु'**—राशि में हो तो जातक गृहस्थी के झंझटों से युक्त, भातृ-प्रेमी, मित्र-द्रोही, दत्तक जाने वाला, दृढ़-संकल्पी, धन-हानि पाने वाला, दुःखी, अपयशी, व्रती तथा बाल्यावस्था में सुखी होता है।

10. **'मकर'**—राशि में हो तो जातक धन-मान-प्रताप एवं सुख आदि में कमी पाने वाला, कृपण, मितव्ययी, कुटुम्बहीन, मित्र-द्रोही तथा जल से भय पाने वाला होता है।

11. **'कुम्भ'**—राशि में हो तो जातक परदेश में प्रतिष्ठा पाने वाला एवं विद्वान् होता है।

12. **'मीन'**—राशि में हो तो जातक उच्च-पद से अवनति पाने वाला, धन-संचय में विघ्न पाने वाला, भ्रमण में असफलता पाने वाला, शान्तिप्रिय, कला-पक्ष, कुलीन तथा आस्तिक होता है।

टिप्पणी—राहु जिस राशि अथवा जिस-ग्रह के साथ होता है उसके फल की वृद्धि करता है। वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या तथा वृश्चिक राशि-स्थ राहु प्रायः अच्छा फल देता है।

केतु

1. **'मेष'**—राशि में हो तो जातक स्त्री-चिन्ता से चिन्तित, मामा के लिए कष्ट-कारक, कठोर स्वभाव का, चंचल, बहुतभाषी, सुखी तथा रोगी होता है।

2. **'वृष'**—राशि में हो तो जातक कुटुम्ब-विरोधी, राज्यद्वारा लाभान्वित, धन-धान्यहीन, निरुद्यमी तथा आलसी होता है।

3. **'मिथुन'**—राशि में हो तो जातक शत्रु-नाशक, विवादी, क्रोधी, अल्प सन्तोषी, भयभीत, अल्पायु तथा वात-विकारी होता है।

4. **'कर्क'**—राशि में हो तो जातक मित्र अथवा पिता द्वारा दुःख

पाने वाला, भूत-प्रेतादि से पीड़ित, माता के लिए कष्टप्रद तथा अस्थिर-स्वभाव का होता है ।

5. **'सिंह'**—राशि में हो तो जातक उदर तथा वायु रोगी, बहुभाषी, विपरीत-बुद्धि वाला, कायर, कलाविद् तथा असहिष्णु होता है ।

6. **'कन्या'**—राशि में हो तो जातक गुदा अथवा नेत्र रोगी, ननसाल, से तिरस्कृत, शत्रु-नाशक, विवादी, चिर-रोगी, मूर्ख तथा पशुओं द्वारा सुख पाने वाला होता है ।

7. **'तुला'**—राशि में हो तो जातक यात्रा में कष्ट भोगने वाला, चोर से भय पाने वाला, स्त्री के सम्बन्ध में व्याकुल, क्रोधी, दुःखी, कामी तथा चर्म-रोगी होता है ।

8. **'वृश्चिक'**—राशि में हो तो जातक धन-लाभ में बाधा पाने वाला, कोई धन तथा सन्तान से पूर्ण एवं सुखी, कोई कुष्ठ अथवा चर्म रोगी, राजा का प्रिय, वाचाल तथा क्रोधी होता है । इस राशि का केतु सदैव शुभ फलदायक माना गया है ।

9. **'धनु'**—राशि में हो तो जातक राहु-रोगी, मिथ्यावादी, चंचल, अधर्मी, परन्तु तीर्थयात्री, धूर्त एवं म्लेच्छ द्वारा लाभ पाने वाला होता है ।

10. **'मकर'**—राशि में हो तो जातक माता-पिता के लिए कष्टकर, प्रवासी, परिश्रमी, तेजस्वी तथा किसी वाहन द्वारा जाँघ में चोट खाने वाला होता है ।

11. **'कुम्भ'**—राशि में हो तो जातक कर्ण अथवा उदर-रोगी, सुवक्ता, विद्वान्, सुन्दर, धनी, भ्रमणशील, अधिक खर्च करने वाला, तेजस्वी, परन्तु दुःखी होता है ।

12. **'मीन'**—राशि में हो तो जातक शुभ कार्यों में धन खच करने वाला, सुशिक्षित, कर्मनिष्ठ, प्रवासी, शत्रु-नाशक, गुप्ताङ्ग-रोगी तथा सुन्दर आँखों वाला होता है ।

❀

विभिन्न भावस्थ शुभाशुभ ग्रहों का फल

जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित शुभ तथा अशुभ ग्रहों का सामान्य प्रभाव निम्नानुसार होता है—

प्रथम भाव

शुभ-ग्रह—शारीरिक कद उन्नत, सौन्दर्य, आरोग्य, सुबुद्धि, सद्‌गुण, यश, ऐश्वर्य, प्रतिष्ठा, सुख तथा शान्त प्रकृति सम्पन्न।

अशुभ-ग्रह—कुरूपता, आलस्य, रोग, शारीरिक-कष्ट, कुबुद्धि, अहंकार, दुःख तथा मानसिक-चिन्ता सम्पन्न।

द्वितीय भाव

शुभ-ग्रह—धन-संचय, बहु-कुटुम्ब, सौभाग्यवान्, सुवक्ता तथा परिवारीजनों पर प्रेम।

अशुभ-ग्रह—निर्धनता, द्रव्य-नाश, कपट-व्यवहार, नेत्र-पीड़ा, मिथ्या भाषी, वाणी-दोष, विपत्ति तथा पारिवारीजनों से विरोध।

तृतीय भाव

शुभ-ग्रह—मित्रों तथा भाई-बहिन, सुख, साहस तथा पराक्रम में वृद्धि, सुलेखक, उद्योगी, विद्वान्, परिश्रमी, शत्रु-नाश, यश-लाभ, प्रवास में सुख तथा धन-लाभ।

अशुभ-ग्रह—भाई-बहिन एवं मित्रादि का सामान्य सुख, कार्य में बाधा, कलह-प्रियता, सुख तथा धन में कमी, प्रवास में कष्ट।

चतुर्थ भाव

शुभ-ग्रह—भूमि, भवन, वाहन, सेवक, स्थावर-सम्पत्ति तथा माता का सुख, धन-ऐश्वर्य, यश, कीर्ति का लाभ, दयालु, सन्तोषी।

अशुभ-ग्रह—मातृ-सुख, भूमि-भवन-सेवक तथा वाहन सुख में कमी, बुद्धि-विपर्यय, चिन्ता, सन्तान सम्बन्धी कष्ट।

पञ्चम भाव

शुभ-ग्रह—सन्तान-सुख, विद्या-बुद्धि लाभ, धन-सम्मान का लाभ, चातुर्य, राज्य में प्रतिष्ठा, वंश में सुयश, समस्याओं को सुलझाने में दक्षता।

अशुभ-ग्रह—बुद्धि-विपर्यय, मिथ्याभिमान, सन्तान-सुख में कमी, अपयश एवं दुःख, चिन्ताएँ, विद्या-लाभ में विघ्न।

षष्ठ भाव

शुभ-ग्रह—स्वजन-विरोध, शत्रुओं से हानि, ननसाल से सुख, उद्यमी, परोपकारी, उदार, आरोग्य, लोगों को अनुकूल करने में कुशल।

अशुभ-ग्रह—शत्रुओं से त्रास, परन्तु शत्रुजयी, उग्र स्वभाव, रोगी, स्वार्थी, धन-व्ययी, तामसी प्रकृति।

सप्तम भाव

शुभ-ग्रह—सुन्दर, गुणवती एवं शीलवती पत्नी (अथवा पति) का लाभ, दीवानी के मामलों में विजय, प्रवास-सुख, दैनिक आजीविका लाभ।

अशुभ-ग्रह—पत्नी (अथवा पति) के सुख में कमी, अदालती मामलों में हानि, व्यभिचारी प्रकृति, प्रवास में कष्ट, दुःख यात्रा में कष्ट।

अष्टम भाव

शुभ-ग्रह—विवाहोपरान्त स्थावर-सम्पत्ति का लाभ, उत्तराधिकार में धन एवं जायदाद का लाभ, आकस्मिक लाभ, पत्नी-धन का लाभ तथा दीर्घायु।

अशुभ-ग्रह—धन-हानि, गृह क्लेश, अपकीर्ति, पुरातत्त्व की हानि, पारिवारिक तथा राजकीय संकट, व्यसन, लोगों से वैमनस्य, दारुण-प्रसङ्ग आदि।

नवम भाव

शुभ-ग्रह—धार्मिक कृत्य, तीर्थ-यात्रा, सौभाग्य-वृद्धि, स्वदेश में भाग्योदय, दूरदेशों की यात्रा, धन, ऐश्वर्य एवं सम्मान का लाभ, कार्य-सिद्धि, यश, मान।

अशुभ-ग्रह—आर्थिक-स्थिति परिवर्तनशील, परदेश में भाग्योदय, धार्मिक कार्यों में अरुचि, मानसिक-संताप, दुर्भाग्य, विपत्ति, अपयश।

दशम भाव

शुभ-ग्रह—राज्य द्वारा धन एवं सम्मान का लाभ, उद्योग-व्यवसाय अथवा नौकरी से लाभ, पितृ-सुख, पिता से लाभ, पदोन्नति; सुख-साधन लाभ।

अशुभ-ग्रह—पितृ-सुख की हानि; राज्य से विरोध, व्यवसाय में परिवर्तन, अपयश, कष्ट, सुख-नाश, आजीविका के विषय में चिन्ता।

एकादश भाव

शुभ-ग्रह- नियमित आय, व्यसाय अथवा नौकरी में लाभ, सब प्रकार के सुखों की उपलब्धि, पराक्रम-वृद्धि, यश-कीर्ति का लाभ।

अशुभ-ग्रह—कुटुम्ब, सन्तान तथा मित्र-सुख में कमी, असत् कार्यों द्वारा धन का श्रेष्ठ लाभ, कलह, नौकरों से त्रास, धन-लाभ हेतु पाप-पुण्य का विचार न करना।

द्वादश भाव

शुभ-ग्रह—रोग, शत्रु एवं संकट-नाश, सत्कर्मों में धन का व्यय, अधिकार प्राप्त में विघ्न, लम्बी यात्राओं से लाभ, आर्थिक तथा मानसिक चिन्ताएँ।

अशुभ-ग्रह—धन सम्बन्धी चिन्ताएँ, बुरे कामों में धन का व्यय, ऋण-ग्रस्तता, अनेक प्रकार के संकट, आयु-क्षीणता अविचारी पत्नी, अधिकारी की प्रतिकूलता, शारीरिक रोग तथा पीड़ा।



12 भावेश-फल

जन्मकुण्डली के जिस भाव में जो राशि होती है, उसके स्वामी-ग्रह को उस भाव का 'भावेश' कहा जाता है। इस प्रकार सभी ग्रह किसी न किसी भाव के स्वामी होते हैं। जातक की जन्मकालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार भावेश अपनी राशि में ही स्थित हो सकता है तथा किसी अन्य राशि में भी। जो भावेश अपनी राशि में ही बैठा हो उसे 'स्वगृही' अथवा 'स्वक्षेत्री' कहा जाता है। पहले भाव के स्वामी को प्रथमेश, दूसरे को द्वितीयेश आदि कहा जाता है, यह बात भी पहले बताई जा चुकी है। अस्तु, प्रथम भाव का स्वामी यदि चौथे भाव में बैठा हो अर्थात प्रथम भाव में सिंह राशि हो और उसका स्वामी सूर्य यदि चौथे भाव स्थित राशि में बैठा हो तो 'प्रथमेश चतुर्थ भाव में बैठा है—यह कहा जाएगा। इसी प्रकार सर्वत्र समझना चाहिए।

किसी भाव का स्वामी दूसरे भाव में बैठकर क्या प्रभाव प्रकट करता है, इसका संक्षिप्त विवरण यहाँ दिया जा रहा है—

प्रथमेश (लग्नेश) फल

'प्रथम भाव' का स्वामी 'प्रथमेश' अर्थात् 'लग्नेश' यदि प्रथम भाव में ही बैठा हो तो जातक सुन्दर, स्वस्थ, आत्म-विश्वासी तथा दीर्घायु होता है। पहली सन्तान पुत्र होती है तथा दो पत्नियाँ भी हो सकती हैं।

'द्वितीय भाव' में बैठा हो तो जातक स्थूल शरीर वाला, सुखी, भाइयों में श्रेष्ठ, धनी तथा सुशील पत्नी वाला होता है। उसकी प्रथम सन्तान कन्या होती है।

'तृतीय भाव' में हो तो शूर-वीर अच्छे भाई-बहिनों वाला, भाई-बन्धुओं से दूर रहने वाला तथा स्वतन्त्रता-प्रिय होता है। दो पत्नियाँ होना भी सम्भव है।

'चतुर्थ भाव' में हो तो भू-भवन-वाहन सुख पाने वाला, माता पिता का भक्त,कुटुम्व-प्रेमी, दीर्घायु, राजा को प्रिय, गुणी, विलासी तथा घर का मुखिया होता है। प्रथम सन्तान किसी की पुत्र तो किसी की कन्या होती है।

'पञ्चम भाव' में हो तो धनी, विद्वान, यशस्वी, बुद्धिमान, विलक्षण बुद्धि का तथा राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होता है। प्रथम सन्तान पुत्र होती है।

'षष्ठ भाव' में हो तो स्वस्थ, शत्रुजयी, सुखी, धनी तथा कर्त्तव्यनिष्ठ होता है। कभी-कभी कार्यों में असफलता भी पाता है।

'सप्तम भाव' में हो तो विषयी, सुन्दर, सुशीला एवं तेजस्वी पत्नी वाला, व्यवसाय द्वारा धन वृद्धि करने वाला तथा व्यभिचारी होता है। प्रथम सन्तान प्रायः कन्या होती है। पत्नी की मृत्यु जीवन-काल में ही हो जाती है।

'अष्टम भाव' में हो तो दीर्घायु, धन-संचयी,गुप्त-धन पाने वाला तथा शारीरिक-सुख से वंचित होता है।

'नवम भाव' में हो तो वहुकुटम्बी, सौभाग्यशाली, तीर्थयात्री, यशस्वी, धनी, सुखी, पुण्यात्मा, राजपूज्य तथा दानी होता है। प्रथम सन्तान पुत्र।

'दशम भाव' में हो तो माता-पिता-गुरु का भक्त, यशस्वी, सुखी, राज्य से सुख पाने वाला तथा अधिकार-सम्पन्न होता है। प्रथम सन्तान पुत्री होती है।

'एकादश भाव' में हो तो दीर्घायु, तेजस्वी, धनी, सुखी, प्रसिद्ध तथा अकल्पित लाभ पाने वाला होता है। प्रथम सन्तान पुत्र होती है।

'द्वादश भाव' में हो तो अधिक खर्चीला, पापी, नीच-प्रकृति, धूर्त, वाक्पटु तथा भ्रमणशील होता है। प्रथम सन्तान पुत्र होती है।

द्वितीयेश (धनेश फल)

'द्वितीय भाव' का स्वामी यदि 'प्रथम भाव' में हो तो जातक धनी सुखी यशस्वी, तथा श्रेष्ठ पत्नी का पति होता है।

'द्वितीय भाव' में हो तो धनी, प्रसिद्ध तथा कुटुम्ब से सुखी।

'तृतीय भाव' में हो तो भाइयों से सुखी, धनी, यशस्वी तथा कलह-प्रिय।

'चतुर्थ भाव' में हो तो पैतृक-धन पाने वाला, तेजस्वी, दीर्घायु।

'पञ्चम भाव' में हो तो कार्य-कुशल, श्रेष्ठ सन्तानों वाला, धन-संचयी।

'षष्ठ भाव' में हो तो धन-संचयी, शत्रु-जयी तथा कृतघ्न।

'सप्तम भाव' में हो तो सुन्दरी श्रेष्ठ पत्नी, कामी, वासनापूर्ति हेतु धन व्ययी।

'अष्टम भाव' में हो तो दरिद्र, धन-नाशक, नित्य चिन्तित, आत्मघाती।

'नवम भाव' में हो तो दानी, धर्मात्मा, भाग्यशाली, मधुर भाषी।

'दशम भाव' में हो तो पितृ-भक्त,यशस्वी, सुन्दर, पंडित, कामी।

'एकादश भाव' में हो तो विशेष धनी, व्यवहार-कुशल, उद्यमी, यशस्वी।

'द्वादश भाव' में हो तो धनहीन, व्यसनी, बलवान, क्रूर, राजदण्ड भोगी।

तृतीयेश (सहजेश) फल

'तृतीय भाव' का स्वामी यदि 'प्रथम भाव' में हो तो शुभ-ग्रह होने पर जातक धनी, साहसी, पराक्रमी तथा महत्वाकांक्षी होता है। सन्तानोत्पत्ति विलम्व से होती है। यदि पाप ग्रह हो तो स्वजनों से मतभेद रखने वाला, कामी, क्रूर, कटुभाषी, दुष्ट-मित्रों वाला, परन्तु विद्धान होता है। उसके दो भाई होते हैं।

'द्वितीय भाव' में हो तो वलवान, प्रभावशाली, ऐश्वर्यशाली, सन्तानोत्पत्ति में विलम्ब।

'तृतीय भाव' में हो तो अच्छे भाई-बन्धु तथा मित्र. उदार, यशस्वी, हठी।

'चतुर्थ भाव' में हो तो पारिवारीजनों को सुख देने वाला, भवन-निर्माता, मातृ-द्रोही।

पञ्चम भाव' में हो तो परोपकारी, सुन्दर, पराक्रमी, यशस्वी उद्यमी।

'षष्ठ भाव' में हो तो बन्धु-विरोधी, शत्रु-पीड़ित, अपयशी, पराक्रम हीन।

'सप्तम भाव' में हो तो सुशीला पत्नी, स्त्रियों को प्रसन्नतादायक, विपक्ष-विजयी।

'अष्टम भाव' में हो तो भाइयों के लिए कष्टकर, पराक्रम-हीन, कभी-कभी धन पाने वाला।

'नवम भाव' में हो तो भ्रातृ-प्रेमी, विद्वान्, धर्मात्मा, स्त्री द्वारा भाग्योन्नति।

'दशम भाव' में हो तो मातृ-पितृ भक्त, भाग्यशाली, राज-सम्मानित, यशस्वी, सुखी।

'एकादश भाव' में हो तो ऐश्वर्यशाली, भाई तथा मित्रों से सुखी, भोगी परन्तु रोगी।

'द्वादश भाव' में हो तो मित्र, बन्धु-विरोधी, अपयशी, चिन्तातुर, अपव्ययी, आलसी।

टिप्पणी—यदि तृतीयेश लग्न या तृतीय भाव से 'त्रिक-स्थान' में अथवा वृश्चिक राशि में बैठा हो तो भाईका सुख प्रायः नहीं मिलता।

चतुर्थेश (सुखेश) फल

'चतुर्थ भाव' का स्वामी यदि 'प्रथम भाव' में हो तो जातक पितृस्नेही, यशस्वी, विद्वान, पितृ-धन त्यागी तथा रोगहीन होता है।

'द्वितीय भाव' में हो तो स्वोपार्जित धन से पिता को सुख देने वाला, पिता-पालक।

'तृतीय भाव' में हो तो माता-पिता को कष्ट देने वाला, स्व-पराक्रम से धनी, यशस्वी।

'चतुर्थ भाव' में हो तो भूमि-भवन-वाहन आदि के सुख से युक्त, यशस्वी।

'पञ्चम भाव' में हो तो उत्तम, सन्तति, यशस्वी, धनी, सम्मानित, धार्मिक।

'षष्ठ भाव' में हो तो धन-संचयी, स्थावर-सम्पत्ति एवं गृह-सुख-हीन।

'सप्तम भाव' में हो तो कामातुर, धनी, विद्वान्, स्त्री-प्रिय, सुन्दर।

'अष्टम भाव' में हो तो कुकर्मी, दरिद्र, भूमिगत धन का लाभ, क्रूर स्वभाव।

'नवम भाव' में हो तो पितृ-भक्त, परिवार-विरोधी, परदेश में सुखी।

'दशम भाव' में हो तो धनी, राज्य द्वारा सम्मानित, क्षमाशील, पितृ-भक्त।

'एकादश भाव' में हो तो विद्वान्, धनी, गुणी, दीर्घायु, धर्मात्मा।

'द्वादश भाव' में हो तो पिता की शीघ्र मृत्यु, पराये घर में रहने वाला।

पंचमेश (पुत्रेश) फल

'पंचम भाव' का स्वामी यदि 'प्रथम भाव' में हो जातक सत्कर्मी, शास्त्रज्ञ, विद्वान्, बुद्धिमान्, धार्मिक, यशस्वी तथा श्रेष्ठ पुत्रों वाला होता है।

'द्वितीय भाव' में हो धनी, यशस्वी, कुटुम्ब-विरोधी, क्रोधी, दुखी-चित्त।

'तृतीय भाव' में हो तो प्रियवादी, विद्वान्, परोपकारी, यशस्वी, भाइयों में प्रसिद्ध।

'चतुर्थ भाव' में हो तो गुरुजनों का भक्त, स्थावर-सम्पत्ति पाने वाला।

'पञ्चम भाव' में हो तो गुणी, धनी, विद्वान्, यशस्वी, बुद्धिमान, धर्मात्मा।

'षष्ट भाव' में हो तो धनहीन, मानहीन, शत्रु-पीड़ित, सन्तान से शत्रुता।

'सप्तम भाव' में हो तो व्यवसायी, मायावी, सुशीला सुन्दरी पत्नी का पति।

'अष्टम भाव' में हो तो धनहीन, विवेकहीन, कटुभाषी, क्रूर-पत्नी।

'नवम भाव' में हो तो ग्रन्थ-लेखक, विद्वान्, बुद्धिमान, सौभाग्यशाली।

'दशम भाव' में हो तो सत्कर्मी, राज्य-प्रिय, ग्रन्थ-लेखक, यशस्वी, धनी।

'एकादश भाव' में हो तो विद्वान्, धनी, शूर-वीर, सत्यवादी, लोक-

प्रिय, सत्कर्मी ।

'द्वादश भाव' में हो तो विदेशवासी, अपव्ययी, संकट ग्रस्त, दुर्व्यसनी, पुत्र-सुख हीन ।

टिप्पणी—यदि पंचमेश अथवा चतुर्थेश के साथ बुध अथवा लग्नेश लग्न अथवा चतुर्थ भाव में बली हो तो जातक सन्तान एवं विद्या द्वारा यशस्वी होता है ।

षष्ठेश (रोगेश) फल

'षष्ठ भाव' का स्वामी यदि **'प्रथम भाव'** में हो तो जातक निर्भय, बलवान्, शत्रुजयी, धनी, गुणी, स्वस्थ तथा सुख-सम्पन्न होता है ।

'द्वितीय भाव' में हो तो दुष्ट-प्रकृति, विवादी, चतुर, रोगी, कौटुम्बिक-झगड़े में लिप्त ।

'तृतीय भाव' में हो तो बन्धु-प्रेम-विहीन, स्वाधीन, सुप्रसिद्ध लोगों को कष्टदायक ।

'चतुर्थ भाव' में हो तो स्थिर सम्पत्तिवान्, पिता से शत्रुता, धन तथा शत्रु-नाशक ।

'पञ्चम भाव' में हो तो कपटी, परद्वेषी, सन्तान-सुख से वंचित, राजदण्ड भोगी ।

'षष्ठ भाव' में हो तो रोगी, कृपण, कलही, शत्रुजयी, धैर्यवान्, सुखी ।

'सप्तम भाव' में हो तो शत्रु-नाशक, धनी, मानी, गुणी, गृह-कलह तथा सन्तान-सुखयुक्त ।

'अष्टम भाव' में हो तो दुष्ट-प्रकृति, कौटुम्बिक-सुख /से रहित, पर-स्त्री गामी, अल्पायु ।

'नवम भाव' में हो तो क्रूर, विकलांग, अपयशी, पुण्यहीन, दुर्भाग्य-शाली ।

'दशम भाव' में हो तो पिता-पालक, परन्तु अन्य परिवारीजनों का शत्रु, अपव्ययी ।

'एकादश भाव' में हो तो शत्रु-नाशक, जुआरी, शत्रु द्वारा मृत्यु प्राप्त ।

'द्वादश भाव' में हो तो धनोपार्जन हेतु परिश्रमी, दुर्व्यसनी, पर-स्त्री गामी, व्ययी।

सप्तमेश (जायेश) फल

'सप्तम भाव' का स्वामी यदि 'प्रथम भाव' में हो तो जातक सुन्दर, चंचल, स्वतन्त्र प्रकृतिवाला, धैर्यवान, विषयी, पर-स्त्री गामी, द्वि-भार्या योगी विलक्षण।

'द्वितीय भाव' में हो तो दुष्टा-पत्नी, स्त्री के कामों में धन का अधिक खर्च।

'तृतीय भाव' में हो तो आत्मबली, कर्तव्य-निष्ठ, स्त्री चंचल स्वभाव की।

'चतुर्थ भाव' में हो तो सद्गुणी, व्यवहार-कुशल, पतिव्रता (मतान्तर से दुश्चरित्रा) पत्नी।

'पञ्चम भाव' में हो तो धनी, साहसी, पुत्रवान, स्त्री का पालन पुत्रों द्वारा हो।

'षष्ठ भाव' में हो तो स्त्री से शत्रुता रखने वाला, विवाह में विघ्न, द्विभार्या योग।

'सप्तम भाव' में हो तो प्रियभाषी, यशस्वी, परस्त्री-गामी, श्रेष्ठ पत्नी, द्विभार्या योग।

'अष्टम भाव' में हो तो रोगी, क्रोधी, स्त्री-सुख रहित, वेश्यागामी सदैव चिन्तित।

'नवम भाव' में हो तो तेजस्वी, पत्नी सुशीला, पत्नी के कारण भाग्योदय, धर्मात्मा।

'दशम भाव' में हो तो स्वतन्त्र-व्यवसायी, स्त्री से सहायता पाने वाला क्रूर स्वभाव।

'एकादश भाव' में हो तो साझेदारी अथवा कला-कौशल से धन कमाने वाला, सुन्दर पत्नी।

'द्वादश भाव' में हो तो दरिद्र, कृपण, दुश्चरित्रा-पत्नी, व्यय के कारण परेशान।

टिप्पणी—यदि सप्तम भाव में वृष, कन्या, वृश्चिक अथवा मकर राशि हो तो किसी जातक की पत्नि घर से भाग भी सकती है।

अष्टमेश (रन्ध्रेश) फल

'अष्टम भाव' का स्वामी यदि 'प्रथम भाव' में हो तो जातक विद्वान्, राजा द्वारा धन कमाने वाला, अनेक विघ्न एवं संकट पाने वाला तथा व्रण अथवा नेत्र-रोगी होता है।

'द्वितीय भाव' में हो तो शत्रु-पीड़ित, परधनापहारी, शिक्षित होते हुए भी चोर-प्रकृति।

'तृतीय भाव' में हो तो चंचल-स्वभाव, भ्रातृहीन, पराधीन, कुमार्गी, क्रूर, दुर्बल।

'चतुर्थ भाव' में हो तो पिता से शत्रुता, माता से धन पाने वाला, आकस्मिक-लाभ।

'पञ्चम भाव' में हो तो सुशील सन्तान, पाप ग्रह हो तो दुर्गुणी सन्तान, मायावी, चंचल।

'षष्ठ भाव' में हो तो उपद्रवी, चोर, लोगों को त्रास देने वाला, 60 वर्ष की आयु।

'सप्तम भाव' में हो तो उदर अथवा गुदा-रोगी, प्रियव्ययी, दुर्व्यसनी, सुशीला पत्नी।

'अष्टम भाव' में हो तो बलवान्, स्वस्थ, दीर्घायु, प्रसिद्ध, कपटी, व्यवसायी।

'नवम भाव' में हो तो बन्धु-विहीन, पापी, हिंसक, माता-पिता का अल्पसुख।

'दशम भाव' में हो तो बन्धु-हीन, आलसी, क्रूर, पुत्र-सूखी, राज्य से लाभ।

'एकादश भाव' में हो तो बाल्यावस्था में दुखी, बाद में सुखी और दीर्घायु, धनी।

'द्वादश भाव' में हो तो कटुभाषी, चतुर, दिवालिया, अच्छे कामों में धन खर्च।

नवमेश (भाग्येश) फल

नवम भाव' का स्वामी यदि 'प्रथम भाव' में हो तो जातक धनी, विद्वान्, कृपण, शूर-वीर, देव-द्विज-भक्त, सौभाग्यशाली तथा अल्पभोजी होता है।

'द्वितीय भाव' में हो तो पुण्यात्मा, धनी, प्रसिद्ध, विद्वान्, सत्यवादी, शान्त।

'तृतीय भाव' में हो तो भाई-बन्धुयुक्त, सदाचारी, स्व-पराक्रम से प्रसिद्ध।

'चतुर्थ भाव' में हो तो मातृ-पितृ-भक्त, पुण्यात्मा, भाग्यशाली, प्रसिद्ध।

'पञ्चम भाव' में हो तो श्रेष्ठ पुत्रों वाला, यशस्वी, धनी, विद्वान्, लेखक।

'षष्ठ भाव' में हो तो धर्महीन, आलसी, अपयशी, विलासी, शत्रु-पीड़ित।

'सप्तम भाव' में हो तो धनी, वाक्पटु, सौभाग्यशाली, सुखी, श्रेष्ठ पत्नी।

'अष्टम भाव' में हो तो पुण्यहीन, बन्धु-विहीन, गृहहीन, दुष्ट।

'नवम भाव' में हो तो परिवारीजनों से प्रेम रखने वाला, गुणी यशस्वी।

'दशम भाव' में हो तो राज्य से सम्मानित, धनी, साहसी, प्रसिद्ध, वाक्पटु।

'एकादश भाव' में हो तो धर्मात्मा, दानी, दीर्घायु, यशस्वी, धनी, लोक-प्रिय।

'द्वादश भाव' में हो तो सुन्दर, विद्वान्, विदेश में सम्मान पाने वाला

टिप्पणी—नवम भाव में अथवा नवमेश के साथ, दशम भाव में अथवा दशमेश के साथ अथवा नवम भावस्थ नवमेश अथवा दशम भावस्थ दशमेश के साथ यदि राहु-केतु की युति हो तो भाग्योन्नति 42 वे वर्ष के आस-पास होती है।

दशमेश (राज्येश) फल

'दशम भाव' का स्वामी यदि 'प्रथम भाव' में हो तो जातक माता का शत्रु, पिता का भक्त, सौभाग्यशाली, बड़ा उद्योगी एवं स्वपराक्रम से भाग्योन्नति करने वाला होता है ।

'द्वितीय भाव' में हो तो माता के लिये अनिष्टकर, राज्य से भाग्योदय-अल्पधनी ।

'तृतीय भाव' में हो तो गुरुजनों का सेवक, बड़ा उद्यमी, धनी, शत्रु-जयी, गुणी ।

'चतुर्थ भाव' में हो तो मातृ-पितृ-भक्त, राजमान्य, धनी, सुखी, पराक्रमी, सदाचारी ।

'पञ्चम भाव' में हो तो धनी, भाग्यशाली, विद्वान, कला-मर्मज्ञ, राज्य से लाभ ।

'षष्ठ भाव' में हो तो राजा अथवा शत्रु से भयभीत, कायर, धनी, कामासक्त ।

'सप्तम भाव' में हो तो व्यवसाय द्वारा बहुधनी, परदेश में भाग्योदय, सुखी, सुन्दरी पत्नी ।

'अष्टम भाव' में हो तो क्रूर, धूर्त, मिथ्यावादी, शूरवीर, अल्पायु, चोर ।

'नवम भाव' में हो तो सुशील, मातृ-पितृ-भक्त, पराक्रमी, धनी, धर्मात्मा ।

दशम भाव' में हो तो राज्य द्वारा सम्मानित, धर्मात्मा, सुखी, धनी, पराक्रमी ।

'एकादश भाव' में हो तो माता से सुखी, नौकरी द्वारा धनोपार्जन, दीर्घायु; विजयी ।

'द्वादश भाव' में हो तो राजा द्वारा दण्डित, खर्चीला, कुटिल-बुद्धि परन्तु आत्मवली ।

एकादशेश (लाभेश) फल

'एकादश भाव' का स्वामी यदि 'प्रथम भाव' में हो तो जातक सर्वप्रिय, सुन्दर, धनी, शूरवीर, विद्वान्, अल्पायु, कलाकुशल, काव्य-प्रेमी तथा उन्नतिशील होता है।

'द्वितीय भाव' में हो तो धनी, दीर्घायु, पुत्रवान, सुखी, व्यवसाय द्वारा धन लाभ।

'तृतीय भाव' में हो तो बन्धु- पालक, शत्रु-नाशक, धनी, कार्य-कुशल, सुन्दर।

'चतुर्थ भाव' में हो तो मातृ-पितृ-भक्त, स्थावर-सम्पत्ति का स्वामी, दीर्घजीवी।

'पञ्चम भाव' में हो तो विद्वान्, ईश्वर-भक्त, धर्मात्मा, श्रेष्ठ-सन्ततिवान्।

'षष्ठ भाव' में हो तो शत्रु युक्त, चिर रोगी, सैनिक-कार्य करने में कुशल।

'सप्तम भाव' में हो तो तेजस्वी, दीर्घायु, पत्नी के कारण भाग्योदय-अधिकार सम्पन्न।

'अष्टम भाव' में हो तो चंचल-चित्त, आकस्मिक-लाभ, पाने वाला, अपयशी।

'नवम भाव' में हो तो धर्मात्मा, राज्य द्वारा सम्मानित, राजा तुल्य, सुखी।

'दशम भाव' में हो तो मातृ-भक्त, पितृ-द्वेषी, चतुर, विद्वान, धनी, दीर्घायु।

'एकादश भाव' में हो तो सुन्दर,दीर्घायु, सुशील, पुत्र-पौत्रवान्, सुखी।

'द्वादश भाव' में हो तो स्थिर-चित्त, सुखी, विलासी. अपव्ययी, अस्थिर।

द्वादशेश (व्ययेश) फल

'द्वादश भाव' का स्वामी यदि 'प्रथम भाव' में हो तो जातक सुन्दर, प्रियभाषी, अपव्ययी, अविवाहित अथवा नपुंसक तथा परदेशवासी होता है।

'द्वितीय भाव' में हो तो धन-धान्यहीन, कटुभाषी, कृपण, ऋण-ग्रस्त, दीर्घ मृत्यु।

'तृतीय भाव' में हो तो भाइयों से दूर, कृपण, धनी, कुमार्ग से भी धन कमाने वाला।

'चतुर्थ भाव' में हो तो कृपण, दुखी, कुटुम्बियों से धोखा पाने वाला दृढ़ निश्चयी।

'पञ्चम भाव' में हो तो पिता के धन से धनी, पुत्रवान, पापग्रह हो तो सन्तानहीन।

'षष्ठ भाव' में हो तो कृपण, दरिद्र, क्रोधी, सन्तान-कष्ट, पर-स्त्री-गामी, नेत्र रोगी।

'सप्तम भाव' में हो तो दुराचारी, कटुभाषी, पत्नी आरम पसन्द जीवन विताने वाली।

'अष्टम भाव' में हो धनी, गुणी, धर्मात्मा, प्रियभाषी, गुप्त शत्रु से चिन्तित।

'नवम भाव' में हो तो धर्मात्मा, तीर्थ प्रेमी, प्रवासी, धनी, स्थिरवृत्ति

"दशम भाव' में हो तो सदाचारी, पत्नीव्रती, व्यवसाय एवं कृषि द्वारा धन-लाभ

'एकादश भाव' में हो तो सत्यवादी, दीर्घजीवी, लोक प्रिय, उच्च पदाधिकारी।

'द्वादश भाव' में हो तो कृपण, धनी, दुःखी, व्यसनों में धन खर्च करने वाला।

टिप्पणी —(1) यदि लग्नेश, द्वितीयेश तथा द्वादशेश— तीनों लग्नस्थ हो तो जातक अङ्ग-भङ्ग होता है।

(2) यदि द्वादशेश पापग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो अथवा पापग्रह की राशि में बैठा हो तो जातक देशान्तर की यात्रा करने वाला, गुप्त-शत्रु से पीड़ित तथा नेत्र रोगी होता है।

(3) यदि दशमेश अथवा द्वादशेश मिथुन, तुला अथवा कुम्भ राशि में शनि से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक समुद्र-यात्रा करता है।

विशेष—द्वादश भावस्थ विभिन्न ग्रहों के फलादेश का निर्णय करते समय, भाव, राशि, युति, दृष्टि तथा ग्रहों के गुण-धर्म आदि सभी विषयों पप विचार करना चाहिए । किसी एक के आधार पर ही निर्णय कर लेना उचित नहीं रहता ।

13 ग्रह-युति फल

जन्मकुण्डली के एक ही भाव में दो अथवा अधिक ग्रहों के एक साथ बैठने को 'युति' कहा जाता है । जातक के लिए विभिन्न ग्रहों की युति का संक्षिप्त फल निम्नानुसार होता है—

दो ग्रहों की युति का फल

सूर्य-चन्द्र—पराक्रमी, अहंकारी, कार्यकुशल, विषयासक्त, चतुर, दुष्ट ।

सूर्य-मङ्गल—पाप-बुद्धि, क्रोधी, कलही, मिथ्यावादी, बलवान्, मूर्ख ।

सूर्य-बुध—विद्वान्, बुद्धिमान्, यशस्वी, स्थिर-धनी, प्रियवादी, कला-प्रेमी ।

सूर्य-गुरु—धनी, शास्त्रज्ञ, धर्मात्मा, राजमान्य, चतुर, परोपकारी ।

सूर्य-शुक्र—बलवान्, बुद्धिमान्, स्त्री-प्रिय, स्त्री द्वारा धन पाने वाला ।

सूर्य-शनि—विद्वान्, कार्यकुशल, धार्मिक, गुणी, बुद्धिमान्, वृद्धतुल्य ।

चन्द्र-मङ्गल—धनी, प्रतापी, शिल्पज्ञ, व्यवसाय द्वारा धनोपार्जक ।

चन्द्र-बुध—सुन्दर, धनी, गुणी, स्त्रियासक्त, वाक्पटु, दयालु ।

चन्द्र-गुरु—परोपकारी, धर्मात्मा, बन्धु-प्रिय, विनम्र, देव-भक्त ।

चन्द्र-शुक्र—व्यसनी, कलही, सुगन्ध-प्रिय, अनेक कार्यों का ज्ञाता ।

चन्द्र-शनि—आचार-विहीन, पुरुषार्थ-हीन, पर-स्त्री-प्रेमी, अल्पसंतति ।

मंगल-बुध—कुरूप, निर्धन, कृपण, विधवा-स्त्रियों का प्रेमी, मल्ल ।

मंगल-गुरु—वाक्पटु, मेधावी, शिल्पज्ञ, शास्त्रज्ञ, उच्चाधिकारी ।

मंगल-शुक्र—जुआरी, प्रपंची, मिथ्यावादी, शठ, पर-स्त्रीगामी, गुणी ।

मंगल-शनि—कलही, अल्पधनी, शस्त्र एवं शास्त्रज्ञ, अपयशी, चोर ।

बुध-गुरु—सुखी, विनम्र, पण्डित, नीतिज्ञ, धैर्यवान्, गुणी, उदार ।

बुध-शुक्र—नीतिज्ञ, प्रियवादी, सुखी, प्रतापी, चतुर, सुन्दर, संगीतज्ञ ।

बुध-शनि—भ्रमणशील, कलह-प्रिय, चंचल, उद्योगहीन, कला-कुशल ।

गुरु-शुक्र—धन, पुत्र, मित्र, स्त्री आदि से सुखी, गुणी, विद्वान्, यशस्वी ।

गुरु-शनि—यशस्वी, शूरवीर, धनी, कला-कुशल, स्त्री से लाभान्वित ।

शुक्र-शनि—उन्मत्त-प्रकृति, दारुण संग्राम करने वाला, शिल्प-कुशल ।

तीन ग्रहों की युति का फल

सूर्य, चन्द्र, मंगल—यन्त्रज्ञ, शूर-वीर, दयाहीन, स्त्री तथा सन्तान-हीन, रोगी ।

सूर्य, चन्द्र, बुध—प्रतापी, प्रियभाषी, विद्वान्, कवि, धनी, शुभ कर्म-कर्त्ता, वाक्पटु ।

सूर्य, चन्द्र, गुरु—धर्मात्मा, स्थिर-बुद्धि, पर्यटन-प्रिय, देव-द्विज भक्त, सेवा-कुशल ।

सूर्य, चन्द्र, शुक्र—सुन्दर, तेजस्वी, शत्रु-नाशक, भाग्यशाली, पर द्रव्यादिहारी ।

सूर्य, चन्द्र, शनि—देव-द्विज, भक्त परन्तु, शीलहीन, धनहीन, व्यभिचारी ।

सूर्य, मंगल, बुध—साहसी, प्रसिद्ध, पराक्रमी, सलाह देने में चतुर, स्त्री-पुत्रादियुक्त ।

सूर्य, मंगल, गुरु—नीतिज्ञ, उदार, सत्यवादी, उग्र प्रकृति, धनी, सुखी ।

सूर्य, मंगल, शुक्र—सुन्दर, दयालु, नेत्र-रोगी, सुवक्ता, विषयासक्त, गुणी ।

सूर्य, मंगल, शनि—स्वजन-विहीन, विकल, निर्धन, स्वजनों से तिर-स्कृत ।

सूर्य, बुध, गुरु—शास्त्रज्ञ, शस्त्र-ज्ञाता, महाधनी, चतुर, संग्रही, नेत्र-रोगी ।

सूर्य, बुध, शुक्र—दुर्बुद्धि, स्वजनों, से तिरस्कृत, स्त्री-दुःखी, विदेश वासी।

सूर्य, बुध, शनि—दुराचारी, दुष्ट, शत्रु से पराजित, परिजनों से परित्यक्त।

सूर्य, गुरु, शुक्र—पण्डित, शूर-वीर, परोपकारी, धनहीन, दुष्ट, नेत्र-रोगी।

सूर्य, गुरु, शनि—सुन्दर, स्त्री-पुत्रादि से युक्त, मित्रवान्, प्रगल्भ, निर्भय।

सूर्य, शुक्र, शनि—मानहीन, दुराचारी, कुकर्मी, बन्धु-विहीन, शत्रुओं से भीत।

चन्द्र, मंगल, बुध—दुराचारी, दीन, अपमानित, आजीविका-विहीन, नीच-संगति।

चन्द्र, मंगल, गुरु—सुन्दर, बलवान्, पर-स्त्रीगामी, प्रसन्न, स्त्रियों को प्रिय, चर्मरोगी।

चन्द्र, मंगल, शुक्र—भ्रमणशील, चंचल, सुशील, दुष्ट स्वभाव की माता और पत्नी।

चन्द्र, मंगल, शनि—क्षुद्र स्वभाव, कुटिल, कलह-प्रिय, दुःखी, मातृ-वियोगी।

चन्द्र, बुध, गुरु—प्रसिद्ध, समृद्धिशाली, तेजस्वी, धनी, बुद्धिमान्, कुशलवक्ता।

चन्द्र, बुध, शुक्र—विद्वान्, धन-लोलुप, दुराचारी, ईर्ष्यालु, नीच-सेवी।

चन्द्र, बुध, शनि—विद्वान्, श्रेष्ठबुद्धि, कला-कुशल, राजाओं को प्रिय, यशस्वी।

चन्द्र, गुरु, शुक्र—सुन्दर, शास्त्रज्ञ, राजाओं को प्रिय, कलाविद्, चतुर, यन्त्रज्ञ।

चन्द्र, गुरु, शनि—लेखक, चित्रकार, वेदज्ञ, धनी, सुन्दर, धर्मात्मा, श्रेष्ठ।

मंगल, बुध, गुरु—प्रतापी, श्रेष्ठ कवि, संगीतज्ञ, चतुर स्त्रियों को प्रिय, यशस्वी।

मंगल, बुध, शुक्र—बहुत बोलने वाला, चंचल, हठी, धनी, उत्साही, अंगहीन।

मंगल, बुध, शनि—दूत-कर्मकर्त्ता, कष्ठ-सहिष्णु, परदेस वासी, दुर्बल, भीरु।

मंगल, गुरु, शुक्र—श्रेष्ठ स्त्री-पुत्र, सुखी, यशस्वी, राज्य द्वारा सम्मानित।

मंगल, गुरु, शुक्र—निर्धन, कुकर्मी, मित्रों से निन्दित, परन्तु राजा का कृपापात्र।

मंगल, शुक्र, शनि—परदेसवासी, स्त्री-सुखहीन, दुखी परन्तु अच्छे स्वभाव का।

बुध, गुरु, शुक्र—सुन्दर, परमयशस्वी, सत्यवादी-शत्रुजयी, राजा से सम्मानित।

बुध, गुरु, शनि—बहुत धनी, विद्वान्, सुखी, सौभाग्यशाली, सुन्दर पत्नी वाला।

बुध, शुक्र, शनि—मिथ्यावादी, पर स्त्रीगामी, धूर्त, आचारहीन, दूर की यात्राएं करने वाला।

चार ग्रहों की युति का फल

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध—मायावी, चुगलखोर, लेखक, चित्रकार, अनेक भाषाविद्।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु—बलवान्, धनी, नीतिज्ञ, कार्य-कुशल, अत्यन्त सुन्दर।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र—विद्वान्, धनी, वाक्पटु, स्त्री-पुत्रादि से सुखी, शास्त्रज्ञ।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, शनि—विषम-शरीर, धनहीन, मूर्ख, भिक्षुक, बौना, दुर्बल।

सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु—तेजस्वी, धनी, रोगी, शिल्पज्ञ, सुन्दर, नीतिज्ञ, गौरवर्ण।

सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र—सुन्दर, सुवक्ता, छोटे कद का, राज्य द्वारा

सम्मानित, विकल ।

सूर्य, चन्द्र, बुध, शनि—नेत्र-रोगी, धन, कुटुम्ब, मातृ-पितृहीन, नेत्र-रोगी ।

सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र—जल तथा वन-प्रेमी, सुखी, गुणी, राजाओं द्वारा सम्मानित ।

सूर्य, चन्द्र, गुरु, शनि—धनी, यशस्वी, प्रतापी, स्त्री-प्रिय, बड़े नेत्रों वाला, सुन्दर ।

सूर्य, चन्द्र, शुक्र, शनि—दुर्बल शरीर, डरपोक, स्त्रीवत् आचरण करने वाला, परन्तु नेता ।

सूर्य, मंगल, बुध, गुरु—पर-स्त्रीगामी, देव-द्विज-भक्त, शूर-वीर, शास्त्रधारी।

सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र—चोर, निर्लज्ज, पर-स्त्रीगामी, दुर्जन, विषम अंगों वाला ।

सूर्य, मंगल, बुध, शनि—कवि, योद्धा, शस्त्र तथा शास्त्रों का ज्ञाता, प्रतापी ।

सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र—यशस्वी, महाधनी, नीतिज्ञ, सुन्दर, राज्य सम्मानित ।

सूर्य, मंगल, गुरु, शनि—यशस्वी, सेनापति, राजपूजित, सब कामों में सफल ।

सूर्य, मंगल, शुक्र, शनि—दुराचारी, धनद्रोही, कटुभावी, नीच कर्म-रत, मूर्ख ।

सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र—धनी, प्रसन्न, बुद्धिमान, स्त्री-पुत्रादि से युक्त, सफल ।

सूर्य, बुध, गुरु, शनि—उद्योगहीन, मानी, झगड़ालू, निन्दित कर्म करने वाला ।

सूर्य, बुध, शुक्र, शनि—सुन्दर, सुवक्ता, विद्वान्, सुखी, भाग्यशाली, स्त्री-पुत्रादि से सुखी ।

सूर्य, गुरु, शुक्र, शनि—लोभी, शिल्पज्ञ, सुखी, कृपण, राजा का प्रिय,

ग्रहणशील ।

चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु—विद्वान्, शास्त्रज्ञ, बुद्धिमान्, लोकपूज्य, सुखी ।

चन्द्र, मङ्गल, बुध, शुक्र—निन्दक, नीच-प्रकृति, झगड़ालू, कुलटा-पत्नी, बन्धुद्रोही ।

चन्द्र, मङ्गल, बुध, शनि—स्त्री-पुत्र-मित्रादि से युक्त, सुखी, साहसी, वीर ।

चन्द्र, मङ्गल, गुरु, शुक्र—नीतिज्ञ, साहसी, धनी, मानी पुत्रवान्, चिन्तित ।

चन्द्र, मङ्गल, गुरु, शनि—शूर-वीर, सत्यवादी, वचन-पालक, दयालु, धनी ।

चन्द्र, मङ्गल, शुक्र, शनि—मद्यपी, जुआरी, मलिन, दरिद्र, कुलटा-पत्नी वाला ।

चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र—पण्डित, दयालु, सुन्दर, चतुर, दानी, शत्रु-रहित, धनी ।

चन्द्र, बुध, गुरु, शनि—धर्मात्मा, ज्ञानी, यशस्वी, तेजस्वी, बन्धु-प्रिय, धनी ।

चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि—धनी, राजा द्वारा सम्मानित, अनेक पत्नियों वाला, नेत्र-रोगी ।

चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि—पण्डित, पर-स्त्रीगामी, धनहीन, दूसरों की सहायता करने वाला ।

मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र—धनी, दयालु, सुशील, लोकप्रिय, राजमान्य ।

मङ्गल, बुध, गुरु, शनि—शूर-वीर, पवित्र-हृदय, विद्वान्, विनम्र, परन्तु धनहीन ।

मङ्गल, बुध, शुक्र, शनि—मधुरभाषी, मल्ल, विद्या-निपुण, धनहीन, परन्तु प्रसिद्ध ।

मङ्गल, गुरु, शुक्र, शनि—धूर्त, विषयी, धनी, साहसी, विद्वान्, लोक-प्रिय, विनम्र ।

बुध, गुरु, शुक्र, शनि—मेधावी, कामी, वेद-वेदाङ्ग का ज्ञाता तथा शस्त्रविद्या-प्रिय।

पाँच ग्रहों की युति का फल

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु—दुष्ट, क्रोधी, छली, दुखी, पत्नी दुष्ट स्वभाव की या स्त्री-हीन।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र—असत्यवादी, दयालु, परसेवी, बन्धु-हीन, नपुंसकों जैसी आकृति।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि—चोर, दुःखी, बंधनादि भोगी, स्त्री-पुत्रादि से रहित।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र—माता-पिता के सुख से हीन, संगीतज्ञ, नेत्र-रोगी या जन्मान्ध।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु, शनि—पर-स्त्री गामी, आचार-विचारहीन धनहीन, द्वेषी।

सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र—धनी, यशस्वी, चतुर, राज्य द्वारा सम्मानित, लोकप्रिय।

सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शनि—कायर, परान्नभोजी, दुष्ट, ऋणी, उन्मादी, दुराचारी।

सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि—धन, सन्तान, मित्र एवं सुख से हीन, रोगी परन्तु उत्साही।

सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र, शनि—निर्भय, सुवक्ता, पण्डित, पापी, शत्रु-पीड़ित, स्त्री-प्रिय।

सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र—सुन्दर, समर्थ, यशस्वी, धनी, राजा का प्रिय, कामी।

सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शनि—रोगी, मलिन, जड़ अल्पधनी, पुत्रवान्, भिक्षुक।

सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र, शनि—दुःखी, दरिद्र, भूखा, स्थान-भ्रष्ट, रोग तथा शत्रु-ग्रस्त।

सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि—विद्वान्, विचारक, धनी, तपस्वी,

प्रसिद्ध।

सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, शनि—दयालु, धर्मात्मा, शास्त्रज्ञ, धनी, मित्र एवं स्वजन-प्रिय।

चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र—सज्जन, विद्वान्, धनी, बहुपुत्रवान्, सुखी, निष्पाप।

चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शनि—पर-सेवी, मलिन, नेत्र-रोगी, भिक्षुक, दीन, रोगी।

चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र, शनि—मलिन, कुरूप, दुष्ट, निर्धन, कठोर हृदय, नपुंसक।

चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि—दुष्ट, मलिन, अनेक शत्रु तथा मित्रों वाला, विद्वान्।

चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि—गुणी, धनी, यशस्वी, उच्चपदाधिकारी, लोकप्रिय।

मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि—पवित्र, धनी, आलसी, सुखी, दीर्घायु, राजप्रिय।

छः ग्रहों की युति का फल

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र—धन, धान्य, धर्म, विद्यायुक्त, सौभाग्यशाली, यशस्वी, अल्पभाषी, सुखी तथा अत्यन्त भोगी।

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शनि—कृपण, धनी, क्रोधी, लोभी, सुन्दर, भ्रान्तमति, राजा एवं स्त्रियों को प्रिय, ग्राम-पूज्य।

सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि—स्त्री तथा धनहीन, क्षमाशील, राजा द्वारा सम्मानित, दयालु, सुप्रसिद्ध, वेदज्ञ तथा धर्मज्ञ।

चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि—धनी, गुणी, यशस्वी, राजमान्य, विश्वप्रसिद्ध, आलसी, अनेक स्त्रियों वाला तथा पवित्र-हृदय।

सात ग्रहों की युति का फल

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि इन सातों ग्रहों की युति होने पर जातक दानी, धनी, परम तेजस्वी व राजा द्वारा सम्मानित होता है।

टिप्पणी—(1) राहु तथा केतु जिस ग्रह के साथ बैठते हैं, उसी के अनुरूप फल देते हैं।

(2) सैकड़ों वर्ष बाद राहु अथवा केतु सहित कभी-कभी 'अष्टग्रही' 'योग' भी बनता है। परन्तु 'नवग्रही योग' कभी नहीं बनता, क्योंकि राहु तथा केतु एक दूसरे से सदैव सप्तम भाव में रहते हैं। ●

मुहूर्त-विचार

यों, तो ज्योतिषीय आधार पर प्रत्येक कार्य से सम्बन्धित मुहूर्त के विषय में विचार किया जा सकता है। परन्तु यहाँ कुछ प्रमुख कार्यों से सम्बन्धित मुहूर्तों का उल्लेख किया जा रहा है, जिनके सम्बन्ध में लोग ज्योतिषी से प्रायः पूछताछ करते हैं।

यात्रा सम्बन्धी मुहूर्त

ग्राह्य-तिथियाँ—दोनों पक्षों की द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी तथा केवल कृष्ण-पक्ष की प्रतिपदा।

ग्राह्य-दिवस—सोम, बुध, गुरु, शुक्र, उत्तम रवि, मगल, शनि मध्यम।

दिशा-शूल विचार—सोमवार तथा गुरुवार को पूर्व में, सोम तथा गुरु को आग्नेय कोण में, गुरु को दक्षिण में, रवि तथा शनि को नैर्ऋत्य कोण में, रवि तथा शुक्र को पश्चिम में, मंगल को वायव्य कोण में, मंगल तथा बुध को उत्तर दिशा में तथा बुध एवं शनिवार को ईशान कोण में दिशा-शूल रहता है। दिशा शूल का पीठ पीछे तथा बाँई ओर रहना शुभ तथा अन्यत्र रहना अशुभ रहता है।

विवाह सम्बन्धी मुहूर्त

इन्हें चालू वर्ष के पञ्चाङ्ग में देखना चाहिए।

नामकरण मुहूर्त

बालक का नामकरण-जन्म के तीसरे, पाँचवें, सातवें, नवें, ग्यारहवें दिन तथा कन्या का दसवें, बारहवें, सोलहवें, अठारहवे, बीसवें दिन करना

चाहिए।

सामान्यतः दसवें दिन ही बालक अथवा बालिका का नामकरण करने की प्रथा है।

रवि, सोम, बुध तथा शुक्रवार शुभ रहते हैं।

मुण्डन-संस्कार मुहूर्त

ग्राह्य-तिथियाँ—शुक्ल पक्ष की 2, 3, 5, 7, 10, 11, 13 तथा कृष्णपक्ष की 1, 2, 3, 5, 7, 10 और 11।

ग्राह्य-दिवस—सोम, बुध, गुरु तथा शुक्रवार।

ग्राह्य-नक्षत्र अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती।

उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त

ग्राह्य-तिथियाँ—शुक्ल पक्ष की—2, 3, 5, 10, 11 तथा 12। कृष्ण पक्ष की—2, 3, 5 तथा 6—में 'मध्यम शुभ' मानी गई हैं।

ग्राह्य-नक्षत्र—अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा एवं रेवती—ये सर्वश्रेष्ट हैं। रोहिणी, आर्द्रा पुनर्वसु, आश्लेषा, पूर्वाभाद्रपदा. पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपदा, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा फाल्गुनी, अनुराधा, मूल तथा शतभिषा—ये 'मध्यम' हैं।

ग्राह्य लग्न—वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मीन। इनमें वृष, तथा कर्क 'विशेष शुभ' मानी जाती हैं।

विद्यारम्भ-मुहूर्त

ग्राह्य-तिथियाँ—शुक्ल पक्ष की 2, 5, 6, 10, 11 तथा 12।

ग्राह्य-दिवस—सोम, बुध, गुरु, शुक्र। गुरुवार सबसे श्रेष्ठ है।

ग्राह्य-नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, श्रवण और रेवती।

ग्राह्य-लग्न—वृष, मिथुन, कन्या, धनु तथा मीन।

धार्मिक-कृत्य मुहूर्त

किसी भी धार्मिक-कृत्य के लिए निम्नलिखित मुहूर्त शुभ माने गए हैं—

ग्राह्य-तिथियाँ—दोनों पक्षों की 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 12

13। कृष्णपक्ष की प्रतिपदा तथा शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा भी ग्राह्य है। कुछ विशेष अनुष्ठान अमावस्या को भी किए जाते हैं।

ग्राह्य-नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तरा भाद्रपद, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती।

ग्राह्य-दिवस—रवि, सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार।

गृह-निर्माण मुहूर्त

ग्राह्य-तिथियाँ—दोनों पक्षों की 2, 3, 5, 7, 10, 11, 12, 13। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तथा शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा भी ग्राह्य है।

ग्राह्य-दिवस—रवि तथा मंगल के अतिरिक्त अन्य सभी दिन।

ग्राह्य-नक्षत्र—रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती।

ग्राह्य-लग्न—वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, धनु तथा मीन।

गृह-प्रवेश मुहूर्त

ग्राह्य-तिथियाँ—शुक्ल पक्ष की 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11, 13 तथा पूर्णिमा। कृष्ण पक्ष की 1, 2, 3, 5, 6, 7, 8 तथा 10।

ग्राह्य-दिवस—रवि तथा मंगल के अतिरिक्त अन्य सभी दिन।

ग्राह्य-नक्षत्र—रोहिणी, मृगशिरा, तीनों उत्तरा, चित्रा, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती।

ग्राह्य-लग्न—वृष, मिथुन, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, कुम्भ तथा मीन।

शुभ मास—वैशाख, ज्येष्ठ, माघ तथा फाल्गुन। पुराने घर में प्रवेश के लिए कार्तिक, श्रावण तथा मार्गशीर्ष भी ग्राह्य है।

व्यवसायारम्भ मुहूर्त

ग्राह्य-तिथियाँ—दोनों पक्षों की 2, 3, 5, 6, 7, 8, 10, 11 तथा 13। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तथा शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा भी ग्राह्य है।

ग्राह्य-नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, अभिजित्, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपदा एवं रेवती।

14 ज्योतिष : रोग और उनकी होम्योपैथिक चिकित्सा



जन्म-कुण्डली के विभिन्न भावों में विभिन्न ग्रहों की स्थिति के कारण होने वाले रोग, लक्षण तथा उनके उपचार हेतु होम्यो-औषधियों का संक्षिप्त किन्तु उपयोगी विवरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है । होम्यो-उपचार तथा औषधियों के गुण-धर्म सम्बन्धी विशेष जानकारी के लिए होम्यो-चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकों का का अध्ययन करना चाहिए ।

मृगी रोग

यदि (1) षष्ठ अथवा अष्टम भाव में शनि-मंगल की युति, (2) अष्टम भाव में चन्द्र-राहु की युति, (3) किसी भी भाव में शनि-चन्द्र की युति तथा उस पर मंगल की दृष्टि, (4) पंचम तथा अष्टम भाव में पाप ग्रह हों तथा केतु में पापग्रह से दृष्ट बुध-चन्द्र की युति, (5) लग्न में राहु तथा षष्ठ भाव में चन्द्रमा, (6) लग्न अथवा अष्टम भाव में सूर्य, चन्द्र और मंगल की युति हो अथवा ये पापग्रह से युक्त हों, (7) केन्द्र में चन्द्र तथा शुक्र की युति हो तथा अष्टम भाव में पापग्रह हो, (8) किसी भाव में मंगल-शनि की युति हो तथा चन्द्रमा पर मंगल की दृष्टि भी हो, (9) लग्न में राहु तथा षष्ठ भाव में चन्द्रमा हो, (10) सभी पापग्रह अष्टम भाव में हों

तथा चन्द्र-शुक्र केन्द्र में हों, अथवा (11) चन्द्रमा और बुध पापग्रह से रुष्ट होकर केन्द्र में हों तथा पंचम एवं अष्टम भाव में पापग्रह हो तो जातक को मृगी रोग होता है।

होम्यो-चिकित्सा—मृगी-रोग में लक्षणानुसार निम्नलिखित होम्यो-पैथिक-औषधियों का प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

टैरेण्टुला हिस्पाना 6, 30—बहुत देर तक स्थायी अथवा बार-बार आने वाले दौरों में यह औषध लाभ करती है।

एब्सिन्थियम 1, 6—मृगी आरम्भ होने के समय सिर में चक्कर आना आँखों के सामने कोई मूर्ति सी दिखाई देना, कान से सुनाई न देना, कँपकँपी, शरीर का सुन्न जैसा होना, तत्पश्चात् अकड़न, दाँती लगना, दाँत से जीभ काटना तथा मुँह से फेन निकलना आदि लक्षणों में हितकर है।

अन्य औषधियाँ—इग्नेशिया, वेलाडोना, कैल्के कार्ब, ओपियम, एडोनिस, वर्नेलिस, एमिल नाइ, ब्यूफो, कैलिब्रोम, ऐसिड हाइड्रो, कूप्रम एसेट, फेरम सियानेटम, एस्टिरियस, जिङ्कम, हायोसियामस, सोलेनम कैरोलिन, वर्बेना, ग्लोनयिन आदि का लक्षणानुसार प्रयोग करें।

विक्षिप्तता अथवा उन्माद



यदि (1) द्वादश भाव में क्षीण चन्द्र तथा शनि की युति हो, (2) लग्न में गुरु अथवा सूर्य तथा सप्तम भाव में मंगल हो (3) लग्न में शनि तथा सप्तम भाव अथवा त्रिकोण में मंगल हो, (4) लग्न में गुरु तथा सप्तम भाव में शनि हो, (5) शुक्र कर्क लग्न में हो, (6) लग्न में शनि राहु ग्रस्त हो तथा नवम अथवा पंचम भाव में पापग्रह मंगल हो, (7) लग्न में शनि, द्वादश भाव में सूर्य तथा त्रिकोण में चन्द्र-मंगल हों, (8) लग्न अथवा त्रिकोण में सूर्य-चन्द्र हों, (9) केन्द्र में शनि और गुरु हों, (11) चन्द्र, शनि और मंगल की परस्पर युति हो अथवा दृष्टि सम्बन्ध हो अथवा (11) षष्ठ भाव में चन्द्र-मंगल की युति हो तो जातक विक्षिप्त, उन्मादी, पागल अथवा संभ्रम-चित्त वाला होता है।

होम्यो चिकित्सा—इस रोग में लक्षणानुसार निम्नलिखित होम्यो-पैथिक औषधियों का प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

प्लैटिना 30, 200—प्रसूति-गृह में, गर्भवती अथवा कुमारी स्त्रियों के कामोन्माद में हितकर है।

हायोसियामस 6, 200—सूतिकोन्माद एवं प्रेम में निराशा के कारण उत्पन्न उन्माद आदि में हितकर है। हल्के ढंग के उन्माद, विशेषकर नई बीमारी में दें।

स्ट्रैमोनियम 30, 200—यदि लज्जाशीला साध्वी-स्त्री एकाएक बहुत बकवाद कर उठे, अश्लील बातें कहे, कामोन्मत्तता प्रदर्शित करे एवं उसके शरीर से एक प्रकार की दुर्गन्ध निकल उठे तो इस औषध का प्रयोग करना चाहिए। अत्यधिक क्रोध के भाव तथा डराने वाले उन्माद में भी लाभकर है।

पैरिस-क्वाड्रिफोलिया 3—उन्माद ग्रस्त होकर लगातार बकने के लक्षण में हितकर है।

बेलाडोना 1x, 30—तीव्र प्रलाप वाले लक्षणों में इसका प्रयोग करना चाहिए।

कैनाबिस इण्डिका 1x—भ्रमपूर्ण विश्वास अथवा काल्पनिक वस्तुओं को देखना, सब कामों में 'ज्यादती' थोड़ा समय भी बहुत अधिक मालूम होना आदि में हितकर है।

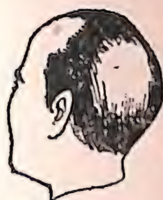
सल्फर 30—यह पुराने उन्माद रोग में हितकर है।

अन्य—फास्फोरस, कैन्थरिस, तथा विरेट्रम-ऐल्ब, पैरिस क्वाड्रि, कैन्थर, एक्टिया रेसिमोसा, कैलिफॉस, कैलब्रोम आदि का प्रयोग भी लक्षणानुसार किया जाता है।

गंज रोग

यदि (1) लग्न में मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर, कुम्भ, वृष अथवा धनु राशि हो और उस पर किसी पापग्रह की दृष्टि हो (2) यदि लग्न में वृष अथवा धनुराशि पापग्रह से युक्त हो, (3) यदि द्वितीय भाव में पापग्रह हो तथा द्वादश भाव में पापग्रह की राशि किसी पाप-ग्रह से दृष्ट भी हो अथवा

(4) कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, अथवा धनु राशि का चन्द्रमा लग्न में बैठा हो और उस पर मंगल की दृष्टि भी हो तो जातक गंजा होता है।



होम्यो-चिकित्सा—गंज रोग में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग हितकर सिद्ध होता है।

थूजा Q, 30—सिर में खुश्क, सफेद, छिलकेदार रूसी के कारण बाल झड़ते हों तो इसका प्रयोग करना चाहिए।

अस्टिलैगो Q, 3, 30—सिफलिस (उपदंश) रोग के कारण बाल झड़ते हों तो इसे दें।

फास्फोरस 30 तथा कैल्केरियाफॉस 3x—बालों के गुच्छे झड़ने पर इन्हें दें। पहले कुछ दिनों तक 'फास्फोरस' देने के बाद 'कैल्केरिया फॉस' देना चाहिए।

अन्य औषधियाँ—एसिड फॉस, नेट्रम म्यूर, आर्सेनिक आदि का लक्षणानुसार प्रयोग करना चाहिए।

नासिका-रोग

यदि (1) किसी अशुभ स्थान में शनि, मंगल तथा सूर्य की युति हो, (3) द्वादश भाव में पापग्रह, षष्ठभाव में चन्द्रमा, अष्टमभाव में शनि तथा लग्नेश पापग्रह के नवांश में हो, यदि षष्ठ भावस्थ चन्द्रमा पाप-नवांश में हो तो अथवा (4) लग्नेश और शनि अष्टम भाव में स्थित तथा पाप-नवांश में हो तो जातक को नाक सम्बन्धी कोई बीमारी—घ्राण शक्ति में कमी, पीनस रोग होने अथवा नाक कटने की सम्भावना होती है।

होम्यो-चिकित्सा—नासिका रोग में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग लाभकर रहता है—

नाक में चिपक पड़ना—एमोन कार्ब, एमोन-म्यूर, नक्स-वोमिका।

नाक से रक्तस्राव होना—ब्रायोनिया, हेमामेलिस, कैलिकार्ब, औरम, थ्लास्पी, पल्स, बैले, जेल्सि आदि।

नाक से पानी गिरना—एलियम सिपा, युफ्रेशिया, कैम्फोरा, एमोन

र्वं।

अन्य औषधियाँ—कैलिहाइड्रो, पापुलस कैन, निकोलम, सैबाडिलना, ...म म्यूर, क्रोटेलस, सिनाबेर, लैक कैनाइनम आदि लक्षणानुसार देना ...योगी रहता है।

नेत्र-रोग

यदि (1) सप्तम भाव में पापग्रह से दृष्ट मंगल-शुक्र हों तो जातक ...े 'रतौंधी' (रात में दिखाई न देना) नामक रोग होता है। (2) यदि ...ठ, अष्टम अथवा द्वादश भाव में चन्द्र-शुक्र की युति ...ो (3) सिंह लग्न में सूर्य स्थित हो, (4) किसी भाव ...ं शुक्र, चन्द्र तथा द्वितीयेश की युति हो अथवा (5) ...र्य लग्न में और बुध त्रिकस्थान में हो तो भी 'रतौंधी' ...ोती है।



यदि (1) द्वितीयेश तथा नेत्र कारक-ग्रह किसी पापग्रह से युक्त अथवा ...ृष्ट हो अथवा (2) सूर्य, चन्द्र, बुध अथवा शनि द्वादश भाव अथवा मीन ...राशि में हों तथा मंगल मध्य स्थान में हो तो जातक की दृष्टि-शक्ति क्षीण ...ोती है।

यदि (1) द्वादशभाव में शनि हो (2) द्वादश भावस्थ सूर्य किसी ...ुभ-ग्रह से दृष्ट अथवा युक्त न हो, (3) द्वादशभाव में शुक्र हो अथवा (4) ...ग्न से द्वादश भाव में मीन का सूर्य हो तो जातक के दाँये नेत्र में पीड़ा ...ोती है।

यदि (1) द्वादश भाव में मंगल हो, (2) लग्नेश अथवा अष्टमेश ...ठ भाव में हो अथवा (3) द्वादश भावस्थ चन्द्रमा किसी शुभग्रह से युक्त ...थवा दृष्ट न हो तो जातक के बाँये नेत्र में पीड़ा होती है।

यदि (1) पापग्रह से दृष्ट सूर्य नवम अथवा पंचमभाव में हो तो ...ातक की आँखें निस्तेज होती हैं (2) यदि पापग्रह से युक्त सूर्य द्वादश भाव ...थवा त्रिकोण में हो तो जातक को नेत्र-विकार होता है, (3) यदि द्वितीयेश ...ापग्रह होकर त्रिक-स्थान में हो तो जातक बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के ...त्र-रोगी होता है। (4) यदि द्वादश अथवा द्वितीय भाव सूर्य अथवा चन्द्रमा

अथवा इन दोनों ग्रहों से ही युक्त अथवा दृष्ट हों तो जातक नेत्र-रोगी होता है। (5) यदि लग्नेश अथवा अष्टमेश छठे भाव में हो तो जातक के दांये नेत्र में रोग होता है। (6) यदि लग्नेश, मंगल अथवा बुध स्व-क्षेत्री होकर किसी भाव में बैठा हो और उस मंगल पर बुध की अथवा बुध पर मंगल की दृष्टि भी हो तो जातक नेत्र-रोगी होता है। (7) यदि लग्नेश अनेक पापग्रहों से युक्त तथा शनि से दृष्टि हो तो जातक नेत्र-रोगी होता है। (8) यदि द्वितीय भाव में अनेक पाप-ग्रह हों तथा उन पर शनि की दृष्टि भी हो तो जातक नेत्र-रोगी होता है। (9) यदि लग्नेश मिथुन, कन्या, मेष अथवा वृश्चिक राशि में बैठा हो तथा बुध अथवा मंगल द्वारा दृष्ट भी हो तो जातक नेत्र-रोगी होता है। (10) यदि शुक्र लग्न अथवा अष्टम भाव में क्रूर-ग्रह द्वारा दृष्ट होकर बैठा हो तो जातक नेत्र-रोगी होता है। (11) यदि द्वितीयेश शुक्र से छठे, आठवें अथवा बारहवें भाव में बैठा हो तो जातक नेत्र रोगी होता है।

होम्यो-चिकित्सा—आँख के विभिन्न रोगों में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

बॉथ्रप्स 6, 30—सूर्योदय के बाद कुछ भी दिखाई न देना।

युफ्रेसिया 3, 30—आँखें दूखना, रोशनी की ओर न देख पाना, लगातार पानी बहना एवं आँखों की कोड़ियों का लाल हो जाना आदि में।

एल्युमिना—अस्पष्ट-दृष्टि, वस्तुओं का पीला दिखाई देना आदि।

एकोनाइट—ठण्डी हवा से आँखें आना, आँखों में अचानक प्रदाह हो जाना, आँखों का फूल जाना तथा लाल रंग की हो जाना।

आर्टिमिसिया—आँख में चोट लगना तथा उसके कारण उत्पन्न उपसर्गों में।

अर्जेण्टम नाइ—कान्जंकटिवाइटिस, आँखों में कीचड़, जलन तथा लाली होने पर।

सिमिसिफ्यूगा—आँखों की पुतली तथा भौंहों के निकट अत्यधिक दर्द तथा उसके साथ ही सिर दर्द होने पर।

ऐब्सिन्थियम—ठंड लगने के कारण आँखों के प्रदाह में।

मार्फिनम—चारों ओर अँधेरा-सा दिखाई देने पर दें, लाभ होगा।

रेडियम ब्रोम—दाईं आँख में अथवा दोनों आँखों में तेज दर्द होने पर उपयोगी रहती है।

आर्समेट—आँखों की लाली, फूली होना, जलन, सूर्य अथवा बत्ती की रोशनी सहन न होने की दशा में दें।

पैसिफ्लोरा—भयानक सिर दर्द के साथ आँखों में दर्द होने की स्थिति में लाभप्रद।

बेलाडोना—आँखों में लाली, दर्द, जलन, पानी गिरना, करकराना तथा बत्ती की रोशनी असह्य होने पर।

ग्रैफाइटिस—आँखों का कीचड़ से सट जाना तथा पलकों का फटकर उनसे रक्त गिरना, आँखों के बीच में छिछले घाव, प्रदाह, जलन, पीव जैसा पतला पदार्थ निकलना, पलकों के किनारे फूल जाना आदि में।

सिनेरेरिया मेरिटिमा—मोतियाबिन्द की सभी दशाओं में वाह्य-प्रयोग के लिए हितकर है।

कास्टिकम—मोतियाबिन्द की प्रथमावस्था में आँखों से धुंधला अथवा बादल जैसा दिखाई देने पर उपयोगी रहेगी।

सिनाबेर—कार्निया-प्रदाह तथा घाव, आँखों के भीतर, बाहर तथा भौंहों में दर्द होने पर दें।

कॉमो क्लेडिया—दाँई आँख के भीतर दर्द तथा अँधेरा दीखना।

क्रोकस—पलकों का फड़काना तथा दृष्टि-हीनता में व्यवहृत।

कैलेण्डुला—चोट-जनित कान्जंकटिवाइटिस, आइराइटिस तथा केराटाइरिस में लाभकर है।

एब्सिन्थियम—ठण्ड लगने के कारण आँखों के प्रदाह में दें।

स्टैफिसेग्रिया—अंजनहारी (गुहौरी) में ठीक रहती है।

मेजेरियम—भौंह की हड्डी तथा निचली हड्डी के दर्द में दें।

एण्टिमक्रूड—आँखों के कोनों में प्रदाह होने पर व्यवहृत।

कैलिकार्ब—ऊपरी पलक के फूलने पर इसे देकर ठीक करें।

हिपर सल्फर—आँखों के चारों ओर घाव, फुंसियां, पीब आदि में।

लैकेसिस—किसी तरह देख न पाना, आँखों के सामने छोटे-छोटे काले कीड़े जैसे उड़ते दिखाई देना, दृष्टि शक्ति का अचानक लोप हो जाना लक्षणों में लाभ करती है।

मर्क सॉल—आँख के भीतर तथा बाहर प्रदाह, पलकों का मोटा हो जाना, खाल उवेड़ने वाला तरल स्राव बहते रहने पर हितकारी।

नैप्थलाइन—मोतियाबिन्द, कार्निया की अस्वच्छता, क्षीण दृष्टि होने पर उपयोगी।

पैट्रोलियम—पलकों में प्रदाह, पपड़ी, पलकों का सट जाना, आँख के कोने में नासूर होने की दशा में देकर रोगमुक्त हुआ जा सकता है।

फास्फोरस—दृष्टि शक्ति का ह्रास, अनेक प्रकार के रंग दिखाई देना, वत्ती की रोशनी दूनी, तिगुनी, चार गुनी दीखना, धुँधली दृष्टि दूर करें।

कर्ण-रोग



यदि (1) शनि से चतुर्थभाव में बुध स्थित हो तो जातक को कम सुनाई देता है। (2) द्वादशभाव में शुक्र स्थित हो तो जातक को बाँये कान से कम सुनाई देता है। (3) यदि द्वितीय अथवा द्वादशभाव में शुक्र अथवा मंगल हो तो जातक के कान में पीड़ा होती है अथवा आँख के गड्ढे में विकार होता है। (4) यदि तृतीय एवं एकादश भाव गुरु, शनि तथा मंगल से युक्त अथवा दृष्ट हों (5) मंगल द्वितीयेश के साथ लग्न में बैठा हो अथवा (6) तृतीयेश जिस भाव में स्थित हो, उस भाव का स्वामी यदि अष्टम भाव में हो तो जातक के कानों में पीड़ा होती हैं।

यदि (1) शुक्र षष्ठेश होकर लग्न में बैठा हो और उस पर चन्द्रमा तथा पापग्रह की दृष्टि भी हो तो जातक के दाँये कान में और यदि (2) जातक का जन्म रात्रि में हुआ हो तथा बुध षष्ठ भाव में एवं शुक्र दशम भाव में हो तो जातक के बाँये कान में रोग होता है।

यदि (1) तृतीय भाव स्थित पापग्रह अथवा तृतीय भाव किसी पापग्रह से दृष्ट हो (2) यदि तृतीय अथवा एकादश भाव स्थित पापग्रह पर

शो शुभ ग्रह की दृष्टि न हो अथवा (3) लग्न में तृतीयेश एवं मंगल की ने हो तो जातक को कर्ण रोग होता है।

होम्योपैथिक-चिकित्सा—कान के विभिन्न रोग में लक्षणानुसार निम्न-लिखित औषधियों का प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

एकोनाइट—कान में अचानक दर्द एवं दप-दप होने लगने की स्थिति में उपयोगी।

एलियम सिपा—ठण्ड लगकर सर्दी के साथ कान में ऐसा दर्द होना जो गले तक फैलता हो। शिशुओं के कान में दर्द रहता हो तब दें।

ऐब्सिन्थियम—किसी प्रकार की सिर की बीमारी अच्छी होने के बाद कान में पीब हो जाने के दशा में देकर लाभ उठावें।

बिस्कम ऐल्ब—बाँये कान के बहरेपन में हितकर है।

ट्राइफोलियम—कर्णमूल के ग्लैण्ड फूलना, ग्लैण्ड खूब कड़े हो जाना तथा उनमें बहुत दर्द होना। यह कर्णमूल की एक प्रतिषेधक—औषध भी है।

बैराइटा म्यूर—खाते अथवा छींकते समय कान में कड़क कर सों-सों शब्द होना।

कास्टिकम—कान में सों-सों, भों-भों, टुंग-टुंग शब्द होना तथा भली भाँति सुनाई न देना।

बोरैक्स—कान में बहुत दिनों की पीब एवं शिशुओं के कान में घाव तथा पीव होना।

कैमोमिला—कान में दर्द, कटकटाहट होना।

प्लैण्टागो—हर प्रकार के कान के कटकटाहट पूर्ण दर्द में इसके मूल-अर्क की 3-4 बूँदें टपका देने से आराम मिलता है।

हिपर सलफर—कान में पीब होने के पहले बहुत दर्द हो तो इसे दें।

टेलूरियम—पहले कान में दर्द होकर बाद में पीब के अधिक दिनों तक स्थायी होने पर सड़ी गंध तथा मछली-धोंये जैसे पानी का स्राव निकलने पर।

कार्बो-वेज—कान में पीब अथवा खूँट होने के कारण बहरेपन में।

कैलि बाइक्रोम—कान में पीब होकर बहुत दर्द, जो कान से आरम्भ

होकर क्रमशः सिर तथा गर्दन में फैल जाता हो तथा गर्दन के ग्लैण्ड फूल जाना।

मर्क्युरियस—तीव्र दर्द एवं रक्त मिश्रित पीव के लक्षणों में।

पल्सेटिला—कान दप-दप करता हो तथा उसमें से घनी, पीली तथा कुछ हरे रंग की पीव निकलती हो।

बोरैक्स—पुराना कर्ण-रोग, गाढ़े श्लेष्मा जैसा पीव तथा कान में दर्द होने पर ठीक रहती है।

सल्फर—कान के भीतर अनेक प्रकार के शब्द होना, कुछ भी सुनाई न देना, कान के भीतर एग्जिमा होना, बहुत खुजली, कान में दुर्गन्धित पीव, बहरापन आदि में।

मूलेन ऑयल—कान में पीव होने पर इसका वाह्य-प्रयोग करें।

चिनिनम सल्फ—कान में जोरों का गुन-गुन, झों-झों आदि गर्जन जैसा शब्द तथा उसके साथ बहरापन होने पर।

स्कूकम चक—मध्य कर्ण में प्रदाह तथा रस जैसा बदबूदार स्राव निकलने पर इसका प्रयोग करें।

वाणी-दोष

यदि (1) बुध चतुर्थ, अष्टम अथवा द्वादश भाव में हो तथा चन्द्रमा से दृष्ट सूर्य चतुर्थ भाव में हो, (2) द्वितीय भाव में चन्द्र-शनि की युति हो, (3) द्वितीय भावस्थ बुध निर्बल हो तथा पापग्रह से दृष्ट भी हो, (4) द्वितीयेश कोई निर्बल शुभ-ग्रह हो और उस पर पापग्रह की दृष्टि हो, (5) षष्ठेश बुध के साथ लग्न में बैठा हो, अथवा (6) शुक्ल पक्ष का जन्म हो तथा लग्न में चन्द्रमा-मंगल की युति हो तो जातक हकलाता है।

यदि (1) बुध सूर्य के सान्निध्य में अस्त होकर कर्क, वृश्चिक अथवा मीन राशि में हो और उस पर चन्द्रमा की दृष्टि भी हो, (2) यदि राहु द्वितीय भाव में बैठा हो, (3) यदि बुध मकर अथवा कुम्भ राशि में बैठा हो अथवा (4) बुध-धनु अथवा मीन राशि में हो और उस पर शनि की पूर्ण दृष्टि भी हो तो जातक का 'कण्ठ स्वर' अच्छा नहीं होता।

होम्यो-चिकित्सा—वाणी-दोषों में निम्नलिखित औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग करने से लाभ होता है—

चैनापोडियम 3x, 6—यह स्वरलोप की उत्कृष्ट औषध है।

स्ट्रैमोनियम 30—बहुत देर तक कोशिश करने पर एकाध बात ही मुँह से निकल सके तो इस औषध के प्रयोग से लाभ होता है।

आरम 6 या नाइट्रिक एसिड 6—पारे के अपव्यवहार से उत्पन्न स्वर-लोप में इनका प्रयोग हितकर रहता है।

फाइटोलैक्का—एकदम गला बैठ जाने अथवा पुराने स्वर-भंग की यह उत्कृष्ट औषध है।

अन्य औषधियाँ—लक्षणानुसार इन औषधियों का प्रयोग भी किया जाता है—हिपर सल्फर, फास्फोरस, कार्बो-वेज, एकोनाइट, ब्रायोनिया, मर्क, कास्टिकम, स्पंजिया, डल्कामारा, फास्फोरस, बेलाडोना, कैलि-बाई, बैराइटा-कार्ब, आर्जेन्टिक एसिड, साइलिशिया, मैंगेनस, ऐण्टिम क्रूड, आर्निका, आयोडियम, जेल्सीमियम, इग्नेशिया आदि।

दन्त-रोग



यदि (1) शुक्र षष्ठ भाग में हो, (2) लग्न में गुरु तथा राहु की युति हो, (3) चन्द्रमा, राहु तथा सूर्य नीच नवांश में हो, (4) लग्न में मेष, वृष अथवा धनु राशि हो और उस पर किसी पापग्रह की दृष्टि हो, (5) यदि लग्न से सप्तम भाव में सूर्य, चन्द्र, मंगल अथवा शनि हो और उस पर किसी शुभग्रह की दृष्टि न हो अथवा (6) यदि कर्क कुम्भ अथवा वृश्चिकांश का चन्द्रमा राहु केतु के साथ चतुर्थ भाव में हो और वह किसी पापग्रह से युक्त भी हो तो जातक दन्त-रोगी होता है।

होम्यो-चिकित्सा—दन्त रोगों में निम्नलिखित औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग करना चाहिए—

एण्टिम क्रूड—दाँत खोखला हो गया हो, दर्द, कुछ खाने अथवा ठण्डा

पानी लगने से दाँत में भयंकर दर्द होने की स्थिति में देना चाहिए।

एकोनाइट—ठण्ड लगकर दाँत की जड़ का फूलना, दर्द, यन्त्रणा में लाभकारी।

कैलिफ्लोर—दाँत हिलना तथा दाँत में कुछ लगते ही पीड़ा होने पर की दशा में ठीक रहती है।

सिस्टस—मसूढ़े फूले, घाव, मुख तथा साँस में सड़ी बदबू होने पर दें।

कॉफिया—ठण्डा पानी मुँह में रखने से दाँत-दर्द घटने में देकर रोग मुक्त हों।

हैक्लालावा—मसूढ़े में घाव, नासूर, कीड़ा लगना, मसूढ़ों में सूजन के साथ दर्द, पाइरिया आदि में व्यवहृत श्रेष्ठ औषध है।

प्लैण्टैगो—हर प्रकार के दन्त-शूल मे यह दवा लाभ करती है।

कण्ठ-रोग

यदि (1) किसी भाव में तृतीयेश के साथ बुध की युति हो, (2) तृतीय भाव में कोई नीचस्थ ग्रह हो तथा षष्ठ भाव में कोई अस्तग्रह हो तथा इन दोनों पर किसी पापग्रह की दृष्टि भी हो, (3) तृतीय भाव में कोई पापग्रह हो अथवा (4) राहु, द्वितीयेश तथा तृतीयेश की युति हो तो जातक कण्ठ-रोग होता है।

होम्यो-चिकित्सा—कण्ठ रोगों में निम्नलिखित औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग-हितकर सिद्ध होता है—

एपिस—गल-नली का संकोचभाव, उसमें डंक मारने जैसा दर्द तथा गले के भीतर तथा बाहर थैले जैसी सूजन।

बैराइटा कार्ब—गलक्षत, तरल पेय के अतिरिक्त अन्य कोई भी वस्तु निगल न सके।

कास्टिकम—गले में दर्द, तनाव तथा जलन के लक्षण में।

मुख रोग

यदि (1) यदि द्वितीय भावस्थ शुभ अथवा पाप-ग्रह शत्रु क्षेत्री अथवा शत्रु-ग्रह से युक्त हो, (2) द्वितीयेश बुध, राहु अथवा केतु के साथ षष्ठ भाव

हो, (3) सूर्य तथा मंगल द्वितीय भाव में हों, अथवा (4) लग्नेश बुध के साथ मेष अथवा वृश्चिक राशि में हो तो जातक मुख-रोगी होता है।



यदि (1) मेष राशिस्थ शनि-चन्द्र लग्न में हो, (2) बुध षष्ठ भाव में हो, (3) लग्न में चन्द्रमा तथा अष्टम भाव में बुध हो, (4) मेष अथवा कर्क राशि का शुक्र लग्न में हो अथवा (5) मेष राशि में चन्द्र-शुक्र की युति हो तो जातक के मुख से दुर्गन्ध आती है।

यदि (1) लग्न अथवा अष्टम भाव में षष्ठेश और चन्द्रमा की युति हो तो जातक के मुख अथवा तालु पर व्रण होता है और यदि (2) राहु अथवा केतु से युक्त षष्ठेश लग्न अथवा अष्टम भाव में हो तो जातक के मुख में घाव होता है।

होम्यो-चिकित्सा—मुख सम्बन्धी रोगों में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियाँ हितकर सिद्ध होती हैं—

आयोडम—पारा सेवन करने के कारण मुँह से लार बहना।

मर्क्यूरियस सॉल—मुख तथा जीभ के घाव एवं उसके साथ ही मुँह से लार बहना।

बैराइटा कार्ब—मसूढ़े से रक्त स्राव, मुँह के भीतर घाव तथा जीभ की नोंक पर दर्द होने पर इसका प्रयोग करें।

हिपर, स्टैफिसेग्रिया—पारा-सेवन के कारण गले में, गाल में तथा जीभ में घाव होने पर देने से फायदा पड़ जाता है।

बोरेक्स—शिशुओं के मुख का घाव तथा मुँह के भीतर गरमी।

ऐसिड नाइट्रि—मुँह से लगातार लार गिरना, घाव में कौंचने जैसा दर्द, जीभ तथा मसूढ़े से आरम्भ होकर घाव का गले में फैल जाने की स्थिति में देना चाहिए।

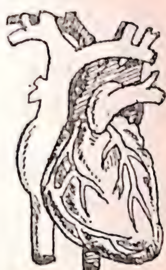
एरम ट्राइफाइलम—मुँह के घाव में बहुत दर्द, रोगी केवल नाक खोंटता रहे।

नाइट्रो म्यूर एसिड—मसूढ़े से थोड़े में ही रक्तस्राव, लार बहना, मुँह का घाव, जीभ तथा मुख में छोटे-छोटे छिले घाव होने पर उपयोगी।

अन्य औषधियाँ—गुयेको, कार्नस एसिनेटा, युपिटोरियम ऐरो, कॉंच-लीरिया, कॉरिडैलिस, रस ग्लैबरा, एसिड म्यूर, कैलिहाइड्रो, आसाई, हाइड्रोफोबिनम तथा एसिड सल्फ आदि औषधियों का भी लक्षणानुसार प्रयोग किया जाता है।

हृदय-रोग

यदि (1) पंचमेश द्वादश भाव में हो, (2) पंचमेश तथा षष्ठेश—दोनों की षष्ठ भाव में युति हो तथा पंचम अथवा सप्तम भाव पापग्रह से युक्त हो, (3) चतुर्थ भाव में गुरु, सूर्य तथा शनि की युति हो, (4) चतुर्थ भाव में मंगल-गुरु-शनि हों, (5) षष्ठेश पापग्रह से युक्त होकर चतुर्थ भाव में स्थित हो, (6) वृषराशि का चन्द्रमा पापग्रह एवं शत्रु-ग्रह से युक्त हो, (7) पंचम भाव में पापग्रह हो तथा पंचमेश दो पापग्रहों के मध्य एवं पापग्रहों से दृष्ट भी हो, (8) चतुर्थ भाव में पापग्रहों तथा चतुर्थेश पापग्रह से युक्त तथा पापग्रहों के बीच में हो, (9) चतुर्थेश द्वादश भाव में द्वादशेष के साथ हो अथवा नीच, शत्रुग्रही या अस्तंगत हो अथवा (10) जन्म-राशि में शनि, मंगल, राहु अथवा केतु हो तो जातक को हृदय रोग होता है।



यदि (1) चतुर्थभाव में राहु हो एवं लग्नेश निर्बल तथा पापग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो, (2) लग्नेश शत्रु क्षेत्र में अथवा नीच राशि में हो, मंगल चतुर्थ भाव में हो तथा शनि पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो, (3) सूर्य चन्द्र और मंगल शत्रु-क्षेत्री हो, (4) चन्द्रमा-मंगल अस्तंगत, पापग्रह युक्त तथा शुभग्रह से रहित हो अथवा (5) अस्तंगत, पापग्रह युक्त एवं शुभग्रह से रहित चन्द्र-मंगल सप्तम भाव में हो तो जातक को 'हृदय-शूल' होता है।

यदि (1) शनि तथा गुरु क्रूर ग्रहों से पीड़ित अर्थात् दृष्ट हों, (3) शनि अथवा गुरु षष्ठेश होकर चतुर्थभाव में हो और वे पापग्रह से युक्त अथवा दृष्ट भी हों, (3) तृतीयेश राहु अथवा केतु के साथ हो अथवा (3) चतुर्थ भाव

ंगल, शनि और गुरु हों और वे क्रूर-ग्रहों से दृष्ट भी हों तो जातक को कम्प' आदि रोग होते हैं ।

होम्यो-चिकित्सा—हृदय सम्बन्धी रोगों में लक्षणानुसार निम्नलिखित षधियों का प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

एविस—हृत्पिण्ड में तीक्ष्ण दर्द, एवं हृत्पिण्ड का तेजी से धड़कने, दशा होने पर लाभ करती है ।

कॉल्चिकम—वात दर्द का हृत्पिण्ड में फैल जाना ।

सिमिसिफ्यूगा—बाँये स्तन में दर्द, ऐंजाइना—पेक्टारिस होने पर ।

यूफॉर्बियम—हृत्पिण्ड की क्षीणता, हृत्पिण्ड के भीतर जैसे कोई चिड़िया फड़फड़ा रही हो, असम स्थूल नाड़ी की गति मिनट में 120-125 र होने पर देना चाहिए ।

लैग कार्ब—छाती में दर्द, श्वास-कष्ट तथा रक्तमिश्रित बलगम में दें ।

आर्सेनिक—हृत्पिण्ड का काँपना, सामान्य उत्तेजना से ही छाती धड़कना तथा दुर्बलता में उपयोगी ।

आर्स आयोड—हृत्पिण्ड का बढ़ना, छाती का धड़कना, दमा जैसा दबाव होने को स्थिति में लाभ करती है ।

ब्रोमियम—हृत्पिण्ड की वृद्धि, थोड़ा चलने अथवा उठकर बैठते ही छाती धड़कना, नाड़ी धीर, गतिशील, मोटी तथा कठिन होने पर दें ।

स्क्राफुलेरिया—छाती के दूसरे पंजर के नीचे दर्द होने पर ।

कैल्केरिया आर्स—दर्द, छाती धड़कना, श्वासकृच्छता, नाड़ी की गति तेज होना तथा स्त्रियों के ऋतु बन्द होने की आयु में छाती धड़कना ।

कोका—अत्यधिक छाती धड़कना, श्वास-कष्ट, पेट में अत्यधिक वायु-संचय की दशा में व्यवहार में लावें ।

ग्लोनयिन—अत्यधिक छाती धड़कना, जिसकी धड़कन अँगुलियों की नोंक तक अनुभव हो तब हितकारी ।

पियोनिया—बाँई छाती में कोंचने जैसा दर्द ।

लाइकोपोडियम—खाना खाने के बाद छाती में धड़कन होना ।

फाइजस्टिग्मा—भयंकर रूप से छाती धड़कना, जिसका सिर, ललाट

तथा गले में भी अनुभव हो ।

लेपिडियम—छाती के चारों ओर कड़े कसाव का अनुभव, हृत्पिण्ड में जैसे कोई छुरी चला रहा हो ।

लैकेसिस—हृत्पिण्ड में दवाये रखने जैसा दर्द, मानो दम घुट रहा हो । नींद आने पर अथवा नींद आने के बाद रोग-लक्षणों में वृद्धि । सो नहीं सकता, बैठा रहता है ।

थिया—हृत्पिण्ड के स्थान में दर्द, छाती अत्यन्त धड़कने की दशा में देकर ठीक हुआ जा सकता है ।

क्षय रोग (तपेदिक)

यदि (1) मंगल और बुध षष्ठभाव में हों और वे चन्द्रमा तथा शुक्र से दृष्ट हों एवं बुध नवांश में भी हो, (2) चन्द्रमा यदि शनि तथा मंगल के बीच लग्न, चतुर्थ, षष्ठ अथवा अष्टम भाव में हो तथा सूर्य मकर राशि में हो, (3) चन्द्रमा दो पापग्रहों के बीच हो तथा शनि सप्तम भाव में हो, (4) शनि तथा चन्द्रमा पर अथवा शनि युक्त चन्द्रमा पर मंगल की दृष्टि हो, (5) शनि युक्त चन्द्रमा सप्तमभाव में दो पापग्रहों के बीच में हो, (6) शनि और मंगल की षष्ठभाव में युति हो तथा वे सूर्य एवं राहु से दृष्ट हों तथा शुक्र से युक्त अथवा दृष्ट न हों, (7) मंगल युक्त चन्द्रमा लग्नेश से दृष्ट हो, (8) सूर्य एकादश भाव में, शनि पंचम भाव में तथा अन्य पापग्रह अष्टम भाव में हो, (9) सूर्य और चन्द्रमा एक ही राशि में हों, (10) सूर्य कर्क राशि में तथा चन्द्रमा सिंह राशि में हो, (11) गुरु छठे अथवा आठवे भाव में हो (12) लग्नस्थ सूर्य पर मंगल की दृष्टि हो, (13) षष्ठ भाव पर शनि की पूर्ण दृष्टि हो, (14) लग्नेश से युक्त चन्द्रमा षष्ठ भाव में बैठा हो, (15) बुध कर्क राशि में हो, (16) चतुर्थ अथवा पंचम भाव में राहु-मंगल की युति हो अथवा (17) षष्ठेश या सप्तमेश के साथ केतु का युति अथवा दृष्टि सम्बन्ध हो तो जातक को क्षय-रोग होता हैं ।

होम्यो-चिकित्सा—क्षय, तपैदिक, यक्ष्मा अथवा टी. बी. नामक रोग में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

रोग की प्रथमावस्था में—हिपर तथा स्पांजिया—इन्हें पर्याय-क्रम से दिन में 2 बार दें तथा लक्षणानुसार—कैल्केरिया-फास, स्टैनम, स्टैनमआयोड, हिपर तथा थेरिडियम का प्रयोग करें।

रोग की बढ़ी हुई दशा में—इन औषधियों को लक्षणानुसार दें—आर्स-आयोड, कार्बो-वेज, कार्बो-एनि, बैसिलिनम, कैप्सिकम, स्टैनम आयोड, ड्रासेरा तथा चायना।

फेफड़ों में पीव पड़ जाने पर—कार्बो, हिपर, लैके, ऐसिड नाइ, सल्फ, लाइको, साइलि औषधियाँ लाभ करती हैं।

अन्य औषधियाँ—ड्रासेरा, सेलिनियम, स्पांजि, आर्स-सल्फ-फ्ले, मैंगनम, एकालिफा इण्डिका, ऐसिड नाइट्रिक, फेरम आयोड, क्रियोजोट, मैंगेनम, नैप्थलाइन, ट्रिलियम, बैलसयम, एलियम सैट, कैल्केरिया हाइको-फॉस, एण्टीमॉनी आक्साइड, मायोसॉटिस तथा सौलिडेगो आदि औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग करना चाहिए।

उदर-रोग

यदि (1) तृतीय भाव में क्रूर ग्रह हो (2) तृतीयभावस्थ गुरु क्रूर ग्रह से युक्त हो, (3) लग्न में चन्द्रमा तथा अष्टम भाव में शनि हो, (4) लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो (5) अष्टमेश निर्बल हो, अष्टम भाव पापग्रह से युक्त हो तथा उस पर पापग्रह की दृष्टि भी हो, (6) लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो, (7) षष्ठेश तथा द्वादशेश एक दूसरे के भाव में बैठे हों, (8) लग्न में राहु अथवा पापग्रह हो तथा अष्टम भाव में शनि हों, (9) लग्न में मंगल हो तथा षष्ठेश निर्बल हो, (10) चन्द्रमा अथवा शुक्र षष्ठ अथवा अष्टम भाव में हो, (11) षष्ठ भाव में शुक्र तथा चन्द्रमा की युति हो, (12) मंगल पंचम भाव में हो, (13) षष्ठ भाव से शनि का कोई सम्बन्ध हो, (14) शुक्र-शनि से अष्टम अथवा षष्ठ भाव में पापग्रह हो तथा अष्टमेश और षष्ठेश सप्तम भाव में हो, (15) षष्ठभाव में चन्द्र-गुरु की युति हो अथवा (16) सप्तम भाव में राहु अथवा केतु हो तो जातक को मंदाग्नि तथा अजीर्ण आदि रोग होते हैं।

यदि (1) शुक्र किसी पापग्रह युक्त से अथवा दृष्ट होकर सप्तम भाव में बैठा हो, (2) चन्द्रमा पापग्रह से युक्त अथवा दृष्ट होकर षष्ठ भाव में

बैठा हो तथा शुक्र सप्तम भाव में हो, (3) द्वितीय भाव में शनि अथवा राहु हो, (4) लग्न में राहु और बुध तथा सप्तम भाव में मंगल और शनि हों, (5) शुक्र छठे अथवा सातवें भाव में हो, (6) लग्न में राहु और बुध तथा सप्तम भाव में मंगल और शनि हों, (7) शनियुक्त चन्द्रमा पर मंगल की दृष्टि हो अथवा (8) धनाभाव में राहु, सूर्य अथवा शनि हो तो जातक को अतिसार अथवा संग्रहणी रोग होता है।

यदि (1) शनि पापग्रह से युक्त अथवा दृष्ट होकर सप्तम भाव में बैठा हो, (2) पापग्रह से युक्त अथवा दृष्ट चन्द्रमा षष्ठ भाव में हो एवं शनि सप्तम भाव में हो, (3) शनि सप्तम भाव में अथवा षष्ठ भाव में हो, (4) लग्नेश तथा षष्ठेश की चन्द्रमा के साथ युति हो, (5) व्ययेश षष्ठ भाव में तथा षष्ठेश व्यय भाव में हो अथवा (6) राहु अथवा शनि पंचम भाव में हो तो जातक को गुल्म-रोग होता है।

यदि (1) शनि कर्क राशि में तथा चन्द्रमा मकर राशि में हो, (2) सूर्य चन्द्र एकादश भाव में तथा राहु लग्न में हो अथवा (3) चन्द्रमा लग्न में और शनि सप्तम भाव में हो तो जातक को जलोदर, वायुमूल अथवा मंदाग्नि आदि रोग होते है।

यदि (1) चन्द्रस्थ राशीश तथा षष्ठेश पर क्रूर ग्रह की दृष्टि हो, (2) निर्बल तथा शत्रु-क्षेत्री शनि चतुर्थ भाव में हो, (3) पंचम भाव में शनि-चन्द्र की युति हो, (4) चन्द्रमा षष्ठेश हो और वह क्रूर अथवा पापग्रह से दृष्ट तथा शुभग्रह से अदृष्ट हो, (5) लग्नेश सप्तम भाव में हो और वह क्रूर ग्रह से दृष्ट तथा शुभग्रह से अदृष्ट हो, (6) चन्द्रमा लग्नेश अथवा सप्तमेश होकर पापग्रह से दृष्ट हो, (7) चन्द्रमा शनि-मंगल के बीच में हो तथा सूर्य मकर राशि पर हो, (8) षष्ठ अथवा अष्टम भाव में चन्द्र-शनि की युति हो, (9) चन्द्रमा पंचम भाव में हो, (10) शनि लग्नेश होकर लग्न में बैठा हो तथा पापग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो एवं शनि लग्नेश होकर क्रूर ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक को 'प्लीहा रोग' होता है।

यदि (1) चन्द्र-मंगल की षष्ठ भाव में युति हो अथवा (2) शनि

गुलिक से दृष्ट हो तथा सूर्य-मंगल-केतु के साथ द्वितीयेश भी हो तो जातक को 'पाण्डु' (पीलिया) रोग होता है।

यदि (1) सप्तम भाव में सूर्य, मंगल तथा शनि की युति हो, (2) छठे अथवा आठवे भाव में मंगल अथवा शनि तथा तीसरे-चौथे भाव में पापग्रह से पीड़ित सूर्य हो तथा चन्द्रमा सिंह राशि में हो, (3) तृतीय भाव में तीन दुष्ट-ग्रह हों, (4) छठे भाव में चन्द्र, मंगल तथा सूर्य की युति हो, (5) षष्ठभाव में सूर्य-चन्द्र की युति हो, (6) सिंह राशि का शुक्र केन्द्र अथवा त्रिकोण में हो, तथा गुरु तृतीय भाव में हों, (7) शनि-मंगल छठे अथवा बारहवें भाव में हों (8) एकादशेश तृतीय भाव में हो अथवा (9) सिंह राशिस्थ चन्द्रमा पापग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक को शूल रोग होता है।

होम्यो-चिकित्सा—विभिन्न प्रकार के उदर-रोगों में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

पेट फूलना—कार्बो-वेज, लाइकोपोडियम, चायना, एसाफिटिडा, रैफेनस, कैलिकार्ब, नक्स-वोमिका तथा कालोसिन्थ।

खाई हुई वस्तु का पेट में जाते ही हवा बन जाना—कार्बो-वेज, कैलि-कार्ब, लाइको तथा नक्स-मस।

पाकस्थली में अम्ल-संचय—नक्स, आइरिस, एसिड सल्फ तथा रोबिनिया।

खाने-पीने के बाद पेट में दर्द—स्टैफिसेग्रिया।

स्पर्श-सहन न होने वाला पेट दर्द—आर्सेनिक, बैलाडोना, कैलिबाइ, फास।

पाकस्थली का क्षत—अर्जेण्ट, आर्स, हाइड्रैस्ट, कैलि बाइ, फास, सैम्बु।

पाकस्थली तथा अन्त्र-वृद्धि—जेनेथोरिया एपिफोलिया दें।

अजीर्ण, बदहज्मी—ऐसिड फ्लोर, एबिस नाइग्रा, ऐलनस, कार्बो एनि, बेलिस पिरेनिस, ब्रॉयन, चायना, साइक्लैमेन, फेरम आयोड, ग्रैफाइटिस,

हिपर सल्फर, क्रियोजोट, हाइड्रैस्टिस, कैलि-बाइ. नक्स मस्केटा, लाइकोपोडियम, मैग-कार्ब, नेट्रम-कार्ब, फेरम पिक्रिक, नक्सवोमिका, पल्सेटिला, सिपिया, सल्फर, नेट्रम-सल्फ, एपिफेगस आदि दवाएँ लक्षणानुसार देना चाहिए।

अरुचि में—कॉल्चिकम ठीक दवा है।

अम्लरोग—ऐसिड लैक्टिक, ऐसिड सल्फ, ऐसिड सैलिसाइलिक, फेरम सल्फ, फेरम टार्टरिक, मैग्नेशिया कार्ब, नेट्रम फास, नक्स-वोम, रोबिनिया, आइरिस वर्स, लाइको, हिपर-सल्फ उपयोगी।

चूल के शूल का दर्द—ऐसिड हाइड्रो, एबिस, एसिड आक्जैलिक, कॉक्युलस, आर्निथोगैलम, ऐट्रोपिया, लैकेसिस दें।

अन्त्र-प्रदाह—बेलाडोना, लैकेसिस लाभ करती है।

आमवात—बोविस्टा,डल्कामारा, क्लोरैल, एपिस, कोपेवा, अर्टिका युरेन्स, हाइड्रैस्टिस, नेट्रमम्यूर देने से फायदा पड़ जाता है।

पेचिस—आर्ज नाइ, ऐसिड कार्बोल, कैप्सिकम, कोलोसिन्थ, ओपियम, ड्रासेरा, फेरम फास, फेरम म्यूर, कैलि फ्लोर, लैकेसिस, नक्स-वोम।

उदरामय (दस्त)—आइरिस वर्स, पोडोफाइलम, ऐबि सिन्थियम, एपिस, एण्टिम टार्ट, ऐलो, हाइड्रैस्टिस, नेट्रम म्यूर, ऐसिड म्यूर, आर्निका, आर्स आयोड, ऐसिड फास, बोरैक्स, बोविस्टा, ब्रायोनिया, चेलिडोन, बैप्टीशिया, चायना, फेरम मेट, आर्सेनिक, पल्सेटिला, पेट्रोलियम, फेरम फास, क्रोटन, गैम्बोजिया, ग्रैफाइटिस, जेल्सीमियम, नक्स मस्केटा, इग्नेशिया, आयोडम, इपिकाक आदि।

संग्रहणी—पेट्रोलियम, कैलिकार्ब, मर्क्युरियस, ओलियम जेकारिस, प्रूनस, पल्सेटिला, सल्फर, लैकनैन्थिस, आयोडोफार्म, पालिगोनम, सैनिक्युला, एरिस्टोलोचिया आदि लाभप्रद औशधियाँ हैं।

वायु गोला में—चायना, पल्सेटिला या एपिस देनी चाहिए।

पेट में वायु जमना—मैग म्यूर, थिया, लाइको, रैफेनस, कार्बो, ओपि, चायना, एसाफिटिडा, एब्सिन्थियम आदि दें।

वमन तथा मिचली—काल्चिकम, इपिकाक, एण्टिम टार्ट, आर्स, बिस्मथ, क्रोटन, जिंकम, फास्फोरस, सिकेल, कैल्केरिया, पल्सेटिला, इथूजा, पोडोफाइलम, क्रियोजोट, इग्नेशिया, ऐसिड सल्फ आदि लाभप्रद रहती हैं।

डकारें आना—आर्निका, स्टैनम, कालिचकम, लाइको, नैट फास, रोबिनिया, एसि सल्फ, कार्बो-वेज, चायना के व्यवहार से रोग-मुक्ति सम्भव है।

प्लीहा-वृद्धि—एसिड सल्फ, नेट्रम म्यूर, एरानिया, आर्सेनिक, सियानोथस, चायना, फेरम आर्स, यूकैलिप्टस, एण्डर सोनिया, लूफा बिण्डल, आर्स आयोड, आयोडम, हिलिऐन्थस, एकोनाइट, आर्निका, कार्बो-वेज, नक्स-वोमिका, एगारिकस, वैलि-ब्रोम आदि देकर निदान करें।

लिवर के रोग—ऐनन्थिरस, आयोड, एसिड म्यूर, एमोन म्यूर, फॉस, लौरोसि, एपिस, आर्स, ऐपोसाइनम, एलो, ब्रायोनिया, चेलिडोन, लाइको, जुण्टलैन्स सिनेरेरिया, क्रोटेलस, फॉस्फोरस, पॉडोफाइलम, लैकेसिस, लैप्टेण्ड्रा, मैग्नेशिया म्यूर, टिलिया, मक्युरियस सॉल, नेट्रम सल्फ, कॉलेस्टेरिनम, नक्स वोमिका, ऐमोन बेन्ज आदि उपयोगी दवाएँ हैं।

पाण्डु या कामला—ऐकोनाइट, कैमोमिला, मर्क, नक्सवोम, हाइड्रैस्टिस, कैल्के कार्ब, बार्बेरिस, डिजिटेलिस, लैप्टेण्ड्रा, एसिड-फास, डलिकस आदि देना चाहिए।

यकृत्-प्रदाह—चेलिडोनियम, कार्डुयम-मेरियानस, मर्क, नाइट्रि-एसिड, एगरिकस, फास्फोरस, आर्स, चायना, ब्रायोनिया, सैंबाडिल्ला, सल्फर, हिपर-सल्फर, पल्सेटिला आदि।

पेट में शोथ—क्रोटन टिग, आर्स, एसिड नाई।

पाकाशय-प्रदाह—आर्सेनिक, हाइड्रेस्टिस, इपिकाक, पल्सेटिला, कैम्फर, ऐण्टिम क्रूड, मर्ककोर, एकोनाइट, थूजा, फास्फोरस, वेलाडोना, कैन्थरिस, कैम्फर, हायोसायमस, आर्जनाई, बिस्मथ, मिलिलफोलियम, मर्क-सोल, ब्रायोनिया, सल्फर आदि।

पाकस्थली में घाव—कैलि-बाई, क्रियोजोट, आर्सेनिक, हाइड्रैस्टिस आदि दवायें आवश्कतानुसार दें।

उक्त औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग करना चाहिए।

विशेष—औषध लक्षणों के लिए 'होम्योपैथिक मेटेरिया मेडिका' का गम्भीर अध्ययन करें।

वात-रोग

यदि (1) षष्ठ भावस्थ चन्द्रमा पापग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो, (2) द्वितीयेश के साथ गुरु द्वितीय भाव में बैठा हो, (3) लग्न में गुरु तथा सप्तम भाव में शनि अथवा मंगल हो, (4) शनि-मंगल का त्रिकोण योग हो, (5) द्वितीय भावस्थ शनि पर भाव-ग्रह की दृष्टि हो, (6) षष्ठ भावस्थ चन्द्रमा कूर ग्रह से दृष्ट तथा क्रूर-नवांश गत हो, (7) तृतीयेश जिस भाव में बैठा हो, उस भाव का स्वामी यदि अष्टम भाव में हो, (8) क्षीण चन्द्रमा तथा शनि द्वादश में हो (9) लग्नेश तथा षष्ठेश शनि से युक्त हों (10) मंगल सप्तम, नवम अथवा पंचमभाव में हो तथा शनि लग्न में हो, (11) लग्न, सप्तम अथवा नवम भाव में मंगल, शनि तथा चन्द्रमा हो, (12) लग्नेश लग्न में तथा शनि षष्ठभाव में हो, (13) लग्नस्थ चन्द्रमा पापग्रह से युक्त तथा पापग्रह से दृष्ट भी हो, (14) शनि चतुर्थ भाव में अथवा लग्न में हो, (15) चन्द्रमा किसी पापग्रह से युक्त अथवा दृष्ट होकर अष्टम भाव में बैठा हो, (16) लग्नेश गुरु का शनि से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध हो, (17) लग्नेश गुरु की मंगल से युति हो, अथवा (18) लग्नेश और मंगल त्रिक में हों तो जातक को वात-रोग होता है ।

यदि (1) सूर्य, चन्द्र और शनि—तीनों एक साथ षष्ठ अथवा अष्टम भाव में हों अथवा (2) तृतीय भाव में पापग्रह हो तो जातक को बाहु-पीड़ा अथवा बन्धु-पीड़ा होती है ।

होम्यो-चिकित्सा—वातरोगों में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग करना चाहिए—

आर्टिका यूरेन्स Q—इसे 5 बूँद की मात्रा में गरम जल के साथ 4-5 घण्टे के अन्तर से 2-4 बार सेवन करायें । यह गठिया वात में हितकर है ।

एब्रोटेनम—कंधे, कलाई, एड़ी का वात, रोगाक्रान्त-स्थान फूलने के पहले दर्द तथा आक्रान्त स्थान से दर्द के छाती में जाने के लक्षणों में उपयोगी है ।

एण्टिम क्रूड—नया वात-रोग, अँगुलियों का आक्रान्त होना और उसके साथ पेट की गड़बड़ी में लाभकर है।

कॉल्चिकम—एक सन्धि से दूसरी सन्धि में जाने वाला, चलता-फिरता दर्द, गठिया वात का छाती पर आक्रमण करना।

एसोन म्यूर—वाताक्रान्त-स्थान में खींच रखने जैसा दर्द।

एसिड बैन्जो—प्रमेह का स्राव बन्द होने से उत्पन्न वातरोग में।

जैकारण्डा—प्रमेह-जनित वात, दाँये घुटने का वात।

ऐसिड लैक्टिक—कलाई, कोहनी तथा अँगुलियों आदि की सभी गाँठों का रोगाक्रान्त होना। गाँठों में पहले प्रदाह होकर, बाद में उसका वातरोग में परिणित हो जाना वा गाँठों तथा सन्धियों के वॉत में हिलने-डुलने पर दर्द बढ़ना।

ऐंगस्टुरा—दोनों घुटनों की गाँठों तथा प्रत्यंगों की गाँठों के भीतर मर-मर शब्द होना। गाँठ तथा पेशी कड़ी एवं जकड़ी हुई रहना।

ब्रायोनिया—घुटने तथा अन्य स्थानों में वात। रोगाक्रान्त-स्थान कड़ा, लाल तथा चमकदार, गाँठों का फूलना तथा गरम होना। फाड़ डालने जैसा दर्द, हिलने-डुलने पर दर्द में वृद्धि। पसीना अधिक आना।

रेडियम—खड़े होने अथवा सीधा होकर बैठने पर तथा हिलने-डुलने पर दर्द का घटना। नितम्ब, कमर, सभी प्रत्यंगों तथा गाँठों में दर्द। रात्रि के समय बढ़ना। ब्रान्कोइटिस रोग के साथ वात। कमर में दर्द।

कास्टिकम—रोगाक्रान्त स्थान सुन्न तथा कड़ा प्रतीत हो। हाथ-पाँवों का टेढ़ा-मेढ़ा, छोटा तथा कड़ा हो जाना।

कालोसिन्थ—दर्द कम एवं रोगी-स्थान पर कड़ेपन तथा जकड़न का भाव न होना।

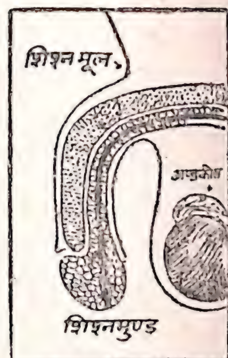
फेरम मेट—बाँये कंधे तथा सन्धि का वात, जो कोहनी तक फैलता हो तथा उसके कारण अँगुलियाँ एवं हाथ को हिलाना सम्भव न हो सके।

गुयेकम—नया वात रोग तथा उसकी प्रदाह-यन्त्रणा, हाथ, कंधा, कमर, एड़ी की गाँठ, सिर, गर्दन, सिर की खोपड़ी में वात का दर्द, नये वात में घुटने फूले हुए। घुटने का प्रदाह।

अन्य-औषधियाँ—वर्बेरिस, इलाटिरियम, लीडम, इक्थियोलम, एस्क्लिपियस, एपोसाइनम एण्ड्रोसि, एमोन फॉस, रसटॉक्स, कैलिहाइड्रो, एस्टिरियस रूब्रम, कैलिमया, मैग कार्ब, पैट्रोलियम, फाइटो लैक्का, रोडोडेण्ड्रन, डैफ्नी इण्डिका, फार्मिका आदि औषधियों का भी लक्षणानुसार प्रयोग किया जाता है।

प्रमेह एवं वीर्य-विकार

यदि (1) लग्न में गुरु तथा सप्तम भाव में मंगल हो, (2) पंचम भाव में सूर्य, शनि तथा शुक्र की युति हो, (3) सूर्य लग्न में हो तथा सप्तम अथवा दशम भाव स्थित मंगल शुक्र से युक्त अथवा दृष्ट हो, (4) लग्नेश शुक्र तथा सूर्य की युति हो, (5) दशम भावस्थ मंगल-शनि से युक्त अथवा दृष्ट हो, (6) षष्ठेश अथवा सप्तमेश द्वादशेश के साथ हो और वे शनि से दुष्ट भी हो अथवा (7) शुक्र किसी पाप-ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो अथवा पापग्रह की राशि में हो तो जातक को प्रमेह अथवा वीर्य-विकार सम्बन्धी कोई रोग होता है।



होम्यो-चिकित्सा—प्रमेह तथा वीर्य-विकारों में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

मूत्राशय-प्रदाह—कैन्थरिस, एकोनाइट, डल्कामारा लक्षणानुसार दें।

मूत्राधिक्य—स्कुइला, कैलि कार्ब, कार्लस बाड, इग्नेशिया, एसिड-फास, कास्टिकम, ऐसेटिक-एसिड, नक्स-वोमिका आदि लक्षणानुसार दें।

पेशाब का अपने आप निकल जाना—फेरम-फास, बेलाडोना, कास्टि-कम, कोनायम, सिपिया, कैन्थरिस, जेलसिमियम आदि लक्षणानुसार दें।

मूत्रकृच्छ्रता—स्पिरिट कैम्फर 2-4 बूंद चीनी या बताशे के साथ 10-15 मिनट के अन्तर से दें (यदि जलन और तकलीफ के साथ अचानक ही मूत्रकृच्छ्रता हुई हो)

मूत्राशय की पथरी—लिनियम कार्ब 3x विचूर्ण, या 30 नित्य चार बार सेवन करने से छोटी पथरी गल जाती है।

अन्य लक्षणों में—लाइको, कक्कस-कैक्टाई, एसिड-फास, ग्रेफाइटिस, चिनियम सल्फ, बार्बेरिस-व्लगेरिस, सिपिया, सार्सापैरिला, नाइट्रो-म्यूर एसिड, आक्जैलिक एसिड आदि का प्रयोग किया जाता है।

धातु-दौर्बल्य—एसिड फास, चायना, कैलिफास, कैलिब्रोम, पिकरिक एसिड, कोनायम, ऐग्नस कैक्टस, बेलिस पेरेनिस, बैराइटा कार्ब, थूजा, फास्फोरस, कैन्थरिस, कैल्के कार्ब, लाइकोपोडियम, प्लैटिना, नक्सवोम आदि लक्षणानुसार देनी चाहिए।

हस्तमैथुन जन्य-शुक्रक्षय में—पुरुषों के लिए कैन्थरिस 6 तथा स्त्रियों के लिए 'प्लाटिना 6' देनी चाहिए।

स्वप्नदोष—बैराइटा-कार्ब 6, 30 लाभ करती है।

शीघ्रपतन—फास्फोरस 6, 30, कैल्के-कार्ब 6, लाइकोपोडियम 200—इन्हें लक्षणानुसार दें।

सूजाक (मूत्रकृच्छ)

यदि (1) षष्ठभावस्थ जलतत्व वाली राशि में चन्द्रमा बैठा हो, (2) षष्ठेश जलतत्व वाली राशि में बैठा हो और उस पर बुध की दृष्टि हो, (3) षष्ठेश पापग्रह से मुक्त होकर नवमभाव में बैठा हो, (4) षष्ठेश द्वादशेष के साथ कहीं भी बैठा हो और उस पर शनि की दृष्टि भी हो, (5) सप्तमभावस्थ मंगल पापग्रह से मुक्त अथवा दृष्ट हो, (6) सप्तमभाव में शनि अथवा राहु हो, (7) लग्न में तृतीयेश के साथ मंगल-बुध हो अथवा (8) षष्ठेश और मंगल की युति हो तो सूजाक (मूत्रकृच्छ) आदि गुप्त-रोग होते हैं।

होम्यो-चिकित्सा—सूजाक में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग करें।

प्रथमावस्था में—कैन्थरिस, एकोनाइट, कैनाबिस सैटाइवा, कैनाबिस इण्डिका, कोपैवा, टसिलेगो, कैप्सिकम, पेट्रोसेलि तथा थूजा का लक्षणानुसार प्रयोग करें।

प्रथमावस्था के बाद वाली अवस्था में—हाइड्रैसिस, कैलि, मर्क-सॉल, क्लिमे, वैरोस्मा, कोनियम, डिजिटेलिस, मर्क कॉर, थूजा, पल्स, कैलि आयोड, सिपि, नेट्रम सल्फ, मेडोरिन, सल्फर, हिपर, साइलि तथा अर्जेण्ट-मेट का लक्षणानुसार प्रयोग करें।

मूत्रनली में घाव होने पर—ऐसिड नाइट्रिक का व्यवहार करें।

रोग की पुरानी अवस्था में—हाइड्रैस्ट, सिपि, एल्युमेन, सल्फर, पल्स, कैल्केरिया फास तथा नेट्रमम्यूर का लक्षणानुसार प्रयोग करें।

आतशक (उपदंश) रोग

यदि (1) शुक्र षष्ठभाव में हो अथवा (2) चन्द्रमा बुध और लग्नेश—ये तीनों राहु अथवा सूर्य के साथ हों अथवा मंगल या शनि के साथ हों अथवा सूर्य के नवांश में हों तो जातक को उपदंश (गर्मी या आतशक) रोग होता है।

होम्योपैथिक चिकित्सा—आतशक-रोग में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियाँ लाभ करती हैं—

प्रथमावस्था में—मर्क सॉल, मर्क कार, एसिडनाइ, सिफिलिनस, आर्स हाइड्रोजेन आदि लक्षणानुसार दें।

द्वितीयावस्था में—ऐसिडनाइ, हिपर, कैलिबाइ, मर्कसाल आदि।

तृतीयावस्था में—आरम मेटालिकम, आरमम्यूर, कैलिबाइ, कैलि-क्लोर, मर्क सल्फ, मर्क-बिन-आयोड आदि का लक्षणानुसार प्रयोग करना चाहिए।

नपुंसकता

नपुंसकता (1) जन्मजात तथा (2) बाद में नपुंसक हो जाना—इन दो प्रकार की होती है। जन्मजात-नपुंसक भी दो प्रकार के होते हैं—(1) सहवास के अयोग्य तथा (2) सन्तानोत्पादन के अयोग्य। सहवास के अयोग्य नपुंसक की चिकित्सा नहीं हो पाती। अन्य प्रकार की नपुंसकता चिकित्सा द्वारा दूर हो सकती है। यहाँ सन्तानोत्पादन की शक्ति से हीन अथवा सहवास के समय स्त्री को तृप्त न कर सकने वाले नपुंसकों से सम्बन्धित योगों का उल्लेख किया जा रहा है।

यदि (1) शुक्र किसी वक्री ग्रह की राशि में हो, (2) लग्नेश सर्वक्षेत्री हो तथा शुक्र सप्तम भाव में हो, (3) शनि तथा शुक्र एक दूसरे से द्वितीय तथा द्वादशभाव में हों, (4) यदि सूर्य सम राशि में हो और उस पर विषम राशिस्थ मंगल की दृष्टि हो अथवा (5) लग्न और चन्द्रमा विषम राशि में तथा सूर्य द्वारा दृष्ट हो तो जातक नपुंसक होता है।

होम्योपैथिक चिकित्सा—नपुंसकता में निम्नलिखित औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग लाभकर सिद्ध होता है—

सेवाल सेरूलेटा Q—5 से 10 बूंद तक की मात्रा में दें। कमजोरी के कारण मैथुन करने की शक्ति न रहना, हस्तमैथुन अथवा अत्यधिक सहवास प्रभृति कारणों से ध्वजभंग होना।

टरैना सैटाइवा Q—अत्यधिक मानसिक परिश्रम, अस्वाभाविक मैथुन, अनियमित इन्द्री-परिचालन आदि कारणों से उत्पन्न ध्वजभंग (नपुंसकता) की यह उत्तम औषध है। 5-5 बूंद की मात्रा में दिन में दो बार लेनी चाहिए।

नये ध्वजभंग में—एग्नस कैक्टस 2x, 3 बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है।

पुराने रोग में—लाइकोपोडियम 30, 200, एसिड फास 2x, दवाएँ देकर रोग से छुटकारा पाया जा सकता है।

अन्य औषधियाँ—हस्तमैथुन, अधिक स्त्री-मैथुन, वेश्या-सहवास, स्वास्थ्य-भंग आदि कारणों से उत्पन्न नपुंसकता में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग करना चाहिए—

ऐनाकार्डियम 6, 30, 200, ऐग्नस कैक्टस 2x, 3, फास्फोरिक एसिड 1, 3, लाइकोपोडियम 30, 200, स्टैफिसेग्रियस 3, 30 आदि।

चोट आदि लगने से उत्पन्न ध्वजभंग (नपुंसकता) में—आर्निका 3 अथवा हाइपेरिकम 1x लाभ करती है।

अण्ड-वृद्धि रोग

यदि (1) लग्नस्थ राहु, मंगल अथवा शनि के साथ हो, (2) मंगल की राशि (मेष-वृश्चिक) में स्थित शुक्र तथा चन्द्रमा—दोनों गुरु से दृष्ट

हों, (3) तृतीय भाव में शनि, मंगल तथा राहु षष्ठेश से दृष्ट हों (4) मेष अथवा वृष राशि में चन्द्र-मंगल की युति हो और गुरु तथा शनि द्वारा दृष्ट भी हों, (5) मेष अथवा वृश्चिक राशि में शुक्र-मंगल की युति हो, (6) सूर्य, गुरु और राहु तृतीय भाव में हों, (7) राहु तथा अष्टमेष की युति हो, (8) षष्ठभाव में राहु, मंगल तथा शनि की युति हो, (9) किसी भी भाव में शनि तथा राहु की युति हो, (10) लग्न में राहु, मंगल तथा शनि की युति हो, (11) लग्न में राहु तथा गुरु की युति हो, अथवा (12) लग्न में राहु, त्रिकोण में गुलिक तथा अष्टमभाव में शनि और मंगल हों तो जातक को अण्डवृद्धि रोग (अंडकोषों में पानी भर जाना), जिसे आँत उतरना अथवा 'फाइलेरिया' भी कहते हैं, होता है।

होम्यो-चिकित्सा—अंड-वृद्धि रोग में लक्षणानुसार निम्नलिखित होम्यो-औषधियों का प्रयोग करना चाहिए—

स्पंजिया 3x, 6—अंडकोष फूला, लाल रंग का हो तथा उसमें टपक की भाँति दर्द होता हो।

रोडोडेण्ड्रन 3x, 6—यह नई बीमारी में हितकर है, विशेषतः यदि दाँया अंडकोष रोगाक्रान्त हो और उसमें दर्द हो अथवा आँधी-पानी से पहले उसमें दर्द बढ़ता हो।

पल्सेटिला 3x, 30—बाँया अंडकोष आक्रान्त होने पर दें।

ग्रैफाइटिस 6x, 30—अण्ड-त्वचा एवं जननेन्द्रिय का शोथ तथा बाँई ओर जल-संचय होने पर इसे दें।

साइलिसिया 6—यदि पूर्णिमा और अमावस्या को रोग हमेशा बढ़ जाता हो।

अन्य औषधियाँ—हैमामेलिस 1x, आर्निका 3, कैल्के-कार्ब 6, ब्रायोनिया 3, एपिस 6, आयोड 6, रस-टाक्स 6 तथा सल्फर 30—इन औषधियों को भी लक्षणानुसार देने की आवश्यकता पड़ सकती है।

गुदा-रोग

यदि (1) अष्टमेश सप्तमभाव में तथा षष्ठेश अष्टम भाव में हो तो जातक को खूनी बवासीर होती है। (2) यदि अष्टम भाव में तीन या

चार पापग्रह हों तो जातक को अर्श (बवासीर) रोग होता है। यदि (3) कर्कराशिस्थ सूर्य पर शनि की दृष्टि हो, (4) द्वादशभावस्थ शनि लग्नेश तथा मंगल से युक्त अथवा दृष्टि हो, (5) लग्न में शनि तथा सप्तमभाव में मंगल हो, (6) वृश्चिक राशि का मंगल चतुर्थभाव में हो और उस पर गुरु की दृष्टि न हो, (7) दिन का जन्म हो और सप्तमभाव में वृश्चिक का शनि तथा नवमभाव में मंगल हो, (8) षष्ठ अथवा अष्टमभाव स्थित चन्द्रमा मंगल से दृष्ट हो तथा लग्न में शनि भी हो, (9) षष्ठभाव में अकेला मंगल हो, (10) लग्न में मंगल तथा सप्तम भाव में शनि हो, (11) मंगल वृश्चिक राशि में हो तथा लग्न पर गुरु-शुक्र की दृष्टि न हो, (12) वृष राशि का शनि लग्न में तथा-मंगल सप्तम भाव में हो तथा लग्न एवं शनि पर गुरु की दृष्टि न हो अथवा (13) लग्नेश पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक को अर्श (बवासीर) रोग होता है।

होम्योचिकित्सा—गुदा-रोगों में निम्नलिखित औषधियाँ हितकर सिद्ध होती हैं—

परिश्रम न करने अथवा अधिक भोग-विलास के कारण उत्पन्न हुई बवासीर में—नक्स-वोमिका, सलफर, पोडोफाइलम देकर चमत्कार देखें।

कब्ज के कारण उत्पन्न बवासीर में—इस्क्युलस, नक्स-वोमिका, सलफर, कालिन्सोनिया, कार्बो-वेज श्रेष्ठ औषधियाँ हैं।

गर्भावस्था की बवासीर में—कालिन्सोनिया, नक्स-वोम, ऐलो।

खूनी मस्सों वाली बवासीर में—ऐकोनाइट, सलफर, हैमामेलिस, इस्क्यूलस, ऐलो, चायना का सेवन ठीक रहता है।

बादी बवासीर में—ऐकोनाइट (दर्द अधिक हो तो), कैप्सिकम (जलन और खुजली हो तो), नक्स-वोमिका एवं सलफर से लाभ मिल जाता है।

सफेद आँव वाली बवासीर में—मर्क, एकोन उपयोगी रहती हैं।

बवासीर रुक जाने पर—पल्सेटिला, सलफर दे दें।

पुरानी बवासीर में—सलफर, आर्स, फेरम, नाइट्रिक एसिड, हिपर-सल्फर।

उक्त औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग करना चाहिए।

भगन्दर

यदि (1) लग्नेश तथा मंगल-बुध त्रिकस्थ हों अथवा एक साथ रहकर षष्ठभाव के देखते हों, (2) गुरु षष्ठेश तथा अष्टमेश के साथ सप्तम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में हो, (3) लग्नेश तथा मंगल-बुद्ध युक्त, दृष्ट अथवा कन्या राशि में हो अथवा (4) लग्न में शनि हो और वह उच्च का न हो तो जातक को 'भगन्दर' नामक रोग होता है।

होम्यो-चिकित्सा—भगन्दर में निम्नलिखित औषधियाँ लाभकर सिद्ध होती हैं—

बेलाडोना 3x, या मर्क-वा 3x—फुंसियाँ होने के बाद टपक जैसा दर्द, गुह्यद्वार, लालरंग का तथा सिर-दर्द के लक्षणों में।

हिपर सल्फर 3 वि०—फुंसियाँ सूजकर पीव की तैयारी होने पर दें।

सिलिका 30—घाव से पीव अधिक बहता हो या नासूर हो तो उपादेय।

कैल्केरिया फ्लोर—12x—यह भगन्दर की एक उत्कृष्ट औषध है।

अन्य औषधियाँ—कास्टिकम, चायना, कैल्केरिया कार्ब, नक्स, नाइट्रि-एसिड, ग्रैफाइटिस, इस्क्युलस, रैटान्हिया आदि लक्षणानुसार दें।

श्वेत कुष्ठ

यदि (1) मेष अथवा वृष राशिस्थ चन्द्रमा मंगल, शनि से युक्त हो, (2) शुक्र और शनि दोनों मंगल की राशि में हों, चन्द्रमा द्वादशभाव में हो तथा मंगल तृतीयभाव में हो, (3) अष्टमभाव में गुरु-शनि की युति हो, चन्द्रमा षष्ठभाव में हो तथा बुध-शुक्र नवमभाव में हों (4) लग्न में चन्द्रमा, सप्तमभाव में सूर्य तथा शनि अथवा मंगल द्वितीय अथवा द्वादश-भाव में हों, (5) पंचम अथवा नवमभाव में वृष, कर्क, वृश्चिक अथवा मकर राशि हो और वह पापग्रह से दृष्ट हो, (6) पापग्रहों से घिरा हुआ चन्द्रमा लग्न में बैठा हो, (7) चन्द्रमा, बुध अथवा लग्नेश के साथ राहु, सूर्य, मंगल अथवा शनि में से कोई एक ग्रह हो अथवा (8) यदि चन्द्रमा

और सूर्यं किसी पापग्रह के साथ कर्क, वृश्चिक अथवा मीन राशि में हों तो जातक को श्वेतकुष्ठ होता है।

होम्यो-चिकित्सा—श्वेतकुष्ठ में निम्नलिखित औषधियों के प्रयोग से लाभ होता है—

आर्स सल्फ फ्लेवस 3x, 6, 30—श्वेतकुष्ठ अथवा धवल कुष्ठ में लाभकर है।

आयल बूची—इसे दिन में 2-3 बार बाहरी त्वचा पर दो-तीन महीने तक लगाना चाहिए।

खाँसी-दमा कफ रोग



यदि (1) बुध सप्तमभाव में हो, (2) लग्न में चन्द्रमा और शनि की युति हो अथवा किसी भावस्थित चन्द्रमा पर शनि की पूर्ण दृष्टि हो, (3) शनि से दृष्ट षष्ठेश लग्न में बैठा हो, (4) पापग्रह से युक्त अथवा दृष्ट चन्द्रमा षष्ठ भाव में हो तथा सप्तमभाव में सूर्य-शनि की युति हो अथवा (5) लग्नस्थ सूर्य पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक को खाँसी, श्वास, दमा अथवा फेफड़े से सम्बन्धित कफ सम्बन्धी रोग होते हैं।

होम्यो-चिकित्सा—खांसी तथा कफ-रोगों में निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

ऐसिड कार्बोल—यह हूपिंग खाँसी की उत्कृष्ट दवा है। खुसखुसी खाँसी में हितकर है।

इपिकाक—बार-बार खाँसना, अन्दर साँय-साँय का शब्द। कुछ न निकलना तथा वमन होने के लक्षणों में हितकारी रहती है।

एमोनस्यूर—चित्त होकर तथा दाँई करवट सोने से खांसी का बढ़ना।

कोनियम—सूखी दम अटकाने वाली खांसी, जो सोते ही बढ़ती हो, तब लाभ करेगी।

स्टैफिसेग्रिया—केवल दिन में, खाना खाने के बाद आने वाली खाँसी में दें।

बेलाडोना—आक्षेपिक, सूखी, दम घुटाने वाली खाँसी में ठीक रहती है।

ब्रायोनिया—सूखी खाँसी, सिर-दर्द, पीला कफ निकलने पर उपयोगी।

कास्टिकम—गले में दर्द के साथ, गला सुरसुरा कर आने वाली खाँसी।

ड्रोसेरा—हूपिंग अथवा उसी प्रकार की खाँसी। आधी रात बीतने पर खाँसी बढ़ना।

ब्लोटा ओरियेण्टा, स्ट्रैमोनियम, एरालिया—दमा के लक्षणों में।

अन्य औषधियाँ—फास्फोरस, कास्टिकम, रेडियम, बैराइटाकार्ब आदि।

हैजा

यदि जलतत्व वाली राशि में शनि-चन्द्र की युति हो तो जातक को किसी समय हैजे की बीमारी होती है।

होम्यो-चिकित्सा—हैजा में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग करना चाहिए—

प्रथमावस्था में—एसिड कार्बोल, एकोनाइट, ऐण्टिम टार्टरिकम, विस्मथ, कैलिफास, कैम्फर, क्रोटन, आइरिस, मर्क डलसिस, एसिड फास, ऐलो, आर्स, इपिकाक आदि।

द्वितीयावस्था में—एकोन रैड, आर्स, क्यूप्रम मेट, ऐगारिकस, सिकेल, ऐंटिम टार्ट, ऐसिड कार्बोल, टैवेकम, विरेट्रम, कैम्फर, बिस्मथ, कैलिफास, कार्बो, मर्क-कॉर आदि।

तृतीय हिमांगावस्था में—कैम्फर, एकोनाइट रैड, कार्बोवेज, विरेट्रम, ऐसिड हाइड्रो, आर्सेनिक, लैकेसिक, एण्टिपाइरिन, विरेट्रम, टैवेकम, क्यूप्रम आर्स, एगारिकस आदि।

पेशाब बन्द होना—कैन्थर, टेरेबिन्थ, ओपियम, वेलाडोना, नक्स-वोमिका, एपिस, कैलिबाई क्रोम, आर्सेनिक, लाइको, स्ट्रैमोनियम।

उक्त औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग करना चाहिए।

रक्त-विकार

यदि (1) षष्ठ भाव में मंगल हो, (2) षष्ठ अथवा अष्टम भावस्थ चन्द्रमा मंगल से दृष्ट हो तथा लग्न में शनि हो, (3) लग्न में शनि, मंगल, राहु तथा सूर्य हो अथवा (4) राहु, मंगल, सूर्य, शनि से युक्त हो तथा किसी शुभ-ग्रह की दृष्टि न हो तो जातक को रक्त-विकार सम्बन्धी-रोग होते हैं।

होम्यो-चिकित्सा—रक्त-विकार में निम्नलिखित औषधियाँ लाभ करती हैं—

रक्तचाप-वृद्धि (ब्लड-प्रैशर)—बैराइटा कार्ब, कोनायम-मेकु, बेले-डोना, ग्लोनाइन, सैंगुइनेरिया, जेलसिमियम, लैकेसिस, पाइरोजेन, क्रोटेलस आदि।

रक्त- विषाक्तता की स्थिति में—एचिन्नेशिया, पाइरोजिनिया, बैप्टी-शिया, क्रोटेलस, एन्थ्रैसिनम, एसिड कार्बोल आदि का व्यवहार लक्षणानुसार करें।

रक्त-हीनता—ऐसिड एसेटिक, साइक्लामेन, ग्रैफाइटिस, आस्ट्रिया वर्जिनिया, नेट्रम म्यूर, फेरम-मेट, कैलि-कार्ब आदि ठीक रहती हैं।

चेचक

यदि (1) लग्नस्थ सूर्य शनि-चन्द्र से दृष्ट हो, (2) लग्नस्थ मंगल सूर्य-शनि अथवा चन्द्र-शनि से दृष्ट हो, (3) सप्तमेश तथा षष्ठेश पर मंगल की दृष्टि हो, (4) लग्न, द्वितीय, सप्तम अथवा अष्टम भाव में मंगल हो और उस पर सूर्य की दृष्टि हो अथवा इन्हीं भावों में सूर्य हो और उस पर मंगल की दृष्टि हो, (5) लग्न में केवल मंगल हो अथवा (6) षष्ठेश पाप-ग्रह से युक्त होकर दशम भाव में हो और उस पर किसी शुभ-ग्रह की दृष्टि न हो तो जातक को चेचक की बीमारी होती है।

होम्यो-चिकित्सा—चेचक में लक्षणानुसार निम्नलिखित औषधियों का प्रयोग हितकर सिद्ध होता है—

प्रथमावस्था में तीव्र ज्वर तथा शारीरिक दुर्बलता—बैप्टीशिया 2x ।

सिर-दर्द, पीठ में भयानक दर्द और बेचैनी—सिमिसिफ्यूगा लाभ करेगी।

गोटियों में पीव तथा दूसरी बार ज्वर—मर्कसाल देना चाहिए।

लार बहना, गले में घाव तथा दुर्गन्धित श्वास-प्रश्वास—मर्कवाइवस।

गोटियों का सड़ना आरम्भ होने पर—आर्स आयोड श्रेष्ठ औषध है।

मुँह में सूजन, अन्न-नली फूली, किडनी-प्रदाह की आशंका—एपिस।

गोटियाँ अचानक दबकर रोगी की दशा बिगड़ जाने पर—कैम्फोरा।

टाइफाइड के लक्षण में—लैकेसिस व रस-टाक्स उत्तम है।

मुख तथा गले में घाव एवं दर्द—रस-टाक्स, एसिड म्यूर, वैरियोलिनम।

गोटियों के पकने के समय स्वर-यन्त्र के आक्रान्त होने पर तथा सूखते समय छालों से बचने के लिए—हिपर ठीक रहती है।

तृतीयावस्था में पपड़ी उठते समय—कैलि-सल्फ देना ठीक रहता है।

चोट, घाव, व्रण

यदि (1) मंगल पंचम भाव में हो, (2) राहु-शनि एकादश भाव में हों, (3) षष्ठेश तथा मंगल की युति हो, (4) लग्नेश मंगल के साथ त्रिक में हो, (5) मंगल चतुर्थेश सूर्य अथवा शनि से युक्त हो और वह किसी शुभ ग्रह से दृष्ट भी न हो, (6) कर्क लग्न में मंगल बैठा हो, (7) द्वादश भाव में शुक्र-राहु की युति हो, (8) चतुर्थ भाव में कोई पापग्रह बैठा हो, (9) सूर्य द्वादश भाव में हो, (10) षष्ठेश, चन्द्र-मंगल की युति हो, (11) लग्नेश के साथ सभी पापग्रह भी लग्न में हों, (12) लग्नस्थ लग्नेश निर्बल हो तथा पापग्रह उसके साथ हों, (13) सूर्य षष्ठ भाव में हो, (14) लग्नेश षष्ठ भाव में हो तथा मंगल के साथ उसकी युति हो, (15) मंगल लग्नेश होकर पंचम भाव में किसी पापग्रह के साथ बैठा हो, (16) लग्नेश शनि पापग्रह से युक्त अथवा दृष्ट होकर लग्न में बैठा हो अथवा (17) अष्टम भाव में पापग्रह हो तो चोट आदि लगने से जातक के शरीर में घाव होता है।

होम्यो-चिकित्सा—चोट लगना, घाव, व्रण आदि में निम्नलिखित औषधियाँ हितकर सिद्ध होती हैं—

चोट लगने, कुचल जाने अथवा घिसट जाने पर—आर्निका, हैमामेलिस, रूटा अच्छा प्रभाव डालती हैं।

कट जाने पर—कैलेण्डुला का उपयोग करें।

चोट लगकर धनुष्टंकार—स्टैफिसेग्रिया, विरेट्रम विरिडि साइक्यु।

चोट लगे स्थान पर भयंकर दर्द—हाइपेरिकम, विरेट्रम विरिडि से दर्द दूर करें।

चिपक जाने पर—हाइपेरिकम व्यवहृत औषध है।

चोट जनित दर्द—आर्निका के बाद लीडम, आर्टिमिसिया।

चमड़ा या मांस फट या कट जाने पर कैलेण्डुला का बाह्य प्रयोग करें।

चोट लगकर घाव और पीब होना—हिपरसलफर अच्छा कर देती है।

चोट लगने से कुचलने पर रक्त जम जाना—बर्वेना को देकर देखें।

अस्त्र से कटना या आलपिन, कील आदि धँसना—लीडम लाभ करेगी।

चोट जनित घाव—कैलोमेल श्रेष्ठ दवा है।

कपाल की हड्डी का घाव—आरम दें।

जूते की एड़ी का घाव—एलियम सिपा ठीक रहेगी।

पाँव की अँगुलियों का घाव—ऐसिड नाइट्रिक दें।

जीभ का घाव—कैलि बाई, कैलि क्लोर, कैलि सिपा दें।

विभिन्न प्रकार के व्रण, फोड़ा-फुंसी—ऐकोनाइट, बेलाडोना, मर्क, हिपर सल्फर, साइलीशिया, आर्सेनिक, सल्फर, कैल्के-कार्ब, चायना, एसिड-फॉस, एपिस आदि का लक्षणानुसार प्रयोग करना चाहिए।

व्रण

यदि (1) पापग्रह युक्त षष्ठेश दशम भाव में हो और वह पापग्रह से दृष्ट भी हो, (2) षष्ठ भाव में सूर्य हो तथा षष्ठेश पापग्रह से युक्त अथवा

दृष्ट हो, (3) लग्न में चन्द्रमा तथा सप्तम भाव में सूर्य-मंगल की युति हो, (4) षष्ठेश षष्ठ, द्वितीय अथवा अष्ठम भाव में हो, (5) वृश्चिक लग्नस्थ मंगल गुरु-शुक्र से अदृष्ट हो, (6) लग्नस्थ षष्ठेश राहु अथवा केतु से युक्त हो, (7) षष्ट अथवा अष्ठम भाव में मंगल अथवा केतु हो, (8) षष्ठ, सप्तम अथवा द्वादश भाव में शनि तथा मंगल की युति हो, (9) षष्ठेश पापग्रह से युक्त होकर लग्न अथवा अष्ठम भाव में हो, (10) राहु अथवा शुक्र का दृष्टि-सम्बन्ध हो (11) लग्नेश षष्ठ भाव में हो और वह किसी पापग्रह से युक्त भी हो, (12) षष्ठेश किसी पापग्रह से युक्त अथवा शुभ-ग्रह की दृष्टि से रहित होकर लग्न अथवा त्रिक में बैठा हो, (13) राहु अथवा केतु के साथ षष्ठेश लग्न में बैठा हो, (14) सप्तम भाव में शनि तथा केतु की युति हो, (15) लग्न में मंगल तथा सप्तम भाव में गुरु अथवा शुक्र हो, (16) वृश्चिक राशिस्थ मंगल पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो, (17) लग्नेश अथवा षष्ठेश के साथ मंगल भी हो अथवा (18) मंगल लग्नेश के साथ त्रिकस्थ हो तो जातक को फोड़ा-फुन्सी आदि व्रण रोग होते हैं।

होम्यो-चिकित्सा—व्रण-रोग में निम्नलिखित औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग करें।

बेलाडोना—2x—पीव पैदा होने से पूर्व रोगी-स्थान का सूजना, लाल हो जाना तथा उसमें टपक जैसा दर्द होना।

एपिस 3—रोगी-स्थान के अधिक फूल जाने तथा डंक मारने जैसा दर्द होने पर।

मर्क-सोल 6—यदि उक्त दोनों औषधियों से लाभ न हो तो इसे दें।

हिपर-सलफर 6—पीव पैदा होने के बाद दें। व्रण को बैठाने की जरूरत होने पर इसे 200 शक्ति में देना चाहिए।

साइलीशिया 6, 30—पतला पानी जैसा पीव निरन्तर बहता हो तथा फोड़ा पुराना हो गया हो।

सिलिका 30, 200—पुराने फोड़े से बहुत दिनों तक पीव निकले।

फ्लोरिक एसिड 6—नासूर होने पर।

आर्सेनिक 3x-30—फोड़ा सड़ने की तय्यारी होने पर, आक्रान्त-स्थान में जलन तथा साथ में कमजोरी का अनुभव होने पर इसे दें।

आर्निका 3—छोटे-छोटे फोड़े होते रहने पर लाभप्रद रहती है।

सल्फर 30—बार-बार फोड़ा होने पर इसे देना चाहिए अवश्य रोग से छुटकारा मिल जायेगा।

हड्डी टूटना (अस्थि-भंग)

यदि (1) द्वितीयेश लग्नेश के साथ किसी दुष्ट स्थान में बैठा हो (2) राहु नवम भाव में हो अथवा तृतीय भाव में मंगल-शनि की युति हो, परन्तु कोई शुभ राशि न हो तो जातक की हड्डी टूटती है।





होम्यो-चिकित्सा—यदि हड्डी टूट गई हो तो सर्वप्रथम उसके टुकड़ों को परस्पर मिला देने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि इस कार्य में दक्षता प्राप्त न हो तो व्यर्थ खींचतान करके रोगी को कष्ट नहीं देना चाहिए तथा किसी होशियार चिकित्सक से उसे जुड़वाना चाहिए। निम्नलिखित औषधियां हड्डी के विभिन्न रोगों में हितकर सिद्ध होती हैं। इनका लक्षणानुसार प्रयोग करना चाहिए—

ऐसिड फ्लोर, सिम्फाइटम, कैलि फास, कैल्केरिया फास, आरम, हैक्ला लावा, मर्क्युरियस, मेजेरियस, सारासिनिया, साइलीसिया, ओलियम जेकारिस, स्ट्रैमोनियम, कैल्केरिया, हाइपो फॉस आदि।



नोट—ये सभी दवाएं किसी भी 'होम्यियोपैथिक स्टोर से खरीदी जा सकती हैं।

नोट—ये सभी दवाएं किसी भी 'होमियोपैथिक स्टोर' से खरीदी जा सकती हैं।

चर्म-रोग

यदि (1) सप्तम भाव में सूर्य, बुध तथा चन्द्र हों एवं शेष चतुर्थ भाव में हों, (2) यदि मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक, कुम्भ अथवा मीन राशिस्थ चन्द्रमा सप्तमभाव में हो और वह कर्क-नवांश स्थित शनि से दृष्ट भी हो अथवा (3) कर्क और मकर राशि के परार्द्ध में अथवा मीन में स्थिति चन्द्रमा लग्न से द्वितीय भाव में हो अथवा वह शनि से युक्त हो अथवा लग्न में सूर्य हो तो जातक को 'दाद' की बीमारी होती है।

यदि बुध, राहु, षष्ठेश और लग्नेश किसी भी भाव में एक स्थल पर हों तो जातक को 'छाजन' आदि चर्म-रोग होते हैं।

यदि (1) मीन अथवा मेष के नवांश में स्थित चन्द्रमा शुभग्रह से दृष्ट हो, (2) जलचर राशि स्थिति चन्द्रमा पापग्रह से युक्त अथवा शनि से दृष्ट हो, (3) तृतीय भाव में बलवान् मंगल तथा शनि हो, अथवा (4) पापग्रह से युक्त चन्द्रमा नवम भाव में बैठा हो तो जातक को 'खुजली' की बीमारी होती है।

(1) यदि षष्ठेश तथा मंगल की युति हो, (2) केतु अथवा मंगल लग्न से छठे अथवा आठवें भाव में हों, (3) शनि अष्टम भाव में तथा मंगल सप्तम भाव में हो, (4) सूर्य किसी पापग्रह से युक्त, दृष्ट अथवा पापग्रह की राशि में हो अथवा (5) कोई पापग्रह षष्ठेश होकर लग्न, अष्टम अथवा दशम भाव में बैठा हो तो जातक को चर्म-रोग होता है।

होम्यो-चिकित्सा—चर्म-रोगों में निम्नलिखित औषधियों का लक्षणानुसार प्रयोग करना चाहिए—

खाज,खुजली—फैगो पाइरम, मेजेरियम, डुलिकस, आर्सेनिक, स्टैफिसेग्रिया, हिपर-सल्फर, नक्स-वोमिका, कैल्के-कार्ब आदि दें।

लाल या सफेद दाने—कैमोसिला, एपिस, एण्टिम क्रूड़, कैल्के कार्ब, ठीक दवाएँ हैं।

अकौता—रसवेन, रसटाक्स, ओलियेण्डर, कैलिम्यूर, हिपर सल्फ, वोविष्टा, ग्रैफाइटिस, ऐण्टिम क्रूड, आर्सेनिक, अर्टिका युरेन्स, सल्फर आदि।

❀ इति शुभम् भवेत् ❀

प्रकाशक :

रोजगार प्रकाशन

हालनगंज, मथुरा—281001 (उ० प्र०)

36,37,64

40832

17, 18-19, 20-21, 24, 25
27-28, 28-31, 31-32, 32
33-34, 36-37, 37-41, 43-63
64-75, 77-160

(32) (37)

3
1
481
83

131

69

- सन्तान का जन्म केवल पति और पत्नी के संसर्ग से ही नहीं हो जाता।
- यदि ऐसा होता तो जब दम्पति चाहते तभी वे माता-पिता बनने का गौरव पा लेते और जैसी विवेकवान, स्वस्थ संतान चाहते उत्पन्न होती, लेकिन ऐसा नहीं होता अपितु एक साथ पैदा हुए दो भाई भी एक जैसे गुणों से विभूषित नहीं होते।
- यही कारण है कि जातक आवागमन के चक्र में निरन्तर घूमता रहता है और घड़ी, मुहूर्त, दिशा, योग, कर्म-फल के अनुसार श्रीमान् या दरिद्र, स्वस्थ या रोगी, माननीय या त्याज्व वातावरण में जन्म लेता है।

— पहले जातक क्या था?

— अब वह क्या है?

— भविष्य में यह क्या बनने वाला है।

- यह सभी जानकारी तो विश्वविख्यात पण्डित, मूर्धन्य ज्योतिषाचार्य, राजर्षि राजेश दीक्षित जी की इस अमर-कृति— **'घर बैठे ज्योतिषी बनिए'** में दी ही गयी है, साथ ही प्रतिकूल ग्रहों को अनुकूल बनाकर अभिलाषित कार्य करा लेने की विधियों का भी उल्लेख किया गया है।

आवरण मुद्रक :–प्रमोद प्रिण्टर्स, मथुरा.